ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' 246 म अंक 15 मार्च 2018 (वर्ष 11 मास 123 अंक 246)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक ३ टा लघुकथा संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान
विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान
१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११
२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)
२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)
२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२
२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)
२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)
२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)
विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)
1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012
2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)
2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)
२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह
२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।
2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)
2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)
विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)
२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।
२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।
२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।
२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।
विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)
२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)
२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)
२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)
२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)
नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२
अभिनय- मुख्य अभिनय ,
सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा
श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,
हास्य-अभिनय
सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह
श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर
नृत्य
सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव
श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत
चित्रकला
श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल
संगीत (हारमोनियम)
श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर
संगीत (ढोलक)
श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत
संगीत (रसनचौकी)
श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम
शिल्पी-वस्तुकला
श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज
मूर्ति-मृत्तिका कला
श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित
काष्ठ-कला
श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना
किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति
श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा
विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान
-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा
नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३
मुख्य अभिनय-
(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईशा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)
हास्य अभिनय-
(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)
नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)
शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मूर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र**- श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

कौँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि। पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
तान्पुरा सह भाव संगीत
(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)
तरसा/ तासा-
श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-
श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढ़ियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)
गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा
श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंका/ ढोल वादक
श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)
श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
नड़ेरा/ डिगरी-
श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-
१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६१ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८१ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसँ आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन
विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]
The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह


मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकें देल जा रहलअछि।

५ जुलाइ २००४ केंhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html ''भालसरिक गाछ''- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा ''विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'' धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब ''भालसरिक गाछ''जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटर रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

सिद्धिरस्तु

क्रान्तियोग

जगदीश प्रसाद मण्डल





क्रान्तियोग

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

गत-मत मीत मनुज मन
मन-मन्दिर भव भवन भवै छइ।
तखने मन भवन भव
देव-दनुज मीलि तान तनै छइ।
देव-दनुज...।
भविते भव भवन खिल-खिल
बाइन वाणी बिचड़ बिचड़ै छइ।
वाणी वणिक करैण पकैड़
करैण-धरैण धड़ि धड़ै छइ।
करणी-धरणी धीर धड़ै छइ।
विवेक विचार विचरण करै छइ।
विचैड़ विचार विवेक बनि
पाप-पुनक पुल बनै छइ।
पाप-पुनक...।
⁝

ISBN : 978-81-936422-5-2

दाम : ₹ 251/-

पहिल संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

KRATIYOG
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

क्रान्तियोग

गामक हवा-पानि खा-पीब कऽ टहैल-बुलि जीवन काका दरबज्जापर अबिते पत्नीकेँ चौकैठ लागल ठाढ़ देखलैन। ओना मनमे पहिने ई उठलैन जे किछु बात परिवारक जरूर अछि जे पत्नी केबाड़क चौकैठ लागल ठाढ़ छैथ, नहि तँ अखन अँगना-घरक काजक बेर छी, कोनो काजमे लागल रहितैथ...।

मुदा लगले विचार बदैल गेलैन, बदैल ऐ दुआरे गेलैन जे जहिना कोनो नव चीज भेटलापर खुशी होइ छै जइसँ रंग-रंगक विचार मन: स्थितिकेँ सेहो खुशिया-खुशिया अपना रंगमे रँगैत रहैए, तहिना जीवन काकाकेँ भऽ गेलैन। दरबज्जाक ओसारपर चढ़िते बजला-

"पहिने एक गिलास पानि पिआउ, पछाइत चाह पीब। किछु विचार करबाक अछि।"

'विचार करबाक अछि' सुनि कामिनी काकीक मन पहिने ठमकलैन पाछू ठहकलैन, मुदा लगले पाछू उनैट तकली तँ बुझि पड़लैन जे किछु बात जरूर अछि। आन दिन अपना मने की विचार करै छला की नइ करै छला से कहाँ कहियो कहै छला। यहए ने हुकुम दइ छला जे अमुक काज करू वा अमुक काजक की भेल से कहू। मुदा 'विचार करबाक अछि' कहलैन हें..!

खुशीमे विनोद घोरि काकी बजली-

"हम कोन जोकरक छी जे विचार करब?"

पत्नीक बात सुनि जीवन कक्काक मनमे कनी कचोट जरूर भेलैन मुदा चोट लगलापर जेहेन मन चोटाइए से नहि भेलैन। अपनो मन गवाही देलकैन जे अखन तकक जिनगीमे पत्नीकेँ विचारवान बुझि विचारीए कहिया बुझि कोनो विचार केलौं? तँए पत्नी जे बजली से कोनो अनचितो तँ नहियेँ बजली अछि।

पत्नीक बातकेँ विचारमे विचरित करैत जीवन काका बजला-

"जइ-जोकर छी सएह ने दुनू परानी मीलि विचार करब।"

अपन उठैत जिनगीक रंग आ पतिक लबैत विचारक भंग देख कामिनी काकीक अन्तर्मन बिहुसि उठलैन। बिहुसिते आँखि उठा पतिक आँखिमे गाड़ैत मन मिलबैत बजली-

"चाहक ओरियान करि कऽ सभ किछु चुल्हि लग रखने छी। लोटामे पानि सेहो आनि कऽ रखने छी। बैसू लगले नेने अबै छी। जाबे अहाँ पानि पीब ताबे चाहो बनि जाएत।"

नहलापर दहला जहिना फेकल जाइए तहिना सोलहन्नीपर बत्तीसअन्नी फेकैत जीवन काका बजला-

"शुभ काजमे बिलंम करब मूर्खता हएत। पहिने लोटा-गिलास नेने आउ, जाबे हम पानि पीब ओकर सुआद बुझब-परखब ताबे अहूँकेँ चाह बनि जाएत।"

अपन काजमे बिसवासक रंग चढ़बैत कामिनी काकी बजली-

"से किए ने बनत, भेल तँ दू गिलास दूध-पानि औटैक अछि।"

कहि कामिनी काकी आँगन दिस बढ़ली। चुल्हि लग लोटामे पानि रखले रहैन, लोटा-गिलास नेने काकी दरबज्जापर पहुँच पतिक आगूमे रखि देलखिन। ओना, मनमे नव-नव विचार जरूर उठैत रहैन

मुदा चाह बनाएबकेँ जरूरी बुझि किछु ने बाजि चोटे आँगन घुमि गेली।

अदहा गिलास पानि पीबैत-पीबैत जीवन काकाकेँ विचारक तरंग तेना तरंगित कए देलकैन जे गिलास चौकीपर रखिते पैछला जिनगी दिस मन हुमैड़ कऽ घुमैड़ पड़लैन। मनमे उठलैन- अपन जिनगी आ अपना संग पत्नीक जिनगी आ तैसंग परिवारिक जिनगी...। मुदा अन्तहीन रस्ताक जहिना ओर-छोर नहि होइए तहिना जीवन कक्काक मनमे उठए लगलैन। दुनू परानीक बीच तीस बर्खक जिनगी छेलैन। मुदा अन्तहीनो रस्ताकेँ तँ लोक खँतिया कऽ खुटिया अपन-अपन रस्ताक सीमाकेँ तय कैये लइए।

अखन तक माने पचास बर्खक अवस्था धरि जीवन काका वएह जिनगी धारण केने आबि रहला अछि जे गाम-समाजक छेलैन। ओना, मनमे ई बात जरूर उठलैन जे अदहा जिनगी रीब-रीबे[1]मे चलि गेल। मिरचाइयेक गुण-सोभाव जकाँ ने मनुखोकेँ तँ अपन गुण-सोभाव होइते अछि। मुदा जे मनुख केलक-धेलक किछु ने आ खाइत-पीबैत, सुतैत-पड़ैत जिनगी बीता लेलक वएह जिनगी ने रीब-रीबाएले रहि गेल। जिनगी तँ ओ ने भेल जे अपन भरण-पोषण करैत किछु आगू धरि डेग उठबैत चलए। ओना डेगो-डेगोक अपन-अपन गुण अछि। जेना एक भेल आगू दिस उचित डेग बढ़ाएब आ दोसर भेल पाछू ससरब। मुदा बीचमे तेसरो तँ ऐछे जे ने आगू दिस बढ़ल आ ने पाछू दिस ससरल बीचमे ठमकल चलैत रहल। ओना, आगू दिस डेग बढ़ाएब आकि पाछू दिस ससरबक कारण अपन-अपन सेहो अछि, एके कारण दुनूक नहि अछि। आगू दिस बढ़ैक जहिना दुनू

[1] रीब-रीबक माने भेल- जहिना मिरचाइक गुण कड़ूपन होइ छै मुदा जँ ओइमे कड़ूपन नइ आएल रहल वा ओइमे कड़ूपन रहबे ने कएल सएह भेल रीब-रीब।

कारण अछि तहिना पाछू दिस ससरबक सेहो दूटा कारण तँ अछिए। माने ई जे जहिना आगू दिस उचित डेग बढ़बैक एक कारण भेल जे ओहन डेग जइमे अपना संग परिवारो-समाजक मंगल कामना निहित अछि आ दोसर अछि- जइमे केकरो मंगल कामना नहि भऽ अमंगले भेल। तहिना पाछू दिस ससरबक सेहो दू कारण अछिए। पहिल भेल बिना किछु केने-धेने ठाढ़ छी आ समए निकैल कऽ आगू दिस बढ़ि गेल आ अपने पछुआएल मुँह तकैत रहलौं। तहिना दोसर कारण ईहो तँ ऐछे जे समैक संग चलैमे पानि-पाथर आ बिहाड़िक एतेक चोट पड़ल जे लाखो चेष्टा केला पछाइतो जिनगीक डेग पाछूए मुहेँ घुसैक गेल। माने ई जे जइ साधनक संग डेग आगू बढ़ाएब ओ साधने छीना गेल आ समैक थपेर ओकरा थोपरा कऽ निच्चाँ उतारि देलक...। तही बीच चाह नेने कामिनी काकी पहुँचली। पहुँचते देखली जे पतिक मन उखड़ल-उखड़ल विरहीन जकाँ विरहाएल छैन।

मुदा लगले कामिनी काकीक मनमे एकटा नव विचार उठलैन। विचार उठलैन जे मारि खाएल वा चोटाएल पतिक पत्नीए एहेन औषधि अछि जे चोटक अनुरूप अपन भाव प्रदर्शित करैत ओइपर मलहम-पट्टी जेहेन कए सकैए, कियो दोसर तँ ओइ तरहक नहियेँ कए सकैए। कोखिक जनमौल माइयो तँ मात्र बेटाक बेथा देख अपन नयनधारमे मोनि फोड़ि बेथा बाँटै चाहै छैथ मुदा तीत रोगक दवाइ तीतेसँ छोड़ाएल जाए वा तीतक विपरीत मीठोसँ छोड़ाएल जाए ई तँ सोलहन्नी सम्बन्धपर निर्भर अछि।

चाहक गिलास जीवन काकाकेँ हाथमे पकड़बैत कामिनी काकी बजली-

"आन दिनसँ कनी बेसी चीनियोँ, चाहो पत्ती आ दूधो देल चाह अनलौं हेन, तँए कनी सुआदि-सुआदि पीबो करब आ रसिक जन

जकाँ रसो ग्रहण करब।"

पत्नीक बात सुनि जीवन काका अपन मनक बेथाकेँ मनेक मनसँ मनबैत मुस्कियाइत बजला-

"अहाँ हाथक चाह जँ सुआदि-सुआदि नइ पीब तँ एहेन सुआदे केकरा हाथक चाहमे भेटत जे रस नइ बुझबै।"

अपन सुतरल विचारवाण देख कामिनी काकीक मन हलैस कऽ हरिया गेलैन, हरियाइते बजली-

"अपनो मन होइए जे जोड़ोजन एकठाम बैस संगे-संग चाह पीबितौं।"

विचरणक दुनियाँमे विचड़ैत जीवन कक्काक मन रहबे करैन, बजला-

"एहेन दिन कहिया पाएब जे जोड़जनक चाहो एकरंग रहत आ जोड़ी बनि सुआदि-सुआदि चाहो पीब आ रसाएल गपो-सप्प करब।"

पाछू ससरैत माने विचारकेँ पाछू ससारैत कामिनी काकी बजली-

"अपना सोहंतगर बुझि पड़ैए?"

'अपना सोहंतगर' सुनि जीवन काकाकेँ विचारक बानि सुबानि बुझि पड़लैन। बजला-

"किए ने बुझि पड़त।"

नहलापर दहला फेकैत कामिनी काकी बजली-

"अपना जँ प्रेमवश कनी-मनी नीको लागत तँ परिवारो आ समाजो धुर-छी कहबे करत किने?"

डमहाएल-कोशाएल आम हौउ आकि लताम वा कोनो आने फल डमहेला पछाइत ओ पुन: खिच्चा नहि बनि आगू दिस बढ़ि

बोनेबे-पकबे करैए। तैठाम जँ परिवारे माने परिवारेक लोक आकि समाजे जँ नेनमैत वा बलउमकी कहबे करत जे आगू खिच्चा बनत, आकि एहेन विचारकेँ जँ धुर-छीहे कहत तँ ओकरा मानबो तँ जीवन रेखकेँ पाछू दिस मोड़ब भेल किने..? परिपक्क होइत जीवन कक्काक विचार फुटि पड़लैन। फुटिते मुहसँ बहरेलैन-

"परिवारे आकि समाजे जेकरा धुर-छी कहि हँसैए, जँ ओकर गुण-दोषकेँ परखने कियो अपनाकेँ लोक-लाजसँ लज्जित बुझत तखन एको डेग आगू ससैर सकैए।"

ओना जेहेन विचार कामिनी काकीक मनमे तरंगित होइ छेलैन तेकर ठीक विपरीत पतिक बात सुनि मन डगमगेलैन। डगमगाइक कारण भेलैन- एक दिस पतिक विचार जे जीवन साथीक रूपमे हाथ पकैड़ माता-पिताक लगसँ अनने छैथ आ दोसर दिस अपन मनक विचार से उनैट रहल छेलैन जे माइयो-बाप तँ स्वेच्छासँ दान-सरूप जीवन दान देने छैथ, तैठाम पति छोड़ि दोसर के अछि, जिनकर विचार नहि मानि, दोसराक हँसी-चौलकेँ लोक-लाज माने अपन जिनगीक लाजकेँ अपने किछु विचारणे बिना मानि रूकबो तँ धोखा छी। हमर तँ सभ किछु यएह ने छैथ। निधोकसँ डेग उठाएब तखन ने हएत जखन अपन ऐगला समए लेल अपन आगूक ओहन डेग तेना उठाबी जे गछारल जिनगीकेँ ठेलैत-तोड़ैत वा कुदि कऽ टपि जाइ।

मनक कलशैत विचारमे विचड़ैत कामिनी काकी बजली-

"जखन एते प्रेमसँ चाह बनौने छी, तैबीच जँ कोनो कविकाठी फेक चाह पीबैक मनकेँ दुरि कए दिऐ, ई हमरा सन लोकक लेल केहेन हएत?"

कामिनी काकीक सहगर विचार देख जीवन काका बजला-

"जँ गपे-सप्पमे चाहक चाह आ ओकर गुण-सुआदकेँ पानि बना

देब सेहो केहेन हएत?"

ओना कामिनी काकी आ जीवन कक्काक बीच अखन धरिक जे जिनगी रहलैन ओ ने तीते रहलैन आ ने मीठे बल्कि तीत-मीठ दुनू रहलैन जइसँ एक वस्तुक गुण जे हजारो-लाखोक संख्यामे किए ने हुअए मुदा ओकर रूपो, गुणो आ सुआदो तँ एके रंग ने होइए। जेना मालदह आम अछि। एक गाछक छी, संख्यामे पाँच अछि। ओइमे सँ एकटा मिथिलांचलमे खेलौं, दोसर असाममे खेलौं, तेसर मद्रास वा केरलमे खेलौं, चारिम गुजरात वा राजस्थानमे खेलौं आ पाँचम पंजाब वा कश्मीरमे खेलौं, की ओकर गुण-सुआद जगह बदलने बढ़ैत थोड़े जाएत आकि वएह रहत जे मिथिलांचलमे छल। एकर माने ईहो नहि जे मिथिलांचलेक मालदहमे ई गुण छइ। ई गुण सभ ठामक सभ वस्तुमे अछि...।

चाहक गिलास ठोरमे सटौने कामिनी काकी जीवन काका लग पहुँचली। ओना कामिनी काकीकेँ चाहक गिलासमे मुँह सटौने देख जीवन कक्काक मनमे थोड़ेक कुवाथ भेबे केलैन। कुवाथ ई जे चाह कि कोनो पानि छी जे चुल्हि लगसँ पीबैत-पीबैत दरबज्जा धरि भरि पोख पीब लेती। ई तँ चाह छी, एक घोंट पीलौं ओकर सुआद बुझलिऐ, ताबे चाह ससैर कऽ पेटमे गेल जइसँ मनमे फुहरामी जागए लगल। फुहरामीकेँ जगिते मनमे फरहर विचार उठए लगल।

ओना कनी-मनी जीवन कक्काक मन कड़ुएलैन जरूर जइसँ क्रोधक बिनबिनी जगलैन मुदा मन तँ फुहराम रहबे करैन। क्रोधकेँ घोपैक विचार करब मनमे फुटलैन। विचार फुटिते मन विचरण करए लगलैन जे क्रोध करब नीक कि अधला? क्रोध तँ केतौ बाहरसँ लोकमे नइ अबैए, ई तँ लोकक मनमे सदैत जगल रहैए जे सभमे रहबे करत आ रहिते अछिए। मुदा तैबीच एकटा विचारणीय प्रश्नो तँ ऐछे जे जँ

क्रोध सोल्होअना अधले छी तखन लोक किए ने ओकरा सामुहिक रूपमे पानि बहैक नालीमे वा कचड़ामे फेक दइए? प्रश्न अछि क्रोधक रूपकेँ देखब। मनक विचार कहियौ आकि शरीरक ऊर्ज-शक्तिक उपज कहियौ मुदा क्रोध तँ छी जरूर। मुदा ओकर सीमा-सरहद की अछि आ केते अछि तेकरा तँ देखैये पड़त। एक दिस क्रोध मनक संकल्प शक्तिक प्रहरी छी तँ दोसर दिस पोखैर-झाँखैर आकि धार-समुद्रमे डुमबैबला सेहो तँ छीहे। तँए क्रोध अज्ञानीक अज्ञान पैदा करैबला छी आ ज्ञानीक ज्ञान संकल्पक संगी सेहो छीहे। तँए क्रोधसँ क्रोधी नहि बनि, क्रोधी जिनगी धारण करब, जे जिनगीक पथकेँ सेहो प्रदर्शित करैए।

रसे-रसे मनक कुवाथसँ जे क्रोध चढ़ि रहल छेलैन से समन हुअ लगलैन। समन होइते–माने क्रोध कमिते–कक्काक मनमे उठलैन जे जहिना जाँतमे, जइमे तर-ऊपर दूटा चक्की होइ छै, दू चक्की रहितो बीचक जे कील होइए ओ एकटाकेँ सक्कतसँ पकड़ने रहैए आ दोसरकेँ ढील रखि फुह खेलाइ-ले छोड़ि दइए। तही बीचमे ने पीसनिहारि वा पीसनिहार बाम हाथसँ हथरा चलबैत दहिना हाथे ओइमे झीक दइए। मुदा ओ तँ रहैए अन्नक झीक तखन हमरा जे झीकैए, माने हाथसँ जे झीक कऽ हथराकेँ चलबै छी ओ की भेल? मुदा लगले जीवन कक्काक मन मानि लेलकैन जे एतेटा जिनगी-ले जँ जातक झीका-झिकीमे लगि जाएब तँ जिनगी ससैर कऽ पहाड़पर सँ निच्चाँ खाधिमे खसि पड़त। तँए दहिना हाथे झीक देलौं आकि बामा हाथे, माने जातमे अन्न देलौं, एहेन-एहेन खोंच-खाँचकेँ विचारेसँ सेरियबैत चलब नीक। जखने एहेन-एहेन विचारकेँ सेरियबैत चलब तखने भाकुर माछ जकाँ सुरकुनियाँ मारि चलि सकै छी, नहि तँ छोट-छीन रहितो इचना माछ जकाँ खढ़े-पातमे तेना ओझरा जाएब जे जेतए-सँ चललौं तेतइ रहि जाएब..!

मने-मन जीवन काका सामंजस करिते छला कि दुनू गोरेक गिलासक चाह सठि गेलैन। चाह सठिते जीवन काका कामिनी काकीक हाथमे खाली गिलास पकड़बैत बजला-

"अहींक लगाएल पानो खाएब।"

'पानो खाएब' सुनि कामिनी काकीकेँ सुतरलैन। बजली-

"सासुरमे नइ कहियो पान लगेलौं तँ की बुझै छी जे पान नइ लगबए अबैए।"

कामिनी काकीक बात तँ ओते कटुगर नइ रहैन मुदा मनक जे आवेग रहैन–माने बजैक जे प्रवाह रहैन–तइसँ बुझि पड़लैन जे प्रवाहित जरूर छैथ। तँए प्रवाहित प्रवाहकेँ अपना दिस मोड़ैत जीवन काका बजला-

"अनेरे ने अहाँ मीठोकेँ तीत बनबए लगै छी। हमर विचार अछि जे जहिना हम पान लगा खा मुँहकेँ लाल बना मुँहक लाली बनौने छी तहिना अहूँ जँ बना लेब तखने ने तोता-तोती जकाँ लाल-लाल लोलक मिलानी करैत ललका तिलकोर ताकबो करब आ देख-देख खेबो करब।"

ओना जीवन काका अपना सुढ़िये बजैत रहैथ मुदा कामिनी काकीक मन जीवन कक्काक 'पान लगाएब' सुनि मोरनी जकाँ मुड़ि गेल रहैन। तँए मने-मन सोचए लगली जे नैहरमे पान तँ जरूर लगबै छेलौं। देव स्वरूप पिताकेँ बुझै छेलिऐन, जन्मदाता सेहो छला, हुनका पान लगा खुअबै छेलिऐन, मुदा ऐठाम तँ दुनू परानी मीलि ने तेसरक जन्मदाता छी तैठाम तँ अनाड़ी छीहे। अनाड़ी ई जे ओहन पत्नी जे ने पान लगबै छैथ आ ने खाइ छैथ...।

बजली-

"किए ने पान लगा कऽ खुआएब। मुदा लगाएब सोझहामे।

पहिने गिलास आँगनमे रखने अबै छी।”

ओना, जीवन कक्काक मनमे ठहकलैन जे पत्नी सोझहामे पान लगौती आ जँ एक्के खिल्ली हमरेटा-ले लगबैथ तखन की करब? ओ तँ पान नइ खाइ छैथ..! मन आगू बढ़ि अखाढ़ मासपर गेलैन। केना धु-धु जरल जेठक रौदमे तपल धरती अखाढ़क पानिक फुहार पड़िते फुहराम भऽ सृजन शक्ति सिरजबैत सृजन करए लगैए आ जरैत धरती हरियाए लगैए। ओना तीन मौसमक बीच धरतीकेँ छह रूपक रूपो आ रँगो बनैए, मुदा छबोक अपन-अपन गुण धरमो छै आ रूप धरमो छइहे। जइसँ रंग-रूप एक रहितो गुण-रूपमे अन्तर आबिये जाइ छइ। जहिना जाड़क मौसमसँ निर्मित गरमी मासक पहिल रूप आ अपन बितौल पछातिक जिनगीक रूपमे अन्तर आबिये जाइए, तहिना गरमीसँ बरसात आ गरमी-बरसातक बीचक जे मधुमास अछि, भलेँ ओ जाड़-गरमीक मधुरससँ भिन्न परिस्थितिमे किए ने पैदा भेल हुअए मुदा छी तँ ओहो मधुमासे। तहिना जाड़-बरसातक बीचक सेहो अछिए...।

गिलास धोइ कऽ रखि कामिनी काकी लफरल आँगनसँ दरबज्जापर आबि धमकली-

“लाउ कहाँ अछि पानक समचा।”

गमछाक खूटमे बान्हि जीवन काका पानक सभ समान रखने रहैथ, कन्हापर सँ गमछा उतारि, खूटमे बान्हल पोटरी खोलि आगूमे चौकीपर रखि देलखिन आ अपने कनी पाछू धुसैक देवालमे ओंगैठ गेला।

आगूमे पानक सभ समचा रखि सोझा-सोझी बैस कामिनी काकी पानक पन्नी खोलि पान निकालि एक खिल्ली पातक बैसार केलैन। ओना मनमे ई जरूर रहैन जे देखिऐ अपने की बाजि रहला

अछि। तँए पानक खिल्ली माने पात बैसा कामिनी काकी जेना किछु बिसैर गेल होथि तहिना पान छोड़ि उठि कऽ आँगन दिस बढ़ली।

देवालमे ओंगठल जीवन काका आगूमे पसारल पानक पात देख मने-मन विचार करए लगला जे जखन पति-पत्नीक बीच विषमता रहत, जे जीवन संगिनी सेहो छैथ, तखन दोसर-तेसरक बीच केना नइ रहत। एहेन खाइ[2] तँ जिनगीक क्रियामे अनेको अछि। जाबे तक एहेन-एहेन खाइ बनल रहत ताबे तक चौमास खेत जकाँ समतल समभूम केना बनत? आ जाबे से नइ बनत ताबे समरूप समउपज केना उपैज सकैए। माने ई जे जाबे तक एक-दोसराक बीचक विचार समतल नइ हएत, एक गहराइ नहि बनत, ताबे तक समरूप विचार मनमे केना उठत आ ओकर समरूप निर्णय करैत समतल बाट पकैड़ आगू केना बढ़ि सकब? संगे-संग आगू बढ़ैले तँ एकरूपताक खगता अछिए। जँ से नहि हएत तँ अनभुआर जगहमे आकि कोनो समस्या एलापर जँ एकरूप भाइयो सकै छी तँ ओहन अपरिचित जगहमे तँ एकरूपता भँग भाइये जाएत जइसँ संगपनामे विघ्न-बाधा उठबे करत। जखन चलैक बाटमे–माने जिनगीक संग चलैमे–विघ्न-बाधा उपस्थित हएत तखन चलब तँ दुष्कर भाइये जाएत। असकर चलब, दोसकर वा दसकर चलब आ दुष्कर चलबमे अन्तर अछिए...।

मुदा जीवन कक्काक मनमे लगले उठलैन जे अखन जे परिस्थिति आगूमे उपस्थित भऽ गेल अछि ओकरा सोलहन्नी मानियोँ लेब धड़फड़ी हएत। जँ पानक पात पसारि चून लगौने रहितैथ तखन थोड़-थाड़ मानलो जा सकै छल मुदा अखन तँ पहिलुके डेग उठौलैन अछि, जइमे अवसरो अछि, माने दोसर खिल्ली पसारैक-बैसबैक, तखन किए ने पत्नियेँपर अखन रहए दिऐन जे आगू की कए रहली अछि। जँ

[2] खाधि

सुहरदे गतिये दोसरो खिल्ली बैसौती तँ बड़बढ़ियाँ। जखन चाह संगे पीलौं तखन जँ पाने खाएब तँ ई कोन बड़का मतहानि भेल जे मनहानि हएत।

मने-मन जीवन काका अपन हारि-जीतक विचार करैत चुप-चाप आँखिकेँ अपन छोट करैत माने दुनू पीपनीकेँ तिरछियबैत चिन्तक रूप जकाँ देवालमे ओंगठल पत्नीक प्रतीक्षा करए लगला। तैबीच आँगनसँ कामिनी काकी सेहो पहुँचली। पहुँचते अपन जगह पकड़ली–माने पहिने जेना बैसल छेली तहिना बैसली। बैसते जेना सभ किछु बिसैर गेली तहिना पानक पन्नीकेँ हाँइ-हाँइ मोड़ए लगली। ओना, मनमे ई बात जरूर नचैत रहैन जे देखिऐ, अपना बेरमे पति केते इमानदार छैथ। अनका तँ सभकेँ सभ कहैए। कहलो गेल अछि जे ‘पण्डित होई जो गाल बजाबा।’ गाल बजाएब अलग भेल आ गाल भरब अलग भेल। पान लगा पतिकेँ देबैन, ओ हमरे लगौलहा पानसँ अपन गाल भरि लेता मुदा हमर गाल..?

ओना, जीवनो काका गबैद कऽ गबदियाइत गबदी भरि पत्नीक लीलाभूमि देखए चाहै छला मुदा कामिनियोँ काकी तेहने शिकारी जकाँ शिकार पसारली जे शिकार केकर छी आ शिकारी के अछि ई बुझब कठिन हुअ लगल। माने दूटा शिकारी जँ कोनो एकटा शिकारपर वाण फेकए आ दुनू तीरक बीच तिरियाइत शिकार खसए तँ ओइठाम निर्णय करब कठिन भाइये जाइए। जेना राणा प्रताप दुनू भाइक बीच भेल रहैन...। तैबीच कामिनी काकी दोसर वाण छोड़ैत बजली-

“पानमे दइले जे चून रखने छी, ओ तेहेन मरचून जकाँ बनि गेल अछि जे पातमे लागबो कठिन अछि तँए कनी पानि देने आँगनसँ अबै छी।”

पत्नीक बात सुनि जीवन कक्काक मनमे उठलैन जे किछु बाजी। बाजी ई जे कहिऐन चाह भेल इच्छा आ पान भेल पेनाइ, माने इच्छाक पूर्ति। मुदा फेर लगले मन मनाही केलकैन जे अखन परीक्षाक घड़ी अछि तँए राजेन्द्र बाबू जकाँ रस्तामे नाच देखब समए नोकसान करब हएत। भाय जखन परीक्षा दइले विदा भेलौं तखन समैसँ पहिनहि जँ नहि पहुँचब तँ अपनकेँ तैयार केना बुझब। ई तँ नहि जे जेना लोक बजैए जे ‘भोजक बेर कुमहर रोपने काज थोड़े चलत।’ मुदा जँ अही विचारकेँ ऐ रूपे राखल जाए जे भोजमे कुमहरक तरकारी वा तीमन बनिते ने अछि। तखन ने कुमहरक संग न्याय भेल, से तँ नहियेँ अछि...। विचारक बोनमे तेना जीवन काका ओझरा गेल छला जे पत्नीक बात अनसुनियेँ रहि गेलैन। माने मने-मन जीवन काका विचारिये रहल छला तैबीच कामिनी काकी चूनमे पानि दइले आँगन चलि गेली।

कामिनी काकीकेँ परोछ भेने माने दरबज्जासँ आँगन दिस बढ़ने जीवन कक्काक मनमे दोसर विचार फुनफुना कऽ फुनकलैन। फुनैकते विचारए लगला जे पानक जे सरंजाम अछि–माने पात, चून, खएर, सुपारी, जर्दा इत्यादि–ओ तँ परिवारक आमदनीक खर्च भेल, जे दुनू परानीक भेल, मुदा खेबाकाल हम खाएब आ पत्नी नइ खेती, ई तँ सोझा-सोझी अनुचित भेल। पान कि कोनो दवाइ छी जे रोगी खाएत तँ रोग भगतै आ निरोग खाएत तँ रोग बढ़तै।

तैबीच कामिनी काकी चूनमे पानि देने दरबज्जापर पहुँचली। दरबज्जापर पहुँचते जीवन काका कनडेरिये आँखि पत्नीक मुँहक चुहचुहीपर देलखिन। ओना, कोनो काज करैक तीन अवस्था होइए आ तीनू अवस्थाक चुहचुही सेहो तीन रंगक होइए। पहिल जँ काज सफलपूर्वक होइक संभावना रहल तखुनका चुहचुही, दोसर काज सफल-असफल हेबाक संभावना जाबे नइ बनल रहल तखुनका

चुहचुही आ जखन काज सफल नइ होइक संभावना स्पष्ट भऽ गेल रहल तखुनका चुहचुही...।

ओना, कामिनी काकीक चुहचुही देख जीवन काका बुझि गेला जे पत्नीक चुहचुहीसँ साफ झलैक रहल अछि जे शिकार हुनका हाथ छैन। माने पत्नीक सफल विचार छैन।

जीवन कक्काक मनमे लगले दोसर विचार जगलैन। विचार जगिते बिसवास सेहो जगलैन। बिसवास ई जगलैन जे जहिना चाहो पीबैकाल कहने छेलिऐन जे दुनू गोरे संगे-संग एकठाम बैस चाह पीब। जखन एकरूपताक प्रस्ताव रखि दुनू गोरे संगे चाह पीलौं, तखन चाहक पछातिक ने पान भेल। जखन हुनको बुझले बात छैन तखन जँ पानमे कटौती करती, माने हमरा-ले लगौती आ अपना-ले नइ लगौती, तइमे हमर कोन दोख। किए ने हमहीं छातीपर चढ़ि फटकारि कऽ कहबैन जे 'यएह अहाँक इमान छी, जे अपनो हक हिस्सा छोड़ि कऽ भागि रहल छी। जखन अपने हक-हिस्सा छोड़ि कियो पड़ा जाएत तखन दोख केकर।

अपन सुतरल विचारक मथनसँ जीवन कक्काक मन कलिएलैन। कलियाइते मनक विचारकेँ मनेमे रससँ रसरसबैत गुड़-चाउर फाँकए लगला।

पानमे चून लगबैसँ पहिने कामिनी काकी जीवन काका दिस आँखि उठा कऽ तकला जे किछु बाजि रहला अछि कि नहि। ओना, जीवन कक्काक मन मनेमे मन्हुआ कऽ मुरझाए लगलैन। एकटा चूक अपनो जीवनमे जरूर भेल अछि। ओ ई जे अखन धरिक जिनगीमे आदेश दैत रहलयैन जे अमुक काज करू, अमुक काज नइ करू। मुदा अपना विचारमे केना एहेन विचार-विचरण अबितैन जे अपने ई बात बुझए लगितैथ जे अमुक काज करैक अछि आ अमुक काज नइ करैक

अछि। ई तँ चिन्तनक अतल तल ने भेल जे अखन तक छुटल रहल! खाएर जे रहल, पाछू उनैट देखए लगब तँ फेर सम्बन्ध पछुआ जाएत। तँए नीक हएत जे विचारक उत्स केना पत्नीक मनमे रोपि दिऐन जे स्वयं ओ पत्नीक रूपमे ठाढ़ भऽ चलए लगती। अगर पति अपनाकेँ पतित्वक रूप धड़ि-पकैड़ चलैथ आ पत्नी जँ अपन पत्नीत्वक रूपक धड़ि-पकैड़ चलैथ तँ जिनगीमे दोषारोपण केतए हएत। जँ एक-दोसराक बीच दोषारोपण नइ हएत तखन दुषित मन केना बनत। आ जँ दुषित मन नहि बनत तँ जिनगी दूषित भऽ दुखित केना हएत..!

जीवन कक्काक मन कलशलैन, कलैशते बजला-

"चाहे-पानमे दिन बिता लेब तखन तँ भेल जिनगीक मोटा उठाएब आ मोटेक विचार करब। केतेकाल भऽ गेल कहना जे किछु विचार करब अछि।"

पतिक बात सुनि कामिनी काकी अपन देहक पानि जगबैत बजली-

"आब पानक खर्चा बढ़ि जाएत।"

पत्नीक बात सुनि जीवन काका बजला-

"जाबे पानक खर्च नहि बढ़ाएब ताबे मुँहमे लाली केना औत। आ जाबे मुँहमे लाली नइ औत ताबे जिनगीकेँ जिनगी केना बुझबै।"

ओना जीवन कक्काक विचार कामिनी काकी नीक जकाँ नइ बुझली मुदा भगवानक मन्दिरक पुजारी जकाँ अपनाकेँ समर्पित करैत माने तियागक पराकाष्टा देखबैत बजली-

"अहीं ने हमर सभ किछु छी। अहींक आश्रयमे ने हमहूँ बसब।"

पत्नीक सिनेहसँ बोझिल बदलाएल बादल जकाँ विचारक रूप

देख जीवन काका बजला-

"जाए दियौ, जहिना समैकेँ तीत-मीठ सुआद नहि बुझि गेमेलौं तहिना बुझियौ जे जिनगियो गेल। मुदा आब से नहि, आइ जिनगीमे किछु एहेन काजसँ संकल्पित हेबाक अछि जइसँ पति-पत्नीक पहचान बनए।"

हँसैत कामिनी काकी बजली-

"तइले कोनो हाथ थोड़े पकड़ै छी, सदिकाल तँ हाथ पकड़िये चलए चाहै छी किने, जहिना माता-पिता हाथ पकड़ा अपना घरसँ विदा केने छला तहिना पकड़नहि छी आ पकड़नहि रहब।"

◌

शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017

उचितवक्ता

चारिम दिन बेरूपहर जे फटेसर भाय ओछाइनपर खसला से खसले छैथ। ओना सभ दिन नजैरपर पड़िते छला आ गामक नीक-बेजाए गपो-सप्प होइते आबि रहल छल, मुदा तीन दिनसँ नइ भेटल छला तँए मनमे भेल जे घरेपर जा खोज-पुछारि करिऐन जे केतौ बाहर गेल छैथ आकि मन-तन खराप भऽ गेलैन।

फटेसर भायसँ भेँट करैक विचार मनमे पक्का भऽ गेल। मुदा लगले उठि गेल जे गामेक बात छी तहूमे एक्के टोलक, जँ कोनो तेहेन रोगे-वियाधि आकि कोनो तेहेन काजेसँ जँ बाहरो गेल रहितैथ तँ उड़न्तीयो तँ सुनबे केने रहितौं, सेहो नहियेँ सुनलौं.., तँए बहुत विषाक्त स्थिति नहियेँ अछि जे जिज्ञासाक रूपमे भेँट करए जाएब। भेँटो-घाँट करैक तँ अपन सीमा अछि। मन आगू-पाछू करए लगल। मुदा विचार तँ पक्का बनि गेल छल जे फटेसर भायसँ भेँट करए जाएब। फेर लगले मन बदलए लगल। बदलैत मनमे विचारक रस्तो बदलए लगल। रस्ता बदैलते मन बदैल गेल जइसँ विचारो बदैल गेल। विचारकेँ बदैलते विचार केलौं जे सोझे डारिये भेँट करए नइ जाएब, ओमहुरका जँ कोनो काज हएत तँ सेहो कऽ लेब आ रस्ते-रस्ते भेँटो कऽ लेबैन। सएह विचारि दुनू हँसूआ लऽ धार करबैले कमरसाइर विदा भेलौं।

फटेसर भायकेँ गामक लोक केतेको नाओंसँ जनबो करै छैन आ अपन-अपन सम्बन्धे नाउओं लइ छैन। जेना कए गोरे फटेसर भायकेँ ‘लबड़ा’ कहै छैन, किछु गोरे ‘लेबड़ा’ सेहो कहै छैन, तहिना किछु गोरे ‘फटहा’ कहै छैन, तँ किछु गोरे ‘उचितवक्ता’ सेहो कहै छैन। ओना हम आइये नहि जखन हाइये स्कूलमे ओ दसमामे आ अपने अठमामे पढ़ैत रही तहियेसँ ‘फटेसर भाय’ कहै छिऐन। विद्यार्थी तँ ओते नीक नहियेँ छला मुदा पाइबला बापक बेटा रहने किताब बेसी कीनै छला, संग-संग ईहो गुण छेलैन जे जँ कियो कोनो किताब पढ़ैले मंगै छेलैन तँ जरूर दइ छेलखिन। से चाहे ओ पढ़ल होनि वा नहि। माने ई जे फटेसर भाय जखन किताब किनैले दोकानपर जाइ छला तखन दोकानदारोक विचार आ दोकानपर जे किताब कीनिनिहार गहिंकी सभ रहै छल तिनकोसँ विचार लैत एक-एक विषयक चरि-चरि-पँच-पँचटा किताब कीनै छला। मुदा पढ़ैक नामपर किताबक नाओं, लेखकक नाओं आ किताबक दाम रटि लैथ बाँकी किताबेमे छोड़ि दइ छेलखिन। जइसँ जेकरा किताब कीनैक पाइ नइ रहै छेलै ओकरो थोड़े सहुलियत भेट जाइ छेलै, जइसँ निचलो किलासक विद्यार्थी आ अपनो किलासक संगी सभ ‘भाइये’ कहै छेलैन माने ‘फटेसर भाय’। ओही सम्बन्धे हमहूँ ‘फटेसर भाय’ कहिते आबि रहल छिऐन। कमरसाइर पहुँचते लखन ठाकुरकेँ पुछलिऐ-

“लखन, फटेसर भाय गाममे छैथ की नहि?”

लखन ठाकुर रसगर लोक, माने गामक मनचोभिया नाचसँ लऽ कऽ कीर्तन मण्डली तकक रेहल-खेहल। सभ कम्पनी माने गामक जेतेक गीत-संगीतसँ जुड़ल संगठन अछि, सबहक बीच रहनिहार लखन ठाकुर। तँए सदिकाल मनमे कखनो सुपेन धार तँ कखनो गहुमा, कखनो भुतही-बलान तँ कखनो कमला धार बहिते रहै छै जइसँ मन पीताएल कम मुदा प्रीताएल बेसी रहिते छइ।

हमर बात सुनिते लखन ठाकुर कनडेरिये आँखिये तकलक। भलेँ ओकरा नजैरमे गहुमा-कोसी बहैत होउ मुदा अपना नजैरमे तँ गामक स्वच्छ पोखरिये-सरोवर छल। ओना, देखै-देखैक अपन-अपन नजैर अपन-अपन विचारक धारमे सेहो होइते छइ। फटेसर भाइक परिवारक कोनो समाचार[3]क जानकारी नइ छल, समाजिक रूपमे लखन ठाकुरसँ पुछने छेलिऐ। मुदा लखन ठाकुर शिकारी लोक, ओकरा पता लगि चुकल छेलै जे फटेसर भाइक जेठ बेटी–जे कौलेजमे बी.ए. ऑनर्सक तेसर पार्टमे पढ़ैए–चारिमे दिन एकटा कौलेजीए लड़काक संग गामसँ पड़ा गेल। तँए लखन ठाकुरकेँ हमरा बातक विशेष अर्थ लगलै। विशेष अर्थ लगने विशेष भाषामे बाजल-

“भाय साहैब, बिनु खरचे बेटी घरसँ विदा हुअए आकि खेतेमे कुशियार बिका जाए तँ ओ तेलोसँ चिक्कन भेल किने!”

ओना लखन ठाकुरकेँ हमहूँ चिन्हते छी जे रसिके नहि मखोलिया सेहो अछि, तँए ओकरा गपकेँ ओही भावमे हमहींटा नहि आनो-आन देखबे करैए। एक तँ पसारी लखन ठाकुर जेकरा दोकानपर दू-चारि आदमी अपन-अपन काजे रहिते छै, तैबीच ने भरि दिन लोकेक संग बितबैए। लोकक बीच जेकर जीवन चलै छै ओ जँ कर्कश बनि मर्कश बनल रहत तँ भरि दिन रक्के-टोकी आ झगड़े-झंझट होइत रहत। मुदा जिनगी तँ ओहन बनि गेल रहैए, माने लोकक बीच तखने लोक बसि सकैए जखन बेकतीगत सभ योगक क्रिया या तँ सम्पन्न केला पछाइत वा छोड़िये कऽ सहयोग क्रियामे लागत। जखने लोकक बीच बसब तखन सहयोग क्रियाक सभसँ बेसी खगता होइते छइ। लखन ठाकुर अपन बोली-वाणीकेँ नाचक मंच परहक जे अछि ओकरे भरि दिन लाड़ैत-चाड़ैत रहैए। जइसँ तमसाएलो लोकक तामस

[3] घटना

कमकमाइत कमिये जाइ छइ। कमरसाइरमे दुइए गोरे रही। तैसंग लखन ठाकुर सभ दिनसँ जेठ बुझि धाक करिते अछि। ओना गप-सप्पक क्रममे कखन लखन ठाकुर ऐंड़ी चढ़ि ऐंरिया लगत आकि टिक चढ़ि टिकिया लगत ई तँ पारखीए परेख सकैए, सभ नहियेँ परेख सकैए। ओना लखन ठाकुर अपने अपनाकेँ परेख रहल अछि वा नहि ई तँ ओ जानए मुदा जे कठिन श्रमक समए–घन्टामे निर्धारित–अछि तइमे ओकर बेसी समए जाइ छै तइसँ बुझि पड़ैए जे भरिसक ओ अपने अपन जिनगीक बात नहि बुझि पबैए। बजलौं-

“लखन, एना छिड़ियाएल मौगीक गप किए करै छह। जँ आन रहैत तखन सोहंतगरो होइत।”

हमर बात सुनिते लखन अकचका गेल। बाजल-

“भाय साहैब, हमरा ते भेल जे अहाँ लखना बुझि जिनगीक लेख लिख रहलौं हेन, तँए…।”

मनमे भेल अनेरे आलतू-फालतू गप-सप्पमे समयकेँ गमाएब बुड़िबकी हएत। तँए पाहि लगा पहिलुके जे गप छल ‘फटेसर भाय गाममे छैथ की नहि’ तहीपर आबी तँए दोहरा देलिऐ। ओना गप-सप्पमे पीछराह लोक लखन ठाकुर अछिए। तँए एक्के बेरे धरती नइ पकड़लक। पीछड़ैत बाजल-

“भाय साहैब, फटेसर भाय गाममे छैथो आ नहियोँ छैथ।”

लखन ठाकुरक बातक कोनो अरथे ने लागल। गुम भेल मने-मन विचार करए लगलौं जे ई की कहलक! फेर मनमे उठल जे हाथक चूड़ी देखैले जँ लोक ऐना ताकए लागए तँ ओ कालीए-दास सन काबिल ने भेल। बजलौं-

“से की लखन?”

गैंची माछ जकाँ लखन पीछराहक संग गैंचियाहो तँ अछिए।

समाजमे ऐहेन एकटा धारे बहैए जइमे गैंचीए माछ अधिक अछि जे सोझकेँ टेँढ़ करैत-करैत तेना टेँढ़ कऽ देत जे ओकर रूपे बिगाड़ि देत। तहिना टेँढ़केँ तेना लिबा-लिबा ओइपर जअ-तिल फेकैत नून-मिरचाइ मिलबैत टेँढ़ोकेँ सोझ धार जकाँ बहबए लगैए। लखन ठाकुर बाजल-

“भाय साहैब, अहाँ ते अपने ओहन खेलाड़ी छी जे गामक उड़ैत सभ कौआक किदैन देखै छी, तखन अनेरे हमर मन टोबै छी।”

ओना लखन ठाकुर अपना जनैत घुमा-फिरा कऽ सभ बात कहि देलक मुदा नियमक भाषामे नहि कहि साहित्यिक भाषामे बाजल, तँए मन कनी आगू-पाछू करए लगल। पाछू होइते विचार उठल जे किए ने लखनकेँ अपन चेहरा देखा दिऐ। जखन ओ चेहरा देखत तखन अपने विचारि लेत। बजलौं-

“लखन तोरा हम छोट भैयारी बुझै छिअ, एक तँ ओहुना केकरो लग झूठ नइ बाजी मुदा केतौ-केतौ समैयक अँटावेश करैले भाषाकेँ मोड़ए पड़ै छै, मुदा तोरा लग कोनो बात छिपा कऽ थोड़े राखब।”

हमर बात सुनिते लखन जेना पैछले डेगे पाछू दौड़ए लगल। मुदा थोड़ेकालक पछाइत ठाढ़ होइते बाजल-

“ऐ बीचमे गाममे की सभ भेल हेन से नइ बुझलिऐ?”

फटेसर भायसँ आगू बढ़ि लखन गामेक बात उठा देलक। मुदा खढ़ियाक शिकार केनिहारकेँ तँ खढ़ियाएले चालि पकैड़ ने दौड़ए पड़ै छै, बजलौं-

“गाम की कनियेँटा अछि जे गामक सभ बात बुझबै, मुदा किछु बात तँ बुझबे करबै सेहो तँ अछिए”

लखन ठाकुर बाजल-

“उचितवक्ता भायकेँ सभ उचितपना घोंसैर गेलैन!”

ओना उचितवक्ता सुनि फटेसर भाय बुझि गेलौं, मुदा सभ उचितपना घोंसैर गेलैन से बुझबे ने केलौं। बजलौं-

“की उचितवक्ताक उचितपना लखन?”

ऐगला भौकी मारि लखन बाजल-

“अपनापर तँ एहेन खोदा मियाँ केकरो ने कर।”

एक तँ ओहिना जे बात बुझए चाहै छी, तेकर चारूकातक चबुतरे लखन तेना ने जोड़ि दइए जे अपनो काते-कात घुमै छी जइसँ लगमे गेले ने होइए। सोचलौं एना नहि हएत दोसर रस्ता धड़ए पड़त। मने-मन विचारए लगलौं जे आब की करी। मनकेँ चारू दिस दौड़ेलौं। एकटा युक्ति मनमे आएल। अबिते बजलौं-

“लखन, दुनू हँसुआमे धारो भाइये गेल आब जाइ छिअ।”

जहिना कोनो कथाकार अपन कथाक नाँगैर पकैड़ बेसी आगू बढ़ि जाइ छैथ आ पाछू उनैट जखन तकै छैथ आ बुझि पड़ै छैन जे घरक नमती नमहर भेल जाइए तखन कोनियाँ छपैट जहिना घरकेँ छोट घरवाह करैए तहिना ने ओहो करिते छैथ मुदा से रच्छ रहल जे हमर बात सुनिते लखन ठाकुर बाजल-

“भाय साहैब, एक भोरसँ पसार लगौने छी, लोहा पीटैत-पीटैत डेन-हाथ दुखा गेल आ अखन तक जलखैयो ने केलौं हेन तँए एके मिनट आरो थम्हू सभ कहि दइ छी।”

लखन ठाकुरक ‘एक मिनट’ घड़ीबला छी कि समैबला आकि काजबला से तँ पछाइत बुझब मुदा मनमे एते जरूर भेल जे अन्तहीन समए एक मिनटपर आएल। जखने केकरो मन मिनटक महत् बुझए लगल तखने ओकर घन्टो-दिनक संग जिनगीक महत् बढ़िये जाइए। मुदा तँए एहेन नहि अछि जे मिनटक माने घन्टो आ दिनो नइ होइए। एक मिनटक जे काज रहैए ओ दिनक-दिन कि मासक-मासो पछुआ

नइ जाइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओना, ओते औगताएल अपनो नहियेँ रही किएक तँ जानियेँ कऽ तँ फटेसर भाइक समाचार बुझए गेल रही मुदा लखन ठाकुरकेँ बहबारि जकाँ बहैत विचारकेँ पकड़ै दुआरे बाजल रही। अकछीपन देखबैत बजलौं-

“अखन जाए दएह लखन, दोसर दिन बुझल जेतइ। बड़ीकालसँ चाह नइ पीलौं हेन से मन छुछुआइए।”

चाहक नाओं सुनिते लखन ठाकुर बाजल-

“भाय साहैब, भने मन पाड़ि देलौं हमहूँ जलखै केनाइ छोड़ि दइ छिऐ, एक्के बेर नहा कऽ खाएब। कनियेँकालक काजो पसारमे रहि गेल अछि, ओकरा काइये कऽ उठब। भाथी परक चाह तँ नहि पीने हएब, अहीठाम बनबै छी।”

लखन ठाकुरक पसार देख अपने मनमे हुअ लगल जे अनेरे चाहक बहाना बनेलौं। जे गप कहैक समए लखन एक मिनट बतौने छल से आब आधा घन्टामे चाहे बनाएत। मुदा मनमे भेल फटेसर भाइक समाचारो तँ बुझबे अछि। आइ ने मोबाइल, रेडियो, टी.वी.सँ लोक समाचार बुझैए मुदा गामक पसारोक जगह तँ गामक समाचारक रेडियो-स्टेशने छी। रंग-रंगक लोक आबि अपन-अपन समाचार एतए बँटिते अछि। ओना, भाथीपर चाह लखन ठाकुर सभ दिन बनबैए, जे सोल्होअना चामेक बनल अछि। तेकर चुल्हि बना लखन ठाकुर चाह बनौत, तँए कनी मनमे उत्सुकता आबिये गेल रहए। उत्सुकताक कारण भेल जे जखन कल[4] गड़ौने रही तखन गाममे घघौंज उठबे कएल जे चमड़ाक बनल वासरक कलक पानि अशुद्ध भेल तँए लोक नहा सकैए, दोगा-दोगी पीबियो सकैए मुदा पूजा-पाठ केना हएत। ओना तरकारी आकि तीमनमे जँ बेराबेरी सामान नइ दए एक्के बेर सभ

[4] चापाकल

किछु दऽ देब तखन ओ उसनलहे भेल किने, चटकदार आकि सुअदगर थोड़े बनत। जखन लोक कलपर नहेबे करत, पानि पीबे करत तखन पूजाक बाँकीए की रहल जे तइले अनेरे लोक मथापची करत। लोकेमे ने देव आ देबेमे ने लेब सेहो अछिए। ओना अपनो संस्कार[5] डोल-पत्ता हुअ लगल। एक तँ चमड़ाक भाथी तैसंग आगूमे चुल्हि जकाँ नीपैन-बाढ़ैन नहि, मुदा लगले भेल जखन लखन ठाकुर सभ दिन चाह बना पीबिते अछि तखन हमरे कोन छुति। आ जँ छुतियो तँ एकबेरिये ने, बहुबेरिया तँ नहियेँ। नीक जकाँ बुझैले मुँह छोहैन केलौं-

“लखन, चाहमे बड़ देरी लगतह, अखन जाए दएह।”

ओना गप-सप्पक क्रममे फटेसर भायबला बात मनसँ बहैट गेल छल। आगूमे आबि गेल छल भाथी परहक चाह।

लखन बाजल-

“भाय साहैब, जाबे अहाँ चाह पीबैक मन सोल्होअना बनाएब तइसँ पहिने हमर चाह बनि जाएत। हमर भाथी कि कोनो मुइलहा चुल्हि छी जे साँझक संग मास-मास दिन उपासले रहैए।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“से की लखन?”

लखनकेँ जेना गुरुत्वक आभास भेलै तहिना अगधाइत बाजल-

“भाय साहैब, हमर भाथी कि कखनो सेराइए, जखन मन भेल तखन पजारि लेलौं।”

गप्पा-गपी होइते छल कि बिच्चेमे लखन ठाकुर चाह बना गिलास हाथमे धरा देलक। नव काज देखलौं तँए कर्ताकेँ (केनिहारकेँ)

[5] मन

चाबस्सी देबाके छल मुदा मुँहमे चाह नेने बिना पहिने जँ चाबस्सी दऽ देबै आ चाह पीबै-जोकर नइ हएत तखन लखन ठाकुरक चाबस्सी घुमि थोड़े जाएत, ओकरा तँ दऽ देने रहबै। जँ मंगबो करबै तँ ओ घुमौत किए, ओ तँ ओकरा करममे सटि गेल रहतै। तहूमे जखन सभ दिन बना कऽ अपनो पीबैए आ दोसराइतोकेँ पीऐबते अछि तखन जँ आनठाम केतौ बजबो करब तँ लोक थोड़े हमर बात सुनत..! हाँइ-हाँइ कऽ एक घोंट चाह पीलौं। नीक लागल। बजलौं-

“लखन तोरा गैस चुल्हिक कोनो खगता नइ छह।”

लखन बाजल-

“हमरा की कोनो कुकुर कटने अछि जे अपन जारैन छोड़ि अनकर लेब। देखते छिऐ जे सालमे तेते लकड़ीक काज करै छी जे भाथियो चलैए, भानसक चुल्हियो चलैए आ उगरा-पुगरा कातिकमे बेचियो लइ छी। खाली कनी-मनी पत्थर-कोयला कीनै छी।”

कातिकक आमदनी मनमे अबिते लखन ठाकुरकेँ चपचपाइत देखलिऐ। टोकारा दैत बजलौं-

“कातिकेमे किए जारैन बेचै छह?”

लखन बाजल-

“भाय साहैब, जे सुतिहार लोक छैथ ओ अपन माघक घूरक ओरियान कऽ लइ छैथ आ जे गैसपर चलनिहार छैथ हुनकर तँ ट्रेनिंग कौलेजे ने माघ छी।”

चाह पीबिते लखन ठाकुर पानो खुऔलक, अपनो खेलक। दुनू गोरेक मन-मिजाज पिसाज भऽ मन-मस्तिष्क उत्कृष्ट भेल, उत्कृष्ट होइते एकरंगाह भऽ गेल। पाछू उनैट तकलौं तँ बुझि पड़ल जे अनेरे समय पानिमे बहि रहल अछि। बजलौं-

“लखन, आब अपन एक मिनट समयपर आबह।”

ले बलैया! लखन ठाकुर पैछला बात दिस नहि बढ़ि मुस्कियाइत बाजल-

“भाय साहैब, अहूँ की सभ दिन अबै छी। भेल तँ साल-छह मासपर भेँट होइ छी, तखन एना धड़फड़ेने काज चलत। माटि-तरिक...।”

लखन ठाकुरक बात सुनि अनउतरित भऽ गेलौं मुदा अपन माथक टेटर ओकरा माथमे साटैत कहलिऐ-

“लखन, तोहूँ अखन तक बासिये मुहेँ छह आ काजो समटाइये गेल, तँए तेना कऽ बाजह जे सभ काज एकेबेर सम्पन्न हुअ।”

एक तँ चाहक संग पानिक तैपर सँ पानसाए नम्बर देल पान लखनक मुँहमे फुला गेल छल तँए विचार सेहो फुल-फुलाइ-जोकर भाइये गेल छेलइ। बाजल-

“भाय साहैब, दस-पाँट मिनट देरीकेँ हम देरी थोड़े बुझै छी, बिनु खेनौं दिन-राति खटि सकै छी।”

लखन ठाकुरक कर्मठ बात सुनि मनमे उठल जे जे आदमी भरि दिन लोहा पीटैए तेकरो जखन अभ्यास भेने भरि दिन किछु ने बुझि पड़ै छै तँ जरूर ओ कर्मसाध्य भेल। बजलौं-

“लखन, तोरे सन-सन लोकक खगता गाममे अछि। जँ तोरा सन-सन लोक गाममे ठाढ़ भऽ जाएत तँ जरूर गामक उद्धार हेबे करत।”

हमर बात सुनि लखनक मनमे कर्मतुष्टि जगल। कर्मतुष्टि जगिते बाजल-

“भाय साहैब, जइ समाजमे जन्म लेलौं, बच्चासँ सियान भेलौं

तइ समाजक रीन जँ नइ चुकाएब तँ मुइला पछातियो दोखीक पिण्ड थोड़े छुटत। तहूमे तेहेन नकुल समांग सभ भेल जाइए जे भरि दिन टोना-मानीमे लगल रहैए, तैपर जँ टोकबै तँ खिसिया कऽ ओ सात पीढ़ीकेँ उकैट उद्धार कऽ देत।”

लखन ठाकुरक बात सुनि सोचलौं जे जेते विचारकेँ जत्तामे जातब तेते ओइमे झीक देब हएत आ जेते झीक पड़त तेते विचार पातर होइत नमड़ैत जाएत! तइसँ नीक जे किछु बजबे ने करब। अपने तँ बजैत-बजैत लखन पाहिपर चलि औत। सएह भेल।

लखन ठाकुर बाजल-

“भाय साहैब, फटेसर भाइक विषयमे पुछने छेलौं।”

फटेसर भाइक नाओं सुनिते अकचकाइत बजलौं-

“हम ते बिसरिये गेल छेलौं। भने तूँ मन पाड़लह।”

बाजल-

“भाय साहैब, हम पसारी छी, दस दुआरी छी तँए विचारकेँ कनी दाबि कऽ बाजए पड़ैए। मुदा अखन दुइए गोरे छी तँए खोलि कऽ कहै छी।”

लखन ठाकुरक बात सुनि मनमे भेल जे जरूर असल बात बाजत। तँए बोलीक अवाजकेँ कम करैत बजलौं-

“लखन, अपने सभ गामक कर्ता-धर्ता भेलिऐ, जँ अपने सभ कोनो काजे आकि विचारेमे कलछपन करबै तँ ओते गामेक ने नोकसान हएत। लोक तँ बहुरंगी अछिए। समाजक लोक तेहेन कुकुरचालि चलैए जे अपन समाजिक सम्बन्धकेँ कोठीक कान्हपर रखि आन समाजक सम्बन्धकेँ जीअबैत अपनाकेँ मारि रहल अछि।”

हमर बात जेना लखनकेँ मनमे गड़लै। बाजल-

“भाय साहैब, से की कोनो चोराएल-छिपाएल अछि। भोलबाकेँ देखते छिऐ जे किसुनलालक भैयारी छी, मुदा सासुरक लाटे सार-बहिनोइ जकाँ हँसी-चौल करैए।”

बजैत-बजैत लखन गंभीर हुअ लगल। लखनक गंभीर होइत चेहरामे मलिनता आबए लगलै, जेना मिलनताक भाव जगलै। बुझि पड़ल जे समाजिक सम्बन्धकेँ लखन सभसँ ऊपर मानैए। मुदा एहेन रूप समाजक आइये नहि बनल अछि, बहुत पहिनेसँ आबि रहल अछि तँए जेहेन रोग रहैए ओकर इलाजो जखन ओहने हएत तखने ने ओ छुटत। मुदा एहेन-एहेन रोग कोनो एकेटा थोड़े अछि जे झटपटमे इलाजो कऽ लेब। बजलौं-

“फटेसर भायबला गप छुटि गेलह लखन।”

फटेसर भायबला गप छुटब सुनिते लखन ठाकुर रोमांचित भऽ गेल। देहक सुटकल रोआँ भुलैक उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलइ। बोलीमे ओज सेहो आबि गेलइ। बाजल-

“फटेसर भाय, समाजिक नहि असामाजिक विचारक लोक छैथ।”

लखनक बात सुनि मन ओहिना मुड़िया गेल जेना कोनो लत्तीक मुड़ी अपने संग सिरमे मुड़िया जाइए। मुड़िया ई गेल जे लखन समाजिक आ असामाजिक विचारक चर्च केलक अछि। ओना, एक शब्दक अरथो जगह पेब-पेब बदैल जाइए, आ तेतबे नहि, लोक लोकक विचारो पेब–माने वैचारिक स्तरक हिसाबसँ सेहो–बदैल जाइए तँए अपन मन की बुझि रहल अछि आ लखनक मन की बुझि बाजल से तँ खुलासा भेला पछातिये बुझि सकै छी।

बजलौं-

“से की लखन?”

लखन बाजल-

“अहूँ अनाड़ी जकाँ बजै छी भाय साहैब। भरि दिन हम पसारमे बैसल-बैसल लोहो-लकड़ीक काज करै छी आ जे कियो काजे अबै छैथ हुनकासँ गपो-सप्प करिते छी।”

मुड़ी डोलबैत बजलौं-

“हँ, से तँ होइते हेतह। ऐमे के नइ कहतह।”

हमरा बातसँ लखनकेँ सह भेटल। समस्याक लग आबि सहैट कऽ बाजल-

“भाय साहैब, अहाँकेँ तँ बुझले हएत जे चारिम दिन फटेसर भाइक बेटी मनोहर संगे गामसँ पड़ा गेल।”

अपना नइ बुझल छल तँए बिच्चेमे बजलौं-

“धरमागती कहै छिअ लखन, नइ बुझल अछि।”

हमर बात सुनिते लखनक मन मानि गेल जे भऽ सकैए। अनकर बात-ले आन किए झूठ बाजत। अपन हानि-लाभ बेरमे जे करैत हुअए मुदा जैठाम कोनो आमद-खर्च नइ छै तैठाम लोक अनेरे झूठ किए बाजत। बाजल-

“फटेसरक जे जेठ बेटी बेबी छै, ओ कौलेजमे पढ़ैए। भरिसक बी.ए. फाइनलक परीक्षा देत। बी.ए. केला पछाइत ते बिआहे हेतइ किने।”

जेना लखनक विचारक धारमे अपनो मन बहि गेल तहिना अनासुरती बजा गेल-

“हँ! से तँ हेबे करत किने।”

हमर सह पबिते–माने हँ-मे-हँ मिलौने–लखन सहत फेकैत बाजल-

"भाय साहैब, गामक लोक हमरा अखनो बिपटे बुझैए!"

बिच्चेमे बजा गेल-

"से किए बिपटा बुझै छह लखन?"

लखनक मनमे जेना वैचारिक चोट पड़लै तहिना हृदय पसीज गेलै, थल-थलाइत मनक हृदय दल-दला कऽ पानि-पानि भऽ गेलइ। पनियाएल विचारे बाजल-

"भाय साहैब दस साल पहिने मन चोभिया नाच–मजदूर-किसान–मे जोकरक पार्ट खेलै छेलौं। से तेते नाम पसरल जे किछ लोक बिपटा कहैये लगल। आगिक सोझमे छी, आब अपनाकेँ समाजक ओहन बेकती बनए चाहै छी जे इमनदारीसँ लोहा-लकड़ीक काजसँ समाज सेवा करै छी। मुदा लोकक नजैरमे अखनो बिपटे छी तँए हमरा बातक माइने कम अछि।"

लखनक किछु बात मनमे गड़बो कएल आ किछु उखड़बो कएल। बजलौं-

"लखन तोहर देह ने साधल छह मुदा हम तँ अपनाकेँ कँचकूह बनौने छी, बुझह ते बकरी जकाँ मुँह नइ चलल तँ मने गड़बड़ए लगैए। तँए आब जँ रूकबह तँ खेनाइ सेहो लगि जेतह।"

ले बलैया! लखनक मनमे जेना धारक मोइन फुटि गेल होइ तहिना बाजल-

"भाय साहैब, अहाँकेँ घरवालीक सप्पत दइ छी, औझुका खेनाइ एतै खाइ।"

मजाकमे टोनैत बजलौं-

"अपन सप्पत जँ दइतह ते बिसवासो होइत जे खाइले जेबह तँ दुनू गोरे बाँटियो कऽ खा लेब। मुदा घरवालीक सप्पत केना मानबह?"

हमर बातसँ लखनकेँ जेना आरो सह भेटलै तहिना जौड़ बान्हि दोसर सहत फेकैत बाजल-

"भाय साहैब, जखन नाटकक स्टेजपर सँ उतैर ग्रीन रूममे जा दोसर खण्डक तैयारी-ले विचारै छेलौं तखन गामक ओहन लोककेँ टोबि कऽ टोबिया अपन पार्ट करै छेलौं तखन अपन मन गबाही दइते छल जे अखन हम वएह छी जेकर मन टोबिया कऽ टेबलक।"

अलंकारिक शैलीमे लखनकेँ बहैत देख रोकैत बजलौं-

"लखन, तूँ मंच परक लोक रहलह, तँए ओते नमहर-चौड़गर बात करैक अखन समए नइ अछि, जे बात शुरू केने छेलह तैठाम से गप चलाबह।"

गाछक छीपपर चढ़निहारकेँ उतरैमे भलेँ कम समए लगौ मुदा चढ़ैमे जहिना सावधानी लगलै तहिना तँ उतरैयोमे लगबे करत। मुदा तैयो नीक मुहेँ उतरैत-उतरैत लखन बाजल-

"एकटा पाँती भाय साहैब मन पड़ि गेल। जखन स्टेजपर पहुँचिये गेलौं तखन सुनियेँ लिअ।"

व्यासजीकेँ जहिना गणेशजीक शर्त्त भेलैन तहिना शर्त्त दैत बजलौं-

"पाँती तखने सुनबह जखन नाटकक मंचसँ उतैर अपना मंचपर चलि आबह।"

चढ़ल मन लखनक रहबे करइ, बाजल-

"शर्त्त मंजूर अछि। मुदा एते सुना कऽ– 'मन लगा मेरा यार फकीरीमे...।' कबीर जोलाहासँ जुलाह जरूर भेला मुदा अपन प्राणक रक्षाक उपाय अपने जिनगी भरि केलैन।"

लखनक बहैत धारक धाराकेँ धरियबैत बजलौं-

"लखन तोरा सन-सन मनुखदेवा समाजमे भेल रहत ते कहियो ने कहियो, केतौ-ने-केतौ मोकर फोड़ैत मोनि फोड़िये देत।"

हमर बात सुनि लखनक मनमे जेना तुष्टि भेल तहिना संतुष्ट होइत बाजल-

"जखने लड़का-लड़की सियान भेल, तहूमे जखन बी.ए.क विद्यार्थी अछि। माइयो-बापकेँ एते तँ बुझए पड़तैन जे घरसँ बिनु विचारे निकैल गेल तइ पाछू किछु ऐतिहासिक कारण सेहो छइ। जिनगीक जे क्रम अछि ओइमे पढ़ला पछाइत बिआहेक सीढ़ी अबैए जे परिवार बनैक सीढ़ी सहो छी।"

लखनक विचारक गंभीरता देखैत बिच्चेमे टोकैत बजलौं-

"लखन, भूखे भजन ने होई गोपाल। अखन ओ सभ छोड़ह। अखुनका की हाल छैन फटेसर भाइक?"

मुस्कियाइत लखन बाजल-

"भाय साहैब, फटेसर भाइक हाल तँ बेहाल भऽ गेल छैन!"

हाल-बेहालक माने लगबे ने कएल। बजलौं-

"से की?"

लखनक मन चढ़ले रहइ, बाजल-

"समाजमे निरलजपनोक सीमा होइत अछि किने, जेकरा ओ सभ–माने फटेसर भाय सभ–उठा कऽ पीब गेल छैथ।"

लखन गंभीरसँ गंभीरतम दिस आगू बढ़ल जाए, आ अपने पाछू-पाछू वौआइत रही। बजलौं-

"से की लखन?"

लखन बाजल-

"जहिना फटेसर भाइक परिवारमे भेलैन तहिना केतेको घटना

समाजमे भऽ चुकल अछि। ओही घटनाक बीच फटेसर भाइक विचारकेँ समाज कबुललक। जइसँ फटेसर भाइ समाजक मंचपर सही बजनिहारक रूपमे एला, केतेकोकेँ अन्तर्जातीय विवाहमे अगुआ कऽ भागो लेला, मुदा आइ जखन अपन बेटी एकटा गरीबक बेटाक संग चलि गेलैन तखन अपन सम्मैतकेँ बाजी बनबै छैथ..!"

लखनक बातक अर्थ नीक जकाँ नइ बुझि पेब रहल छेलौं मुदा अधो-छिधा तँ बुझए चाहिते रही, बजलौं-

"से की?"

लखन बाजल-

"भाय साहैब, अखन तँ झँपले-तोपल कहलौं हेन। एकरा चित्र बनबैक स्क्रैच बुझियौ। मुदा समए की कहि रहल अछि, से तँ सभकेँ बुझए ने पड़तै।"

बजलौं-

"छोड़ह अपन लटारम। अखन जाइ छिअ।"

लखन बाजल-

"भाय साहैब, अपनो मन उबियाइत रहैए जे अहाँसँ भेँट-घाँट करी। मुदा तेहेन मायामे ओझरा गेल छी जे जेना-जेना घरवाली नचबैए, तेना-तेना भरि दिन नचैत रहै छी। खाएर छोड़ू। अही चोटे फटेसर भाय मृत्युशैया पकैड़ घरमे कुहैर रहल छैथ। तँए एहेन पापीकेँ भेटौं करब पापे बुझू।"

बजलौं-

"सएह..!"

◌

शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017

खेतक बँटबारा

मई मासक आगमन होइते ऑफिसो आ स्कूलो-कौलेज भिनसुरका भऽ गेल। कचहरिया लोक बिशेसर काकाकेँ एस.डी.ओ. साहैब मई दिवस मनेबाक हकार देलकैन। बिशेसर काकाकेँ अपन रूटिंग छैन। भिनसुरका केहनो काज रहल तैयो चानिपर सँ नइ नहा हाथ-पएर-मुँह-कान धोइये लइ छैथ तैसंग बेसीसँ बेसी दुनू भीजल हाथे माथ पोछि सेहो लइ छैथ। तहिना जेते कालक काज रहै छैन तेते कालक अपन भार अपने कन्हापर रखि चलै छैथ।

छह बजे बिशेसर काकाकेँ अनुमण्डल परिसरमे उपस्थित हएब छैन। मुदा अपन जिनगीक ओते क्रिया-कर्म केला पछाइते ने निकलता जेकर समय बीचमे पड़ै छैन। क्रियो-कर्मक तँ अपन रूप अछि, तँए लोक किछु काजकेँ धकेल काल्हि-ले रखि लइए आ किछुकेँ नियमबद्ध वर्तमानमे करैक रूटिंगमे अपनाकेँ बन्हैत आगू बढ़ैए। तँए सबेरगरे बिशेसर काका अपन तैयारीमे लागल छला। तही बीचमे रवि भाय पहुँचलैन।

रवि भायकेँ देखते बिशेसर कक्काक मनमे ठहकलैन- काजमे काज ठाढ़ भऽ रहल अछि! मुदा दरबज्जापर आएल प्रीतकेँ बेप्रीत केने जाइयो देब तँ मनहानि हेबे करत। केतौ-ने-केतौ अपनो दोखी बनबे करब। तँए समैकेँ देखैत अपन अँटाबेस करबे ने नीक हएत। यएह

सोचि बिशेसर काका कलपर हाथो-पएर धोइ छला आ रवि भायकेँ पुछियो देलखिन-

"भोरे-भोर रवि?"

बिशेसर कक्काक बात सुनिते रवि भायकेँ बुकौर लगि गेलैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

"काका, हम गामसँ उजैर जाएब?"

रवि भाइक बात सुनि बिशेसर कक्काक मनमे ठनका जकाँ ठहकलैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

"बौआ, अखन तँ हम दोसर ठामक तैयारीमे छी तँए समैक अभाव अछि, मुदा उजरैक कारण की अछि से कनी कहि दएह।"

ओना गामक भनकसँ बिशेसर काकाकेँ बहुत किछु जानकारी भऽ गेल छेलैन। अनेको धारामे गाम बहि रहल अछि आ बेकता-बेकती सेहो बहिते अछि। मुदा मोटा-मोटी तीनकेँ तँ मानए पड़त। कोनो घटनाक दुनू पक्ष आ तेसर निष्पक्ष, जेकरा घटनासँ कोनो सम्बन्ध नहि रहैए, तँए समाजक बीच बेकतीगत समस्या एतेक असान अछि जे ओ मात्र दू प्रतिशत अछि, अनठानबे प्रतिशत निष्पक्षे लोक छैथ मुदा लाजिमी तँ ईहो अछिए जे निष्पक्ष केना पक्ष बनि जाइ छैथ।

बिशेसर कक्काक प्रश्न सुनि रवि भाय समाजक ओइ धारमे डुमए लगला जइमे अनेको डूमा भऽ चुकल अछि। ओना, डूमा पोखैर सेहो होइए जेकरासँ लोक डरैए मुदा ओ तँ समाजक सम्पैत छी ओकरा तँ अपने जकाँ बना ने चलब..!

अपन आँखिक बहैत यमुना धारमे रवि भाइक विचार भँसिया रहल छेलैन। मुदा जहाज पकड़ैत काकोड़क भाँज बिशेसर काकाकेँ मनमे चढ़बे ने केलैन। बिनु बुझल प्रश्नक जेहने उत्तर हेबा चाही तेहने उत्तर दैत बिशेसर काका रवि भायकेँ कहलखिन-

"बौआ, गामसँ केकरो उजरब आ केकरो उजारब दुनू दू भेल, जे असथिरसँ विचार करैक विषय छी तँए औगुतेने तँ काज नहियेँ चलतह। अबै छी तखन निचेनसँ आगूक सभ गप करब।"

रवि भाय बजला-

"काका, बोन राखए बाघ आ बाघ राखए बोन।"

मुस्की दैत बिशेसर काका बजला-

"बड़ दूरक बात बजलह रवि, मुदा बिलाइ जँ ऐ आशासँ बोन लगबै जे बाघ बनब, तखन दूध आ दूधक छालही, छालही आ छालहीक बनल मक्खन, मक्खन आ मक्खनसँ बनल 'घी'बला लड्डू के खाएत?"

बिशेसर कक्काक बात रवि भाय कानसँ सुनलैन जरूर मुदा बेथाएल मन गड़ए नइ देलकैन। ओना, बिशेसर काकामे एते बिसवास रवि भायकेँ छैन्हे जे कोनो घटनाक वस्तु-स्थितिक विचार करैत अपन पक्ष रखै छैथ...।

कलपर सँ उतरैत बिशेसर काका लोटामे पानि नेने आगू बढ़ैत रवि भायकेँ कहलखिन-

"अखन तूँ जाह, साँझमे निचेनसँ सभ गप करब।"

ओना रवि भाय विदा भऽ गेला मुदा जहलक डन्टाबेड़ी जकाँ दुनू पएर छनाए लगलैन। बिशेसर कक्काक मनमे सेहो प्रश्नकेँ जेना घर करक चाही से नहि केलकैन। तेकर कारण आगूमे आएल काज छेलैन।

साइकिल पकैड़ बिशेसर काका एस.डी.ओ. साहैबक हकार पूरए विदा भेला। ओना बिशेसर काकाकेँ मोटर साइकिल सेहो छैन्हे। मुदा अपन विचार अपना जिनगीमे उतारि चलै छैथ तँए सेनरेले

साइकिल सेहो रखने छैथ। स्पष्ट समझ छैन जे तीन किलो मीटरक बीच मोटर साइकिलपर नहि चढ़ब, चढ़ब एके स्थितिमे जखन साइकिल चलै जोकर परिस्थिति नहि रहत।

साइकिलपर चढ़िते बिशेसर कक्काक मन रवि भायपर पड़लैन। मुदा 'मजदूर दिवस'क हकार पूरए जाइ छी तँए रस्ताक समए ओकर ने भेल माने ओइ कार्यक्रमक। तँए जाबे तक पहुँचब तैबीच बुझै-विचारैक समए अछि। मजदूर दिवस छी, केना दिवसकेँ पकैड़ आगूक समैयक संग चलब...। आइक जे समए अछि ओ केतए अछि आ आइक जिनगी अछि से केहेन केकर अछि ई मूल प्रश्न भेल। वैचारिक दौरमे तँ सबहक मुहसँ अवाज उठिते अछि- शिक्षा, संगठन आ संघर्ष। मुदा संघर्ष बेकतीगत आकि सामुहिक माने समाजिक? मुदा तइसँ पाछूए शिक्षामे तेहेन मुसकल लागल अछि जे जेरक-जेर इंजीनियर बनि ठाढ़ होइए आ तकनीककेँ आगू बढ़ने ओ बेकार भऽ रहल अछि। तेतबे किए, वृद्धजन अपन जिनगीकेँ किए ने उजागर कऽ रहला अछि जे बेटा-पुतोहुकेँ अमेरिका गेने केहेन सुख भऽ रहल छैन? तीन बर्खक बच्चा माए-बापसँ दूर हटि दोसराक विचारधारामे बहैए– माने नव-नव शिक्षण संस्थानमे, जैठाम माता-पिताक संग एहेन रूप बनल जा रहल अछि–तैठाम 'अतिथि देवो भव:' बकबासक अतिरिक्त की बनि ठाढ़ अछि..?

नीक कार्यक्रमक आयोजन देख बिशेसर कक्काक मन सेहो पुष्ट भेलैन। पुष्ट होइते मुहसँ फुटलैन-

"केना शिकांगोमे अपन जिनगीक लेल प्राण न्योछावर प्रणेताजन केलैन। आइ ओही उपलक्षकमे ने सभ एकठाम भेलौं। चारि घन्टाक कार्यक्रम ऊपरा-ऊपरी रहल...।"

पानक विदाइ पबिते बिशेसर कक्काक मनमे रवि भाइक प्रश्न

खसलैन। नीक कार्यक्रमसँ घुमल मन रहबे करैन, समस्यापर नीक जकाँ नजैर खिड़लैन। नजैर खिड़िते मनमे उठलैन- जेहेन समस्यामे रवि फँसल अछि, ओ कोनो मौसमी रोग नहि, बरखाउ छिऐ। एहेन-एहेन घटना गाममे पचासो भेल अछि आ होइतो रहैए। जेना भैयारीक बँटवारामे, माने दू भाँइ-तीन भाँइक बीच एकटा खेत रहल, बराबर-बराबरक बीच आड़ि पड़ल। अपन-अपन हिस्सा कायम भेल। ओना समए पेब खेत बदैलतो अछि। खेत बदलैक माने भेल खेतक मूल्य बदलब। मानि लिअ दू भाँइक बीच खेत अछि, एक भाँइक जमीन दिस बगलक खेतबला गाछ-बाँस लगा खेतकेँ अछाह बना देत जइसँ उपज प्रभावित हएत। जखने उपजा कम-बेसी हएत तखने ने ओकर मूल्य कम-बेसी भेल। तहिना धार-धूरक इलाकामे केतौ मोनि फोरि दइ छै आ केकरो गहींर खेतकेँ ऊँच बना घराड़ी बना दइ छै, तहूसँ खेतक मूल्यमे उछालो आ घटालो तँ अबिते अछि। मुदा एहनो तँ ऐछे जे अपन हिस्साकेँ अपन भाग्य बुझि अपन विचारपर लोक ठाढ़ रहैए। जे भैयारीक बीच कोनो बाहरी आक्रमणक मुँह नइ खुजए दइए। मुदा एहेन स्थितिमे समाज जँ चुप्पी लधने रहत सेहो नीक नहियेँ भेल।

घरपर पहुँचला पछाइतो बिशेसर कक्काक नजैर घटनाक रूपकेँ फरिछाइत नहि देख पेलकैन। ओना, बारह बजेसँ ऊपर दिन पहुँच गेल छल जइसँ कक्काक मन तबैध गेल छेलैन। तँए मन मानि लेलकैन जे तबधलमे एहेन समस्यापर विचार करब जल्दवाजी हएत। मुदा जहिना पोखैर आकि कोनो जलपात्रमे कम्पन्न उठैतकाल रसे-रसे उठैए तहिना बैसैतकाल–माने शान्त होइकाल–सेहो रसे-रसे बैसैत अछि। तँए नीक जकाँ बिशेसर कक्काक मन शान्तसँ बैसल नहि छेलैन, रसे-रसे बैस रहल छेलैन। मुदा तइ बिच्चेमे सौन मासक पंचमी मनमे उपकलैन। उपैकते मन नचलैन जे पंचमीक साँझमे मूसक माटि आ धानक लाबाक संग विषहाराक मंत्र-जप होइए। जइसँ सबहक

समधानल बाट खुजै छइ। मुदा एक संग सबहक (विषधक) मंत्र-जाप भेने खुदरा-खानि–माने एक्की-दुक्की–छुटियो जाइते अछि। मुदा जे छुटि जाइए से विषैला ऐछे नहि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अन्तो-अन्त बिशेसर कक्काक मन ओइ सिमान तक नहियेँ पहुँच सकलैन जैठाम खुदरा-खानिक कारोबार अछि।

मेघौने मने बिशेसर काका नहा कऽ खेलैन। खा कऽ ओछाइनपर पहुँचला। एक तँ साइकिलक काटल रस्ता, झमारल देह आ तैपर अपन अराम करैक समए, तँए रवि भाइक समस्या बिशेसर कक्काक मनमे रसे-रसे पतराए लगलैन। मुदा सिरमापर माथ रखिते रवि भाइक समस्या तर-ऊपर भऽ गेलैन। तर-ऊपर होइते मन चनकलैन। ताबे तक चित्त शान्त भऽ गेल छेलैन। शान्त चीते विचार केलाह जे बेकतीगत समस्या समाजिक समस्याक अंगो छी आ बेअंगो छी। बेअंगक माने भेल एक्के समस्याक भिन्न-भिन्न बेकतीगत रूप...।

'भिन्न-भिन्न बेकतीगत रूप'पर पहुँचते बिशेसर कक्काक मन कबूल लेलकैन जे सभ समस्याक अपन-अपन मूल अछि, तँए मूल पकड़ैले ओकर जड़िमे जाएब जरूरी अछि। तैबीच नीनसँ आँखि बन्न भऽ गेलैन।

बेरुका उखड़ाहाक अन्तिम पहर, मई दिवसक अवसान। आइये ने लोक अपन जिनगीक लेल संकल्पित हएत..!

बिशेसर काका अपन दैनंदिनक रूटिंगकेँ छोड़ि अपन संकल्प दिस बढ़ला। बढ़िते रवि भाइक समस्या मनकेँ छानि लेलकैन।

मनमे छान लगिते बिशेसर काका मने-मन अपनाकेँ संकल्पित केलैन। संकल्प ई जे ने केकरो एकमुट्ठी खुऔलासँ ओकर कल्याण हेतै आ ने कोट-कचहरीक चक्कर लगौलासँ, हेतै तखन जखन समाज अपन दायित्व बुझत जे गामक जे समस्या अछि ओ समाजक पहिल समस्या

भेल, तँए ओइ पाछू–माने ओकर समाधान करैक पाछू– अपनाकेँ उन्मुख करी। तैबीच सुजीता काकी लोटामे पानि आ गिलास नेने बिशेसर काका लग पहुँचली। लोटा-गिलास चौकीपर रखि चाह बनबए आँगन दिस मुड़ली कि पाछू दिससँ रस्तापर अबैत रवि भायकेँ देखली। देखते ठमैक कऽ ठाढ़ भऽ रवि भायकेँ निहारए लगली। उड़ल-उड़ल चेहराक रूप, जेना मृत्युक वाणसँ बेधाएल होथि तहिना बुझि पड़लैन।

लगमे अबिते रवि भायकेँ सुजीता काकी कहलखिन-

"बैसू, अपनो भरि दिनक तबाहीए-मे रहला, मुदा तँए की। पहिने पानि पीबू। चाह नेने अबै छी, औगतेने कोनो काज थोड़े होइ छइ।"

ओना, सुजीता काकीकेँ रवि भाइक समस्या ने बुझले छेलैन आ ने सुनले, किएक तँ बिशेसर काका समयाभावमे नहि बाजि पेने छला आ दोसर-तेसरपर सुजीता काकीकेँ ओहन बिसवासो नहियेँ छैन जे कान दऽ किछु अकाननौं रहितैथ।

मुदा पतिपर अटूट बिसवास छैन्हे तँए आश्वासनक रूपमे बजली।

ओना बिशेसर काका सेहो दुनू गोरेक बात सुनलैन मुदा बजला किछु ने। आँगनसँ सुजीता काकी दुनू गोरे–माने बिशेसरो काका आ रवियो भाय-ले–चाह नेने एली।

पतिकेँ हाथमे चाह पकड़ा सुजीता काकी मुँह दिस देखए लगली। ओना नजैर रवि भाइक पीड़ापर रहैन। मुदा बिशेसर काकाकेँ भेलैन जे दोसरोक हाथमे चाह देली अछि तँए चाहक नीक-अधलाक निर्णय लिअ चाहि रहली अछि। बिशेसर काका हाँइ-हाँइ कऽ दू घोंट चाह तँ पीब लेलैन मुदा बजला किछु ने।

चाह पीब पान खा बिशेसर काका रवि भायकेँ पुछलखिन-

"रवि, तखन औगताएल छेलौं तँए नीक जकाँ गप-सप्प करैक समए नइ छल। अखन सविस्तर बात कहह।"

पतिक बात सुनि सुजीता काकी सेहो चौकीपर बैसली। रवि भाइक मन उड़ल-उड़ल सन रहबे करैन तँए बिशेसर कक्काक प्रश्नक जइ क्रममे उत्तर हेबा चाही तइ क्रममे नहि दए क्रमभंग रूपमे बजला।

"काका, खेत-पथार कोनो चीज छी, मुदा मनक जे संकल्प छल ओ टुटि रहल अछि।"

ओना, रवि भाइक अपन समस्यासँ सम्बन्धिते विचार छेलैन मुदा सुजीता काकी नीक जकाँ नइ बुझि पेली, तँए डकहर जकाँ आँखियो आ लोलो पति दिस बढ़ौने रहली।

'मनक संकल्पकेँ टुटब' सुनि बिशेसर कक्काक मन थरथराए लगलैन। वकार बन्न भऽ गेलैन किएक तँ मनमे उठि गेलैन- संकल्प तँ ओ छी जे संकल्पितकेँ भंग-भंग मृत्युक मरनोक सोझा पार करैए!

चुपा-चुपी दरबज्जापर पसैर गेल। ने कियो बजनिहार आ ने कियो सुननिहार। मुदा किछुकालक पछाइत चुप्पी तोड़ैत बिशेसर काका बजला-

"रवि, एना बात नइ बुझब। जड़िसँ सभ बात कहह।"

बिशेसर कक्काक विचारसँ रवि भाइक मन थलथलाए लगलैन। थलथलाइत मन दलदलाइत रूप पकैड़ फुटल-

"काका, दू भाँइक भैयारी अछि से तँ बुझले अछि?"

समर्थन करैत बिशेसर काका बजला-

"ऐमे के नइ कहतह।"

रवि भाय बजला-

"आठ बीघा जमीन दुनू भाँइक बीच अछि।"

बिच्चेमे बिशेसर काका बजला-

"पहिने अपन संकल्प कहह। खेत-पथार कोन चीज छी जे तइले परान गमेबह।"

बिशेसर कक्काक बात सुनिते रवि भाँइक मनमे जेना स्वाती नक्षत्रक पहिल बून खसल होनि तहिना मीठपन जगलैन। बजला-

"काका, सभ दिन अहाँ सबहक संग रहैत आएल छी, अहाँमे बेसी कलेवर अछि तँए बेसी संकल्प अछि मुदा हम ओहन नइ छी तँए कनी कम अछि।"

अपन संगीक तुलित विचार सुनि बिशेसर कक्काक मनमे उठलैन जे रविक चित्त तँ तखन ने बुझब जखन प्रश्नक पाछू समए कम आ उत्तर पबै पाछू बेसी विचार करब। मुदा ऐठाम तँ रवि प्रश्नक जड़ि दिस बढ़िये ने रहल अछि। बजला-

"रवि, पहिने संकल्प बाजह।"

बिशेसर कक्काक बात सुनि रवि भाइक मन गवाही देलकैन जे भरिसक अपनापनमे पुछि रहला अछि...।

रवि भाय बजला-

"काका, जहिये अहाँक संगतमे एलौं तहिये मनमे रोपि लेलौं जे दोसराक पमौजी नइ करब, अपन स्वतंत्र जीवन धारण करब।"

रवि भाइक विचार सुनि बिशेसर कक्काक मन अर्पणसँ तर्पण होइत पर्पणक सिमानपर पहुँच गेलैन। जइसँ मनक मुँह मुस्कियेलैन। मुस्कियाइत बजला-

"रवि, एहेन विचार की तोरेटा मनमे जगै छह आकि सबहक मनमे जगैए। एहनो-एहनो जगता-जोर पुरुख सभ छैथ जे ने

मर्त्यलोकमे माने जीबैतमे केकरो एक पाइ धाड़ै छथिन आ ने स्वर्ग गेला पछातिये केकरो मुहेँ सुनै छैथ जे बैंकक बँकियौता अहाँक ऊपरमे एते अछि। जखने मृत्युलोकमे केकरो मुहेँ अधला नइ सुनब तखने ने स्वर्गोक स्वतंत्रता भेल, नहि तँ ओहो गुलामीए भेल किने।"

ओना रवि भाइक मन एकाग्र भऽ गेल छेलैन, तँए बिशेसर कक्काक विचार ओइ रूपे नइ लऽ अपन संकल्प दिस बढ़ए लगलैन। बढ़िते बजला-

"काका, अहाँ तँ देखते छी छोट भाए रहितो प्रकाश दिल्लीमे अपन मकान बना सपरिवार रहैए। धिया-पुताकेँ नीक स्कूलमे, माने पैसाबला स्कूलमे पढ़बैए आ अपने ऑफिसमे बाबू बनि जीबैए।"

बिच्चेमे बिशेसर काका बजला-

"सभ बात ते नहि बुझल अछि, मुदा किछु-किछु नइ बुझल अछि सेहो नहियेँ अछि, तँए दिल्लीबला बात छोड़ह।"

बिशेसर कक्काक बात सुनि रवि भाय बजला-

"काका, जहिना कोनो गाछक सिर चारू भाग चतरल रहैए तहिना ने जिनगियोक लत्ती अछि, भलेँ मनुखक सिर एक-सिरे किए ने होइ।"

रवि भाइक विचार सुनि बिशेसर काका ठमकला। चारू दिस नजैर घुमबैत बजला-

"बौआ रवि, जे आदमी गामसँ बाहर जा बसि गेल ओइ दिस समए नइ लगबए चाही छी। समए लगबए चाहै छी ओइ दिस जे गाममे रहि संगे-संगे समाज बनि जीब रहल छैथ तँए अप्पन बात बाजह।"

रवि-

"काका, जे काज दुनू भाँइसँ सम्बन्धित अछि ओ तँ बजबे ने करब।"

गौर करैत बिशेसर काका कहलखिन-

"हँ, ओ तँ अनिवार्य अछि। मुदा जेतबे समस्यासँ सम्बन्धित अछि, तेतबे बाजह।"

रवि भाय बजला-

"काका, एक संग दूटा समस्या उठि गेल अछि!"

रविक मुहसँ 'एक संग दूटा समस्या' सुनि बिशेसर काका अकचकेला। अकचकेला ई जे जँ कोनो रोगीकेँ ओहन दूटा रोग एकसंग पकैड़ लइ, जेकर दवाइ एक दोसराक प्रतिकूल होइ, तखन तँ मरबे करत किने..! फेर मनमे उठलैन- मृत्यु तँ अनिवार्य अछिए, चाहे ओ विचारक होइ आकि कोनो किरिये-कलापक, मुदा दुनूक तँ अपन-अपन गतिधारा अछिए, ओ तँ जीबिते रहैए किने..? मनमे अबिते बिशेसर काका बजला-

"रवि, दूटा समस्या होइ कि दसटा, मुदा सभ समस्याक अपन-अपन ओझरीक सूत होइए। जेकरा सूत्रधार सेरिया कऽ पकैड़ सुतियबैत ओइ समस्याक समाधान करैए, तँए चिन्ता ओतबे करक चाही जेते भेल घावकेँ छुटैक घड़ी होइ।"

बिशेसर कक्काक विचार सुनि रवि भाइक मनमे भरोसक अंकुर जगलैन। सब्रकेँ अँकुरिते बजला-

"काका, दुनू समस्याकेँ एकेबेर कहि दइ छी। पछाइत जेना जे विचार करब से विचारि लेब।"

रवि भाइक विचार बिशेसर काकाकेँ सेहो नीक लगलैन। पत्नी दिस नजैर उठबैत बजला-

"जँ हल्लुको-फल्लुक चाह कनियोँ बीचमे पीआ दइतौं तँ मनो हलुकाएल रहैत आ...।"

'खग जानए खगक बोल।' पतिक विचार सुनिते जी-हुजुरी करैत सुजीता काकी बजली-

"बेस कहलौं! बीचमे रवि सेहो अपन विचारक मुँह-मिलानी कऽ लेत।"

सुजीता काकी चाह बनबए गेली। बिशेसर काका बजला-

"रवि, जहिना लोक तहिना परिवार आ तहिना गामो-समाज तेना ओझरा गेल अछि जे रस्ता भेटब कठिन भऽ गेल छइ। मनुख तँ चलत रस्ते धेने, जे भेटबे कठिन भऽ गेल छइ। तखन मनुखो तँ मनुख छी, बुधि-विचार-विवेकक मालिक। जखन दुनियाँमे जीबै छी तखन कोनो-ने-कोनो देने अपनो विचारक रस्ता ताकिये लेब। तँए चिन्तनीय कोनो बात नहि।"

बिशेसर कक्काक बात सुनि रविक मनमे सेहो भरोसक उदय भेल। तैबीच सुजीता काकी चाह नेने पहुँचली।

बिशेसर काका मुँहमे चाहक गिलास भीरेबे केलैन कि बिच्चेमे सुजीता काकी टोनि देलखिन-

"बड़ आशासँ रवि दरबज्जापर पहुँचल अछि।"

सुजीता काकीक बात सुनि रवि भाइक मनक क्लेश अदहा-अदही कमि गेलैन, मुदा बिशेसर कक्काक मनक समस्या दोबरा गेलैन। दोबराइते पत्नीकेँ कहलखिन-

"अहाँ की आने पुरुख जकाँ हमरा बुझै छी। अनका जकाँ हम थोड़े किछु मनमे रखि किछु विचार मुहसँ बहार करै छी। हम एकबोलिया छी, ने किछु मनमे रखि बजै छी आ ने पेटमे रखै छी। जे

रहैए ओ उगैल दइ छिऐ। हँ, एहेन भऽ सकैए जे किछु समाधान तत्काल भऽ जाइए आ किछुकें समैयक प्रतीक्षा करए पड़ै छइ। मुदा जखने ओकर मुहूर्त औत तखने ओकर मुँह जगतै जे समाधानक उचित समए भेल।"

एके विचारमे चाहो सठि गेल। मुदा एते सतर्की सुजीता काकी रखबे केली जे बिच्चेमे पानो लगा नेने छेली।

मुँहमे पान दइते रवि भाइक मन फुदफुदेलैन। फुदफुदाइते मुहसँ फुटलैन-

"काका, दुनू समस्या एक्के बेर कहि दइ छी। अपना ढंगे अहाँ अपन विचार करब।"

रवि भाइक गप सुनि बिशेसर कक्काक नजैर देशक पुबरिया इलाका–त्रिपुरा-अरुणाचल–क भोजपर पहुँच गेलैन। जैठामक भोजमे सभसँ नीक व्यंजन जे रहल ओ सभसँ पहिने परसल जाइए। मुदा ओइमे ओकर सीमा बनल अछि, पछाइत जेना-जेना असीमित व्यंजन दिस भोज बढ़ैए तेना-तेना सीमा बदलैत पर्याप्तमे पहुँच जाइए। अपना सभ देशक उत्तरमे छी, ऐठामक भोजमे जे जेतेक नीक व्यंजन रहैए ओ तेतेक पछुआइत बँटाइए...। मुदा दच्छिनभर केरलक एकटा भोजमे सेहो पड़ि गेलौं। ओइठाम सौंसे देशक भोज्य–विन्यास शुरुहेमे परैस देलक। अपन विन्यास कनी कम, सुआदै-ले परसलक आ आन-आन, खेनिहारक हिसाबे, कमी-मनी बेसियबैत गेल। तइसँ देखै छी जे चालि-प्रकृतिमे सेहो अन्तर अछिए। ओहो एक रंग नहियेँ अछि। जहिना कोनो स्थानपर पहुँचैले (माने जैठाम जा रहल छी) जखन कोस-दू कोस आगू बढ़ै छी तखन मनमे कनी खुशी, माने जेते टपि गेलौं, आ कनी बेसी दुख-तकलीफ तँ बुझिये पड़ैए। बुझैक कारण पैछला काजक अनुभव अछि...।

विचारक समतल सीमापर पहुँचते बिशेसर काका पत्नीकें कहलखिन-

"अहीं रविक माथक ढील हेरू। हम चुपचाप देखैत-सुनैत रहब। जँ केतौ बजैक खगता बुझि पड़त तँ से बाजि देब।"

पतिक विचारकें सुजीता काकी मने-मन ताकिये-हेरि रहल छेली कि बिच्चेमे रवि भाय घरक लक्ष्मीकें गुण-गान करैत बजला-

"काकी जे कहि देती से मानि लेब। भलें ओ कनी-मनी घाउए किए ने करए।"

सुजीता काकीकें बीचमे देखैत बिशेसर काका मने-मन खुशी भेला जे आब समस्या हल्लुक होइक रस्ता धेलक..!

समर्थन दैत बिशेसर काका बजला-

"रविक मन जइसँ खुशी होइ सएह विचार हमरो अछि।"

रवि भाय सुजीता काकी दिस घुमैत बजला-

"काकी, गामक सम्पैत ई डकुबा सभ लऽ जा रहल अछि, से समाज होइक नाते देखल जाएत?"

रवि भाइक बात बिशेसरो काका नीक जकाँ नइ बुझि पेला मुदा मनमे ई रहबे करैन जे असल श्रोता तँ पत्नी छैथ। जँ हुनकर बकार बन्न हेतैन तँ पाछूसँ सह देबैन...।

सुजीता काकीक मन चटपटाए लगलैन जे रविकें केहेन बोल कहबै जइसँ भरोस जगतै। मुदा नीक बोल तँ तखने ने मुहसँ निकलत जखन नीक जकाँ ओ बात बुझने रहब। से तँ सुजीता काकी बुझबे ने केली। तँए कोइली जकाँ नीक बोल तँ नहि निकालि सकली मुदा मन कड़ुआ जरूर गेल छेलैन।

ओना, पिपासु सुजीता काकीकें देख बिशेसर कक्काक आँखिमे

पानि उतैर एलैन। बजला-

"एना मुँह बन्न केने हएत, जे नइ बुझै छी आकि नइ बुझलौं ओ दोहरा कऽ रविकें सुना देल करियौ, जइसँ विचारमे समता औत। विचारमे समता अबिते समानता औत। जे समस्याक समधानल बाटक वाण हएत।"

पतिक विचारकें अपन माथपर सँ रविक माथपर फेकैत सुजीता काकी बजली-

"सभ बात ते रवि बुझबे केलह। फरिछा-फरिछा कऽ जेते बजबह ओते फरिछाइत-फरिछाइत पोखैरक घाट परक पानि बनि जेबह।"

सुजीता काकीक बात सुनिते रवि भाय भवसागरमे भँसिया गेला। मनमे उठलैन- दुनियाँक झेलक झीलमे झल-झलाइत झिलहोरि खेलब अछि। भँसियाइत बजला-

"काकी, जखन बैसैक जगहक संग चाहो-पान भेटल तखन आरो की चाही।"

रवि भाइक बात सुनि बिशेसर काका अपन विचारक सीमा टुटैत देख बजला-

"रवि, अनेरे दुनियाँमे वौएने काज थोड़े चलतह, अपन जिनगी अपना हाथमे रखि चलैक बाट पकड़ह।"

अपन विचारसँ पाछू हटैत रवि भाय बजला-

"काका, लोक तँ लोकेक बीच ने हँसि-कानि जिनगी बितबैत चलैए।"

बिशेसर काका रविक भँसियाइत मनकें पकड़ैले एकटा खिस्सा उठबैत बजला-

"रब्बी, एकटा रहैथ संकल्प मुनि। हुनकर मन जखन असथिर रहैन तखन सबहक सभ बात सुनैथ आ जखन बगैद जानि तखन अपने बात बजबो करैथ आ अपने बुझबो करैथ। तँए जेतेक जोरसँ बजै छला तेतेक सक्कत अपनाकें बुझितो छला।"

बिशेसर कक्काक खिस्सामे रवि भाय तेहेन मस्त भऽ गेला जे रसे-रसे अपनोमे मस्ती उपकए लगलैन...।

रवि भाइक मस्तपन देख बिशेसर कक्काक मन मानि गेलैन जे जहिना कोनो ओझा-गुणी भुतलग्गूकें झोंटा पकैड़ बकबए लगैए, माने जे-जे कहबैक रहलै से-से कहबए लगैए तहिना बुझि पड़लैन। मुदा तइले तँ भूतक संग कनी दौड़ए पड़िते छइ। पाछू मुहें रवि भायकें दौड़बैत बजला-

"रवि, दुनियाँमे किछु अछि! अछि एतबे जे जे जेते दौग कऽ चलत ओ ओते दूर जाएत। आ जेकरा ऊपर माया-जालक मोटरी जेते भारी रहतै ओ ओते इचना माछ जकाँ समुद्रक कातेमे घास-पातमे ओझरा समुद्र दिस टकटकी लगौने रहत।"

बिशेसर कक्काक वाणीमे की जादू छेलैन, असलमे से तँ अपने बुझै छला मुदा दुनू श्रोता–रवि भाय आ सुजीता काकी–अपने-अपने तालमे बेताल भऽ गेली। सुजीता काकीकें ओंघीक आगमन भेलैन जइसँ मन हफुआए लगलैन, मुदा रवि भाय मगन भऽ जेना गगनमे विचरण करए लगला। थोड़ेकालक पछाइत एकाएक गनगनाइत रवि भाय बजला-

"काका, अपना संगे जे दूटा काज गुजैर रहल अछि, से पहिने कहि दइ छी।"

रवि भाइक मधुर वाण सुनि बिशेसर काका बुझि गेला जे रोटी बेलैकाल जेतेक तेल आकि घीक चपाड़ा देबै तेतेक असानीसँ रोटी

बेलाएत। ओना, बिनु घी वा तेलक बनलकेँ रोटी मानल जाइए भलेँ दलि-पुरी आकि कच-पुरीसँ माने कचौरीसँ ओकर पतरपनो आ ओजनो कम किए ने हौउ...।

बजला-

"शुभ काजमे जेते बिलंब करब ओते ओ अशुभे ने भेल, तँए जेतेकाल मुँहमे ताला लगौने रहबह तेतेकाल लोक धकिऐबैत रहतह।"

बिशेसर कक्काक बात सुनि रवि भाइक मन आरो जल-जलाए कऽ थल-थलाए लगलैन। थलथलाइत रवि भाय बजला-

"काका, अपनो संग आ गामोक लोककेँ देखै छिऐ जे भैयारी तक खानदानी सम्पैतकेँ गामसँ बेच-बेच लोक दिल्ली-बम्बै-कलकत्ता-बंगलौर जा बसि रहल अछि।"

बिच्चेमे बिशेसर काका बजला-

"बेस बात कहलह! आ दोसर?"

रवि भाय बजला-

"काका, की कहब। दुनू भाँइक बीच खेतक बँटवारा भऽ गेल। एकटा बान्हकातमे जे कोला अछि ओइमे दुनू भाँइक जमीनक बीच अधा-अधीपर आड़ि पड़ि गेल!"

बिच्चमे बिशेसर काका टोनलैन-

"अधा-अधीक माने बीचो-बीच किने?"

"हँ!"

रविक भाइक 'हँ' सुनि बिशेसर काका बजला-

"ओइमे की भेल?"

रवि भाय-

"प्रकाशक खेतक सटले दछिनबरिया खेतबला बाँस रोपि देलकै। प्रकाश दिल्ली धेने रहल। हमरा अपना ऐछे, ओकरा खूब ढकियेलौं। हित-अपेछित सभ प्रकाशकेँ जानकारी दैत रहलै मुदा भक्क टुटबे ने केलइ।"

बिशेसर काका-

"की भक्क?"

रवि भाय-

"प्रकाशकेँ एतबो ने बुझैमे एलै जे परदेशमे रहनिहार लोक परदेशेमे घर बना रहल अछि, गामोमे आब पक्के घर बढ़ि रहल अछि, बड़ैब-बाड़ी आकि टाटे-फरकक जरूरत आब लोककेँ किए बुझि पड़तै। तखन लोक अनेरे किए बँसवारि लगौत...।

ओहो माने बगलक खेतबला- दिल्लीए-मे एकेठाम रहबो करै छैथ, मुदा अपनो नीक-बेजा बुझैले लोक तैयार नइ अछि। प्रकाशकेँ तँ बुझबाक चाही ने जे उपजाउ खेतमे बाँस रोपि दुइर करब छी। ई सम्पैत नष्ट करब हएत।"

बिशेसर काका बजला-

"केते माथा-पच्ची रवि करबह। अपन काज पहिने बाजह।"

अधमरू जकाँ रवि भाय बजला-

"काका, की कहब। ओही खेतकेँ, जेकरा छौर-गोबरक ढकियासँ ढकियेने छेलौं जइसँ आड़ि-पाटिमे सभसँ नीक उपजा होइए। गामेक लोक प्रकाशकेँ उचाढ़ि चढ़ा अछाह-जमीनक कीमत दऽ कऽ लिखबैक बात पक्का कऽ लेलक!"

रवि भाइक बात सुनि बिशेसर कक्काक मन झमान भऽ खसलैन। बजला-

"रवि, एके दिने थोड़े जिनगी कटि जाइए, एक दिन जीबैक लूरि जेकरा छै, ओकरा कटैए। अखन मनो थाकि गेल अछि तँए आगूक गप आगू–दोसर दिन–करब।"

◌

शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017

विघटन

महिना दिनसँ ऊपरे शुभकान्त काकासँ भेँट भेना भऽ गेल, तँए भेँट करैले कए दिनसँ मन उबियाइत रहए। मुदा तेहेन धुमसाही लगन-पातीक अछि जे सभ नाको-दम भाइये रहला अछि। समाजमे छी, तँए अपनो ओइसँ भिन्न नहियेँ छी। तहूमे डेढ़ मास पाछूसँ लगन शुरू भेल, माने आधा माघसँ जे लगन समधानि कऽ धेलक ओ फगुआ टपाइये कऽ छोड़लक। ओना, लगन-पाती ठमकल मुदा सोल्होअना बिसरजन नइ भेल। अधा-छीधा अखनो धेनहि अछि।

शुभकान्त काकापर नजैर पहुँचते अन्तिम दिन–माने भेँट भेलाक अन्तिम दिन–क बात मन पड़ल। ओना गप-सप्पक क्रममे शुभकान्त काका बाजल छला जे जाबे गाम-समाजमे विघटनक रस्ता नइ बन्न हएत ताबे गामक उत्थानमे बाधा उपस्थित होइते रहत। तहूमे विघटनो तँ विघटने छी। कोनो कि एक्के रंगक अछि जे सभकेँ बुझले रहत। ओकर तँ चालियो गिरगिटिया आ रंगो गिरगिटिये छइ।

शुभकान्त काकासँ भेँटक अन्तिम दिन जे गप-सप्प भेल छल तइमे असल विषय छल 'सरकारक सड़क योजना।' गाम-गाममे पक्की सड़क बनत, बनबो कएल आ बनियोँ रहल अछि। ऊँचगरो बनत आ मजगूतो बनत। नीक बात। अही क्रममे शुभकान्त काका विघटनक चर्च केलैन। ओना अपन मन बौआ कऽ बैशाखमे जे बेटाक बिआह

करब आ तइमे मोटर साइकिल सेहो देत, तइ दिस झूकि गेल छल। जखन घरमे मोटर साइकिल औत, तइले जँ नीक सड़क नइ रहत तँ ओकर सेखीए की रहत...। मन उधिया गेल रहए। उधियाइत-उधियाइत भदुआर घाटक चाहक दोकानपर पहुँच गेल। अफीमक पानि मिलौल चाहक सुआद जे ओकर छै ओ दोसराक नइ छइ। अछि तँ बहुत शिकारी–माने अफीमक पानि मिला चाह बनौनिहार शिकारी–मुदा ओकर शिकरपन अगुआएल छै, तँए इलाकाक शिकार पकड़ने अछि। नाओं सुनि अपनो मन छुछुआइये लगैए, जँ डेढ़िया दाम दऽ दियौ तँ चाह पीबैत-पीबैत या तँ अलिसाइये जाएब, नहि तँ चुनावक समैयक चुटपुटिया नेता जकाँ भाषने करैत विदा हएब।

मुदा लगले मन बैशाखक लगनसँ पछुआए लगल। मनमे उठि गेल परम्परा। एक मनमे परम्परा उठिते दोसर मन बाजल-

"सासुरमे देल बेटाक सवारीपर चढ़ब पाप छी!"

मने-मन मनमनाइते रही कि बिच्चेमे शुभकान्त कक्काक शब्द-'विघटन' नचैत-नचैत आगूमे खसल। खसिते मनक विचार कँचका माटिक बनल पजेबा पकबैक विचार जकाँ पकपन मनमे आबए लगल। कुम्हारक आवा जकाँ जेना-जेना राति ढहैत जाइए तेना-तेना आवाक बरतनमे पकपन बढ़ैत जाइए आ भोर होइत-होइत पकपन पेबला पछाइत शान्त होइत सेरा जाइए जइसँ कुम्हार ओकरा उघारि बरतनकेँ हाथमे उठा आँगुरसँ टोनि-टोनि अपन कारीगरीकेँ जाँचि-जाँचि सन्तुष्टि पबैए...। मन बेकाबू हुअ लगल जे परिवारमे अहिना सभ दिन लटकल रही आ गामक ऐगला-पैछला बात बुझबे ने करी..? ऐगला-पैछला बात ई जे केमहर सड़क बनैए, केमहर कोसीक नहर खुनाइए आ केतए स्टेट बोरिंग गराइए...। मुदा लगले मन असथिर भऽ गेल। असथिर होइक कारण भेल जे छुट्टी दुआरे शुभकान्त काका

भेँट नहि भेला, ऐमे अधले की भेल। ओहो तँ ओहने लोक छैथ जे गामक सिमानकेँ ऐपार-सँ-ओइपार टहलबे करै छैथ, तखन तँ भेल काजक कुसंयोग जे भेँट नहि हुअ देलक। ओना, मनुखो जँ अपन मोटा फेक घरसँ पड़ा जाए, ओहो अपना जगहपर नीक अछि, मुदा घरक डरे भागब नइ भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सभकेँ स्वतंत्र जिनगी होइ, ऐमे अधले की भेल।

मन नइ मानलक। शुभकान्त काकासँ भेँट करए विदा भेलौं। जहिना ओ अपन पैरक सवारी रखने छैथ तहिना अपनो अछिए। तहूमे गामेक बात छी, अधो किलोमीटरसँ कमे दूरीपर हुनकर घर छैन। ओना, महिना दिनसँ जे आएब-जाएब छुटल छल तइसँ अनठियो केते गोरे पुछबे करता जे 'मन-तन खराब भऽ गेल छेलह जे रस्तो-पेरा बन्न केने छेलह।' फेर मनमे भेल जे ओहो तँ नीके ने हएत। भेँट करए एक गोरेसँ जाएब आ कुशल-छेम अनेकोसँ हएत। हँ, तखन एतेक सतर्की जरूर रखैक अछि जे रस्ते-रस्ते कुशल-छेम करैत चलब, डेग नहि रोकब। ओना गपाह लोकक कमी नहियेँ अछि मुदा ओ अछि गप्पीए सभ-ले। हमरा सन-सन लोक-ले तँ नहियेँ अछि। रहबो केना करत। कुशलो-छेममे ने जीवन छीपल अछि। आइ केना जीबै छी, एतबे ने बुझब अछि। तइले अनका जकाँ हाइ-हाइ करब से की कोनो कुकुर कटने अछि जे नाचल घुरब। तँए समाजक बीच जेते समाजिक जिनगी अछि वएह कुशल-छेम ने जानब-बुझब अछि...।

किछु दूर गेलापर मकशूदन भाय भेटला। मनमे चपचपी देख पुछि देलिऐन-

"भाय, लगन सुतरल किने?"

मकशूदन भाय, बहुआयामी लोक छैथ। चपचपाइत बजला-

"एतेक लालमोहन आ रसगुल्ला जिनगीक कोनो सालमे नइ

खेने छेलौं जेते ऐ साल खेलौं!"

मकशूदन भाइक चपचपी देख बजलौं-

"हजारो टपौलिऐ कि पछुआएले रहलौं?"

जहिना भोरे-भोर केकरो कोनो नीक फल भेटै छै आ मन खुशी ऐ दुआरे होइ छै जे भरि दिन शुभे-शुभ रहत तहिना टपाक-दे मकशूदन भाय बजला-

"यएह ने भेल भोरुका फल। समाजिक लोक छी, सोंसे गामसँ खाँएन-पीन रखने छी, गामक बेसी लोक तँ परदेशीए अछि, मुदा बिआह-दान तँ सभ परिवारमे अछिए। तँए महिना दिनक नम्बरमे काज चला कहुना फगुआ टपलौं।"

पुछलयैन-

"ई तँ भेल खेनाइ-पीनाइ, मुदा लगन तँ असल लड़का-लड़कीक होइ छै किने..?"

जेना नीक गोटी सुतरल होनि तहिना ठहाका मारि बजला-

"बौआ, जिनगीमे एहेन सुतरान कहियो ने सुतरल छल जेना ऐ बेर सुतरल!"

मकशूदन भाइक रसगर बात सुनि मनमे भेल जे जहिना लालमोहन आकि रसगुल्लाकेँ कियो हाथसँ तोड़ि-तोड़ि खाइए आ कियो दाँतसँ काटि-काटि खाइए, मुदा रस तँ लालमोहने आकि रसगुल्लेक रहै छै किने। तँए विचार भेल जे मकशूदन भायकेँ लगनमे जेते सुतरान सुतरलैन ओ टुकड़ी-टुकड़ीमे सुनब बेसी नीक हएत, नमहर रसगुल्ला मुँहमे लइकाल तँ कियो लऽ लइए मुदा जखन चक्कीए रूकि जाएत, माने मुँहक चलबे रूकि जाएत तखन सुआदे की लेब आ रसे की भेटत? खाएर.., जहिना कोनो काज वा विचार बुझैक उत्कण्ठा

मनमे जगने मुँहक जे रूप बनैए, ओहने रूप बना पुछलयैन-

"से की भाय साहैब?"

जहिना केकरो अपन मूल्यवान काज अपन जिनगीक मूल्यकेँ अँकैए, जइसँ जे तुष्टि भेटै छै वएह तुष्टि ओकर जिनगीकेँ ओते सन्तुष्टि प्रदान करैए। जइसँ जेहेन उत्साह जगै छै, ओहने उत्साहित होइत मकशूदन भाय बजला-

"तीस लाखक काज तीन लाखमे केलौं!"

मकशूदन भाइक उत्साहकेँ आरो उत्साहित करब नीक बुझि कहलयैन-

"तखन ते सताइस लाखक काज सुतारलिऐन!"

अपन काज दिस बढ़ैत मकशूदन भाय बजला-

"बौआ, मनुखक मोल मनुखतामे नहि रहि गेल, ओ रूपैआमे बीकि गेल अछि। तँए मनुखतो सोल्होअना मेटा गेल, एहेन कहब अपन अपमानित करब हएत।"

मकशूदन भाइक विचार सुनि मनमे भेल जे विचारकेँ जँ आरो टुकड़ी बना देब से बेसी नीक हएत। बजलौं-

"भाय, अहाँ ते मनुखता आ रूपैआ दुनू कहि देलिऐ?"

गुरुत्व भावमे मकशूदन भाय बजला-

"पाइयक बाढ़िमे लोक भँसिया रहल अछि। एकर अनेको कारण अछि जइमे दूटा जड़ियाएल कारण अछि।"

बिच्चेमे पुछि देलिऐन-

"कोन दुनू?"

"पहिल भेल- अखन धरिक जे जिनगी अपन समाजक रहल ओ अभावक रहल, माने गरीबीक रहल। जिनगीक सैंकड़ो जरूरत

अभावमे मरैत रहल आ जिनगी झड़ि-झड़ि झड़ैत रहल।"

पहिल कारणकेँ नमरबैत देख टोकि देलिऐन-

"दोसर?"

बजला-

"अखन ते ओते निचेन नइ छी जे धरिया कऽ सभ बात कहबह। औगताएल छी तैयो मुड़कट्टीमे कहि दइ छिअ। पाइयोबलाक बीच मनुखता पनैप रहल अछि। इंजीनियर लड़का–माने नोकरी शुदा लड़का–लग जखन लड़कीक कुलशीलतोक चर्च केलौं आ अपन कमाइक संग परिवारोक बात कहलिऐ तखन ओ बाजल- 'पिताक संग कन्याकेँ देखब आ वैचारिक तुलना करैत निर्णय लेब।'

मकशूदन भाइक झमटगर विचार सुनि गप-सप्प करैक उत्साह आरो जागए लगल, मुदा मन रोकि देलक। रोकि ई देलक जे जइ काजे विदा होइ ओ काज लक्ष्य भेल, मुदा बीचमे जँ कोनो दोसर काजे रूकि जाइ छी तँ ओ बिनु बुझल-गमल काजमे अँटकब हएत। ओना, परिणाम दुनू भऽ सकैए- नीको भऽ सकैए आ अधलो भऽ सकैए, तँए अधला भेला पछाइत जे अपन अँटकबकेँ कोसब तइसँ नीक जे मकशूदन भायसँ समए बना पछाइत सभ समाचार बुझि लेब...। बजलौं-

"भाय, अहाँक विचार तँ छोड़ैक मन नइ होइए मुदा शुभकान्त काकासँ भेँट करए विदा भेल छी, तँए अखन...।"

हमर बात सुनिते मकशूदन भाय अपन सहमति दैत बजला-

"बौआ, हमहूँ अखन काजेमे विदा भेल छी तँए दोसर घड़ी दुनू भाँइ निचेनसँ सभ गप बतिया लेब।"

अपन मन अपन काजसँ कनी घुसैक गेल। घुसकैक कारण भेल

जे मकशूदन भाय अपन काजक चर्च कऽ देलैन। मन काबूए-मे ने रहल, मुहसँ खसि पड़ल-

"केहेन काज करए विदा भेल छी?"

हमर बात मकशूदन भायकेँ नीक लगलैन। आन जकाँ नहि जे आगूसँ टोकलौं कि पाछूसँ, तइले खिसिया जाएब। नीकक कारण मकशूदन भाइक मनमे जगलैन जे जिनगीमे जेते अपन काजकेँ धोइ-पखारि चलैत रहब, ओते जिनगीमे नंगपन अबैत रहत। जइसँ सभ सबहक किरदानी बुझत। ऐसँ नीक-बेजा दुनू होइ छै, ओही नीक-बेजाइक बीच तुलित होइत जिनगी चलए वएह भेल जिनगीक नंगापन, जे देवलोकमे महादेवकेँ रहैन।

मकशूदन भाय बजला-

"लगनक महाजन गौड़ी काका छैथ, हुनकेसँ हिसाबो-बारी कराएब अछि आ जहाँ धरि संभव हएत देबो करबैन।"

अखन तक मकशूदन भाइक सम्बन्धमे धारणा बनल छल जे बिआह-दानक बीचमैनमे आमदनी होइ छैन, मुदा महाजनीक बात मकशूदन भाय उठा देलैन! बजा गेल-

"जखन लगनेमे लागल छेलौं तखन महाजनीक फेड़ केना लगि गेल?"

जहिना देहक ऊपरका भाग–जेकरा धोइत-पखारैत रहै छी–सँ धोइत-पखारैत कियो हृदयकेँ धुअ-पखारए लगै छैथ जइसँ मनमे शान्तसँ प्रशान्त सागरक शीतलताक अनुभव होइ छैन तहिना मकशूदन भायकेँ भेलैन। आत्म-बिसवास भरल बोलमे बजला-

"बौआ, घटकैती करै छी, लोक 'घटक भाय'-'घटक काका' सेहो कहिते अछि मुदा जेकरा दलाल लोक बुझैए, हम से नइ छी। परिवारक यज्ञ स्वरूपमे बिआहकेँ सभ दिनसँ बुझबो करै छी आ मानि

कऽ करबो करै छी। ओना बजनिहारकेँ कोनो ठेकान थोड़े छै, जे मनमे एलै से बाजल। मुदा अपना जेते बुधि अछि तेते विचारि सेवा बुझि करै छिऐन। केतौ-केतौ खेबो करै छी, जलखै आ चाह-पान तँ लोक आब अनदिनो रस्तो-पेरामे करैए। मुदा अपन देही जे अतिरिक्त खर्च अछि ओ अपन करै छी। यएह हमर जिनगीक पूजी छी, तँए एकरा जँ नइ बँचा कऽ राखब तँ पूजिये मेटा जाएत। जखन पूजिये मेटा जाएत तखन जीब केना!"

मकशूदन भाइक विचार सुनैत-सुनैत जेना मन भरि गेल। बजलौं-

"भाय साहैब, अखन अहूँ काजमे छी आ हमहूँ काजे जा रहल छी, तँए अखन एतै एकरा अँटका दियौ। निचेन भेलापर काल्हि-परसू भेँट करब आ निचेनसँ भरि लगनक गपो-सप्प करब।"

निसचित समए ऐ दुआरे नइ कहलयैन जे जखन कौल्हुका काजक विचार करब, तइमे जे अँटावेशक संभावना देखब तखने ने कौल्हुका जवान हारब। परसू-ले काल्हि अछि। मकशूदन भाय काल्हि-परसूक अन्तर दिस धियान नइ देलैन। नइ दैक कारण छेलैन जे मास दिनक थकानकेँ दरबज्जापर बैस बितबए चाहै छला तँए समैक अभावो नहियेँ छेलैन।

बजला-

"चाहपत्ती-कॉफी-पान-मसाला आ किछु खाइ-पीबैक वौस जे अछि, ओकरा चाहै छी जे जहिना लगन गेल तहिना ओहो जल्दीए सठि जाए, तँए जखन अबिहह तँ किरिण डुमैत अबिहह। जइसँ साँझक जे पहर अछि ओइमे भरि मन गप-सप्प करब आ...।"

बजलौं-

"बड़ नीक।"

दू डेग आगू हमहूँ बढ़लौं आ दू डेग आगू मकशूदनो भाय बढ़ला। मुदा जहिना बिसरल बात लोककेँ मन पड़ै छै तहिना मकशूदन भायकेँ मन पड़लैन। मन पड़िते ठाढ़ होइत पाछूए-सँ बजला-

"बौआ, कनी रूकह। जोरसँ बजैबला नइ अछि।"

मकशूदन भाइक विचार सुनि ठमैक कऽ रूकि गेलौं। कोन एहेन बात मनमे उठि गेलैन जे अखने घुमि कऽ आबि रहला अछि। अपनो थोड़ेक पाछू ससरलौं। लगमे अबिते मकशूदन भाय कहलैन-

"आबैसँ पहिने गामपर जलखै नइ करिहह। बहुत रास चीज-वौस अछि, अनेरे घरमे रखि कथी-ले सड़ेबो करब आ घरो मँहकाएब।"

बजा गेल-

"सड़लेहे खुआएब!"

ओना, बजैकाल बजा गेल मुदा वस्तु बनैक जे ढंग लोकक बीच आबि गेल अछि, ओइ हिसाबे ओ सड़ल वौस नइ भेल। टटके भेल। ओना नीक आ सड़लक बीच बाइस सेहो अछि। सड़ल भेल जखन ओ वस्तु खाइयोमे कुसुआद लगए आ अहितकर सेहो हुअए। मुदा बाइसक चालि तँ विचित्र अछि। कोनो वौस जखने अपन टटकापन छोड़लक आकि ओकरा पीठेपर बाइसपन आबि जाइए, आ कोनो वस्तुमे जेते बाइसपन अबै छै तेते ओ टटकापन होइत जाइए। जेना रसगुल्ला, अँचार, पाल परहक आम, बगिया। ओना, बजला पछाइत मकशूदनो भाय आगू डेग बढ़ौलैन आ अपनो बढ़ेलौं मुदा मनमे रंग-रंगक मीठगर सुआर अबिते रहल।

दरबज्जाक ओसारक दछिनबरिया चौकीपर बैस शुभकान्त काका गामक जेना गंभीर समस्या–गंभीर समस्याक माने भेल ओहन

समस्या जे समाजक आन परिवारक संग अपनो परिवारकेँ प्रभावित करैत हुअए–मे डुमल होथि तहिना आँखि-ताँखि बन्न केने देवालमे ओंगठल छला।

शुभकान्त काकाकेँ आँखि बन्न देख रंग-बिरंगक विचार मनमे उठए लगल। उठैक कारण भेल जे आदमी-आदमीक अपन-अपन हैसियत होइए। एकटा ओहन अछि जे कखन सुतल रहत आ कखन जागल रहत तेकर कोनो थाहे ने बुझबै। दोसर भेल काजक समैमे सुतनिहार आ तेसर भेल कोनो कठिन समस्याकेँ आँखिक पल्ला बन्न करैत ओकरा सुतियाएब। माने समस्याकेँ तहे-तह बुझैयो आ करैयोक विचार करब। मुदा किछु बजैसँ पहिनहि शुभकान्त काका हमर पैरक धमकसँ बुझि गेला जे कियो पहुँचला अछि।

ओसारपर चढ़ैत-चढ़ैत आँखि खोलि बजला-

"बौआ सुशील! बहुत दिन जीबह। मनमे तेते रास ओझरी सभ लगि रहल अछि जेकरा सौझरबैमे अपने ओझरा जाइ छी। भने तूँ आबि गेलह।"

शुभकान्त कक्काक विचार सुनैमे नीक लागल मुदा मन पाछू घुसकए लगल। पाछू घुसकैक कारण भेल जे जइ ओझरी (अपना संग समाजक समस्या)केँ दिन-राति शुभकान्त काका सोझरबैत चलै छैथ, तइ ओझरीकेँ हमरा बुते सोझराएल हएत। मुदा जहिना भगवानोकेँ भक्तक खगता होइ छैन, मालिकोकेँ नोकरक खगता पड़ि जाइ छै, तहिना ने मनुखकेँ सेहो सहयोगी मनुखक खगता होइते अछि। जँ कहीं अही विचारे शुभकान्त काका बाजल होथि, तखन अनेरे ने मनकेँ झुझुअबै छी। बराबरीक विचार मनमे आएल अबिते बजलौं-

"काका, अबैक मन ते ओही दिनसँ होइ छल जइ दिनसँ भेँट नइ भेल छेलौं, मुदा तेहेन ने ऐ बेरक लगन हूलि-मालि केलक जे

राशनक दोकान जकाँ भऽ गेल।"

बिच्चेमे शुभकान्त काका टोकि देलैन-

"से की?"

'से की' तँ बहुत रंगक अछि, केते कहबैन? मुदा तैयो मोटरी बान्हि मोटा-मोटी कहलयैन-

"जे भेल से नीके भेल जँ राशनक दोकानपर लोक हूलि-मारि नइ करत तँ चाउर-गहुम कियो ओकरा कोठीमे थोड़े दऽ औतइ।"

ओना अपन विचारकेँ समटैक कारण ईहो छल जे डेढ़ मासक पछुआएल विचार शुभकान्त कक्काक मुहसँ सुनैले आएल छी। तैठाम जे अनेरे लगन-पातीक बातमे ओझरा जाएब तँ आन घाटा जे हुअए मुदा समैक घाटा के पुरौत।

हमर बात शुभकान्त काकाकेँ जेना घाव केलकैन तहिना अपन विचारकेँ अगुअबैत बजला-

"बौआ, गाम उजैर रहल अछि!"

भोरक सपना जहिना केकरो राजगद्दीपर बैसा नीन तोड़ि दइ छै आ ओ भकुआएले चारूकात चौंकन्ना हुअ लगैए जे गद्दी कहाँ देखै छी! तेकर ठीक विपरीत मनमे भेल जे जखन गामे उजैर जाएत तखन रहब केतए? केतबो मनकेँ चकोना करी तैयो कोनो कोण देखबे ने करिऐ। मनमे उठल- शुभकान्त कक्काक विचारकेँ आँखि मुइन सभ दिन मानितो एलौं हेन आ जहाँ तक भऽ पड़ल तहाँ तक करितो एलौं अछि। शुभकान्त काका अधला बात बजता से मन मानैले तैयार नहि छल। चारूकात चकोना भेला पछाइत बजलौं-

"से की काका?"

ओना कोनो बात बुझैक जिज्ञासा अधिकांश लोककेँ होइते छै,

मुदा जिज्ञसोक तँ अपन-अपन खाढ़ी बनल अछि। किएक तँ सबहक ने एकरंग ओकाइत अछि आ ने एकरंग हस्ती, सोभाविक अछि जे एकरंग रस्तो किए रहत। माने अनेको खाढ़ियो बनल अछि आ अनेको चलैक रस्तो तँ बनले अछि...। मन ततमताए लगल।

ततमताएल देख शुभकान्त काका बुझि गेला जे जहिना कियो कोनो पोखैर देख डेरा जाइए जे ई डूमा पोखैर छी तँए नइ पैसब, तहिना सघन गाछीमे भूत-प्रेतक बास बुझि डरि जाइए जे मुड़ीए मचोड़ि देत। जखन मुड़ीए मचोड़ि देत तखन छुच्छे धड़ लऽ कऽ केना जीब..?

ततमतीकेँ धकियबैत शुभकान्त काका बजला-

"सुशील, पोखैर हौउ कि गाछी, खेत हौउ कि रस्ता, सभ गामक छी। जखने गामक छी तखने ने सौंसे गौआँक भेल। जइसँ सभ बास करैत जिनगी काटि रहल छी, तँए ओकरा ऐ नजरिये देखए पड़त जे ओ[6] मनुखक शुभेक्षु केना बनल रहत। तइले ते हमहीं-तोहीं ने विचारबो करब आ विचारक अनुकूल करबो करब?"

सतहक सहटल विचार सुनि अपनो सहैट कऽ लगमे पहुँचैत बजलौं-

"से तँ छीहे ने काका।"

ओना विचारक क्रममे बजा गेल मुदा शुभकान्त काका की बुझलैन से तँ मुँह खोलला पछातिये बुझब, मुदा से नहि, शुभकान्त काका विचारकेँ शुभ बुझि बजला-

"बौआ, गाम छोड़ि भागब आइ धरिक इतिहास रहल अछि, अखनो धड़ल्लेसँ अछि, मुदा गाम अपना रहै-जोकर बनाएब ई तँ

[6] पोखैर-गाछ-खेत-रस्ता

गौंए-क कर्तव्यक श्रेणीमे अछि किने। एहेन बुझनिहार केते गोरे छैथ?"

ओना गपक क्रममे सभ बात सुनलौं, मुदा बुझैक क्रममे शुभकान्त काका की बुझि बजला आ अपने की बुझै छी एहेन दूरी तँ बनले रहल। मुदा लगले मन मुड़ियाइत विचार देलक जे जखन गामे-समाजक विचार छी, जे बहुत सुनलहो अछि आ बहुत देखलहो ऐछे, तखन अनेरे मनकेँ मारि रहल छी।

बजलौं-

"हँ से तँ भाइये रहल अछि।"

ओना दोहरी-तेहरी प्रश्न शुभकान्त कक्काक विचारमे छेलैन, मुदा सुतिहार जकाँ तँ तखने ने सुतिया कऽ बाजब जखन सूत-सूतक किरदानी बुझब मुदा से तँ बुझि नहि रहल छेलौं, तँए मिलजुमने बजलौं। ओना, हमर बातसँ शुभकान्त काकाकेँ जेना सह भेटल होनि तहिना मुँहक चुहचुहीसँ बुझि पड़ल। हुनकर चुहचुहीसँ अपनो मन चुहचुहा गेल छल जइसँ विचारक चुहचुही मनमे उपकिये गेल छल जे शुभकान्तो काका आँकि लेलैन। आँकिते अँकियबैत बजला-

"बौआ पान साए बीघाक रकबा अपन गामक अछि, हजारसँ ऊपरे परिवारो हएत।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"हँ से ते हेबे करत!"

बजला-

"पहिने बास आ चासकेँ फुटाबह।"

'बास' तँ बुझलौं मुदा 'चास' बुझबे ने केलौं जे फुटाएब। तँए मन कनी मिड़मिड़ाए लगल। जे बात शुभकान्त काका बुझि गेला। तँए हमरा बिना किछु पुछने वएह बजला-

"जेते परिवार अछि ओकरा बसैले तँ जमीन चाही किने?"

सहगर विचार सुनि बिजलौं-

"हँ, से तँ चाहबे करी।"

शुभकान्त काकाकेँ जेना हमरा विचारसँ उत्तर भेट गेल होनि तहिना बजला-

"बासभूमिसँ आगू बढ़ि आब चास दिस चलह। देखते छहक जे चारू बाध–पूबरिया-पछबरिया-उत्तरबरिया-दछिनबरिया–मे साए बीघासँ ऊपरे चौरी जमीन अछि, जे शुरुहे अखाढ़मे कड़गड़ बर्खा भेने वा बाढ़ि एने डुमि जाइए। जइमे कोनो साल जँ सुखार भेल तँ दूध महक डाढ़ी जकाँ किछु उपजा भेबो कएल आ नहि तँ सोल्हन्नी खसले रहि गेल।"

अपनो एक बीघा चौरी खेत अछिए। देखल-सुनल-भोगल अछिए। केते साल उपजाक लाभक कोन बात जे लगतो डुमि जाइए। बजलौं-

"हँ से सएह बुझू।"

शुभकान्त काका बजला-

"गाममे पोखैर-झाँखैर केते हएत?"

बजलौं-

"अकौर गाम जकाँ अठारह गण्डा तँ नहि अछि मुदा तीस-पैंतीसटा सँ कम नहियेँ हएत। पोखैरक अतिरिक्त डबरा-कोचाढ़ि सेहो पचाससँ ऊपरे हएत।"

शुभकान्त काका बजला-

"तीस-पैंतीसक बात छोड़ह, पचीसेटा मानि लहक। जेकर रकबा केते हएत?"

अपना जखन पोखैर नइ अछि तखन अनकर पोखैरक हिसाबे किए बुझूँ, तँए बुझले ने छल। मुदा जखन शुभकान्त काका पुछलैन तखन जँ किछु ने बाजब सेहो केहेन हएत! बजलौं-

"पचीसटा अछि तँ पचीस बीघा मानि लिअ।"

'पचीस बीघा' सुनि शुभकान्त कक्काक मनमे भेलैन जे सुशील सोलहन्नी अनाड़ी अछि। बजला-

"बड़की पोखैरक रकबा केते अछि से नहि बुझल छह?"

कहलयैन-

"सुनै छी दैंतक खुनल पोखैर छी, बाबन बीघाक अछि।"

हमर बात सुनि शुभकान्त कक्काक मन मुस्कियेलैन। मुस्कियाइते बजला-

"जखन एकेटा बाबन बीघाक अछि तखन आरो केते हएत।"

जेना कान ठाढ़ भेल, बजलौं-

"तखन ते बहुत हएत!"

'बहुत' सुनि शुभकान्त काका बजला-

"नीक जकाँ तँ हमरो नइ बुझल अछि मुदा एते तँ बुझबे करै छी जे कोनो पोखैरक तीन अंग होइए। पहिल पनिझाउ, दोसर कछेर आ तेसर महार।"

बजलौं-

"हँ, से तँ सभ पोखैरमे अछिए।"

शुभकान्त काका बजला-

"एकरो अखन एतै छोड़ह। गाममे पुबरिया बाध आ पछबरिया बाधमे कोसी नहर खुनाएल अछि जइसँ पटौनीक काज केहेन होइए

से तँ देखते छहक।"

बिच्चेमे बजलौं-

"हँ, से ते जखन पटौनीक खगता रहैए तखन पानियेँ ने अबै छै आ जखन पानिसँ खेत डुमल रहै छै तखन नहरोमे पानि आबि आरो भरिये दइ छइ!"

विचारकेँ आगू बढ़बैत शुभकान्त काका बजला-

"एतबे नहि ने अछि। आरो बहुत समस्या अछि जइसँ गामक उपजा-बाड़ी मारल जाइए।"

शुभकान्त कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। पुछलयैन-

"से की अछि?"

बजला-

"पहिनौं–माने जखन पर्यावरण-प्रदूषणक हवा नइ उठल छल–गाछी-कलम लोक[7] लगबै छला आ लगेनौं छला, जे फलक खेतीक रूपमे छल। मुदा जखन पर्यावरण-प्रदूषणक हवा चलल तखन फलक खेतीक रूप बिगड़ए लगल!"

फलक खेतीक की रूप बिगड़ए लगल से नजैरमे एबे ने कएल। पुछलयैन-

"से की काका?"

शुभकान्त काका बजला-

"लोकक नीक विचार हवामे उधिया गेल। फलोक गाछसँ ऑक्सीजन भेटैए, जइसँ दूषित हवा स्वच्छ बनैए से विचार कमि गेल

[7] किसान

आ बढ़ि गेल जे काँटक गाछ लगौने अधिक ऑक्सीजन भेटैए! जइसँ उपजा[8] धीरे-धीरे कमए लगल आ बोन-झाड़ बेसिया गेल।"

आँखिक सोझमे देखल ऐछे तँए सहमत दैत बजलौं-

"हँ, से तँ भाइये गेल अछि!"

सहमत पबिते शुभकान्त काका बजला-

"एकरो छोड़ह। देखबे करै छहक जे गामक जेते उपजाउ जमीन अछि ओ केना अनउपजाउ भेल अछि। तैपर सँ बाहरी बेपारी सभ आबि-आबि की-कहाँ[9]क गाछ लगबैक तेहेन-तेहेन फर्मूला सभ लोकक सोझमे रखैए जे गाछ-बिरीछ फलक साधन नहि पाइक साधन बनि रहल अछि!"

बजलौं-

"हँ, से तँ हमहूँ पचीसटा गाछ सागवानक रोपलौं अछि। बीसे बर्खमे लाखक पैदावार भऽ जाएत।"

शुभकान्त काका बजला-

"एक दिस फलक उपटान भेल जा रहल अछि, जे मनुखक पौष्टिक अहार छी, दोसर दिस जइ लकड़ीक गुणक चर्च करैए–माने घरक समान बनबैमे–तेकर जगह लोहा आ फाइवर-प्लाष्टिकक वस्तु नेने जा रहल अछि तखन ओइ लकड़ीक उपयोग केतए हएत?"

शुभकान्त कक्काक बात सुनि जेना भक् खुजल। बजलौं-

"हँ, से तँ भाइये रहल अछि!"

सहमत पबिते शुभकान्त काका बजला-

"एकरो छोड़ह। गामक उपजाउ जमीनक–माने उत्पादित

[8] फलक

[9] सागवान, महौगनी इत्यादिक

पूजीक– यएह गति भेल अछि आ भेलो जा रहल अछि। आब बास भूमिक लएह।”

बासभूमिक नाओं सुनिते आरो साकांच भेलौं। इशारा करैत बजला-

“देखते छहक, गाममे सड़क सभ बनि रहल अछि। बाढ़ि-बर्खाक इलाका अपना सबहक छीहे। दुनू बेठेकान अछि। रौदियो होइए आ दहारो तँ होइते अछि। बाससँ माने घर-आँगनसँ ऊँचगर-ऊँचगर सड़क बनैए–जइमे पानिक निकासीक समुचित बेवस्था नइ होइए। जखन बाढ़ि औत आकि बेसी बरखे हएत तखन ओ पानि घेरा कऽ बासोकेँ उपटौत आकि नइ उपटौत?”

नजैरपर चढ़िते चकित होइत बजलौं-

“कोसिकन्होसँ बदतर हालत भऽ जाएत!”

शुभकान्त काका बजला-

“एहेन अपनेटा गाममे नहि, गाम-गाममे अहिना विघटन भऽ रहल अछि। तखन तोंही कहह जे गाम उजरत की नहि?”

शुभकान्त कक्काक विचार सुनि मन औनाए लगल। कोनो रस्ते ने आगूमे देखिऐ जे किछु बजितौं तँए उदास होइत चुपे रहलौं।

चरियबैत शुभकान्त काका बजला-

“चुप भेने काज नइ चलतह। अपन जीबैक उपाय अपने नहि सोचि आगू बढ़बह तँ अनका भेरोसे थोड़े हेतह।”

◌

शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017

टुटल मनक जुटान

दुनियाँमे जहिना कोनो बेकती, परिवार वा समाजसँ मन टुटिते लोक अपन जिनगीक अन्तो करए चाहैए आ ओइ जिनगीकेँ छोड़ि पड़ाइयो चाहैए तहिना आइ उन्नैतलाल काकाकेँ बेर-बेर मनमे उठि रहल छैन। ओना, कहैले तँ लोक अपने मनटा–माने शरीरक भीतर जे संचालन कर्ता अछि–केँ मन बुझैए। मुदा की तेतबे अछि? नहि। हँ, ओहो अछिए। मने ने मनुखकेँ मनुखाहो बनबैए आ मरखाहो बनबैए। कहैकाल ने कहि दइ छिऐ जे सबहक मन बरबइरे बनल अछि माने ई जे एके माटि-पानिक बनल अछि, भऽ सकैए ईहो विचार दमगर हुअए, मुदा ईहो तँ प्रश्न ऐछे जे एक माटि-पानिसँ बनल वौस एके गुण-धर्मक ने हएत? मुदा बेकतीक मनकेँ जँ एक मानियों लइ छी, तखनो तँ परिवारक मन आ समाजक मन बाँकी रहिते अछि। जखन कि दुनूमे सँ–माने परिवार आ समाज–कोनो मनुख जकाँ नइ उड़ैत चलैए। ओना मनुख जकाँ ओ लगले अमेरिका आकि लगले चीन नइ पहुँच जाइए माने हवाइ-जहाजसँ चीने होइत अमेरिका वा अमेरिकेसँ चीन होइत अपना ऐठाम अबैए। भलेँ से नहि हुअए मुदा ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे लोके जकाँ परिवारो आ समाजो नहियेँ उड़ैत चलैए। ईहो तँ होइते अछि जे कोनो परिवार एक गामसँ उपैट दोसर गाम जा बसैए आ कोनो समाजो अबेवहारिक विचारसँ बेवहारिक

विचार दिस बढ़ि अपन गुण-धर्म बदैल लइए, तँ कोनो बेवहारिक विचारसँ अबेवहारिक विचार दिस सेहो बढ़िते अछि। ओना मनुखे जकाँ परिवारो आ समाजो नहियेँ छी जे पेटक खातिर रने-बने वौआएल फिरत। मनुखकेँ पेट जरै छै तँए भागल फिरैए आकि दौड़ल घुमैए। ओना, खाली दौड़बे-टा करैत तखन तँ ईहो कहल जाइत जे पेट-ले परान गमबैए, मुदा तैसंग अपन सभ किछु गमबैले सेहो तैयार रहिते अछि ईहो तँ कहल जा सकैए।

भिनसुरका समय। लग्गी भरि ऊपर सुरूज उठि चुकल छल। दरबज्जापर बैसल मने-मन उन्नैतलाल काका अपनो, परिवारो आ समाजोक जे क्रिया-कर्म देख रहला अछि तइसँ मन भीतरे-भीतर छँहो-छीत भऽ रहल छेलैन। मनक पूर्व निर्धारित जे विचार समुद्रसँ समृद्धपन दिस उन्मुख छेलैन ओ एकाएक झहैर-झहैर कऽ झड़ि रहल छेलैन..! उन्नैतलाल कक्काक मनमे उठि रहल छेलैन- परिवारकेँ जइ रूपे आगू बढ़बए चाहै छैलौं आ की देख रहल छी? जँ अहिना परिवारक भीतर परिवारजनक बीच चलब शुरू हएत तखन केते दिन परिवार परिवार जकाँ चलि सकैए? जँ सम्मलित रूपमे नहि चलत तखन परिवारमे समृद्धता केना औत..?

उन्नैतलाल काका ने आगूक कोनो स्पष्ट रस्ता देख रहल छला आ ने पाछूए घुसकैक मन कबूल कऽ रहल छेलैन। किछु करैत किछु ने बनि पाबि रहल छेलैन। तही बीच सोझमतिया काकी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। पत्नीक हाथमे चाह देखते उन्नैतलाल काका बजला-

“चाह पीबैक मन नइ होइए।”

ओना, काकाकेँ चाह पीबैक मन नइ होइतो चाहक अभ्यासी विचार जागिये रहल छेलैन। तैबीच चाहक गिलास आगू बढ़बैत

सोझमतिया काकी कहलकैन-

“अहिना दिनक दोख भेने मनमे कुवाथ अबै छै, चाह पीब लिअ। मन खनहन होइते जिरा जाएत।”

एक तँ परिवारक बीच जे समांग सभ चालि-ढालि पकड़ने जा रहल छैन तइसँ उन्नैतलाल काका मने-मन कुपित होइते छला जे अपन विचारकेँ टुटैत-फुटैत देख आरो मेघौन जकाँ चिन्तीत मन सघन भऽ रहल छेलैन। मुदा पत्नीक आग्रहकेँ स्वीकारैत उन्नैतलाल काका हाथसँ चाहक गिलास पकड़लैन। गिलास पकड़ैबते सोझमतिया काकीक मन सेहो सोझरेलैन। सोझराइते बजली-

“दुनियाँमे के एहेन अछि जेकर मन टुटै-जुटै आकि टुटै-फुटै नइ छै, ओ चाहे अपन दैहिक हौउ आकि परिवारिक-समाजिक।”

तैबीच उन्नैतलाल काका दू घोंट चाह पीब नेने छला। पत्नीक मुहेँ ‘टुटब-फुटब सोभाविक अछि’ सुनिते बजला-

“अहूँ अपन चाह एतै नेने आउ। दरबज्जेपर संगे-संग पीबो करब आ गपो-सप्प करब। भऽ सकैए जे गपे-गपीमे गपक जड़िये भेट जाए।”

ओना सोझमतिया काकी उन्नैतलाल कक्काक विचार सुनि लजा गेली। सरमाइक कारण भेलैन जे आइ धरि पतिक सोझमे बैस एकठाम चाह नइ पीने छेली। चाहेटा नहि ने, ने कहियो सोझमे बैस जलखै केने छेली आ ने कल्लौए खेने छेली आ जहिया कहियो तीर्थाटन वा अस्पताल संगे जाइ छेली तहिया जँ एक बेर खेबो-पीबो करै छेली तँ पतिक सोझसँ उनैट–पाछू घुमि–खाइ-पीबै छेली...। मुदा सोझमतिया काकीक सोझमे अखन धर्म संकटक स्थिति बनि गेल छैन। धर्म संकट ई जे पतिकेँ अनुकूल राखब माने खुश राखब पत्नीक पुनीत कर्तव्य मानलो जाइए आ बुझलो जाइते अछि। तैठाम जँ

पतिक विचारकेँ काटि देथिन सेहो नीक नहि बुझि पड़ै छेलैन आ दोसर दिस मनमे ईहो उठि रहल छेलैन जे परम्परासँ अबैत बेवहारकेँ तोड़बो केहेन हएत..? ओना दुनू विचारक बीच सोझमतिया काकी ओझराए लगली मुदा पतिक सेवामे ने उपस्थित छेली तँए अखन कोन रूप पूज्य हएत तैपर नजैर आबि जुमलैन। मनमे नव नजैर अबिते सोझमतिया काकी सोझे मतिये बजली-

"बड़बढ़ियाँ, अँगनासँ चाह नेने अबै छी। जखन दुनियाँ जनैए जे अर्द्धांगिनी छी, तखन सोझमे चाह पीब आ गप-सप्प करब कोन बड़का गप भेल। बड़का विषय तँ ओ ने हएत जे दुनू परानी परान-मे-परान सटबैत अपनो आ परिवारोक परानीक सम्बन्धमे विचार करब।"

पत्नीक विचार सुनि उन्नैतलाल कक्काक मन सेहो उन्नैत दिस बढ़लैन। उन्नैत दिस बढ़िते मनमे उठलैन- जहिना कोनो अन्न, तीमन-तरकारी वा फल-फूलकेँ, ओना फूलक दू रूप अछि- एक फल पैदा करैक आ दोसर स्वयं फलमे बदैल जाएब–तीन अवस्था होइ छै, 'खिच्चा-काँच', 'डमहाएल-जुआएल' आ 'तिलकल-पाकल' तहिना ने लोकक बुधियो-विवेक आ मनो-इच्छाक होइ छइ? ऐठाम अबिते उन्नैतलाल कक्काक मन सहमलैन। सहैमते अपन विचार जे विचारक अनुकूल अपन जीवन धारण करैक मन बनि गेल छैन तेकरा पुनरीक्षण करैक विचार जगलैन। जगिते मनमे एलैन- जखन परिवारमे ने सबहक बेवहारिक जिनगी एकरंग अछि आ ने वैचारिक आ ने क्रियागत तखन एकरंग विचार मानबो केते दूर तक सम्भव अछि?

तैबीच सोझमतिया काकी अँगनेसँ चाह पीबैत दरबज्जापर पहुँच उन्नैतलाल कक्काक आगू आबि मुँह मिलानी करैत विहुसैत घोंटे-घोंट चाह पीबए लगली। ओना, चाहक रससँ सोझमतिया काकीक मनमे जे होइत होनि, मुदा अपना बुझि पड़ल जे जहिना माली अपन

फुलवाड़ीमे भोरे-भोरे फूल लोढ़ि, बगवार अपन बागमे फल बीछि खुशी होइए तहिना ने भोरे-भोर परिवारमे कोनो परिवारिक नीक फल भेट गेने सेहो भऽ सकैए, जे सोझमतिया काकीकेँ भऽ रहल छेलैन।

सोझमतिया काकीक गिलासक चाह सठल नइ छैलैन मुदा अपन जिनगीक क्रियाक गाड़ीकेँ आगू दिस ससारैत उन्नैतलाल काका अपन हाथक खाली गिलासकेँ चौकीक निच्चाँमे रखि पान लगबैले पनबट्टी निकालि आगूमे रखलैन। ओना, उन्नैतलाल कक्काक अगुआइत काज देख सोझमतिया काकी औगतेली नहि, माने कोनो काज करैकाल जे कियो पछुआए लगैत तँ अपन काज पुरबैले ओ काजकेँ अगुअबैत आगू बढ़ए चाहैए, से सोझमतिया काकीकेँ नहि भेलैन। तेकर कारण छेलैन जे पतिक हाथमे चाहो पहिनहि देने छेलखिन, पछाइत पतिक आदेश पेब आँगनसँ चाह आनि दरबज्जापर पीबै छेली तँए पछुआएल छेली।

पानक पात पसारैत उन्नैतलाल काका बजला-

"चाहे पीबैमे भरि दिन गमा देब तखन ओइ चाहक पुरती केना करब जेकर खगता अछि?"

ओना, सोझमतिया काकीक मन सेहो चाह पीबैत-पीबैत फुला गेल छेलैन जे फुलाएले मुहेँ बजली-

"एक तँ जिनगीक पहिल दिन बुझू आकि जिनगीक पहिल फुलाएल काज बुझू, तखनो जँ रसे-रसे नइ पीब तखन चाहक जे असल रूप चाह अछि ओ केना पेब सकै छी।"

सोझमतिया काकीक फुलाएल विचार सुनि उन्नैतलाल कक्काक मन सेहो फलफलाए लगलैन। फलफलाइते बजला-

"जहिना हम अहाँक छी आ अहाँ हमर छी तहिना ने परिवारोक जे अछि सेहो सभ अपनो छी अपनो सभ सबहक छिऐ।"

पतिक विचार सोझमतिया काकीकेँ नीक लगलैन। नीक लगिते अपनो आ परिवारोक नीक बुझि बजली-

"एकरा के काटत।"

जखने कोनो विचार वा काज जमीनपर उतैर माने भूमिगत होइत अपन अकाट रूप धारण करैए तखनेसँ ने ओ अकाट बनि ठाढ़ होइत चलए लगैए। बेवहारिक ई विचार मनमे अबिते उन्नैतलाल काकाकेँ अपन अकटपन जगलैन। अकटपन जगिते मनो गवाही दिअ लगलैन जे जखने एको गोरे विचारकेँ विवेकसँ विचारि संगे-संग विचरण करए लगत तखनेसँ ओकर शक्तिमे दूना वृद्धिक संभावना बढ़िते अछि। यएह संभावना ने आगू बढ़ैत सम्पन्नता दिस बढ़ैए..!

समगम विचारक बीच उन्नैतलाल कक्काक मन पहुँचते विचार देलकैन जे जखन दुनू गोरे एकठाम ठाढ़ भऽ परिवारकेँ देख रहल छी तखन किए ने परिवारक बीच जेतए मनक टुटान भऽ रहल अछि ओतैसँ गप-सप्प करी, विचार-विनिमय करी जइसँ मनक टुटानक जड़ि भेट जाए। जेतए जड़ि भेट जाएत ओकरा पुन: जगबैत ओत्तैसँ जगजिआर करैत आगू दिस बढ़ब...। बजला-

"अखन तक जइ आशा आ उम्मीदसँ परिवारकेँ बुझै छेलौं से नहि अछि। तँए ओइ 'नहि'केँ नीकसँ जानि 'हँ' दिस केना बढ़ाएब, ई जड़ि बात भेल।"

विचारक सहमे सहटैत सोझमतिया काकी बजली-

"हँ से तँ भेबे कएल।"

ओना बजैक क्रममे सोझमतिया काकी बाजि तँ गेली मुदा उन्नैतलाल कक्काक विचारकेँ जइ सिमानपर सँ बुझक चाही से नहि बुझि पेली। जे उन्नैतलाल काका मने-मन आँकि नेने छला। जइसँ मन घुरियाए लगल छेलैन जे जइ बातकेँ संगी जकाँ पत्नी बाजि रहली

अछि ओ स्वयं बुझि तँ नहि पेब रहली अछि! नइ बुझने जैठामसँ परिवारक नीव पड़त सएह कमजोर भऽ जाएत। तँए नीक हएत जे किए ने पत्नीए-केँ प्रश्नकेँ उनटबैत पुछिऐन जे 'आगू केना डेग उठाएब।'

'आगू केना डेग उठाएब' सुनि सोझमतिया काकी सहैम गेली। सहमबो केना ने करितैथ। परिवारमे देख रहल छेली जे कियो परिवारकेँ अपन बुझि दिन-राति खून-पसेना एक करैत काजमे लागल रहैए आ कियो काजकेँ विचार बुझि नीक-अधला कहि काजकेँ धरतीपर उतारियो ने रहल अछि। जइसँ ओ स्वयं परिवारक भार स्वरूप बनि गेल अछि। तैठाम वैचारिकतासँ थोड़े काज चलत। ओ तँ तखन चलत जखन हर आदमीकेँ–माने परिवारक भीतर जे जइ सिमानपर अछि–ओकरा ओत्तैसँ गतिशील जिनगी दिस धकेलब। माने काजक जिनगीमे केतौ आगूसँ छोर पकैड़ खिंचब तँ केतौ पाछूसँ आगू मुहेँ धक्कासँ धकियाएब...।

जाबे नइ करब ताबे परिवारमे एकभग्गु गतिशीलता रहबे करत। एकभग्गु गति रहने एकभग्गुपन रहबे करत जइसँ सदिकाल मनक टुट परिवारमे होइते रहत। ओना, कोनो विचारक चोटक असर सेहो मनुख-मनुखपर निर्भर करैए। क्रियाशील मनुख ओइ चोटकेँ अपन चोटाएल जिनगीमे उतारए लगैए जे संकल्पक रूपमे ओकरा जिनगीमे उभरैत उठैए जखन कि क्रियाहीन मनुखपर वएह चोट जलनशील रूपमे उठैए, जइसँ रंग-रंगक उतरा-चौरी जनमए लगैए। परिणाम स्वरूप डेगे-डेग, पले-पल मनक टुटान बढ़िते जाइए।

अपन नारीत्व गुणकेँ पकैड़ सोझमतिया काकी बजली-

"जहिना अहाँ पति छी तहिना ने परिवारोक पतियो आ पितो छिऐ, तैबीच किछु बाजी से उचित हएत।"

ओना सोझमतिया काकीक पेट उन्नैतलाल काका परेख नेने छला मुदा क्रियाक जे रूप अछि, माने काज दिस उत्साहित करैक, ओ जँ खुशी मनसँ विचार-विनिमय हुअए तँ ओ ऊँच्च कोटिक भेल...। मुस्की दैत उन्नैतलाल काका बजला-

"जहिना कोनो गाछक एकटा शील होइए आ आगू ओकर डारि-डारिक संग पात होइए तहिना ने परिवारोमे अपना सभ भेलिऐ।"

हुँहकारी भरैत सोझमतिया काकी बजली-

"से तँ भेबे केलिऐ।"

पत्नीक सहमत पेब उन्नैतलाल काका बजला-

"जहिना गाछक शील गाछक धड़ भेल, तहिना परिवारमे सेहो शील रूपमे अछि, जेकरा धड़ रूपमे धारण करैत जखन डारि-पात दिस बढ़ाएब तखने ने परिवार परिवार जकाँ बढ़त।"

ओना उन्नैतलाल काका एकसूरे बजैक क्रममे बाजि गेला, मुदा सोझमतिया काकी बिच्चेमे अकबका गेली। अकबकाइक कारण भेलैन जे गाछक शील आ डारि-पात तँ आगूमे देखै छेली तँए बुझैमे कोनो भाँगठ नइ भेलैन, मुदा परिवारोमे अहिना अछि से बुझबे ने केलीह। नइ बुझैक कारण ईहो छेलैन जे परिवारक जे ढब समाजमे देख रहल छेली, ओइ अनुकूल नजैर छेलैन। माने ई जे कोनो पिताकेँ जँ दू सन्तान छैन आ ओइ दुनूकेँ जँ बाल-बच्चामे अन्तर अबैए आ समाजिक जे परिवेश बनि रहल अछि, पढ़ाइ-लिखाइ, विवाह-दान ओ एकटा नव समस्या परिवारक बीच आनैए। दू भाँइक भैयारी ओहनो अछि जे कसा-मस्सीसँ दुनू भाँइक घर-घराड़ीक अँटावेश भेल अछि, बाँकी जिनगी ओकर हाथ-पैरक बले छै, तइ परिवारक समस्या आ दस-बीस बीघा जमीनबला किसान परिवारक समस्यामे दूरी तँ अछिए। तँए परिवारमे माता-पिता वा दादा-दादी किए ने होथु

परिवारक सभजनसँ परिवारिक सम्बन्धक संग बेकतीगत सम्बन्ध सेहो ओहने बनक चाही जेहने गाछक संग ओकर डारि-पातक छइ।

अकबकाएल सोझमतिया काकीकेँ कोनो एहेन विचार मनमे उठिये ने रहल छेलैन जे समुचित जगहक समुचित विचार होइतैन। तँए अपनाकेँ पाछू घुसकबैत बजली-

"से केना हएत?"

सोझमतिया काकीक निराएल मनक बेराएल विचार सुनि उन्नैतलाल काका बुझि गेला जे पत्नी सोल्हन्नी थकमका रहली अछि। ने आगूक बाट देख रहली अछि आ ने पाछू हटने काजक सद्वैत देखा रहल छैन। होइतो अहिना छै जे जखन कियो कोनो काज वा विचारमे ओझरा ओकर सोझपनकेँ नइ देखैए तखन ओकर मन कखनो ओझपन दिस तँ कखनो बोझपनक बीच नाचए लगिते छइ...। उन्नैतलाल काका बजला-

"परिवारमे जे एक-दोसराक बीच वैचारिक दूरी बनि गेल अछि, जँ ओकरा एक-एकक बीचक दूरीकेँ जाबे नीक जकाँ नइ बुझि जाँचब-परखब ताबे मनक जे मलिनताक दूरी अछि ओकरा नीक जकाँ नहि देख पाएब। जे टुटनक घाट बना रहल अछि ओकरा केना पकड़ब। आ पकड़ेने ओ केना पुन: स्थापित भऽ पूर्व रूपमे औत। से केना संभव हएत?"

ओना पतिक विचारकेँ सोझमतिया काकी धियानसँ सुनलैन जरूर मुदा सुनला पछातियो कोनो उत्तर मनमे नइ उठलैन। नइ उठैक कारण भेलैन जे जइ तहमे माने जइ गहराइमे परिवारजनक बीच मतभेद जगल छैन तइ तहक गहराइमे सोझमतिया काकी जाइये ने पेब रहल छेली। जखन जाइये ने पेब रहल छेली तखन मने केतए विचार करितैन। तँए पतिक मुँह दिस बकर-बकर देखए लगली। ओना

भीतरे-भीतरे किछु बजैक इच्छा जरूर होइ छेलैन मुदा जमीनसँ हटि किछु बाजबो केहेन हएत? ई सोझमतिया काकीक मनकेँ रोकि दइ छेलैन।

अनायास उन्नैतलाल कक्काक मनमे उपकलैन जे चेतनशून्य बनने थोड़े काज चलत। जाबे चेतनशीलता मनुखमे नहि औत ताबे ओ बुझिये की सकैए आकि विचारिये की सकैए। तँए सोझमतिया काकीक चेतनशीलताकेँ खोरब जरूरी बुझि उन्नैतलाल काका बजला-

"एना चुप रहने काज चलत!"

बजैक क्रममे सोझमतिया काकी पुछि देलखिन-

"से तँ नहियेँ चलत, मुदा...।"

विचारकेँ आगू बढ़बैत उन्नैतलाल काका बजला-

"मुदा की?"

विचारमे ओझराएल सोझमतिया काकी अपन वेवसी परगट करैत बजली-

"अहाँ किछु छी तैयो ते पुरुखे छी किने, अहीं ने ऐगला-पैछला पुरखाक हिसाब बुझबै।"

पत्नीक विचार सुनि उन्नैतलाल कक्काक मन पसीज गेलैन। पसीजते मनमे विचार जगलैन जे जाबे परिवारक मूल बातकेँ नीक जकाँ नइ बुझि पाएब ताबे आगूक रूप-रेखा केना बना सकब। कोनो घर बनबैले पहिने ओकर नीव लेल जाइए। मुदा नीवो तँ नीव छी। एहेन तँ नहि, जे पँच-मंजिला मकानक नीव आ एक-मंजिला मकानक नीव वा मकानक जगह टटघर-भीतघरक नीव एक्के रंग हएत। ओ तँ निर्भर करैत अछि जे केहेन घर अहाँ बनबए चाहै छी तैपर? टटघरक नीवपर पँच-मंजिला मकान केना बनि सकैए वा पँच-मंजिले मकानक

नीवपर टटघर केना बनि सकैए। ओ तँ निर्भर करैत अछि घरक रूप-रेखापर...।

उन्नैतलाल काका बजला-

"देखू जेते सुगमतासँ बुझए चाहै छी ओ सुगम नइ अछि, तँए..?"

आगूक दिशा-बाट देखते सोझमतिया काकीक कलेश भरल मन एकाएक कलैश गेलैन। कलैशते बजली-

"समाज हौउ आकि परिवार, हमर बाटक तँ पहिल बटोही अहीं ने छी। तँए अनका केकरासँ पुछबै?"

पत्नीक विचार सुनि उन्नैतलाल कक्काक मनमे गुरुत्वक आभास भेलैन। आभास होइते विचार उठलैन जे पहिने परिवारक अखुनका जे स्थिति अछि ओकरा अपने जइ हिसाबे बुझै छी तइ हिसाबे हिनको कहिऐन। जँ केतौ विचारमे अन्तर औत तँ ओकरा वस्तु-स्थिति देखैत सामंजस करब। जँ से नहि औत तँ जहिना बाल-बोधकेँ शिक्षक 'अ-आ' सँ 'कबीर-काने' तक पढ़ा-लिखा सिखा पुन: विद्यार्थीक मुहेँ सुनि अपन कर्तव्यसँ तुष्टि पबै छैथ तहिना उन्नैतलाल कक्काक मनमे जगलैन। जगिते बजला-

"समाजमे देखते छी जे परिवारक बीच मन टुटने कियो गरदैनमे फँसरी लगा प्राण तियाग करैए तँ कियो रेलगाड़ीक पहिया तरमे अपन गरदैन दए जिनगीकेँ अन्त करए चाहैए। कियो जहर-माहूर खा मरए चाहैए तँ कियो घर छोड़ि पड़ा जाइए।"

बिच्चेमे सोझमतिया काकी टोनैत बजली-

"से की केकरोसँ चोराएल अछि। सभ बुझबो करैए आ आँखिसँ गाम-समाजमे देखबो करिते अछि।"

पत्नीक सहटल विचार सुनि उन्नैतलाल कक्काक मन सहीटमे पहुँच गेलैन माने समतल विचार मनमे जागए लगलैन। जगति मनमे उठलैन- जहिना मनुखकेँ तहिना परिवारो-समाजोकेँ मोटा-मोटी तीन रूप होइ छइ। पहिल समतल स्थिति जे समय-सापेक्ष होइए आ दोसर होइए समतलसँ निकैल अतल-बीतल आ तेसर होइए अबैबलामे साँझपन माने भविसमे एकरूपता। अपन परिवारक जे अतल-बीतल अछि ओ ओहन नइ अछि जे कियो जहर-माहूर खा मरए चाहैत वा एहनो नइ अछि जे रेलगाड़ीक पहिया तरमे गरदैन दइले तैयार भऽ जाइए वा फँसरिये लगबए चाहैए। मुदा रोगो[10] तँ असान नहियेँ अछि। जहिना तीन स्थितिमे परिवार बँटल अछि तहिना परिवारक श्रमशक्ति सेहो तीन रूपमे बँटि गेल अछि। किछु गोरे परिवारक ओहन समर्पित लोक अछि जे कर्मक पाछू रने-बने वौआइ-ले तैयार रहैत तँ किछु एहेन अछि जे कहलोपर किछु करबो केलक आ किछु मठैरियो देलक आ किछु श्रमचोर नइ अछि सेहो नइ कहब बेइमानीए हएत...।

परिवारक भेदकेँ भेदैत उन्नैतलाल काका बजला-

"बड़ भारी ओझरी परिवारमे अछि! गाम दिस ताकब छोड़ि परिवार-परिवारक संग अपनो परिवारकेँ निरखए-परखए पड़त।"

ओना किछु विचार-विनिमयमे खाँच-खँरोच देखने सोझमतिया काकीक मन सेहो कखनो-कखनो तुरैछ कऽ मुरैछ जाइ छेलैन मुदा समर्पित नजरिये जखन परिवारकेँ देखै छेली तखन बुझि पड़ै छेलैन जे कोनो की हमरेटा परिवारमे एना होइए आकि आनो-आन परिवारमे छइ। जखन सभमे किछु-ने-किछु छइहे आ केहेन बढ़ियाँ चलितो छइहे तखन हमरे कोन अधला अछि। बजली-

"अहिना सभ दिनसँ परिवारमे राँड़ी-बेटखौकी चलैत आबि

[10] मतभेदक कारण

रहल अछि आ आगूओ चलिते रहत।"

बजैक क्रममे सोझमतिया काकी समगम होइत बाजि तँ गेली मुदा 'सा-रे-ग-म'क भेदकेँ बुझबे ने कऽ रहल छेली। जे बात उन्नैतलाल काका बुझि गेला। मुदा मनमे ईहो तँ प्रश्न रहबे करैन जे जाबे परिवारक हौउ आकि समाजक मुदा मनुखक जिनगीक मूल आधार श्रमशीलता छी। जाबे से मनुखमे नै औत आ मनुख श्रमहीन बनत तखने ओकर मन अपना बसमे नइ औतइ। जाबे मन बसमे नइ औतै ताबे ने ओ कोनो प्रणकेँ अपना कऽ चलि सकैए आ ने कोनो ठौर-ठेकानकेँ पेब सकैए..!

मने-मन परिवारक बीच विचड़ैत उन्नैतलाल काकाकेँ भोरुका फल जकाँ एकटा फल आगूमे खसलैन। खसलैन ई जे किए ने परिवारक बीच जे भैयारीक परिवार अछि, ओइ विचारकेँ खण्डित करैत अपन-अपन जवाबदेहीक भार सुमझा दिऐ जइसँ जे परिवारमे सुविधा भोगी जिनगीक बीच पनैप गेल अछि ओकरा रोकैमे सहूलियत हएत। जखने कोनो परिवार वा बेकती श्रमकेँ अपन शील बुझि दुनियाँमे पएर राखत तखने ओकरासँ जरूर आशाक फल भेटत। जखने मनुखक जिनगीमे आशक फल फड़ए लगैए तखने ओ आशावान बनि आसे-आस चलए लगैए। जखने आगू मुहेँ लोक चलए लगैए तखने हेराएल-भोथियाएल सभ एकबट्ट बनि जाइए। जखने एकबट्ट बनि चलत तखने केतौ-ने-केतौ एक-दोसरसँ भेँट हेबे करतै। जखन भेँट हेतै आ जिनगीक गप-सप्प करत तखन ओकर बदलल जिनगीक रूप सोझामे एबे करत। मनुख समाजिक सोभावेटा-क नहि, जिनगीक पथिक सेहो छी किने...। ऐठाम अबिते उन्नैतलाल कक्काक मन फुला कऽ फलाए लगलैन। फलाइते सोझमतिया काकीकेँ कहलखिन-

"कहलिऐ ते बड़बढ़ियाँ जे परिवारो आ समाजोमे राँड़ी आ बेटखौकी सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि। मुदा राँड़ीक समस्या आ बेटखौकीक जे स्थिति अछि तेकरा की बुझै छिऐ?"

गाम-समाजमे जे राँड़ी-बेटखौकी कहैक जे चलैन अछि तही क्रममे सोझमतिया काकी बाजल छेली, तँए कोनो तेहेन गंभीर विचार मनमे नइ छेलैन, मुदा जखन उन्नैतलाल कक्काक मुहेँ ओइ विचारक प्रश्न सुनली तखन सोझमतिया काकी अकबका लगली।

पत्नीक अकबकाइत रूप देख उन्नैतलाल काका मुस्कियाए लगला। पतिकेँ मुस्कियाइत देख सोझमतिया काकीक विचारक रूपमे अन्तर आबए लगलैन। अभियन्तरमे अन्तर अबिते बजली-

"जहिना सभ बजैए तहिना हमहूँ बजलौं। तइले अहाँकेँ माख किए होइए।"

पत्नीक मुहसँ 'माख' सुनिते उन्नैतलाल कक्काक मन नचलैन। नचिते मनमे उठलैन- 'माख'क एक अर्थ 'जलन' आ दोसर अर्थ 'ईरखा' सेहो होइए। मुदा मनमे ईहो उठि गेलैन जे परिवारक प्रति कोनो अभिभावककेँ किए 'जलन' हेतैन आकि 'ईरखे' हेतैन? जलन वा इरखा तँ ओहन अभिभावकक मनमे आबि सकैए जे अनेरे ईर्ष्यालु हुअए वा जल-जद हुअए। मुदा अपना संग से तँ नहि अछि...। पत्नीकेँ बौसैत उन्नैतलाल काका बजला-

"देखियौ, राँड़ी-बेटखौकी ने गारि छिऐ आ ने असिरवाद, लोक छोट-मोट रक्का-टोकीकेँ–माने कहा-कहीकेँ–राँड़ी-बेटखौकी कहबो करैए आ बुझबो करैए।"

आगूक बात उन्नैतलाल काकाकेँ पेटेमे रहैन कि बिच्चेमे सोझमतिया काकी अपन विचारमे सक्कतपन अनैत बजली-

"जहिना अहाँ कहलिऐ तहिना ने हमहूँ बाजल छेलौं। तेकरा

अहाँ तिलकेँ ताड़ किए बनबै छिऐ।"

पत्नीक उतरैत विचार सुनि उन्नैतलाल काका बजला-

"हम कोनो अधला बुझि थोड़े बाजलौं जे अहाँ ओकरा अधला बुझि गेलिऐ, जे बुझि बजलौं से सुनू।"

पतिक विचार ठीकसँ नहि बुझि सोझमतिया काकी चकोना होइत बजली-

"कनी फरिछा कऽ बाजू।"

पत्नीक बात सुनि उन्नैतलाल काका बुझि गेला जे बातकेँ विचार रूपमे बुझै चाहि रहली अछि। बजला-

"जइ राँड़ी-बेटखौकीकेँ लोक महत्वहीन बना देने अछि ओ केहेन मारूख अछि से बुझै छिऐ?"

'मारूख' सुनि सोझमतिया काकी चौंकैत बजली-

"की मारूख?"

उन्नैतलाल काका बजला-

"अपनो परिवारमे देखियौ आ गामो-समाजमे देखियौ जे केते लोककेँ महत्वहीन काज महत्वपूर्ण समयकेँ नष्ट करैए।"

पतिक विचारकेँ नीक जकाँ सोझमतिया काकी नहि बुझि पेली जे महत्वहीन काज महत्वपूर्ण समयक बीच झील जकाँ केते पैघ मोनि फोरि रहल अछि। बजली-

"से की?"

उन्नैतलाल काका बजला-

"देखियौ, दिन-रातिक बीच जे समय चलैए वएह भेल समयक गति। अही बीचमे जे महत्वपूर्ण लोक छैथ ओ अपन समयकेँ ओहन महत्वपूर्ण काजमे लगबै छैथ जे काज हुनका महत्वकेँ ससरबैत महत्ता

प्रसन्न करैक रस्ता दइ छैन। तैठाम जँ समयकेँ राँड़ी-बेटखौकीक पाछू गमाएब तखन ओकर फल केहेन भेटत।"

ओना सोझमतिया काकी पतिक विचारक धारमे बहैत भँसिया कऽ बीचमे आबि गेल छेली, मुदा समयकेँ परेख कऽ पकैड़ लेब, ओ गैंची माछ जकाँ मनसँ ससैर जानि जइसँ पकड़मे एबे ने करैन। मुदा जहिना आनो-आन पत्नी पतिक विचारकेँ आँखि मुइन स्वीकारि बजैत जे 'हँ से ठीके' तहिना सोझमतियो काकी बजली-

"हँ से ठीके।"

ओना उन्नैतलाल काका बुझि गेला जे बिनु बुझने 'हँ से ठीके' कहली मुदा मनमे एते खुशी तँ जगबे केलैन जे 'हँ से ठीके' तँ जरूर कहली। बजला-

"देखू, अपने दुनू परानी एहेन छी जे अहू उमेरमे एते खटि कऽ जीबै छी। देखते छिऐ गाममे जे अपन संगी-तुरिया छल तेकरा के कहए जे केते नवकबरियो बाबाधाम पहुँच गेल। तँए अपने केना अपन विचारक अनुकूल चलब बस एतबे बुझबो अछि आ करितो चलब अछि।"

सोझमतिया काकीक मनमे उठलैन जे जखन सभ अपने-अपने-ले सोचबो करत आ करबो करत तखन परिवारे आकि समाजे केना चलत..?

ओना, सोझमतिया काकीक विचारक विपरीत दिशामे उन्नैतलाल काका जमीन तक पहुँच गेल छला जइसँ सोझमतिया काकीक विचारक गहराइ परेख नेने छला मुदा ओकरा तहियबैत बजला-

"जखने सभ अपना-अपना-ले करए लगत तखने ओकरामे आगू बढ़ैक विचार जगत। यएह बढ़ब भेल जिनगीमे बाढ़ि आएब।"

ओना उन्नैतलाल कक्काक मनमे ईहो उठैत रहैन जे ईहो बात पत्नीकेँ कहिये दिऐन जे बाढ़ियो-बाढ़िमे भेद अछि। नीको अछि अधलो अछि। मुदा से नहि बजला।

तैबीच सोझमतिये काकी पुछि देलकैन-

"केना बाढ़ि दिस बढ़ियाएत?"

पत्नीक विचारसँ सहमत जगबैत उन्नैतलाल काका बजला-

"एकबट्टूओ आ बहुबट्टूओ दुनू बाढ़ि अछि। मुदा अखन से नहि। अखन एतबे जे एकबट्टू भेने क्रियमान शीलक उदय लोकोमे आ परिवारो-समाजमे अबैए।"

◌

शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017

बाबा बेलेश्वरनाथ

जुड़शीतल पाबैन। भोरेसँ लोक अपन अँगनाकेँ नीरसँ नीरबैत रस्ता-पेरा नीरा रहल अछि। ओना अपनो नीन टुटल अनहरगरे, किए तँ चारि बजे भोरेसँ धियो-पुतो आ जरो-जनानी चापाकलसँ पानि भरि-भरि नीरेबो करैए छेली आ जोर-जोरसँ 'जय शिव, जय शिव' बजितो छेली, जइसँ नीन टुटि गेल छल। मुदा ओछाइन नइ छोड़ने छेलौं। ओना, मनमे छेलए जे गाछ-बिरीछमे जलढार करैक अछिए। मुदा ओ तँ अछि गाछी-बिरछीमे, जे आँगन आकि आँगनसँ सटल रस्ता-बाट नहि छी। ओ तँ घर-आँगनसँ हटल अछि। तैठाम एते अन्हारमे जाएब नीक नहियेँ हएत। ओना, पाबैनियोँ की कोनो क्षण-पलक छी जे क्षणेमे क्षणाक भऽ जाएत आकि पलेमे पलैक जाएत। ओ तँ भरि दिनक छी तँए औगतेनाइयो नीक नहियेँ अछि। तहूमे नमगर-चौड़गर बाड़ी-फुलबाड़ी अछिए।

चालीस बर्ख पूर्व जखन कौलेज छोड़ि गृहस्ताश्रममे घरियेलौं तही समय आठ कट्ठामे फलक गाछ सभ सेहो रोपलौं। सभ रंगक–अपना जनैत जे उपलब्ध भेल–गाछ रोपलौं। ओना, आमक गाछ बेसी रोपलौं। मुदा एक-एकटा गाछ बेल, लताम, लीची, सरीफा, आँता, धात्रीम इत्यादि सेहो रोपलौं। आममे बेसी कलमी लगेलौं। कलमियोमे बेसी कलकतिया आ एक-एक गाछ बम्बै, सपेता, फैजली आ राइर

सेहो रोपलौं। तैसंग दू कट्ठा करजान सेहो लगेलौं। ओना केराक खेती करैमे शुरूए-मे गजपटा गेल, मुदा तेरह-चौदह रंगक केरा नइ रोपलौं सेहो नहियेँ छल। खेती गजपटा ई गेल जे सभ केराकेँ केरे बुझि रोपि देलिऐ जे पछाइत बौना सभकेँ छरगरहा तेना कऽ ऊपरेसँ झाँपि देलक जे ओ सभ जनमरोगी भऽ गेल। जनमरोगी भेने कुहैर-कुहैर बढ़बो कएल आ फड़बो कएल जे गहनमरू जकाँ भेल।

सघन गाछी आ करजान रहने आन साल गाछीक सभ गाछो आ करजानक सभ बीटोमे जुड़शीतल दिन जलढार करैत एलौं, मुदा चैत-बैशाखक सिमानपर जेहेन जलधार हेबा चाही से तँ नहियेँ कऽ पबै छेलौं मुदा तँयो एते करिते एलौं जे बाल्टीमे पानि भरि-भरि लऽ जाइ आ लोटे-लोटा गाछक जड़िमे दऽ दिऐ। ओना, आइये तुलसी गाछमे सेहो लोक पनिसल्ला टाँगत, जे मास दिन टँगल रहत। बाँसक टोनक टूटा खुट्टाक बीच बल्लामे सीकपर टाँगल कलशक पेनीमे छेद बना कुशकेँ जड़ि दिससँ छेदक भीतर कलशक जलमे सिक्त होइत बुन्ने-बुन्न-ठोपे-ठोप जल तुलसीक मुँहपर सँ होइत जड़ि तक सिक्त करिते अछि। मासो दिन पोखैर-इनार वा चापाकलक जल ओइ कलशमे देले जाइए। से मात्र पौध जगतक खाली एकटा तुलसी गाछमे। ओना माटिमे मटियाएल पूर्वजक जे सारा छैन तहूठाम लोक पनिसल्ला टँगिते अछि। खाएर जे अछि मुदा प्रश्न तँ ऐठाम उठबे करत जे एकटा तुलसीए-टा गाछमे किए? पौध जगतमे लाखो रंगक पौधा अछि। एकसँ एक गुणवान, एकसँ एक धनवान, एकसँ एक रूपवान, एकसँ एक फलवान तैठाम तुलसीए-टा किए? ओना, पौध जगतमे श्रेष्ठ पौध ओ भेल जेकर पाँचो अँग गुणवान अछि। मुदा तोहूमे तुलसीए-टा नहि अछि, अनेको अछि...।

भोरक सिरखार जागए लगल। राति भरिक अन्हराएल दुनियाँ अन्हारसँ हटैक कऽ इजोत दिस ससरए लगल। मनमे अपन

जुड़शीतल पाबैनक दिन नचैत आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। ठाढ़ होइते चालीस बर्ख पूर्वक लगौल अपन बाग-बगीचा मन पड़ल। पूर्वजक जे लगौल गाछी-कलम आ बाँस-बँसवारि छल ओ पढ़ाइ-लिखाइसँ केस-मोकदमा तकमे ओरा गेल छल। तँए पूर्वजक गाछ-बिरीछक रूपमे किछु ने रहि गेल छल। ओना जइ समय बगीचा लगेलौं तइ समय पूर्वजक ओतेक सभ चीज छल जइसँ परिवारक अँटावेश होइत रहल। जेना-जेना पूर्वजक सम्पदा घटैत गेल तेना-तेना अपन लगौल बढ़ैत गेल। ओना, अपनो लगौलहा माने शुरूक लगौलहा, खसबो कएल सुखबो कएल आ काज-ले कटबो केलौं। तैसंग लगबितो-रोपितो गेलौं। पहिल बेरक–माने शुरूक लगौलहा–जे गाछ छल ओइमे खाली एकटा बेलक गाछटा बँचल अछि। ओ बेलक गाछ गाछीक दछिनबरिया-पछबरिया कोणपर अछि जे पड़ोसीक बँसवारिसँ तेना झँपा गेल जे ने कहियो भरि गाछ फुलाएल आ ने भरि गाछ फड़ल। मुदा चालीस बर्खक बीच अपनो तेनाहे सन बेलकें बुझैत रही, जइसँ मनमे कहियो सटल नहि, हटले रहल। तेनाहे जकाँ ई बुझैत एलौं जे बेल काँटिक फल छी। गाछक सौंसे देह काँटे रहै छइ। तहूमे सभसँ नमहर काँट बगूरक होइतो बेलक काँट जकाँ ने सक्कत होइए आ ने बीखाह। ओना, ई गुण जरूर छै बेलक काँटमे जे बगूर जकाँ पैरमे गड़ि कऽ टुटि नइ जाइए, जे सूइया वा आन कोनो औजारसँ निकालए पड़ैत। तेतबे किए, आन-आन काँटकें निकालैक औजार सेहो बेलक काँट छीहे। मुदा सभ कथुक बाबजूदो अखन तक अपने बेलकें काँटे आ लस्सेक फल बुझैत आबि रहल छेलौं। लस्साक फल ई भेल जे विद्यार्थी जीवनमे जखन कोनो किताब वा कॉपी साटै-जोड़ैक काज पड़ै छल तखन काँच बेल तोड़ि कऽ आनै छेलौं आ ओकर लस्सासँ साटै छेलौं। जे अखनो ओहिना मनकें पकड़ने अछि जहिना शुरूमे पकड़लक।

ओना, जुड़शीतल पाबैन दिन बेलक गाछक जड़िमे साले-साल एक लोटा पानिसँ जलढार नइ करै छेलौं सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जरूर करै छेलौं। ओछाइन छोड़ैक सभसँ पैछला बात यएह मनमे आबि गेल जे आइ सभसँ पहिने बेलेक गाछमे जलधारो करब आ देखबो करबै जे ऐ बेर फड़ल अछि आकि नहि। जुड़ेशीतल पाबैन ने छी, आइ लोक बेलेसँ मनकें जुड़बैए। मनुख ने पौध जगतकें जलसँ जुड़बैए मुदा बेल तँ पौध जगतक ओ मुनि छी जे फलसँ जुड़बैए।

ओछाइन छोड़िते मनमे जेना एकटा लहैर जकाँ उठल जे सभ किछु छोड़ि, माने मुँह-कानमे पानि लेबसँ लऽ कऽ चाह-पान तककें छोड़ि पहिने बेलक गाछक जड़िमे पानियोँ देब आ ओकर देहो-दशा देखबै आ फुलो-फल देखब। ओना, अखन ओकर फलकें पकैक समय आबि गेल अछि, पछाइत पतझाड़ सेहो हएत, मुदा दुनूक फलो आ पातोक पकैक समय तँ चलिये रहल अछि। आन-आन फल जकाँ बेल नइ ने छी जे फल-पातक जीवन-मरण संगे नइ होइए। अखाढ़क बून पबिते कलशब शुरू होइए, जे रसे-रसे परिपक्व होइत जाइए माने जुआइत जाइए आ बरसातक उतार अबैत-अबैत फूल कोढ़ीक रूपमे पनैप भकरार भऽ कऽ फुलेबो करैए आ फड़क तरी सेहो पकड़ैए।

आन फल सभसँ एकटा अन्तर बेलमे आरो छै जे आन फल जेना मौसमी होइए माने सालक तीन मौसम–जाड़, गरमी आ बरसात–क अलग-अलग फल सेहो अछि जे एक्के मौसममे जन्मसँ मृत्यु धरि गुजरैए आ कोनो एहनो अछि जे एक मौसममे जन्मसँ सियान होइए आ दोसर मौसममे आबि फड़ै-फुलाइए, तेना बेल नइ अछि। अखाढ़ी साल जखन शुरू होइए तखन नव रंग-रूपमे कलैश जन्म लइए आ बरसातक संग-संग चलैत उतार तक माने मौसमक उतार तक, अबैत-अबैत जुआनी पेब लइए। जुआनी पबिते मुण्डे-मुण्डे फुला जाइए आ फुलेक बीच फल सेहो सिरजए लगैए आ भरि जड़कल्ला अपन रछिया

करैत जीवनो बीतबैए आ रसे-रसे बढ़ितो अछि, जे गरमी धबिते अपन कोषाइक रूप पकड़ए लगैए। जेना-जेना गरमी मौसम धबैत-धबैत तबधए लगैए तेना-तेना फलक रूप-रंग सेहो अपन परिपक्व रूप पकड़ए लगैए, जे चैत-बैशाखक सिमानपर चढ़ि जलदाताकें माने रोपनिहारकें फलदाता बना भरि मौसम फलदान करैए। मुदा आन फल जकाँ नहि जे परिपक्व होइत-होइत अपनो खसए-पड़ए लगैए आ कौओ-बंचर खाए लगै छइ। ओ अपन सीमा–माने गाछक फलक डन्टीक रूपमे–ताधैर पकड़ने रहैए जाधैर हाथ पकैड़ ओकरा घर नहि अनबै। ओना, गोटि-पंगरा रोगसँ रोगा खसबो-पड़बो करिते अछि। तेतबे नहि, जँ हाथ पकैड़ घर नइ अनबै तँ की ओ अपन घर छोड़ि पड़ा जाएत? नहि पड़ाएत! किए पड़ाएत? ओहिना फल कहबैए? जँ ओकरा माने बेलकें पकैड़ घर नइ आनब तँ ओ अपने घरमे–माने गाछेमे–समाधि लगा पुन: आगूक जिनगी सेहो पेब लइते अछि। माने छोटकी बेल हल्लुक रहने केते गाछेमे लगले रहि जाइए। जे पुन: आगूक सालक फलक संग अपन जिनगी बितबैत संगे-संग चलैए...।

समैक मनक जिज्ञासा सेहो बढ़ए लगल। जेना-जेना मनक जिज्ञासा बढ़ए लगल तेना-तेना बेलसँ सिनेह सेहो बढ़ैत गेल।

मन पड़ल अपन रोपल बेलक गाछ। खालीए बाल्टीन आ लोटा लेलौं आ गाछी दिस विदा भेलौं। खलिये बाल्टीन लइक कारण छल, घरसँ हटल गाछी अछि। मुदा गाछीक बगलमे शिव मन्दिरक आगूमे छोट-छीन पोखरियो छै आ चापाकलो छइ। छै इनारो मुदा ओ मरणे भऽ गेल अछि।

अँगनासँ निकैल जखन रस्तापर एलौं तखन मन पड़ल अपन रोपल बेलक गाछ...।

कौलेजमे जखन पढ़ैत रही तखन केतेको साथीकें अपनो ऐठाम

आम खुअबै छेलौं आ आनो-आनो ऐठाम अपनो खाइ छेलौं। आमेटा नहि, लीची-लताम सेहो खाइ छैलौं। एकटा सिनेही संगी बेल खाइक नौत देने रहैथ ओ मन पड़ल। ओना बेलसँ सिनेह नहि बनल छल मुदा बेलक नौत मानि जे खेने रही ओ मनसँ हेरा गेल। माने बेलक गुण-धर्म बिसैर गेलौं आ बेल काँट आ लस्साक फल छी, यएह विचार मनमे जीवित रहि गेल।

संगीक नौत मनमे अबिते नव सिरासँ बेलकगुण-धर्म मनमे आएल। मनमे अबिते नाचि उठल जे बेल खाइले संगी सोझामे अनलैन। अढ़ाइ-तीन किलोक फल बुझि पड़ल। तेहेन गाढ़ रंगसँ रंगाएल छल जे आँखि हटए नहि चाहैत रहए। संगीकें कहलयैन-

“एहेन बेल जिनगीमे आइ पहिल दिन देखलौं!”

ओना ओइठाम संगीक माइयो रहथिन। हमर बात सुनिते माइक मनमे ओहन आनन्दक लहैर दौड़ गेलैन जेहेन कोनो शिक्षककें अपन पढ़ौल विद्यार्थीकें युनिवर्सिटीमे पहिल स्थान पौने होइ छैन। मने-मन माए मुस्कियाइत रहली मुदा बजली किछु ने। संगी बाजल-

“पिताजीक ई अपन अनुसन्धान छिऐन।”

संगीक पिताक सम्बन्धमे नइ बुझल छल तँए कोनो माने नइ लगल। बजलौं-

“की अनुसन्धान?”

संगी बाजल-

“पिताजी कृषि वैज्ञानिक छैथ आ युनिवर्सिटीमे कार्यरत सेहो छैथ। वएह बेलक अनुसन्धान केलैन अछि। हुनके लगौल बेलक बगान अछि, जइमे रंग-रंगक बेलेटा अछि।”

बेलकें देखबैत संगी बाजल-

"ओहिना खाएब आकि शरबत बना कऽ पीब?"

बेल देख मन एते ललैच गेल छल जे हुअए छाती लगा ली। बजलौं-

"खेबो करब आ पीबो करब।"

हाथेसँ दाबि संगी बेल फोड़लैन। बीआक दरस नहि। सौंसे बेलमे मात्र पाँच-छहटा बीआ। ओइ दिनक बात आइ पुन: मन पड़ल जे बेल लस्सेक फल टा नहि छी। ओना, बेल सन लसियाह दोसर फल नहि होइए, मुदा तँए बेलकेँ लस्सेक फल बुझल जाए सेहो तँ नीक नहियेँ अछि। जे बिसैर गेलौं। बिसरैक कारण ईहो भेल जे छोटकी बेलीसँ लऽ कऽ मझोलका बेल तक जे देखैत एलौं ओइमे बीआक संग लस्साक मात्रा बेसी होइते अछि।

बेलक पाँचो-छबो बीआ देख नइ रहल गेल। मुँह छोड़ि संगीसँ बीआ मांगि लेलौं। बीआ मंगैक पाछू यएह मनसा छल जे उच्च कोटिक ऐश्वर्यवान फल छी जेकरा पोनगा अपनो ओहन फल रोपि खाएब। बीआ मंगैत बजलौं-

"संगी, छुच्छे बेलेटा नइ खाएब, मोटरी बान्हि बीओ नेनहुँ जाएब।"

बीआक नाओं सुनिते संगीक माए बिहुसि गेली। पतिक वंशक संग अपनो आ दोसरोक विरधी देख जनु मनमे ठहैक गेलैन पतिक कृति, जे कृतिक वृतिमे पत्नीक रूपमे सतैत तैयार रहली।

तैबीच संगी बाजल-

"संगी, बेलक गाछ दुनू रूपे होइ छै, बीओसँ आ ओकर सिरसँ सेहो होइ छइ।"

ओइ दिनमे–माने विद्यार्थी जीवनमे–सोल्होअना बेलक

सम्बन्धमे अनाड़ी रही। मुदा जैठाम बीआसँ गाछ बनैक प्रश्न अछि आ गाछसँ पात-फल आ फलक बीच बीओक प्रश्न अछि ओ तँ गंभीर विषय भेबे कएल। जे आइ मन पड़ि रहल अछि। ओना, गाछक सम्बन्धमे बाजल रही-

"संगी, दुनू फल–माने सिरक गाछक फल आ बीआ गाछक फलमे–किछु अन्तरो हएत?"

बुझबैत संगी कहने रहैथ-

"बीआसँ जे गाछ हएत ओकरा जँ कम-सँ-कम तीन बेर जगह बदैल दिऐ माने तीन बेर एक जगहसँ दोसर जगह उखारि रोपब तखन ओहो ओहने फल हएत जेहेन सिरक गाछक होइए। ओना, सिरक गाछ कलमी भेल। कलमीक माने भेल गाछसँ गाछ बढ़ब।"

चालीस बर्ख पूर्वक बात मन पड़िते बेलक गाछ आरो मनकेँ डोरियेलक। शिव मन्दिरक आगू जे पोखैर अछि ओही घाटपर बाल्टीमे पानि भरि 'जय शिव' करैत मने-मन सुमिरन केलौं जे 'हे भोलेनाथ, अपनेक प्रिय बेलपात रहल अछि तँए पहिल लोटा जल अपनेक जे प्रिय पातक दाता अछि तहिक जड़िमे जलधार करब।'

बाल्टीनेमे लोटा डुमा देलिऐ आ पानिसँ भरल बाल्टीन नेने बेलक गाछ लग पहुँचलौं। पहुँचिते सजीव सुगन्ध लागल, चन्दनक सुगन्ध जकाँ। ओना, धियानमे नइ रहल रहए, मुदा एकाएक मन पड़ल जे जखन लोअरे प्राइमरी स्कूलमे पढ़ैत रही तही दिनमे मास्टर साहैब एकटा जीवन्त कथा कहने रहैथ वएह मन पड़ि गेल। कहने रहैथ जे अपना गाममे जीवन्तलाल काका छला। जीवन्तलाल काका अपने हाथे अपन जिनगी चलबैत रहैथ। गाछी-कलम सभ लगौने छला। एकटा बेलक गाछ सेहो रोपने छला। काका जखन अस्सी बर्खक भेला तखन बेलक गाछ सुखि गेल। अपने ओछाइनपर पड़ल रहैथ।

सुखल गाछ देख बेटा लगमे आबि कहलकैन- 'बाबू, बेलक गाछ सुखि गेल!'

'बेलक गाछ सुखि गेल' सुनिते जीवन्तलाल काका मने-मन खूब खुशी भेला। मुदा बेटाक आगूमे अपन खुशी नइ देखबए चाहलैन, किएक तँ एक फलक आशा बेटाक मनसँ टुटैत रहैन। तहूमे बेल सन फलक आशा।

पिताकेँ चुप देख बेटा दोहरा कऽ कहलकैन- 'बाबू, बेलक गाछ सुखि गेल!'

दोहरा कऽ सुनिते जीवन्तलाल कक्काक मन तरैप कऽ राजा बनि गेलैन। राजा बनिते बेटाक प्रति मनमे उठलैन- लगौता एकोटा गाछ नहि मुदा खेता बेले! मुदा बजला किछु नहि। किएक तँ मनमे नचैत रहैन जे चन्दनक गाछ रोपलौं हम आ चन्दनक लकड़ीसँ लहास जरत अनकर। मुदा मनक बात मनेमे जीवन्तलाल काका रखि बजला-

"राजा दैवक कोनो ठेकान अछि, जखन अपनो सुखिये रहल छी तखन बेले गाछ सुखल तँ की करबै। मुदा एते कहै छिअ जे गाछ ओइ दिन कटिहह जइ दिन मरब। ओही लकड़ीसँ जरबिहह।"

पिताक बात सुनि बेटा सहमलैन। सहमैक कारण भेलैन जे बेलक लकड़ी तँ जरौल नहि जाइए, माने भानस करैकाल चुल्हिमे! तखन मृत्युक पछाइत केना एहेन लकड़ीसँ लाश जरौल जाएत..?

ओना जीवन्तलाल काकाकेँ बुझल रहैन जे चन्दनक लकड़ीसँ राजे-महराजक लाश जरौल जाइए। अदना-गोदनाकेँ ओहन वस्तु नसीब केना हएत। यएह विचार जीवन्त लालकेँ साधारण जिनगीसँ ऊपर उठा राजाक मन बना देने छेलैन।

ओना पिताक विचारकेँ चलन्तलाल आँखि मुइन माननिहार, तँए विचारकेँ बेसी काट-खोंट नहि करि मानि बजला-

"बड़बढ़ियाँ।"

बेलक गाछ लग ठाढ़ भऽ हिया-हिया चारू दिस तकलौं जे सुगन्ध बाहर दिससँ ने तँ अबैए। मुदा कोनो हवा तैकाल नइ बहैत छल जे किम्हरोसँ अबैत बुझितौं। मनमे जे शंका उठि गेल छल ओइकेँ समाधान करैले बाल्टीनकेँ ओत्तै छोड़ि गाछक दोसर भाग दिस पहुँच हिया-हिया चारू दिस हियेलौं तँ किम्हरोसँ किछु आभास नहि भेल, तखन मन मानि गेल जे बेलेक सुगन्ध छी।

पुन: बाल्टीन लग आबि ठाढ़ भऽ बेलक गाछकेँ हिया कऽ ऊपर देखलौं तँ तीनटा फलक संग पातोकेँ पकैक अवस्थामे देखलिऐ। माने बेलो ललिया गेल छल आ बेलक पातो ललियाइक बाट पकैड़ नेने छल। बेल तँ फल छी, ओकरा खाएब मुदा पातो तँ झड़बे करत। माने पकि कऽ खसबे करत, पतझाड़ हेबे करत। पतझाड़ भेला पछातिये ने समय पेब नव मुड़ीक संग नव कलश कलशत। जइसँ फेर ओहिना हरिया कऽ सघन भऽ फुलाएत-फड़त। तखन जँ जलधार करए एलौं ओ तँ खाली पतझड़ गाछेक ने हएत। मुदा लगले मनमे दोसर बात उठि गेल। उठि गेल ई जे वृक्षमे ने ई गुण अछि जे जड़िमे जल देने डारि-डारि, पात-पात, मुड़ी-मुड़ी जुड़ाइए।

ओना आइ धरि कहियो ने बेलक गाछक जड़िमे ताम-कोर केने छेलौं आ ने तुलसी गाछ जकाँ पनिसल्ला टाँगि मासो दिन जलधार केने छेलौं मुदा तैयो बेल अपन शील-गुण बनौनहि अछि। बाँसक दबौठमे पड़ने जे बढ़बारि हेबा चाही से नइ भेलै, मुदा तँए ओ अपन शील-गुण गमा बदलबो तँ नहियेँ कएल।

मन पड़ल चालीस बर्ख पूर्वमे लगौल गाछी-कलम। पहिल तोड़क माने शुरूक लगौलहा सभ गाछ उपैट गेल जे दोहरा-दोहरा लगेलौं। मुदा बेलक गाछ तँ वएह छी जे शुरूमे लगौने रही। ओना

आन फलक-माने आम-जामुन इत्यादिक-गाछ जकाँ बेलक बढ़बारियो नइ छै मुदा तँए ऐ गाछकेँ ईहो नइ कहल जा सकैए जे ओ आम-जामुन जकाँ विशाल नइ होइए। किछु फल एहनो अछि जेकर गाछ नमहर नइ होइ छै आ किछु झाड़ियो रूपमे अछिए। मुदा बेलक अपन शील-गुणक संग बढ़बारियो आ नमहर औरुदो तँ छइहे...।

जहिना विचारक शील-गुण भेल ओकर जीवन्तता, तहिना मनुखक शील-गुण भेल ओकर 'आचार-विचारक जीवन्तता', जे संग-संग चलैए। ओना समैक संग ओइमे साँप जकाँ केचुआ छुटैत जाइए आ ओ नव जीवन प्राप्त करैत जाइए। मुदा शील तँ शील छी, ओ तँ मनुखक जिनगीक संग बनले रहत। जहिना मनुखक जिनगीक संग ओकर शील-गुण इतिहासक कालखण्ड बनि जीवित रहैए तहिना ने बेलेश्वरनाथक शील-गुण सेहो छैन्हे।

◌

शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया, प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह।○○○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-81-936422-5-2

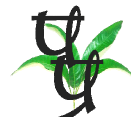
त्रिकालदर्शी

जगदीश प्रसाद मण्डल



त्रिकालदर्शी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-80538-83-9

दाम : ₹ 251/-

पहिल संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

TRIKALDARSHI
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

समर्पण भाव

गत-मत मीत मनुज मन
मन-मन्दिर भव भवन भवै छइ।
तखने मन भवन भव
देव-दनुज मीलि तान तनै छइ।
देव-दनुज...।
भविते भव भवन खिल-खिल
बाइन वाणी बिचड़ बिचड़ै छइ।
वाणी वणिक करैण पकैड़
करैण-धरैण धड़ि धड़ै छइ।
करणी-धरणी धीर धड़ै छइ।
विवेक विचार विचरण करै छइ।
विचैड़ विचार विवेक बनि
पाप-पुनक पुल बनै छइ।
पाप-पुनक...।



कथाक सत्तैर

भूतलग्गू आकि भविसलग्गू

जेठ मास। पाँच बजे बेरुका समय। मधुबनीसँ अबिते रही कि गामक कातेमे नेबुआवाली भौजी भेटली। बिस्टौल हाट जाइ छेली। सोम आ शुक्र दिनकेँ हाट लगैए। आइ शुक्र छी। भेटते बजली-

"कनी साइकिल ठाढ़ करू।"

ओना साइकिल नीक जकाँ ठाढ़ नइ केलौं मुदा जखने भौजी नजैरपर पड़ली तखनेसँ साइकिलक चालि थोड़ेक असथिर काइये देने छेलिऐ। बजलौं-

"साइकिल ठाढ़ करैले किए कहलौं?"

साइकिलेपर चढ़ल रहलौं मुदा एकटा पएर रोपि ठाढ़ भेलौं। ठाढ़ होइते भौजी बजली-

"घरवालीकेँ भूत लगल अछि आ अपने साइकिलपर चढ़ि छिरहारा खेलाइ छी!"

ओना, नेबुआवाली भैजीकेँ नइ बुझल छेलैन जे मधुबनीसँ अबै छी। किए तँ जहिना गाम-घरमे धोती-कुर्ता पहिरने आ कान्हपर तौनी रखै छी, तहिना झंझारपुरो-मधुबनी जाइ छी तँ रहैए, तँए भरिसक भौजी नहि बुझि पेली जे मधुबनीसँ अबै छी।

ओना एक तँ साइकिलोक चालिसँ आ दोसर समैयोक हिसाबे

देह-हाथ नइ घमाएल छल आकि चाइनपर सँ पसेनाक धार नइ बहै छल सेहो बात नहि, बहिते छल। मुदा तैपर भौजीक नजैर ऐ दुआरे नइ गेलैन जे रौदक चालिमे अपनो देह घमाएले छेलैन।

भिनसुरका कोर्ट चलैए, चारि बजे भोरे उठि तैयार भऽ मधुबनी गेल छेलौं। आ कोर्ट उसरला पछाइत अढ़ाइ बजेमे ऐगला तारीख लैत मुंशीजी सँ गप-सप्प करैत तीन बाजि गेल छल। सबा तीन बजे मधुबनीसँ विदा भेल छेलौं। ओना, कोर्टक काज ढीले-ढाल चलैए तँए मनमे कोनो तरहक तेहेन बातो नहियेँ छल जे मन केम्हरो घुसकैत-फुसकैत। असथिर छेलौंहे। ओना मनो घुसकै-फुसकैक कारण होइए जे कोर्टसँ केकरो धनो भेटै छै आ केकरो जीवनो जाइते छै, मुदा से नहि अपन पैंतीस साल पुरान अगिलग्गी (436) केस अछि। जइ समैमे केस भेल ओइ समए खेत-पथारक झंझट गाम-गाममे पसरल छल। ओना, खेत-पथारक झंझट अखनो नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अखनो अछिए, जँ से नहि अछि तँ जे छेहा गरीब अछि– माने जेकरा एको धुर अपना नामे जमीन नइ छै–ओकरा सरकारी घरो कहाँ छइ।

आने गाम जकाँ हमरो गाममे बहरबैया जमीनदारक जमीनपर झंझट भेल। दखल-दिहानीक दौड़मे अगिलग्गी केस भेल। जमीनमे टाट-फरक ठाढ़ कए जमीनदारक लगुआ-भगुआक द्वारा आगि लगौल गेल छल, जइ लगबैमे हम-सभ फँसौल गेल छेलौं। तीस आदमीक ऊपर केस भेल छल। तइ बीच जमीनक सभ दशा सेहो भेल। मुदा केस कचहरीमे लटकले अछि। सालमे दू बेर तारीख लइ छी आ मधुबनी जाइ-अबै छी। ओना, मधुबनी गेलापर बहुत बात मन पड़ैए। मन पड़ैए टीशन कातक होटल, मन पड़ैए कोर्टसँ जहल आ जहलसँ कोर्ट अबै-जाइ काल गाड़ीमे सिपाहीक पहरा, मन पड़ैए जही कोर्टसँ जहल जाइ छेलौं तही कोर्टसँ छुटि कऽ अबितो छेलौं...।

ओना, जइ समए केस भेल छल तइ समैक स्थिति आ अखुनका स्थितिमे बहुत बदलाउ आबि गेल अछि। माने ई जे ओइ समैमे अगिलग्गी केसक बहुत महत छल। मास-मास, तीन-तीन मास केसक जमानत नइ होइ छल आ सेशन केसक रूपमे ओकर तहकीकात सेहो होइ छल मुदा आब से नहि रहल। ने अगिलग्गी केसे बेसी होइए आ ने ओइ रूपे ओकर तहकीकाते होइए। समए बदलने आब अपहरण आ राहजनीक घटना बढ़ि गेल अछि। आब एकर महत बढ़ि गेल अछि।

पैंतीस सालक बीच केस सेहो मधुबनी-झंझारपुर तीन बेर केलक। तीन बेर करैक कारण भेल जे झंझारपुरमे कोर्ट बढ़ने (सेशन कोर्ट) मधुबनी कोर्टसँ केस झंझारपुर आबि गेल। मुदा किछुए दिनक पछाइत पुन: केस मधुबनी चलि गेल। तेकर कारण भेल साल भरिसँ सेशन कोर्ट खाली रहल, जजक अनुपस्थिति रहल। ओना मधुबनियोँ कोर्टक हालत तेहने रहल। अधिकतर कोर्ट जजक अनुपस्थितिमे खालीए रहए लागल आ अखनो अछिए। मुदा किछु अछि तैयो ने कोर्ट हरदा बाजल अछि आ ने अपने हरदा बजलौं अछि।

नेबुआवाली भौजीक संग सम्बन्ध[1] बहुत पुरान नहियेँ अछि, हाले-सालक माने आठे-नअ बर्खक अछि। ओना सिंहेश्वर भाइक संग भैयारीक सम्बन्ध बच्चेसँ अछि, करीब पचास-पचपन बर्खसँ, मुदा जहिया नेबुआवाली भौजी एली–दुरागमनक पछाइत–तहियासँ करीब बीस-पचीस बर्ख तक, दियर-भौजाइक जे सम्बन्ध अखन बनि गेल अछि, से नहियेँ छल। ओना टोका-टोकी कोनो काजे नइ होइत छल सेहो बात नहियेँ रहल अछि, मुदा ओ परिवारिक काजक अनुकूल रहल। असल दियर-भौजाइक बीच जे बेकता-बेकती सिनेह-सिक्त सिक्त सम्बन्ध हेबा चाही ओ आठ-नअ बर्खसँ अछि। हुनको देहक

[1] दियर-भौजाइक

समरथाइ निच्चाँ मुहेँ उतैर गेल छैन आ अपनो तँ सहजे उतरले अछि। ओना, आठे-नअ बर्खक सम्बन्धमे भौजियो हमरा चीन्हि नेने छैथ आ हमहूँ हुनका नीक जकाँ चीन्हि नेने छिऐन। मुदा ओ अपना जगहपर चिन्हारए अछि। बजै-भुकैमे अरबा चाउरक बसिया भात जकाँ नेबुआवाली भौजी कनी बेसी फरहर छथिए। तँए मनमे बेसी झाँट-बिहाड़ि नहियेँ उठल। माने ई जे नेबुआवाली भौजी जे बजली 'घरवालीकेँ भूत लगल अछि आ अपने छिड़हारा खेलाइ छी।' तँए मन बेसी आगू-पाछू नइ भेल मुदा कनी-मनी झाँट तँ मनमे लगबे कएल। झाँट ई लगल जे उपकैर कऽ एना किए नेबुआवाली भौजी बजली? जँ परिवारक बात छी तँ ई ने कहक चाहे छेलैन जे केते कालसँ घरसँ बहराएल छी। अनेरे तँ सभ बात सोझहामे आबि जाइत। मुदा घरवालीकेँ भूत लगल अछि, एहेन बात किए बजली? खाएर..। मनकेँ थतमारि बात बदलैत पुछलयैन-

"एते रौदमे केतए जाइ छी?"

नेबुआवाली भौजी बजली-

"कनी हाटपर जाइ छी। तेहेन ने रौदियाह समए भऽ गेल अछि जे तीमन-तरकारी दुआरे काल्हि रातिमे अँचारे संगे रोटी खेलौं।"

ओना भौजीक बोल तेलमे डुमल तीन सलिया आमक अँचार जकाँ सोहनगर अखनो बुझि पड़ै छल, मुदा परिवारक बात सुनि मन कनी खसिये रहल छल। बजलौं-

"की करबै, समैये जखन एहेन रौदियाह भऽ गेल तखन दोसर उपाइये की अछि।"

कहि साइकिल आगू बढ़ेलौं। नेबुआवाली भौजी सेहो उत्तर मुहेँ हाट दिस बढ़ली।

ओना, मनमे कनी-कनी बिनबिनी उठिये रहल छल, जे कनी

खरियारि कऽ आरो आगू-पाछूक बात पुछि लितिऐन मुदा चीन्हल लोक नेबुआवाली छथिए जे तिलकेँ तार आ झूठकेँ सत् बनबैमे हजार बेर किए ने बोलीक वाणी बदलैक जरूरत पड़ैन, ओ मुहे-मुहीं बदैल लइते छैथ, तँए मनमे जेहेन मर्मक स्थिति बनक चाही, से नहियेँ बनल।

लग्गी भरि जखन आगू बढ़लौं तखन मनमे उपकल जे एकबेर पाछू उनैट भौजीकेँ आरो बात पुछिऐन, मुदा दोसर मन पहिल मनकेँ रोकलक। रोकलक ई जे जखन भरि दिनक बहराएल छी तइ बीचमे जँ कियो किछु तेहेन बात पत्नीकेँ कहि देने हेतैन आ ओ बजैत-बजैत बताहिक रूप बना नेने हेती, सएह रूप देख जँ नेबुआवाली भौजी बाजल हेती तखन किछु अंशमे सहियो तँ भेबे कएल। ओना विचारक दौड़मे से नहि भेल, किए तँ तत्त्वदर्शी चिन्तक क्षणेमे छतपर चढ़ि जाइ छैथ आ पलेमे पताल पहुँच जाइ छैथ...। मने-मन विचारितो रही आ साइकिलो चलिते रहल।

चारि लग्गी आगू बढ़ैत-बढ़ैत मन पत्नीक नैहर दिस बढ़ि गेल। नैहर दिस बढ़िते मनमे भेल जे जँ पत्नी भूतलग्गू रहितैथ तँ नैहरेसँ लगैत आएल रहितैन। मुदा से कहाँ कहियो लगलैन? लगले भेल जे रौदमे चालीस किलो मीटर साइकिलसँ एलौं हेन, भरिसक तइसँ चेहराक रूप बदैल गेल अछि तँए चिक्कारीमे ने तँ नेबुआवाली भौजी बजली? ओना, चारू दिस नजैर खिड़ाबी जे कोनो दोसरो-तेसरो कारण तँ नइ ने अछि। मुदा से कोनो गरेपर ने चढ़ए।

नैहरसँ पत्नीकेँ सासुर एला कहुना-कहुना तँ तीस-पैंतीस बर्ख भाइये गेल हेतैन, तैबीच जेते धिया-पुता हेबा चाही सेहो भाइये गेलैन। कहियो किछु ने देखलौं। तखन किए नेबुआवाली भौजी कहली..! मन उनटल। उनैटते उठल- समाजमे एहनो लोकक तँ कमी नहियेँ अछि जे

चाहे पति-पत्नीक बीच हुअए आकि भाइ-भाइक बीच आकि दियादिनी-दियादिनीक बीच वा बाप-बेटाक बीच झूठ-फूस बात गढ़ि मतभेद नइ पैदा करैए। करिते अछि आ खूब करैए। समाजो तँ समाजे छी किने, केकरो मुँह छै तँ नाँगैर नहि, आ केकरो नाँगैर छै तँ मुँह नहि, मुदा तैयो घरक धारण नइ केने अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

थोड़ेक आगू बढ़लौं कि धक-दे मनमे उठल। जेठ मास छी दशराहा परसुए भेल। भूत-प्रेतक बास गाछी-बिरछीमे होइ छइ। अखन तँ दू माससँ सभ गाछी-बिरछीमे आम-जामुनक ओगरवाह बैसले हएत, तखन तँ भूतो-प्रेत ने ओगरवाहक डरे पड़ा गेल हएत। ओना, जखन आम-जामुन गाछमे लटकल रहैए आ ओगरवाह बीच गाछीमे मचान बना जगलो रहैए आ सुतलो रहैए तखन कहाँ केकरो भूत लगै छइ? जखन आम-जामुन गाछी-बिरछीमे नइ रहल तखन पतखरड़नी सभकेँ कहियो काल बँसबिट्टीमे चुड़ीन-तुड़ीन लगितो अछि, मुदा सेहो मास तँ नहियेँ छी..!

केतबो मनकेँ असथिर करी तैयो किछु-ने-किछु उपकिये जाए। अपना घरसँ कनी पाछूए रही कि मनमे फेर उठल- जँ कहीं नेबुआवाली भौजी झुठे कहने हेती, तखन? फेर लगले भेल जे भूतो तँ भूत छी, कोनो कि एक्के रंगक आकि एक्केटा अछि। रंग-बिरंगक अछि। मुदा कोन रंगक अछि ओ तँ देखला-बुझला पछातिये फरिछाएत, तइले अनेरे मनकेँ भरियौने छी। मन हल्लुक होइते लोकक मनकेँ मन देखए लगल। लोकक मनपर मन पड़िते मन थीर भेल। थीर होइते उठल- कहू! समए ओते आगू बढ़ि गेल जे लोक अँगनाक मड़बासँ ऊपर उठि हवाइये जहाजमे बिआहो करैए, भोजो-भात करैए, मुदा गाम-घरमे अखनो भूत-प्रेत लगिते छइ! एक्कैसमियो सदीमे जँ अहिना भूतमे लोक भुतियाइत रहत तखन ओझा-गुनी केतए-सँ औत। मन ठमैक गेल।

ठमैकते मनमे उठल, परसू जेठक दशराहा छल। एक तँ तीन माससँ एको बून पानि नहि पड़ल, ओहिना वायुमण्डल गर्म अछि, तैपर रौदो तेहेन होइए जे माटिक रस तेना चुइस नेने अछि जे रसे-बेरस भऽ गेल छइ। दिनक दसे बजेसँ बाध-बोनमे लू चलए लगै छइ। भऽ सकैए जे कोनो काजे पत्नी बाध दिस गेल हेती आ लू-तू पकैड़ नेने होनि जइसँ मन गरमा गेल होनि आ बताहि जकाँ आकि भूतलग्गू जकाँ बोलीक बानि भऽ गेल होनि। किएक तँ मौसमक हिसाबसँ सभ किछु नहियोँ तैयो बहुत किछु तँ बदलियो जाइए। ओना, मौसमो-मौसमोक अपन-अपन चालि-प्रकृति छइ। बरसातक पछाइत जे स्वाती नक्षत्र अबैए आ ओकर जे बून छै ओ जँ केराक मुँहपर पड़त तँ कपूर बनत, सिप्पीक मुँहपर पड़त तँ मोती बनत आ साँपक मुँहपर पड़त तँ बीखे बनत किने। भलेँ एक्के नक्षत्र आ एक्के बर्खाक बून किए ने हौउ। तहिना ने जाड़क पछातिक मौसमक बून आकि गरमीक पछातिक मौसमक बूनमे सेहो अन्तर हेबे करत..?

रंग-रंगक विचार मनमे उठिये रहल छल ता घर लग पहुँच गेलौं आ पत्नीकेँ दलानक आगूमे ठाढ़ देखलयैन। चुप-चाप ठाढ़ छेली तँए बोलक बाइनिक कोनो आभास नहियेँ भेल। ओना, अखन धरिक जिनगीमे दुनू परानीक बीचक जे सम्बन्ध रहल अछि ओइमे कहियो कोनो खटास नहियेँ आएल अछि जइसँ कोनो छोटो-क्षीण अबिसवास जगैत। ओना, वैचारिक रूपमे कहियो काल विचार-भेद जरूर होइए मुदा ओकर समाधान तँ परिवारक चलैत जिनगीक धारक क्रियाक रूपमे भाइये जाइए।

हमरा देखते पत्नी बजली-

"एते रौदमे किए चललौं। कनीकाल मधबनियेँमे बिलैम जाइतौं से नहि?"

ओना मने नहि देहो-हाथ थकियाएले छल तँए जेहेन उत्तर पत्नीकेँ दिअक चाही से नइ दऽ पेलिऐन। मनमे छल जे कहिऐन- जँ लोक जाड़क डरे आकि रौदक डरे आकि झाँट-पानिक डरे घरसँ निकलबे छोड़ि दिअए तखन ओकर जिनगीक गाड़ी केना चलतै। ओना, ई दीगर अछि जे जखन समय असहज भऽ जाइए तखन ओकर अनुकूल लोक अपन जिनगीकेँ धड़ियबैत चलैए। मुदा से नहि, हारल सिपाही जकाँ अपनाकेँ समरपित करैत कहलयैन-

“आब कि कोट-कचहरीमे एको क्षण रहैक मन होइए, तहूमे मधुबनीमे। जेतेकाल काज छल तेतेकाल काजमे हेराएल छेलौं। काज होइते पड़ेलौं।”

ओना आन स्त्रीगण जकाँ पत्नी गपकेँ बेसी नहि नमरा बजली-

“कनी काल छाहैरमे ठंढा लिअ, पछाइत किछु खाइयो-पीब लेब चाहे पहिने नहाइये लेब।”

ओना मनमे नेबुआवाली भौजीक गप नचैत रहए। मुदा अगुआ कऽ बाजबो तँ नीक नहियेँ होइत। पत्नीक विचार हुनके मुहेँ किए ने सुनब जे आन स्त्रीगणक मुँहक बाते जँ दुनू परानीमे झगड़े भऽ जाए, सेहो केहेन हएत। तँए मनकेँ थतमारि कऽ राखबे नीक बुझलौं। ओना, मनमे ईहो हुअए जे नेबुआवाली भौजी जे भूत लागब कहने छली आ जँ लगल हेतैन

तँ बोलिये वाणीसँ ने बुझि जाएब।

कुरता-गंजी निकालि रौदमे दैत पत्नीकेँ कहलयैन-

“कनी पंखा नेने आउ।”

आँगनसँ पंखा आनि पत्नी ठाढ़े-ठाढ़ चलबए लगली। दसे हौकैनमे मन शान्त भऽ गेल। मन शान्त होइते बजलौं-

“नेहेनाइ तँ अछिए मुदा पहिने पानि पीब, चाह पीब आ पान खाएब तेकर पछाइत बुझल जेतइ।”

‘बड़बढ़ियाँ’ कहि पत्नी आँगन दिस बढ़ि गेली।

ओना, नेबुआवाली भौजीक विचार मुहसँ निकलैले धानक गम्हरा जकाँ घोघमे तरतर करैत छल मुदा अपन थकानो आ चालिक गरमियोँसँ गप-सप्प करैक इच्छा मनमे नइ होइत रहए। ओना पत्नीक मुँहक चुहचुहीसँ बुझि पड़ै छल जे किछु बात पेटमे एहेन छैन जे बजैले लुस-फुसा रहली अछि मुदा हमरा रौदाएल बुझि ऐ दुआरे ओकरा पेटमे थतमारि कऽ रखने छैथ। भऽ सकैए मनमे ई होइत हेतैन जे रौदाएलमे कहने गरमाएलमे जँ कहीं बुझैयेमे तल-विचल भऽ जेतैन आकि अपन बजैयेमे भऽ जाएत तखन तँ ओकर अरथो अनर्थ हएत। जइसँ उत्तरो ओहने हएत। नीक उत्तर तँ तखन भेटैए जखन ओकर चारू कोण समगम रहल। किए तँ अही दुनियाँमे ने रहैयोक अछि जइ दुनियाँमे चारू कोणक लोक अछि।

ओना बेसी उमेर भेला पछातियो पत्नीक देहक पानि अखनो ओहने जलजलौ छैन जेहेन एहेन उमेरक हेबा चाही। मोटा-मोटी यएह बुझू जे देहमे आसकैत ओते नइ छैन जेते आन बत-बनौन स्त्रीगणमे रहैए।

चुल्हिपर चाहक केतली चढ़ा आँचकेँ नीक जकाँ लगा लोटामे पानि नेने पत्नी पहुँचली। ओना, अपन मन रहए जे ठेहुनसँ निच्चो आ भरि बाँहि पहिने धोइ ली जे थाकैन मारक होइए, मुदा मन असकता गेल। पत्नीक हाथसँ लोटा लऽ दू बेर कुर्रा केलौं आ भरि छाँक पानि पीलौं। तैबीच पत्नियोँ चाह नेने पहुँचली। एक गिलास चाह पीब पत्नीकेँ चाबस्सी दैत बजलौं-

“जेहने चाह पीबैक इच्छा छल तेहने बनेबो केलौं!”

ओना, चाह आने दिन जकाँ छल मुदा देहक थकानक भूख बढ़ने वस्तुक (पीबैक) सुआद सेहो बढ़ाइये देने छल मुदा पत्नीकेँ बातक उन्टा अर्थ लागि गेलैन। उन्टा अर्थ ई जे हम तँ चाहक सुआद पेब बाजल रही मुदा पत्नीकेँ भेलैन जे व्यंग्य स्वरूप बजला। मुदा लगले ईहो होनि जे जखन सभ दिन अही चुल्हीपर अही हाथे चाह बनबैत आबि रहल छी तखन आन दिन की इच्छा नइ भरै छेलैन जे एना बजला? मुदा अपन जे विचार पतिकेँ कहैक रहैन ओइ आगू एकरा (माने चाहक गपकेँ) तुच्छ बुझलैन तँए मने-मन दबैत बजली-

“हाथमे कि पाँचो ओंगरी एके-रंग अछि, तहिना ने पाँच दिनमे पाँचो रंगक चाह तँ भाइये सकैए। अहाँकेँ केहेन चाह पीबैक मन अछि आ हमरा केहेन चाह बनबैक विचार अछि ओ गुम्मा-गुम्मीसँ थोड़े काज चलत। जँ सएह छल तँ कहि दइतौं जे कनी बेसी लीकरे आकि कोनो आने वस्तु बेसी करि कऽ आकि कम करि कऽ देबइ।”

पत्नीक झपटसँ बुझि पड़ल जे जाबे अपनो ओहने नइ बनब ताबे ठीक-ठीक काज चलैबला नहि अछि। चाह पीब पान खा नेने छेलौं। बजलौं-

“गामक हाल-चाल नीक अछि किने?”

गामक हाल-चाल सुनि पत्नीक मनमे जेना दुपहरियाक बात नाचि उठलैन। बजली-

“नाँहकमे सौंसे गामसँ झगड़ा भऽ गेल!”

पत्नीक बात सुनि मनमे उठल जे कोनो समाजिक बात जरूर अछि। जँ से नहि रहैत तँ एक गोरेसँ ने झगड़ा होइतैन। सौंसे गामसँ किए भऽ गेलैन। मुदा प्रश्नक जड़िमे केतौ-ने-केतौ समाजक धारा जरूर छीपल अछि तँए समाजिक धारामे तँ नहि, मुदा मजकियल धारामे बजलौं-

“सौंसे गामक लोकसँ झगड़ा केलौं आ झोंट ओहिना देखै छी, तखन झगड़े की भेल?”

खिसिया कऽ पत्नी बजली-

“से की?”

सोझरबैत बजलौं-

“जाबे स्त्रीगण झोंटा-झोंटौबैल नइ केलक ताबे ओकर झगड़ाक कोनो मानि नहि। ओ कोनो खेलक सर्डी भेल।”

पत्नीक रूप बदललैन। बजली-

“भदुआरवाली कुम्हैन आएल छेली, परसू दशराहा रहै, लोक अपन-अपन घोड़ा चढ़ौलक। उधारे लोक एक-एकटा घोड़ा कुम्हैन ऐठामसँ लऽ अनलक।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“मर्र, ई की भेल! एहेन तँ सभ साल होइते अछि।”

सम्हारैत पत्नी बजली-

“सभ दिनसँ घोड़ाक दाम तँइ छल, जइ हिसाबे आन साल दइ छेलखिन।”

बजलौं-

“ऐ बेर की भेल?”

पत्नी बजली-

“भदुआरवाली कुम्हैन अरि कऽ ठाढ़ भऽ गेली जे आब सभ किछु महग भऽ गेल, हमरो रंग-टीप करैमे खरच बढ़ि गेल अछि, तँए ओइ हिसाबे घोड़ाक दाम लेब।”

पत्नीक बात सुनि मन हूमरल। मनकेँ हुमैरते विचार गुम्हरल।

बजलौं-

"ई तँ उचिते भेल।"

'उचित' सुनि पत्नी छड़ैप कऽ बजली-

"हमहूँ तँ सएह कहलिऐ। मुदा एक दिस ठाढ़ीवाली, ननौरवाली आ तमोरियावाली भऽ गेली आ दोसर दिस नेबुआवाली आ धेपुरावाली भऽ गेली। दुनू दिससँ कौआ जकाँ लूझए लगली।"

बजलौं-

"पछाइत की भेल?"

पत्नी बजली-

"तामसमे कहा गेल जे तोरा सभकेँ भूत खिहारने छह, तँए भुतियाएल छह।"

पत्नीक बात सुनि मनमे भेल जे भरिसक अहीक उपराग नेबुआवाली देने छेली।

◌

शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017

मर्माहत

जोगारी भायकेँ गामक सभ जनै छैन जे ओ ओहन लोक छैथ जे अपन जिनगी चलबैक सभ जोगार अपने रखने छैथ। जहिना कुशल किसान अपना खुट्टापर बरद-महींसक संग खेतीक सभ समचा–माने हर, कोदारि, खुरपी, हँसुआसँ लऽ कऽ टेंगारी-कुरहैर होइत दमकल-बोरिंग तक–अपना हाथमे रखि नियमित जिनगी बना, नियमवद्ध चलै छैथ तहिना जोगारी भाय सेहो छैथ। जखन दुनियाँक बीच मनुख बनि जीवन धारण केलौं तखन जँ अपन जिनगी समैट चलैक संग दोसरोक सेवा नइ भेल तखन भक्ति की आ भजन की? आ जँ भक्ति-भजन करैत जिनगी नइ चलल तखन जिनगिये की। जिनगीक लेल जे आवश्यकता अछि, माने ई जे केहेन जिनगी बना चलए चाहै छी, ओइ अनुकूल ओकर आवश्यकता सेहो अछिए।

चालीस बर्ख पूर्व जोगारी भाय तीन कट्ठा बँसवारि लगौलैन। पिताक देल जे बँसवारि छेलैन ओ ताम-कोर आ ताक-हेरक दुआरे उपैट जकाँ गेल छेलैन। जइसँ अपन आवश्यकता पूर्ति होइक संभावना नइ देखलैन। बाँसक खगतो तँ कम नहियेँ अछि। घर-घरहटसँ लऽ कऽ टाट-फरक, बाड़ी-झाड़ी-ले मचानक संग बरेब-बाड़ी-ले सेहो खगता होइते अछि। तहूमे हम सभ ओहन किसान परिवारमे जन्म नेने छी, जइ परिवारमे बाँस उपजबैक साधन–माने

जमीन–सेहो अछिए। बाँस-गाछी गामक ओहन जमीनक पैदावार छी जे ऊँचरस हुअए। बाढ़ि-बर्खाक इलाका अपन छीहे जैठाम गामक आधासँ बेसी जमीन या तँ चौरी अछि वा ओहन नीचरस जमीन अछि, जइमे बाँस गाछ नइ लागि सकैए। बाँस ओहन खेतक पैदावार छी जे घराड़ीक सदृश हुअए। जइ गाममे घर बनबैले जमीन सभकेँ नइ छै तइ गाममे बाँस-गाछ लगबैक जोगार केतए-सँ औत। जोगारी भायकेँ से नइ छैलैन। पुरना बँसवारि तीन-चारि साल रखि तैबीच ओइसँ काज चलौलैन, ओना सभ काज ओइ पुरना बँसवारिसँ नइ चलै छेलैन मुदा तैयो बिकरी-बट्टा नइ भेने अपन काज तँ चलिते छेलैन। ओना बँसवारि निच्चाँ मुहेँ हहरिये रहल छेलैन जइसँ आगू बाधा उपस्थित हेबे करतैन। यएह सोचि जोगारी भाय नवका बँसवारि लगबैक विचार केलैन।

जुड़शीतल पाबैन, चैत-बैशाखक बीचक सिमान छीहे। जहिना चैतक गाछी आ माघक बाछी निरोग होइए तहिना बाँसो अछिए। जेहेन बाँस रोपल जाइए ओइमे नव बाँसक कोंपर सेहो निकैलते अछि। रोपला पछाइत जँ नियमित ओकर पटौनी होइ तँ ओ अपन कोंपरकेँ जोगा नव बाँसक रूपमे ठाढ़ करबे करैए। लोटा-बाल्टीसँ लोक गाछी-कलममे जलधार करिते छैथ मुदा तुलसी सन छोट गाछ-ले जँ एक कलश–माने एक डाबा–पानिक खगता प्रतिदिन होइ छै तैठाम नमहर गाछ-ले तँ ओइसँ बेसी खगता हेबे करत। ओना, तुलसीक छोट गाछ होइ छै, जइसँ ओकर मुसरो आ सिरो सभ धरतीक ऊपरके परतमे रहैए। जमीनक ऊपरका हाल[2] जे चाहे तँ निच्चाँ मुहेँ ससैर जाइए वा सुखिये जाइए जइसँ माटि बेरस भाइये जाइए। बेरस भेने सुखैक संभावना सेहो भाइये जाइ छइ। मुदा नमहर

[2] नमी

गाछक मुसरो आ सिरो तँ बेसी तर[3] तक जाइते अछि तँए ओइसँ बेसी (माने तुलसीसँ बेसी) जीबैक संभावना रहिते अछि तँए जँ एक लोटा पानि ओकरा[4] जड़िमे जुड़शीतल पाबैन दिन पड़ौ वा नहि पड़ौ, ओइसँ ओकर कोनो हर्ख-विस्मय नहियेँ होइ छै मुदा तैयौ किसान अपन पाबनिक विधान, नइ पान तँ पानक डन्टियोसँ पुरबैक विचारानुकूल एक लोटा जलधार करिते अछि।

ओना आइ जुड़शीतल पाबैन छी, तँए किसान परिवारमे आरो बेसी काज अछिए। काजक हिसाबे औझुका दिन[5] छोट पड़ि जाइए। किए तँ भोरे सुति उठि गाछी-कलम, बाड़ी-झाड़ीकेँ जुड़बैत–माने जलधार करैत–माल-जालकेँ नहौनाइ-धोनाइसँ लऽ कऽ घरक केबाड़, बक्सा-बुक्सीकेँ धोनाइक संग-संग आँगन-घरक रस्ता-पेरा जुड़ौनाइक संग पोखरिक घाट आ इनारकेँ सेहो उराहब रहिते अछि। तैसंग चैतक रान्हल बैशाखमे खा कऽ पुरौनाइ सेहो अछिए। तेतबे किए, समाजक संग महादेव-पार्वतीक नाच, 'जय शिव-जय शिव' करैत सौंसे गाम घुमनाइ सेहो अछिए। एते तँ एक उखड़ाहाक–माने दुपहरसँ पहिनुक–भेल, दोसर उखड़ाहाक तँ पछुआएले अछि जेकरा साँझ धरि पुरबैक अछि। ई तँ भेल पहिल प्रकरण, दोसर प्रकरण तँ तेते नमहर अछि जे साँझ तक पुराएबो कठिन। ओ अछि किसानी जिनगीक उपद्रवी जानवरक शिकार सभकेँ गामक बोन-झाड़सँ रेबाड़ि-रेबाड़ि सीमा टपा-टपा भगाएब। तहूमे जँ सीमा टपबैकाल दोसर गामक शिकारीक संग भिड़ानी भऽ गेल तखन तँ आरो बेठेकान काज भऽ गेल। मुदा जे हुअए, जोगारी भाय मनमे ओही दिन रोपि लेलैन जे जहिया बाँस रोपैक मुहूर्त बनत तहिया तीन कट्ठा बाँस जरूर रोपब। ओना बाँस

[3] गहराइ

[4] नमहर गाछक जड़िमे

[5] पाबनिक दिन

रोपैक मुहूर्त जुड़ेशीतल पाबैन दिनटा नहि छी ओइसँ पहिने ओते दिन अछि जेते ओकर पछातिक अछि। दुनू कातक पलड़ामे दू परिस्थिति सेहो अछिए। एक दिस जँ पानिक (पटौनीक) खगता कम अछि तँ दोसर दिस पानिक खगता ओते बेसी अछि। यएह सोचि जोगारी भाय तँइ कऽ लेलैन जे जुड़शीतल पाबैन दिन किसानीक आन काज छोड़ि पाबैन मनबैत तीन कट्ठा बाँस रोपब। बाँस रोपब आकि बँसवारि लगाएब? मुदा अखन तँ ओ बाँसे रोपब हएत, लगला पछाइत ने ओ बँसवारि हएत। जहिना कोनो वैचारिक संस्थाकेँ पहिने विचारमे आनल जाइए पछाइत नीब लेल जाइए। तहिना जोगारी भाय जिनगीक मूल खगताकेँ पहिने मनमे रोपि पूर्तिक विचार ठानि लेलैन।

ओना, बीटमे[6] पुरान-सँ-पुरान पाकल-झुरुरक संग पकि-पकि सुखलो रहबे करैए मुदा वंश वृद्धिक लेल तँ ओहने ने रोपल जाएत जइमे कोंपरक आँखि होइ आ रोपला पछाइत ओ कोंपर दिअए। ओहन बाँस तँ नहियेँ रोपल जाएत जेकर आँखिये भथा गेल होइ। पुरना बँसवारिसँ नवका–माने भौर परहक–बाँस ठिकिया जोगारी भाय पहिनहि रखि नेने छला। चालीसटा बाँस रोपब छैन, जेकरा बीटसँ उखाड़बोक छैन। नमगर-चौड़गर काज रहितो जोगारी भाइक मनसूबामे मिसियो भरि कमी नहियेँ छेलैन। एते बिसवास बनले छेलैन जे एकटा-एकटाकेँ उखाड़ि रोपलासँ बेसी समैक नोकसानी हएत तँए एक झोंकमे पहिने चालीसोटा उखाड़ि लेब आ दोसर झोंकमे रोपि, तेसर झोंकमे पटौनी करैत सबेर-सकाल घरपर आबि जाएब। सएह केलैन। आने खेती-बाड़ी जकाँ जोगारी भाइक बँसवारि सेहो नीक छैन्हे। पुरना बीटक बाँस समाप्त होइत-होइत जोगारी भाइक नवका बीटक बाँस शुरू भऽ गेलैन। किसानी जिनगीक तँ नगदी खेती बाँस

[6] बाँसक बीटमे

छीहे। तहूमे गाम-गाम बजार बनल अछिए। किछुए किसान उपजौनिहार छैथ मुदा खगता तँ सौंसे गाममे रहिते अछि। अखन तकक जिनगीमे जोगारी भायकेँ बाँस सहयोगी पूजीक रूपमे संग दइते आबि रहल छेलैन। मुदा दिनो-दिन गमैया बजार टुटए लगल। किछु लोक ईंटाक घर बनौलैन तँए बाँसक खगता कमल। मुदा तेतबे नहि ने भेल। बाँसक दोसर जरूरत जे बरेब-बाड़ीमे होइ छल आ बरसाती तरकारीक मचानमे सेहो होइत छल। उहो कमि गेल।

बाँस लगौलाक पाँचे बर्खक पछाइत जोगारी भायकेँ नीक बँसवारि बनि गेलैन। ओना बाँसक बँसवारि हुअए आकि शीशोक शिशबोनी आकि आने गाछक गाछी लगबैक दिनमे लगौनिहारकेँ विशेष जिज्ञासा रहिते अछि मुदा किछुए लगौनिहार ओहन होइ छैथ जे धनबल बुझि ओकर धनि रखै छैथ, बल्कि अधिकतर ओहने लगौनिहार होइ छैथ जे एक-झोंकाह होइ छैथ। झोंकाहो कि कोनो एके रंगक अछि। सभ कथुमे, माने सभ काजमे सब रंगक झोंकाह होइते छैथ। जेना देखै छी जे किछु पढ़निहार अपनाकेँ पढ़ाइ दिस तेना झोंकि दइ छैथ जे या तँ दुनियाँसँ हेरा जाइ छैथ वा दुनियेँ हेरा जाइ छैन। तहिना धन उपारजनमे सेहो किछु गोरे अपनाकेँ तेना झोंकि दइ छैथ जे या तँ भोगीए बनि जाइ छैथ जइसँ नीक-अधलाक विचारे मनसँ हेरा जाइ छैन वा जोगिये बनि जाइ छैथ जे जेतबे दिनमे खगता देखै छैथ ओतबे दिनमे उपारजनो करै छैथ। खाएर जेतए जे अछि मुदा जोगारी भायकेँ से नइ छेलैन। ओ बाँसकेँ अपन उपयोगी वस्तु बुझैत किसानी जिनगीक नगदी पैदावार सेहो बुझै छैथ।

बाँस उपजलाक तीन पीढ़ीक पछाइत, जहिना बाबाक अमलदारी अबैत-अबैत मृत्युक संभावना मनुखमे आबए लगैए तहिना बाँसोक तँ अछिए। माने, पुरान बाँसकेँ बीटसँ निकालब अनिवार्य भाइये जाइए, नहि तँ मनुखे जकाँ भऽ जाएत। माने ई जे जँ पैछलो

पीढ़ी बाबा-परबाबा आ तोहूसँ ऊपरका बाबा सभ जँ परिवारमे जीविते रहता तँ ऐगला पीढ़ीक बाढ़िमे बाधा उपस्थित भाइये जाइए। तहिना बाँसोक अछिए। तीन-चारि पीढ़ीक पछाइत जँ बीटसँ पैछला बाँस निकालल नहि जाएत तँ ऐगला बाँस प्रभावित होइते अछि। मुदा जोगारी भायकेँ अछैते आमदनी रहितो आमदनीमे खलल पइस गेलैन। खलल ई पैसलैन जे अपन परिवारमे जेते उपयोगक खगता छेलैन ओकर अतिरिक्त जे बिकरी-बट्टाक उत्पादित वस्तु छेलैन, ओइमे कमी एलैन। जइसँ अछैते धनबल रहितो जोगारी भाय धनहीन हुअ लगला। वस्तुक हिसाबसँ गाममे लेबाल कमए लगल। जइसँ समुचित लाभमे कमी एलैन। तेकर कारण जे किछु लोककेँ गामसँ बहरेनौं आ बरेब-बाड़ीक काज कमने बाँसक खगता कमए लगल। दोसर दिस नव-नव योजनाक अन्तर्गत सेहो आ किछु लोक अपनो कमा-खटा कऽ पजेबाक घर बनबए लगला तइसँ घर-घरहटमे सेहो बाँसक काज कमने बाँसक बिकरीमे मन्दी एबे कएल जइसँ जोगारी भाय सेहो प्रभावित भेबे केलाह।

चालीस बर्खक पछाइत जोगारी भाय दरबज्जापर बैस अपन किसानी जिनगीक समीक्षा कऽ रहला अछि। समीक्षा कए रहला अछि जे जिनगीक कोन लाभ बँचल अछि आ कोन हेरा गेल। तइमे सघन बँसवारिक की स्थिति अछि...।

तही बीच पत्नी आबि बजली-

“मन-तन गड़बड़ अछि जे मन्हुआएल देखै छी?”

अपन बेथाकेँ छिपबैत जोगारी भाय बजला-

“मन्हुआएल नइ छी भकुआएल छी। चाह पीलाक पछाइत मन फरहर भऽ जाएत।”

पतिक चाहक बात सुनिते फुलकुमारी बजली-

“चाहे बना कऽ तँ हम देखए आएल छेलौं जे दरबज्जापर छी की नहि।”

ओना जोगारी भाइक मनमे पत्नीक बात सुनि कनी-मनी कुवाथ भेबे केलैन। कुवाथ ई भेलैन जे जखन हुनका मनमे शंका भेलैन जे दरबज्जापर छैथ की नहि, तखन ओ अनठेकानी चाहे किए बनौली! जँ हम दरबज्जापर नइ रहितौं तखन ओ चाह पानियेँ बनैत किने! मुदा लगले मनमे उठलैन, एक तँ हथियारक काटल घाव तैपर जँ नून छीटब तँ ओ बुड़िबकी छोड़ि आरो की हएत। एक तँ ओहिना घावक टीस अछि तैपर जँ नूनक मिस कऽ दिऐ तखन तँ ओ आरो टहकत किने। तइसँ नीक जे पोल्हाइए कऽ किए ने अपन मनक बेथा पत्नीकेँ सुना दिऐन। अर्द्धांगिनी छैथ जँ अदहो दरद हेरि लेलैन तँ अदहे ने बँचत, अदहा तँ कमबे करत...। यएह सोचि जोगारी भाय बजला-

“शुभ काजमे जेते देरी करब ओते ओ अशुभ भेल, तँए पहिने चाह

पिआउ।”

हलशल-कलशल पतिक विचार सुनि फुलकुमारी मुस्की दैत चाह आनए आँगन गेली।

दरबज्जापर सँ फुलकुमारीकेँ हटिते जोगारी भाइक मन फेर ओहिना बदरीहन हुअ लगलैन जेना सौन-भादोमे पुर्बाक लहकीपर मेघकेँ हवा पाबि होइए। मनमे पुन: उठि एलैन- अपन जिनगीक अमूल्य समए, श्रमशील समए ओहिना नष्ट भऽ जाएत..!

अपन श्रमकेँ नष्ट होइत देखते जोगारी भाइक मनक विचार आगू बढ़लैन। आगू बढ़िते मनमे उठलैन- की बाँसक एतबे उपयोग अछि जे अपन कठिन श्रम कएल पूजी नष्ट भऽ जाए?

जोगारी भाइक मन ठमकलैन। ठमैकते मन आगू घुसकए

लगलैन। जेते काज अखन तक बाँसक हम सभ करैत एलौं अछि, ओ छेहा किसानी जिनगीक उपयोगमे केलौं अछि। मुदा जखन जिनगी आगू बढ़त तखन मशीनक जरूरत सेहो हेबे करत।

दुनियाँक दृश्य आइ ओहन भऽ गेल अछि जे जेकरा जेते अगुआएल मशीन छै ओ ओते शक्ति सम्पन्न देश बनल अछि। बाँसेक तँ अनेको उपयोगी वस्तु–कागज, कपड़ा इत्यादि–बनिते अछि जेकर उपयोग आइये नहि, आगुओ होइते रहत। मुदा बाँसक उत्पादन तँ मात्र ओत्तैटा ने हएत जेतए अनुकूल वातावरण छइ। माने बाँस उपजैक समुचित भूमि आ समुचित मौसम जेतए छइ, कम-सँ-कम कपड़ा आ कागजक खगता तँ सभ जगह छइहे...।

तही बीच फुलकुमारी चाह नेने दरबज्जापर आबि गेली।

पत्नीक हाथमे चाहक गिलास देखते जोगारी भाइक मनमे विचारक चाह सेहो जगि चुकलैन। ओना विचारक गंभीर वन–वनक सघन रूप–मे जोगारी भाइक मन तेना सघन हुअ लगल छेलैन जे पत्नीक हाथक चाहपर नजैर ओइ रूपे पड़बे ने केलैन जेहेन मन बनौने फुलकुमारी चाह नेने आएल छेली। मुदा तैयो पत्नीक हाथसँ चाह लैत जोगारी भाय आँखि-पर-आँखि जरूर फेड़लैन। आँखि-पर-आँखि पड़िते फुलकुमारी बजली-

"बड़ीकालक बनौल चाह छी, देखियौ जे सुआदमे ने ते बाइसपन आएल अछि।"

पत्नीक बात सुनि जोगारी भाइक मुहसँ बहरेलैन-

"बाइसपन आबह कि तेइसपन, चाह तँ चाह छी।"

ओना, जोगारी भाइक विचार फुलकुमारी नीक जकाँ नहि बुझली मुदा अपन हाथक बनौल चाहक प्रशंसा तँ सुनबे केलीह। प्रशंसा सुनि फुलकुमारी आँगन दिस मुड़ैत बजली-

"ताबे अहाँ चाह पीबू, लगले हम आँगनसँ अबै छी।"

तैबीच दू घोंट चाह जोगारी भाय पीब नेने छला, मनमे संतुष्टिक तुष्टि पनैप गेले छेलैन तँए मुस्कुराइत बजला-

"आँगनसँ ओहिना किए आएब, चाह पीने आएब।"

ओना पतिक विचारसँ फुलकुमारीकेँ मिसियो भरि कुवाथ नइ भेलैन, किएक तँ जे बात झाँपन दऽ बाजल छेली ओ पति उघारि देलकैन, तेतबे ने। से तँ सभ जनिते अछि जे पति-पत्नीक बीच हुअए वा आन छोट-पैघक बीच, मुदा किछु विचार तँ ओहन होइते अछि जे लोक झाँपन-तोपन दऽ कऽ बजैए। चाह पीब पान खाइते जोगारी भाइक मनमे धक्का जकाँ लगलैन। धक्का लगिते मन धड़कए लगलैन। धड़कए ई लगलैन जे आइये नहि, सभ दिन मिथिलांचलक अनमोल उपयोगी वस्तु बाँस रहल, जे अनुकूल वातावरण पेब अदौसँ फुलाइत-फड़ैत रहल अछि। हजारो बीघाक कृषि पैदावार रहल अछि। जे ग्रामीण उपयोगिता कमिते बीटक बीट बाँस सुखि-सुखि नष्ट भऽ रहल अछि।

..दुर्भाग्य तँ मिथिलांचलक रहबे कएल जे बुधिक शीर्षपर बसैबला मिथिलावासी अपनो नीक-बेजा बुझैले अखनो तैयार नहियेँ छैथ। आइ जँ गामक वस्तु सभ जे अनुपयोगी भेल जा रहल अछि, ओकर जँ समुचित उपयोग होइत तँ कि जएह मिथिला बुझै छी सहए रहैत..? एन.एच. सतावन बनल। जइसँ सभ गाम तँ नहि मुदा मिथिलांचलक बहुतो गामक सम्पर्क सूत्र देशक आन-आन भागसँ बनल। गाड़ी-सवारीक सुविधा बढ़ल। पैघ-पैघ वेपारीक नजैर बाँसपर पड़ल। लोकोकेँ माने बाँस उपजौनिहारोकेँ गाड़ाक घेघ बाँस बनिये गेल अछि। पड़ाएल चोरक किदैन नफा, एहने मनोभाव लोककेँ उदय भेल। मजबूरीक भरपूर लाभ उद्योगपतिकेँ उठबैक अवसर भेटल।

अपन जिनगीक संग जोगारी भाय समाजोक जिनगी देख रहला अछि। चालीस बर्ख पूर्वक रोपल सघन बँसवारि–माने नीक लाभक–देख जोगारी भाइक मन पाछू दिस भागि रहल छैन। साइयो बीघाक डुमैत समाजक सम्पैत देख जोगारी भाइक मनक विचार हहैर-हहैर अलिसाएल फूल जकाँ झड़ि-झड़ि खसि रहल छैन। मुदा उपाइये की? तही बीच लक्ष्मीनाथ एकटा वेपारीक संग पहुँचल। अनभुआर बेकतीकेँ देख जोगारी भाय लक्ष्मीनाथकेँ पुछलखिन-

"हिनका नइ चिन्हलयैन?"

ओना वेपारी चुपे रहला मुदा लक्ष्मीनाथ बाजल-

"काका, ई बाँसक वेपारी छैथ। गाममे जेते बाँस अछि, सभटा कीन लेता।"

'गामक जेते बाँस अछि, सभटा कीन लेता।' सुनि जोगारी भाइक मनमे खुशीक लहैर उठलैन। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे करोड़ोक सम्पैत बाँस गाममे अछि, अखन तक जे बाँसक विकरीक दर रहल अछि, ओइ दरे कीनता आकि..? मुदा अपन विचारकेँ मनेमे दाबि जोगारी भाय बजला-

"ई तँ नीक बात भेल जे जे सम्पैत नष्ट भऽ रहल अछि ओकर उपयोग हएत।"

अपन बात रखैत लक्ष्मीनाथ बजला-

"काका, हिनकर कहब छैन जे सुखाएल आ खिच्चा बाँस छोड़ि हरदर सभ एक रेटमे कीन लेब।"

लक्ष्मीनाथक बात सुनि जोगारी भाइक मनमे उठलैन जे अनेको किस्मक बाँस गाममे अछि, जे साइजो आ गुणोमे अनेक रंगक अछि, तखन एक दर केना हएत? विचारकेँ बहकबैत बजला-

"टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।"

मुस्कुराइत लक्ष्मीनाथ बाजल-

"हँ, से सहए बुझू।"

जोगारी भाय वेपारीकेँ पुछलखिन-

"अहाँ केतए रहै छी?"

जहिना मैथिलीमे जोगारी भाय पुछलखिन तहिना मैथिलियेमे वेपारी सेहो उत्तर देलकैन-

"हमर घर सकरी अछि। असल वेपारी दिल्लीक छैथ।"

जोगारी भाय-

"अहाँकेँ पार्टनरशिप अछि आकि..?"

वेपारी बाजल-

"नइ, पार्टनरशिप केना हएत। ओ–माने उद्योगपति–बहुत पैघ कारोबारी छैथ। हम एकटा अदना आदमी छी, तैबीच पार्टनरशिप केना हएत।"

जोगारी भाय पुछलखिन-

"तखन अहाँ?"

वेपारी बाजल-

"ट्रकक हिसाबसँ कमीशन भेटैए।"

जोगारी भाय-

"गामक सभ बाँस कीन लेब?"

वेपारी-

"गामे किए, इलाकाक सभ कीना जाएत। हमरा सन-सन साइयो गोरे कमीशनपर काज कए रहला अछि।"

जोगारी भाय-

“की रेटमे बाँस कीनै छी?”

वेपारी-

“ओना, जे रोड साइड माने एन.एच.क बगलमे अछि ओकर दर अस्सी रूपैआ–एक बाँसक–अछि। मुदा जे जेते हटि कऽ अछि, ओकर दर ओते कम होइत जाइए।”

अपन गामक हिसाब अन्दाजि मने-मन जोगारी भाय जोड़लैन तँ बुझि पड़लैन जे जे बाँस दू साए रूपैये बीकैए ओ सत्तैर-पचहत्तैर रूपैये भेल, अढ़ाइ-बड़ कम! मुदा दोसर उपाइयो तँ नहियेँ अछि। साले-साल सुखि-सुखि नष्ट होइत जाइए...। जोगारी भाय बजला-

“मिथिलांचलक संस्कार रहल अछि जे जे दरबज्जापर आबि जाथि हुनकर मन दुखा कऽ विदा नइ करिऐन। तहूमे अहाँ ते पड़ोसी छी मुदा असल जे कारोबारी छैथ ओ तँ हजार कोस दूरक छथिये। केना कऽ मन दुखेबैन। जेते बाँस अछि ओइमे एकटा बीटक अपना-ले रखि लेब, बाँकी सभ दऽ देब।”

वेपारीक संग लक्ष्मीनाथ सेहो उठि कऽ विदा भेल। जहिना अभावीकेँ करजो रूपैआ हाथमे एने क्षणिक खुशी होइते छै तहिना जोगारी भायकेँ सेहो भेलैन। तही बीच फुलकुमारी दरबज्जापर पहुँचली। हड्डी चुसैत कुत्ता जहिना अपने मुँहक खूनक सुआदसँ मन तृप्ति करैत तिरपित होइए, तहिना जोगारी भायकेँ भेलैन। पत्नीकेँ कहलखिन-

“गाड़ाक उतरी उतरल।”

◌

शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017

गुणहीन

जेठ मासक पूर्णिमा दिन। किछु दिन पहिने बैरसाइतिक आगूक दशराहा सेहो भऽ गेल। अपन-अपन मनकमना पूर होइ लेल डिहवारक स्थानमे रेमन्त सजल घोड़ा चढ़ा गामक लोक निश्चिन्त सेहो भाइये गेल छल।

हथिया नक्षत्रक पछाइत एको बून बरखाक पानि तँ धरतीकेँ नसीब नहि भेल मुदा जाड़क शीतलहरी अपन रूपमे बेइमानी नइ केलक। तँए ध-ध धधकैत धरतीक छाती खेतक दरारि जकाँ फटि-फटि छहोँछीत भाइये गेल अछि।

मौसमक रूखि देख जीवानन काका पाँच कट्ठामे सजमैनक खेती सरस्वती पूजासँ तीन दिन पहिने केलैन। ओना खेती करैक हिसाब जोते-कोर लगसँ शुरू भऽ जाइए मुदा मूलत: किसान खेतीक हिसाबसँ ऊपर उठा जोत-कोरक हिसाबमे रखने छैथ आ खेतमे बीज रोपनसँ खेतीक हिसाब शुरू करै छैथ। अही हिसाबे जीवानन काका सजमैनक बीआ पाँच कट्ठा खेतमे रोपि लेलैन। गाछो नीक जनमलैन। बरखा नइ भेने शीतो-पल्लाक रूप बदैल गेल तँए ओते प्रभावित सजमैनक गाछ नहि भेल माने एकोटा गाछ कोंकरियाएल नहि, सोलहन्नी कलशल फुदकल गाछ भेल। अपन खेतीक पहिल सीढ़ीक काज देख जीवानन काका मने-मन हिसाब लगबैथ जे ढकिऔल खेत

अछि, तैपर समुचित रसायनिक खाद सेहो देल अछि। तेतबे नहि, नीमक गाछक बीआक संग रसायनिक कीटनाशक दबाइ सेहो दइये देने छिऐ। तँए ने जड़िकेँ काटैक आ ने धड़-पातकेँ चाटैक संभावना अछि।

जेना-जेना जाड़क दिन कमैत गेल तेना-तेना सजमैनक गाछमे उर्ज-शक्ति अबैत गेल जइसँ समयानुसार लत्ती सुंघियाइत-मुड़ीयाइत आगू रमकल। महिना नइ बीतल मुदा फूलक कोढ़ीसँ लत्ती कोढ़िया जरूर गेल। साँझ-भोर देखैक संग जीवानन काका घन्टा-दू-घन्टा काजो खेतमे करिते छला।

पचीसम दिन बीत गेल, खेतक संग लत्तियोकेँ पानिक तृष्णा जगिये रहल छल। तैबीच जीवानन कक्काक मनमे उठलैन- बच्चाकेँ जँ समुचित सुपोषित अहार नइ भेटत तँ ओ रोगाह-टटाह हेबे करत।

अपन किसानी जिनगीक पूर्णता अपना जनैत जीवानन काका केनहि छैथ। अपन खेत, अपन पानिक साधनक संग श्रमक लेल अपन शरीरो छैन्हे, तँए जिनगी जीबैक बिसवास मनमे छैन्हे। श्रमे ओहन चीज छी जे लोककेँ तुष्टि प्रदान करैत अछि से जीवानन काकामे छैन्हे।

छबीसम दिन अपन बोरिंगसँ जीवानन काका सजमैनक खेत पटौलैन। एक तँ मौसमक मासुमी दोसर नीराएल धरती, अपना-अपना ओकातिये लत्ती जोर केलक। तैपर नीरेलाक तेसर दिन बेरुपहरमे यूरिया खाद सेहो छीटि देलखिन। तीसम दिन फूलो आ फूलकोढ़ियो तरेगन जकाँ सौंसे खेत भुक-भुक करए लगल। कचे-बचे जहिना बतिया तहिना फूलो सौंसे खेत जगमगा गेल।

आइ पैंतालीसम दिन छी, जीवानन काका खेतसँ एकटा सजमैन काटि घरपर लऽ कऽ एला। अबिते पत्नीकेँ दरबज्जेपर सँ सोर

पाड़ि बजला-

“कनी एमहर आउ।”

ओना, पतिक सोरसँ सुदामा काकीक देहक कम्पन्नमे मिसियो भरि तेजी नइ एलैन। नइ अबैक कारण छल जे एहेन सोर पाड़ब की कोनो एकदिना छी, ई तँ सभदिना छिहे। माने भेल हम दरबज्जापर आबि गेलौं। असथिर डेगे सुदामा काकी दरबज्जापर एली तँ पतिक हाथमे पोछल-पाछल, पुष्ट सजमैन देख बजली-

“अहाँ अमृतक स्रष्टा छी!”

पत्नीक आस भरल बिसवासु बात सुनि जीवानन कक्काक मन दहैल गेलैन। बजला-

“नीक चास अछि, एहेन फलसँ खेत भरल अछि!”

पतिक मुँहक ‘नीक चास’ सुनि सुदामा काकीक मनमे बिसवासक बास भेलैन। बिसवासक बास होइते मन कलैश कऽ बिहसलैन। बिहैसते बजली-

“लक्ष्मी दहिन छैथ..!”

पत्नीक मुहसँ ‘लक्ष्मी दहिन छैथ’ सुनि जीवानन कक्काक मनमे अपन लक्ष्य-भेदल श्रम उठलैन। उठिते श्रमशील गुणक आभास भेलैन। आभास होइते मन कहलकैन जे एहेन गुण लोकमे एके दिने थोड़े अबैए। तहूमे अपना सन इलाकामे। जइ इलाकामे महिना-दू-महिनामे मौसम करबट बदलैए। हँ, किछु हद तक ओहन इलाकाक लेल मानलो जा सकैए जइमे बारहो मास एकरंगाहे मौसम रहैए। मुदा अपना इलाकामे तँ आँखियो मुइन देखब तँ बुझि पड़त जे एकटा रौदियाह समए भेल, दोसर दहार आ तेसर भेल दुनूक आड़ि मध्यमास; जइमे ने रौदी आ ने दाही होइए। जखने तीन रंगक मौसमसँ किसानकेँ भेँट हेतैन तखने ने बुझए पड़तैन जे रौदिक ताक केहेन हएत आ

दहारक ताक केहेन हएत। जैठाम तीन-गुणिया मौसम अछि तैठाम तीन-गुणियासँ नअ-गुणियोँ आ बरह-गुणियोँ भाइये सकैए, तँए एक-गुणिया बुधिसँ थोड़े काज चलत। तहूमे जँ मात्र बाते-विचारक रहैत तँ कनी काल मानलो जा सकैए। मुदा जैठाम विचारकेँ काजमे ढारैक प्रश्न अछि ओ तँ जटिल अछिए। जटिलताक कारण खाली मौसमेटा थोड़े अछि। श्रमक ढंग सेहो अछिए ने। कियो तेजीसँ कोदारि-खुरपी चलबै छैथ तँ कियो मन्द गतिये, तँ कियो मधमन्द गतिये सेहो चलैबते छैथ, तैठाम एक-हरफी बाजब केते धरि उचित हएत...।

बजला-

“हँ, संयोग नीक अछि।”

बजैक क्रममे जीवानन काका बाजि तँ गेला मुदा लगले अपन मन अपना विचारकेँ घेरैत कहलकैन-

“जे काज अछि (माने सजमैनक खेती) तेकर तँ मात्र एक प्रकरण रोपै दिनसँ फड़ै दिन तकक भेल। दोसर प्रकरण भेल फलकेँ सुन्दर बनाएब आ तेसर प्रकरण भेल ओकर बिकरी। दू प्रकरण–फल बनाएब आ बिकरी–तँ अखन आगूमे बाँकीए अछि; तखन जँ ‘नीक संयोग’ मानब सेहो उचित नहियेँ भेल आ जँ ऐगला दुनू प्रकरणमे कुसंजोग भऽ जाए? तखन तँ संजोग-कुसंजोगक बीचक बीच ने मानल जाएत। जँ से नहि हएत तखन तँ एक-दिसिये ने भेल?”

मुदा मन मानि गेलैन जे पति-पत्नीक बीचेक ने बात छी। आन परिवार आकि आन टोल आकि आन गामक बात थोड़े छी जे लोक दुसत। परिवारेक बात छी सदिकाल गप-सप्प होइते अछि। जाबे धरि संजोग नीक रहत ताबे तक बाजब जे संजोग नीक अछि आ जखनसँ कुसंजोगक आगमन हएत तखनसँ नीककेँ अधला दिस खसैक बात बाजब! तइ बिच्चेमे सुदामा काकी टोकि देलकैन-

“भगवानक नीक नजैर पड़लैन।”

पत्नीक बात सुनि जीवानन कक्काक सोझराइत मन फेर ओझरा गेलैन। ओझरेलैन ई जे सभ किछु तँ अपने लूरिये-बुधिये केलौं तखन पत्नी किए बेइमानीक बात बाजि रहली अछि। मुदा लगले मन मानि गेलैन जे सोल्होअना हमरेटा-ले बेइमानीक बात थोड़े बजली अछि, आधा तँ अपनो हिस्सा ने हेतैन, तँए पचास पाइ तकक बेइमानी सहाज कएल जा सकैए...।

पुछलखिन-

“भगवानक नीक नजैर पड़लैन आकि अपन नीक नजैर पड़ल?”

तैबीच सुदामा काकीक मन सजमैनक पोछल-पाछल रूपमे बौआ गेल छेलैन। बौआ ई गेल छेलैन जे जखन लोक अपन कएल अमृत फल भोजन करत तखने ने ओ राजा भेल। तहूमे लक्ष्मी भण्डारक पहिल फल छी...।

तँए जीवानन कक्काक बात सुदामा काकी नीक जकाँ नइ बुझली। बजली-

“आइ पहिल फल छी तँए तड़ुओ-तरकारी बनाएब आ भुजुओ।”

‘तड़ुआ-भुजुआ’ सुनि जीवानन कक्काक मनक विचार सेहो निच्चाँ उतरलैन। उतैरते बजला-

“कमा कऽ हाथमे देलौं, आब अहाँ मालिक छी जे जेना बनाबी, तइले अनेरे पहिले किए जी भरछबै छी।”

‘जी भरछब’ सुनि सुदामा काकी बुझि गेली जे नीक मनक इच्छा छैन। मुदा एहेन इच्छा पुरबैले तँ ओहने ने कलाकारियो चाही। मुदा लगले मन बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे सजमैन सन सुकुमार

तरकारी दोसर कोन अछि जे कमसँ कम संगीक संग चलैए। मात्र नून आ मिरचाइक संग चलैबला छी, जे आन थोड़े अछि। आनो की एके रंगक अछि, रंग-रंगक अछि। किछु एहेन अछि जेकरा भरि देह मसाला चाही तँ किछु एहेन अछि जेकरा पेटे भरि मसल्ला चाही आ किछु एहनो तँ अछिए जे मसल्लेमे डुमल रहैए।

आइ जेठक पूर्णिमा छी। बैशाख-जेठक धुमसाही लगन चलल अछि, जइमे धुमसाही भोजो-भात तँ हेबे करत। जखने धुमसाही भोज-भात हएत तखने ने तीमन-तरकारीक खगता सेहो बेसी हएत। जखने तीमन-तरकारीक बेसी खगता हएत तखने ने ओकर मांग सेहो बढ़त। जखने कोनो वस्तुक मांग बेसी हएत तखने ओइ वस्तुमे महगाइ सेहो औत। जखने महगाइ औत तखने ने पैदाइसकेँ लाभक पैदाइस भेल!

आठ बजे भिनसरे जीवानन काका चाह पीब खेत गेला। खेतमे सजमैन देख समोह लगि गेलैन। समोह ई लगलैन जे एहेन अनुकूल समए रहितो उपज नष्ट भऽ रहल अछि! खेतक पचीसो प्रतिशत सजमैनक बिकरी नइ भेल! खेतमे पथार लागल सजमैन जुआ-जुआ बुड़हा जकाँ गेल छल। जइसँ लत्तीक बढ़बारि सेहो ठमैक गेल आ लत्तीमे फड़ रहने फड़ब सेहो कमि गेल...।

आड़िपर बैस जीवानन काका विचारए लगला जे एना किए भेल। सजमैन सन सुपरिचित वस्तु, जेकरा दुनियाँ जनैए जे ओ सुपाचक संग सगुणकारी सेहो अछि। घर-घरमे उपयोग होइते अछि। तेकर एहेन दिन केना भेल जे सभटा खेतेमे पड़ल जुआ कऽ नष्ट भऽ गेल?

जीवानन काकाकेँ अपन काजक प्रति मनमे शंका भेलैन। शंका दू रंगक भेलैन। पहिल फलक–माने सजमैनक–आ दोसर भेलैन

लोकक मांगक प्रति। सजमैन खाइक वस्तु छी, घर-घरक लोक खाइते छैथ तँए मांगक जे बजार अछि ओ समटल नहि, पसरल अछि...। तँए मांगक प्रति विचार जीवानन कक्काक मनमे पछुआ गेलैन आ फलक विचार अगुआ गेलैन। फलक विचार अगुआइक कारण ईहो भेलैन जे वस्तु चाहे ऐ जुगक हुअ आकि ओइ जुगक मुदा प्रतियोगिता हएत वस्तुएक बीच ने। तँए मनमे प्रवल आशंका भेलैन जे वस्तुए ने तँ अधला भऽ गेल..!

अधला वस्तुक विचार मनमे जगिते जीवानन काका आड़िपर सँ उठि खेतमे धँसला।

खेतक पहिल गाछक लत्तीपर नजैर देलैन। पाँचटा फल सिरगर बाँकी लत्तीक ऐगला फल टेंटी-टापर। पहिल गाछक फल देख जीवानन काका हिया कऽ खेत दिस तकला। पाँच कट्ठामे खेती अछि डेढ़ साए गाछ रोपने छी, एकटा गाछमे पाँचटा सिरगर फल भेल। डेढ़ साए गाछमे साढ़े सात साए भेल, जँ दसो रूपैये बिकाएत तँ पचहत्तैर साए ओहिना भेल। पाँच कट्ठामे पचहत्तैर साए कम नइ भेल। किएक तँ अपना ऐठामक जे जमीन रोगसँ रोगग्रस्त भऽ गेल अछि, तइ खियालसँ। ओना, जँ ओही सजमैनक बीच जे बीआ अछि जँ ओकरा बीज रूपमे पैदा कएल जाएत तँ ओ लाखोक हएत। एक रूपैआसँ लऽ कऽ तीन रूपैआ तकक प्रति बीआक दाम बजारमे अछि। मुदा ऐठाम बीआ बनबैक बात नहि, तरकारीक बात अछि, सजमैनक उपजाक अछि।

पचहत्तैर साए रूपैआक हिसाब जीवानन कक्काक मनमे अबिते दोसर विचार कुदि पड़लैन। कुदि ई पड़लैन जे जेकरा गरमा फसिल कहै छिऐ ई तँ मात्र ओ भेल, बाँकी बरसात आ जाड़ बँचले अछि। जखन एक मौसममे पनरह साए रूपैआ एक कट्ठाक उपज भेल तखन

बीघाक भेल तीस हजार। तीन मौसमक माने भेल नब्बे हजार। नब्बे हजारक उपज जँ एक बीघाक हएत तखन ने खेतीक आगू बढ़बारि हएत। दस-बीस बीघा खेतबला सभ शहरक सड़कपर घुमि रहला अछि। ओना, अपन सजमैनक परिस्थिति आ गाम-समाजक बीचक जे हवा बनि गेल अछि ओइ हवामे जीवानन कक्काक मन छहराए लगलैन। छहराइत-छहराइत मन तेना थीर भऽ गेलैन जे कोनो बेचैनी मनमे रहबे ने केलैन।

पाछू उनैट कऽ ताकिते जीवानन काकाकेँ मन पड़लैन अखन तक जलखैइयो ने केने छी। अनेरे कोन लाभ-हानिक झमेलमे मनकेँ वौऐने छी। मन समगम भेलैन।

समगम भेल जीवानन काका घर दिस विदा भेला। ओना, मनमे रहि-रहि कऽ सजमैनक बेथाक टीस मारबे करैत रहैन मुदा जहिना बेथाक टीस तहिना पेटक टीस सेहो रहबे करैन। ओना विचारसँ जीवानन काका अपन मनकेँ बेर-बेर संतोख दैत रहला जे मनुख कर्मक भागी छी, जेना गीतो कहैए। अपन कर्ममे केतौ चूक कहाँ देखै छी, जँ कर्ममे चूक रहैत तँ एहेन उपज केना भेल? मुदा उपज भेलो पछाइत जँ समुचित लाभ नइ भेल तइमे केतए दोष अछि..?

जखन बजार दिस तकैथ तँ अनुकूले-अनुकूल बुझि पड़ैन। माने ई जे तेहेन लगन-पाती भेल अछि जे मांगे-मांग होइत, से नहि भेल। तँए जीवानन कक्काक मनक सुरखीमे मलिनताक तमस आबिये जाइन।

दरबज्जापर अबिते पत्नीपर नजैर पड़लैन। जलखै-बेर उनहल देख सुदामा काकी बेर-बेर दरबज्जापर आबि-आबि देखैत रहथिन जे एला की

नहि।

जहिना जीवानन कक्काक नजैर सुदामा काकीपर पड़लैन तहिना सुदामा काकीक नजैर सेहो जीवानन काकापर पड़लैन। नजैर पड़िते सुदामा काकी चेहराक सुरखीसँ आँकि लेलैन जे मनमे कोनो-ने-कोनो कुवाथ जरूर छैन। मुदा किछु पुछैसँ पहिने नीक हएत जे जलखैक चर्चा करी।

सुदामा काकी बजली-

“कोन मुलुक चलि गेल छेलौं जे जलखैयो तियागि देलिऐ?”

ओहन लोक जकाँ तँ जीवानन काका नहियेँ छैथ जे प्रश्न आगूमे किछु औत आ तमसेलहा मने वा वौएलहा मने जवाब किछु देब। आगूमे जलखैक प्रश्न छेलैन तँए मनक सभ ओझरीकेँ मनक बैगमे रखैत बजला-

“कोनो आन मुलुक थोड़े गेल छेलौं, छेलौं ते अपने मुलुकमे, मुदा...।”

‘मुदा’ कहि जीवानन काका तेना ठमैक गेला जेना दुखे बकार बन्न भऽ गेलैन। तेकर कारण छल जे मनमे उठि गेलैन- पत्नी तँ हमरे आश्रित छैथ, मुदा आशक तँ बाटे कटिया गेल तखन तोष-भरोसक बात की कहबैन? जीवानन कक्काक मनक मलिनता आरो बढ़ैत गेलैन जे सुदामा काकी बदलैत रूपकेँ सेहो आँकि रहल छेली। ओना, मने-मन ईहो उठि रहल छेलैन जे पीड़ितकेँ बेपीड़ित बात पुछबो ओतेकाल नीक नहि जेतेकाल पीड़ित अपन पीड़ाकेँ प्रसुति नइ करै छैथ। तँए अपन पत्नीत्वक विचार करैत सुदामा काकी बजली-

“कहू! जलखैक बेर उनैह गेल, भूखे-पियासे मन सेहो बेपीड़ित भऽ विपरीत भऽ गेल हएत। पहिने अन-जल कऽ लिअ। पछाइत दुनियाँ-दारी दिस देखब।”

पत्नीक विचार जीवानन काकाकेँ प्रभावित केलकैन। हाथ-पएर

धोइले कल दिस बढ़ला।

..हाथ-पएर धोइ कऽ आँगन अबिते पत्नीक आकर्षक–जलखैक हेम-छेम–आन दिनसँ किछु बेसी बुझि पड़ैलैन। मुदा जीवानन कक्काक अपन हेम-छेमक कटाएल रस्ता मनकेँ उठैये ने दैत रहैन। बेर-बेर मनमे उठि जाइत रहैन जे अपन हारल जिनगीक बात केना कहबैन? अपन टुटैत जिनगी देख अनेरे मन तीताइन भऽ जेतैन..!

तँए अपन मनक बेथाकेँ जीवानन काका अपना मनेमे मुड़िया-मुड़िया मोड़ि-मोड़ि रखए चाहैथ।

जहिना तबधल लोककेँ सरोवरमे पएर पड़िते जलन-तपनक बीच संघर्ष उठि जाइए, जड़ाएल लोककेँ आगि भेटिते तपन-जलन हुअ लगै छै तहिना आधासँ अधिक जीवानन काकाकेँ भोजन केला पछाइत सुदामा काकीकेँ हुअ लगलैन। मन मानए लगलैन जे आब जिनगीक लीलाकेँ आगू बढ़ौल जा सकैए। बजली-

“सजमैनक खेतक की हाल अछि?”

पत्नीक बात सुनि जीवानन काकाकेँ ओहिना मनमे भेलैन जहिना कोनो परदेशी अपन पत्नीक अनेको मनकामना लऽ परदेश जाइए आ कमेला पछाइत जखन गाम घुमैए आ रस्तेमे सभ कमेलहा या तँ कटि जाइ छै वा छीना जाइ छइ...।

ओना, मनमे ईहो उठैत रहैन जे गीतामे कर्मक आगू फल अही दुआरे कृष्ण छिपा कऽ रखला जे कर्ता स्वयं अपन बूझत..!

जीवानन काका बजला-

“हाल की रहत, बेहाल अछि!”

पतिक ‘बेहाल’ सुनिते सुदामा काकी चौंकली। चौंकली ई जे जँ पतिक हाल-बेहाल तँ पत्नीक हाल केना सुहाल बनि सकैए? मुदा की

बेहाल, से तँ सुनला पछातिये ने बुझब। पुछलखिन-

“की बेहाल अछि?”

पत्नीक पुछबसँ जीवानन कक्काक मनक धुकधुकी तेज हुअ लगलैन। धुकधुकाइत मने बजला-

“पहिने असथिर से जलखै करए दिअ, पछाइत दरबज्जापर बैस सभ किछु नीक जकाँ कहब।”

‘सभ किछु पछाइत’ सुनि सुदामा काकीक मनमे सेहो धुकधुकी उठि गेलैन। मनमे उठलैन- सभ किछुक माने एकेटा बात नहि, अनेको भेल! जखने अनेको विचार वा अनेको समस्याँ लोक घेरा जाइए तखने ने ओ बेबस हुअ लगैए। जखने कियो बेबस भेल तखने ओकर स्वच्छन्दता मेटा लगै छै, जे मृत्युक कगार तक पहुँचबैए..! मुदा बजली किछु ने। मनमे बेर-बेर घुरिया लगलैन जे मनुष्य जँ चिड़ै जकाँ स्वच्छन्द भऽ अकासमे नइ उड़ि सकल तँ ओकर जिनगीए की आ जीवने की? मुदा चुप ऐ दुआरे भऽ जाथि जे जेते मने-मन खोद-वेद करैथ तेते ओझरियाइये जाइथ। एक तँ अपना मने बेथित छैथे आ तैपर हमहूँ ऊपरसँ लादि दिऐन, ई सेहो केहेन हएत? तँए सुदामा काकी सहमल रहली...।

जलखै केला पछाइत जीवानन काका हाथ-मुँह धोइ, लोटा रखि दरबज्जाक चौकीपर बैस पत्नीकेँ सोर पाड़ैत बजला-

“कनी एमहर आउ।”

सुदामा काकी बुझि गेली जे पति-पत्नीक बीचक खेल यएह ने छी जे जखन पति पीड़ित रहैथ तखन हुनका उतपीड़ी-ले सुपीड़ी बनि नइ पूजब तखन पतिक पत्नीए की। तहिना पत्नीक बेपीड़ित अवस्था सेहो छी। मुदा बेपीड़ितक सेहो दू अवस्था अछि, नमहर-ले छोटक तियाग आ छोट-ले नमहरकेँ धकियाएब। मुदा ई विचारणीय विषय

अछि जे पति-पत्नीक स्तरमे एकत्व भेला पछाइत होइ छइ। मुदा तइमे भारी खाधि अछिए, माने छीपा-पनार अछिए। अपन नव चेहराक छम-छमी बनबैत सुदामा काकी छमैक कऽ आगूमे ठाढ़ होइत बजली-

“भगवान केकरो ऊपर दहिन छैथ तँ अपनो दुनू परानीपर छैथ।”

पत्नीक बात जीवानन कक्काक कानमे पड़िते ठेकी जकाँ बैस अपन मनक बातकेँ ठेकिया देलकैन। ठेकियाइते बजला-

“से की?”

पतिक प्रश्न सुनि सुदामा काकीक मनमे भलैन जे आब छोर पकड़ा गेल! बजली-

“ओछाइनपर भोरे यएह ठिकियबै छेलौं जे अपना सभसँ बेसी उमेरक लोक समाजमे, गाममे केते बँचल छैथ आ अपन संगी-साथी केते दुनियाँ छोड़ि देलैन।”

सुदामा काकीक बात सुनि जीवानन काका आरो भँसियाए लगला। भँसियाइत बजला-

“नाम मन अछि?”

सुदामा काकी बजली-

“ए-गो-आध-गो रहैत तहन ने, से तँ दर्जन-सोड़ेमे अछि।”

“दर्जन-सोड़ेक ठेकान अछि?” -जिज्ञासू चिड़ै जकाँ जीवानन काका बाजि कऽ मुँह खोलनहि रहला।

मुस्की दैत सुदामा काकी बजली-

“जहिना अज्ञानी औरत अपन श्रमसँ गाए पोसि दूध पैदा करै छैथ आ पौए-पौए बेच घरक देवालपर डाँरि घीच-घीच अपन हिसाब

जोड़ै छैथ तहिना मनक डायरीमे हमहूँ लिख कऽ रखने छी।”

आरो जिज्ञासु भऽ जीवानन काका बजला-

“मुँह जवानियेँ कनी सुना दिअ जे अपनो ठेकान करब।”

सुदामा काकी बजली-

“बेसी उमेरक तँ दर्जन-सोड़ेमे नइ छैथ, मुदा गाही-गण्डामे जरूर छैथ।”

जीवानन काका आरो उताहुल होइत बजला-

“संगी-साथी?”

सुदामा काकी बजली-

“संगी-साथीक तँ दुनियेँ छी मुदा ओ हिसाब दर्जन-सोड़ेमे नइ कएल जा सकै छै, मुदा ओकर अनुपातिक हिसाब तँ अछिए।”

उत्तेजित होइत जीवानन काका बजला-

“सएह सुनाउ?”

अपन गुरुत्वक भार सम्हारैत सुदामा काकी बजली-

“अनकर पाछू अनेरे केते वौआएब, अपन पछुआकेँ पछुआउ।”

धारक धारामे भँसियाएल कतियाइत-कतियाइत जहिना कोनो चीज किनछैर लगैत तहिना जीवानन कक्काक भँसियाएल मन किनछैर लगलैन। बजला-

“तीन मासक जिनगी हलेल गेल।”

पतिक बात सुदामा काकी नीक जकाँ नहि बुझि पेली। तँए बुझैक रस्ता पकैड़ बजली-

“से की?”

पत्नीक ‘से की’ सुनि जीवानन कक्काक मनक झाँपल परदा

हटलैन। हटिते पत्नी दिस नजैर उठौलैन। नजैर उठिते मनमे बिसवास जगलैन जे अखन केहनो नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला बात पचबै-जोकर मन खन्हाएल छैन। समगम होइत कहलखिन-

“सजमैनक खेती डुमि गेल!”

‘सजमैनक खेती डुमि गेल’ सुनिते सुदामा काकीक बिसवासू मन एकाएक विस-विसाइन हुअ लगलैन। ओना, बहुत विस-विसाइन नइ भेल छेलैन मुदा जीवानन कक्काक आँकमे चलि एलैन। दोहरबैत बजला-

“बहुत आशासँ खेती केने छेलौं, मुदा तैपर पानि पड़ि गेल!”

पतिक बात सुनि सुदामा काकीक मन ऊपरसँ निच्चा उतरलैन। उतरैक कारण भेलैन जे कहाँ मन डुमि रहल छेलैन आ कहाँ लगले पानियेँटा फेड़ेलैन, जे बुझै छेलौं से बात नइ अछि। तइसँ कम अछि। मुदा केते कम अछि आ केते कम भेल से तँ बिना खोंचारे नइ बुझब...।

खोंचार चलबैत बजली-

“से की? कोनो ठेकनगर बात लगिते ने अछि।”

पत्नीक विचार सुनि जीवानन कक्काक मन पोखरिक पानि जकाँ असथिर भेलैन। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे जिनगी तँ धारा छी, ई पोखरिक पानि जकाँ असथिर केना भऽ सकैए। जिनगी तँ गतिशील अछि। गतिये-गति चलैए। वएह गतिमे ने कुगतिक संभावना बढ़ि गेल अछि। मुदा ई बात पत्नी कोन रूपे बुझती..?

अपन मजबूरी देखबैत जीवानन काका बजला-

“यएह ने नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छी जे गुणशील गुणहीन केना भऽ गेल।”

ओना सुदामा काकीक वौद्धिक स्तरसँ जीवानन काका वाकिफ छैथ, मुदा भ्रम जालमे भ्रमित करैले अपन सीमापर सँ बाजि रहल छला। तैबीच सुदामा काकी बजली-

“जखन अहीं नइ बुझि पेब रहलौं अछि, तखन हमरा केना पतियाएब?”

पत्नीक बातसँ जीवानन कक्काक मनमे सवुर जगलैन। बजला-

“आब तँ चाहो-पानमे कटौती करए पड़त!”

एक तँ चाह-पान सन अदना वौस, तैपर सँ ओहूमे कटौती हएत तखन आरो जे नमहर-नमहर काज छैन से केना चलत? सुदामा काकीक आँखिमे चिन्तनक मजगूत रेख उतैर गेलैन। आँखि कड़ुआए लगलैन। बजली-

“तखन?”

‘तखन’ सुनिते जीवानन काका बुझि गेला जे समाधानक बाट पत्नी जोहि रहली अछि, तँए निर्णय रूपमे नहि तात्त्विक विवेचन रूममे जेते नीक जकाँ बुझेबैन तेते नीक जकाँ बुझती आ जेते नीक जकाँ बुझती तेते परिवार आ परिवारजनकेँ आदर करती। किएक तँ एतेक सीमा दुनू गोरेक बीच बन्हले ने अछि जे पति हमहीं रहबैन आ पत्नी वएह रहती, तैबीच जँ कनी नोनगर आकि अनोन भऽ गेल तँ जिनगीक लेल ओ छोट-क्षीण बात भेल किने।

अपन स्तरसँ (वैचारिक नहि भाषायी) उतैर जीवानन काका बजला-

“अखैन तक हमहूँ आ भरिसक अहूँ यएह ने बुझै छिऐ जे सजमैन गुणकारी तरकारी छी, तँए अदौसँ खान-पानक चलैनमे अछि, मुदा भोज-काजमे सजमैनक मांग कम भऽ रहल अछि। माने भोज्य विन्याससँ कतिया रहल अछि जइसँ मांग कमि गेल अछि।”

परती खेतमे ताम-कोरक पछाइत जहिना कोनो फसिल लहलहा उठैए तहिना सुदामा काकीकेँ सेहो भेलैन। अपन हाथ देखबैत बजली-

"केते भोज-काजमे सजमैनक तरकारी ऐ हाथे बनौने छी तेकर ठेकान नहि। मुदा ऐ साल जे पाँच-सात गो भोज खेलौं, तइमे केतौ ने सजमैनक दर्शन भेल!"

पत्नीक विचार सुनि जीवानन काका तोषपूर्ण शब्दमे बजला-

"अखन जीवित छी तँए जीबे करब मुदा जिनगी भरि जेकरा (माने सजमैनकेँ) नीक बुझैत एलौं ओ एना अधला किए बनि गेल। की ओकर गुणशक्ति कमि गेल आकि खेबैयाक मनक चस्की बढ़ि गेल?"

पतिक विचार सुनि सुदामा काकीक मन सहैट कऽ सहैम गेलैन। पत्नीक रूपमे अपनाकेँ देखैत बजली-

"जखन संगे जीवन-मरण अछि तखन हवा-बिहाड़िक डर करब तँ जीब पएब।"

मुस्की दैत जीवानन काका बजला-

"सएह कहलौं...।"

◌

शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाइ 2017

समझौता

ओछाइनपर सँ उठिते लाल कक्काक मनमे उठलैन- 'आइ समझौता कइये लेब, नहि तँ जिनगीक दिन घटत।'

मने-मन लाल काका विस्मित हुअ लगला जे जखन दुनियाँक अन-पानि खाइ-पीबै छिऐ तखन जँ किछु करबै नहि तखन कियो किछु कहए वा नहि कहए मुदा अपन विवेकी मन तँ कहबे करत ने जे बेइमानी केलिऐ? मुदा केकरा-ले केलिऐ? ऐठाम आबि अँटैक गेलैन। विस्मित भेल लाल कक्काक मन राति दिस विदा भेलैन। दू भुमण्डलमे दुनियाँ बँटल अछि। एकटा भेल राति–माने अन्हार–आ दोसर भेल दिन–माने इजोत। ओना, राति दिस लाल कक्काक मन बढ़ैक कारण दोसरो छेलैन। ओ छेलैन जे टटका-टटकी ओछाइनपर सँ उठले छला। राति दिस नजैर बढ़िते सुतैकाल जे जागल अबस्थाक स्थित रहैन तैपर जा अँटैक गेलैन। मन पड़लैन ओछाइनपर पड़िते नीन होइसँ पहिने यएह विचार ने मनमे उठल जे काल्हि सौनक पहिल दिनो छी आ सोम रहने सोमवारी सेहो छीहे। आइयेसँ ने यात्री सभ सुल्तानगंजमे जल बोझि बाबा बैजनाथपर चढ़ौता। सुल्तानगंजक घाटक विधिवत् उद्घाटन सेहो आइ भाइये गेल।

सौन सोहौन मासक सोहपन अबिते लाल कक्काक मनमे विसविसी जागए लगलैन। विसविसाइत मन विसविसाइन होइत

विसाइन-विसाइन हुअ लगलैन जइसँ विचारो केनादन करए लगलैन। तही बीच हुनक पत्नी–माने लाल काकी–दरबज्जापर पहुँचली।

लाल कक्काक कछमछी देख मने-मन लाल काकी विचारए लगली जे आइ एना किए कऽ रहला अछि। आन दिन केहेन बढ़ियाँ चित्त प्रशान्त भेल रहै छेलैन, मुदा आइ किए अशान्त जकाँ बुझि पड़ि रहला अछि..?

अथाह पानिमे जहिना धार टपनिहार बटोही अपनाकेँ बेसमहार बुझि धार पार करैक विचार करैए तहिना लाल काकी सेहो अपनाकेँ ई सोचि आगूमे चुपचाप ठाढ़ रहली जे सोझामे रहने किछु-ने-किछु बजबे करता, तखने हँ-हूँ किछु पुछबैन।

लाल काकीकेँ असथिरसँ ठाढ़ भेल देख लाल काका बजला-

"भोरुका चाह बनबैबला दूध ऐछे, नेने जाउ आ चाह बनाउ।"

नित्य अढ़ाइये बजे भोरमे चाह बना कऽ पीब लाल काका तीन बजे भोरसँ अपन काजमे लगि जाइ छैथ, मुदा से आइ नइ भेलैन। बुढ़-बुढ़ानुसक कहब अछि जे आद्रा नक्षत्र भूमि भरैए। से नीक जकाँ अहू साल भरबे कएल।

पानिक बाहुल्य भेने अनेको समस्या उपस्थित भाइए गेल अछि जइसँ सबहक जिनगीमे धक्कम-धुक्का चलिये रहल अछि। कोसिकन्हे जकाँ स्थिति बनि गेल अछि। केकरो घर खसल अछि तँ केकरो धानक बीआ दहाइए। केकरो माल-जालक घास डुमि गेल अछि तँ केकरो घर-अँगनामे पानि पसरल अछि।

लाल काकी बजली-

"किए, भोरमे चाह नइ बनौलिऐ जे दूध अछिए?"

लाल काकाकेँ मन जबदाह जकाँ बुझि पड़लैन तँए बातकेँ आगू

नहि बढ़ा सोझे बजला-

"मन केनादन करैए। जाबे चाह नइ पीब ताबे नीक नइ हएत।"

'केनादन' सुनिते लाल काकी चौंकली। चौंकली ई जे छोटको बेमारीमे मन केनादन करैए आ बड़को बेमारीमे करिते अछि। तँए कनी आरो खोलबैक खियालसँ लाल काकी बजली-

"चाहमे आदिये आकि तेरपाते आकि इलैचिये आकि तुलसिये पात दए कऽ बना देब?"

जबदाएल मन लाल कक्काक रहबे करैन, तँए सोचलैन जे अनेरे जे चारू चीजक–माने आदी, तेरपात, इलाइची आ तुलसीक पातक–गुण-दोष कहए लगबैन तँ चाहमे अनेरे आरो देरी हएत। बजला-

"कोनो किछु ने देब, सोझहे जेना होइ छै से बनौने आउ।"

ओना, लाल काकीक मनमे उठलैन जे पुछिऐन जखन खनहन मन रहैए तखन आ जखन बेखनहन मन रहत तखन, दुनूमे अन्तर अछि किने। जखने दुनूमे अन्तर रहत तखने ने ओकर खान-पान आ बात-विचारमे सेहो अन्तर हएत। आ जँ से नहि हएत तँ पतिकेँ अस्पताल जाइ काल पत्नी किए सिदहा-समरक ओरियान करै छथिन, किए ने कहै छथिन जे बजारसँ सोनाक मंगटीका नेने आएब। परिस्थितियेबस ने अपना घरमे नोन नइ रहल तँ पतिकेँ नहि फरमा सोचि लइ छैथ जे जखन अड़ोसिया-पड़ोसियासँ नोनक पैंच-पालट चलिते अछि तखनो जे अखन बेमारीक परिस्थिति नइ बुझि नोनमे अनेरे पाइ खर्च करब से केतेक नीक। पतिक आदेशकेँ मानल जाए आकि नहि मानल जाए, ऐ विचारमे लाल काकीक मन ओझरा गेलैन। मनमे स्पष्ट नचैत रहैन जे जखन मन सोल्होअना नीक रहैए तखन जेतेक खाइ-पीबै छी, आ जखन मन कनी नीको रहल आकि कनी अधलो रहल तखुनका खान-पानमे तँ कमी-बेसी भाइये जाइए

किने...।

मुदा लगले लाल काकीक मन सहलौलकैन जे अनेरे जँ दुनू परानीमे मगजमारी करब से नीक नहि। अपना जे फुरलैन से ओ बजला आ हम जे नीक बुझै छी से करब। कहलैन जे चाहमे ने आदी देबै आ ने तेरपाते देबै, ने इलाइचिये देबै आ ने तुलसीए पात देबै, तखन अनेरे आब किए किछु पुछबैन। एते मानैमे कोनो इतराजो तँ नहियेँ अछि ने। अपना फुरने जँ चाहमे आदी दऽ देब आ देहक खाहिंस तुलसी पातक होनि तँ अनेरे ने दुखमे दुख बढ़ाएब हएत। तइसँ नीक ने हएत जे हुनके विचारमे कनी चाहपत्तीए बेसी कऽ दऽ देबै आ कनी टाँसो बेसीए कऽ लगा टँसगरसँ औंट सेहो लेब।

...मन मानिते लाल काकी आँगन दिस चाह बनबए विदा भेली।

लाल काकीकेँ लगसँ हटिते लाल कक्काक मनमे खौंज उठलैन। सबहक जड़ि यएह छैथ। माने काजसँ बिमुख करैक कारण। चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे तीन घन्टाक की महत छै ओ तँ महतमानियेँ बुझि सकैए, सभ केना बुझि पौत..?

मने-मन तामसे लाल काका माहुर-माहुर होइत रहैथ मुदा बजता की आ कहबे केकरा करथिन। जेकरा कहौ चाहथिन ओ तँ भोरुका सुतिनिहार छीहे। ओ कियाँने गेल जे भोरुका जागरण की होइ छइ। होइतो अहिना ने छै जे सौन मास सोन्हौली बान्हि कियो खेतमे धान रोपैत बोल-बम करैए, तँ कियो बाढ़िमे खसल घरक तरमे बेटाकेँ दबल देख चिलकारी मारैए। मास तँ सौने छी, सोहावन तँ दुनूक लेल अछि...।

तही बीच लाल काकी चाह नेने पहुँचली।

पत्नीक हाथमे चाह देख लाल कक्काक मन आरो तरङए लगलैन,

मुदा मनक तरंगकेँ रोकैत लाल काका विचारए लगला जे एक तँ गाछपर सँ खसि रहलौं अछि आ तैपर जँ डारि-डारि होइत खसब तँ आरो बेसी चोट लागत किने? तइसँ नीक ने जे मनेकेँ मारि आगू दिस मुड़िया लेब हएत।

मनक मर्जी मानैत लाल काका हलैस कऽ चाहक गिलास पत्नीक हाथसँ लऽ चाहक रंग देख मुस्कियाइत बजला-

"एहने चाह ने चाहबो करी जे लगले मन खनैक कऽ खनहन भऽ जाए।"

अपन बड़ाइ सुनिते लाल काकी अगराइत बजली-

"ऐ बेरक जे चाहपत्ती अनने छी ओ बड़ निम्मन अछि। पहिलुका पत्ती जे छल ओ जेते देला पछाइत रंग पकड़ै छल तेकर अदहे देने देखियौ जे केहेन रंगगर चाह बनल अछि। आब पीबैमे जेहेन लगए से तँ अहीं जानब।"

वैचारिक दृष्टिये लाल कक्काक हटल सम्बन्ध लाल काकीक मनक

बीच सटए लगलैन। सटान लग सटियाइत लाल कक्काक मन बुदबुदेलैन-

"जिनगी तँ जिनगी छी, तँए जिनगीकेँ जिनगी बना जीब तखने ने जिनगी भेल।"

ओना, लाल कक्काक विचार लाल काकी नीक जकाँ नइ बुझली मुदा बेर-बेर जिनगीक उच्चारण भेने 'जीवन' तँ बुझबे केलीह। जिनगीकेँ जीवन बुझि लाल काकी बजली-

"भरिसक चाह गुणगर भेल अछि, तँए मुँहक रोहैन बदलल जाइए।"

ओना लाल काकीक बात जेते ललिचगर लाल काकाकेँ लगक चाहिऐन से नइ लगलैन। कारण पत्नीपर उठल तामस रहबे करैन मुदा एकठाम छी एकठाम रहबोक अछि तँए कनी नीक-बेजाइक बीच समझौता करैत चलबे नीक हएत। तखन तँ भेल तीन घटना जे काजक छल ओ मरा गेल। मुदा ओहू मराएल काजकेँ तँ जीऔल जाइये सकैए। नइ एक दिने तँ दू दिने, नइ दू दिने तँ तीनो दिने मुदा ओते समैयक काजकेँ तँ पुरौल जाइये सकैए। जखने काजक पूर्णता भेल तखने ने जिनगियोमे पूर्णता औत। हँ, से तँ केलासँ ऐबे करत। लाल कक्काक मनमे जिनगीक प्रति थोड़ेक जिज्ञासा जगलैन। जखने केकरो मनमे जिज्ञासा जगैए तखने ने आशोक आस अबिते अछि। आशाक आस मनमे जगिते लाल कक्काक विचारमे उठलैन जे भूल-चूकक निवारण चुपचाप रहि करब नीक नहि। जे भूल-चूक भेल से तँ भाइए गेल, आब ने ओ झगड़ने घुमत आ ने बिगड़ने। मुदा आगूक जिनगीमे एहेन नइ हुअए तइले चेता कऽ कहब तँ जरूरी अछिए।

तैबीच लाल काका सेहो चाह पीब लेलैन आ लाल काकी सेहो आँगन जा चाह पीब नेने छेली। चाह पीब दरबज्जापर अबिते लाल काकीकेँ लाल काका कहलखिन-

"आजुक प्रभात बेलकेँ अहाँ मुड़ी तोड़ि देलौं, मुदा आगू एना नइ हुअए।"

जेना बिनु बुझल गलती सोझामे पड़ने लोक अकबका जाइए तहिना लाल काकी अकबकाए लगली। मने-मन पाछू उनैट देखैथ तँ किछु सोझमे पड़बे ने करैन जे बुझितैथ की भूल-चूक भेल। मुदा पतिक विचारक दाव तँ बुझबे केलैन जे जरूर किछु भूल-चूक भेल अछि। बजली-

"अपना नइ देख पड़ैए जे की भूल-चूक भेल।"

पत्नीक बात सुनि लाल कक्काक मनमे भेलैन जे एहनो तँ संभव भाइए सकैए जे धोखा-धोखीमे किछु भऽ गेल होइन। जे अपने नइ बुझि पेब रहल छैथ, मुदा अपना जे अवघात भेल सेहो तँ जनिते छी, तँए किए ने कहिये दिऐन। एहनो तँ संभव अछिए जे एकठाम रहितो आनक काजक विविधता आन नइ बुझि पबैए...।

लाल काका बजला-

"अपन काजक संग-संग समैपर धियान सेहो राखक चाही। जँ से नइ राखब तँ अहिना होइत रहत जेना भेल।"

रस्ता काते-कात चौहद्दी बन्हने जहिना रस्ताक सिरखार नइ बनैए तहिना लाल कक्काक बात सुनि लाल काकीकेँ भेलैन। मनमे भूल-चूक बुझैक छेलैन से भूल-चूकक चौहद्दीए-मे लाल काकी वौआ गेली। जइसँ अकबकाएल बेकती जकाँ अकबकाइत मने लाल काकी बजली-

"से केना?"

पत्नीक प्रश्न सुनि लाल काका अथाह समुद्रमे डुमए लगला। उगैत-डुमैत मनमे उठलैन- समय तँ लोकक जिनगीकेँ बदैल रहल अछि जे बात ने हमहीं कहियो बुझौलिऐन आ ने अपने बुझि पेली। तइमे दोख अपनो नइ अछि से तँ नहियेँ कहल जा सकैए। हँ, ईहो बात गाम-घरक स्त्रीगणक बीच जीवित अछिए जे महत्वहीन विचारो आ काजोमे बेसी समए लगबै छैथ। जे देखते छिऐ जे एक स्त्रीगण जहिना दोसराक सात पुरुखाकेँ सात मिनटमे उकैट-पुकैट कऽ रखि दइए तहिना दोसरो दोसरकेँ। गाम-गाममे दस-बीसटा मोटर साइकिल भऽ गेल जे हजारो किलोमीटर प्रतिदिन घुमैए। जइसँ किछु क्षेत्रक घटना-घुटनी तँ जानकारीमे अबिते छै, ओ समाचार गाममे टोले-टोल, घरे-घर पहुँचबे करैए। आ सभकेँ ई जिज्ञासा होइते छै जे कान नीक

बात सुनए, नव बात सुनए, आ आँखियोकेँ तहिना नव रूपो आ नव गुणो देखैक लिलसा रहिते छै, तहिना ने मुहोकेँ नव बातो आ नव काजोक बात बजैक जिज्ञासा रहिते छइ।

घर-घर तँ नहि मुदा टोले-टोल दस-पाँचटा टी.भी. सेहो भाइये गेल अछि। जइमे रंग-रंगक प्रोग्राम अछि, सुकुमालती जिनगीक इच्छा सभकेँ जीबैक अछिए। जइसँ श्रमक गुणात्मकतामे कमी आएल अछि। जे कमी आबि गेने जरूरतसँ अधिक समए लोक गप-सप्पमे लगा रहल अछि। तेतबे नहि, गाम-घरसँ लऽ कऽ दुनियाँ भरिक समाचार आब क्षण-मिनटमे पसैर जाइते अछि। लोकोक तँ अपन-अपन जिनगी छै, तहूमे जँ कोनो घटनामे, जइमे परिस्थितिवश आकर्षणो होइए आ विकर्षणो होइए। जेना परिवार वा समाजमे कोनो बेकतीक मृत्यु सँपकट्टीसँ भऽ गेने होइत। मुदा जइसँ विकर्षण होइए ओकरो औरुदा ओहिना अछि जेना आकर्षणक अछि। भलेँ एक दिन नहि, दिन-दिन ओकरा किए ने अधला बुझि टारैत होइ, मुदा ओहो तँ मनोमे आ याददास्तोमे जगह बनौनहि अछि। देश-देशक समाचारमे जखन अफ्रीकाक विषैला साँप सबहक समाचार या तँ कोनो पत्रिकामे वा टी.भी; कम्प्यूटर-इन्टरनेटक माध्यमसँ देखैत वा पढ़ैत होइ तँ एहेन समाचार ओ लगले छोड़ियो तँ नहियेँ सकैए। तहिना जँ परिवारमे बाढ़िक वा भुमकमक घटना घटित भेल हुअए आ समुद्रक कातक लहैर वा जापानक भुमकमक होइ, तँ ओहन लोकक लेल परिस्थिति बनियेँ जाइए जे ओइसँ आक्रान्त भेल हुअए। ई तँ भेल मात्र भौगोलिक, एकर अतिरिक्त आरो बहुत अछि। तहिना एकटा आरो लिअ। अतिथि सत्कारक महत। जे दिन-रातिक वक्ता छैथ हुनक अपन डेराक कोठरीमे भरि दिन ताला झूलैत रहै छैन, तखन ओ केहेन अपन संस्कृतिक रक्षा कऽ सकै छैथ, से तँ अपना छोड़ि आन नीक जकाँ बुझिये केना सकैए? तहिना पुरुख-नारीक शरीर-क्रिया आ कर्म-

क्रियाक सामंजस करब तखन पुरुख-नारीक बीच दूरी बनब सोभाविक अछि। मुदा बराबरीक हवामे दुनू–माने पति-पत्नी–बोहिया रहला अछि! दुनू परानीकेँ अपन जिनगी स्थापित करैक अपन मौलिक विचारक संग मौलिक अधिकारो अछि, केहेन जिनगी बना चलए चाहै छी, ई तँ अपने कर्तव्य ने भेल। कियो असथिर जिनगी बना असथिरसँ जीबए चाहै छैथ आ कियो सदिकाल दौगैत चलै छैथ, तँए दौग कऽ चलनिहारक चित्त असथिर नइ रहै छैन, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। ई तँ अपन-अपन जिनगीक साध छी..!

ऐठाम अबिते लाल कक्काक विचार ठमैक गेलैन। गुम भऽ गेला। किछु कालक पछाइत गुमी तोड़ैत लाल काका बजला-

“मनमे किछु विचार घुरियाइए, से ओ बिना बजने नइ गर धरत।”

उदास होइत पतिक विचार सुनि लाल काकी ओहन रूप बनबए चाहली जे पतिक संग संगिनी जकाँ संग पुरैत चलैथ। तैठाम जँ कोनो काजे वा विचारेक कुवाथ भऽ गेल होनि ओ तँ अपने दुनू गोरे ने मीलि-बैस विचारि चलब।

..जेना कियो केकरो बात सुनैले झपट मारैए तहिना लाल काकी झपटैत बजली-

“परिवारक बात जँ परिवारक सभ नइ बुझब तँ परिवार चलत केना? कखनो कनी नीक आकि कनी अधला हमरेसँ भऽ जाएत आकि अहींसँ भऽ जाएत, ओ तँ अपने दुनू गोरे ने मीलि बैस विचारब जे आगूक बाधा नइ बनए।”

पारखी लाल काका, लाल काकीक विचार परेख लेला। मुदा जेहेन परिस्थिति निर्माण भऽ रहल अछि आ जेहेन परिस्थितिनुकूल जीबए चाहै छी ओइ दुनूक बीच तँ समझौता करए पड़त।

लाल काका बजला-

“काल्हि रातिमे बिलमसँ खेलौं जइसँ भोरु-पहरक काज बाधित भऽ गेल। ई बात तँ अपने ने सोचए पड़त जे जिनगीक तीनू क्रिया–भोजन-अराम आ काज–अपना गतिये चलैत रहए, से तँ अपने पुरौने ने पुरत।”

ओना लाल काकी सभ बात नहि बुझि पेली, मुदा एते तँ बुझबे केलीह जे आन दिन जइ तुकपर खाइ छला तइ तुकपर भानस नइ कए सकलौं, जइसँ हिनकर एक उखड़ाहा काजक नोकसान जरूर केलिऐन। मुदा एना भेल किए? आन दिन सबेर-सकाल भानस करैले बैइसै छेलौं, काल्हि देरी भेल। मुदा देरियो होइक तँ कारण छल। ओहो तँ नहियेँ छोड़ल जा सकैए। जेते आन साल बाढ़ि एने गाममे पानि जबकै छल तइसँ बेसी ऐ बेर बरखेक पानि अगते भऽ गेल। पचासो घर गाममे खसल अछि। तैठाम जँ अनकर सुधि नेने बिना अपने सुधिमे लगल रहबो तँ ओते नीक नहियेँ भेल जेते नीक हेबा चाही...।

तैबीच लाल काका बजला-

“लोकक बीच बैस ओकर हाल-चाल जानबे ने समाजिकता भेल, ओ तँ जरूरी अछिए, मुदा तैसंग ईहो ने जरूरी अछि जे दुनियाँक संगे चलैत रही।”

सोल्होअना जेना लाल काकी बुझि गेली तहिना बुझल टोनमे बजली-

“से ते अहाँ ने पुरुख-पात छी, अहाँ जे कहब जेना कहब तहिना ने हम चलब।”

दुनू परानीक बीच अनुकूल परिस्थिति देख लाल काका बजला-

“एते दिनसँ जे अहाँ रट लगौने आबि रहल छी जे गैस चुल्हि

लेब से अपनो विचारमे आबि रहल अछि जे समैक हिसाबसँ जरूरी जकाँ जरूर भऽ गेल अछि।”

जेना लाल काकीकेँ किछु भेट गेल होनि तहिना फुदैक कऽ बजली-

“यएह छी जिनगी जे परिस्थितिक अनुकूल समझौता करैत चली।”

ओना लाल काकीक विचार लाल कक्काक मनमे सोल्होअना नइ गड़लैन, किएक तँ परिस्थिति केना निरमित होइए तइ दिस मन लहैक गेल रहैन, मुदा तैयो बजला-

“अहाँक विचार हम काटब थोड़े।”

◌

शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाइ 2017

जेकर चुन तेकर पुन

सेमी गौभरमेन्टक सहयोगसँ साहित्यिक कार्यक्रमक आयोजन भेल। सेमी गौभरमेन्टक माने भेल जे निसचित रकमक रूपमे सरकारी सहायता भेटल आ जन सहयोग सेहो भेल। ओना, जन सहयोगक जेतेक आशा कएल गेल छल तइ रूपे सहयोग नहि भेटल, माने ई जे परिवारक जनसंख्याक हिसाबसँ सहयोगक आशा कएल गेल छल से नइ भेटल। ई कहब जे जनमे सहयोगक विचारक अभाव भऽ गेल अछि से बात नहि, अखनो लोकक विचारमे एहेन धारणा बनले अछि जे जाबे जनक सहयोग नहि हएत ताबे समाजिक काज नइ चलत। आ जँ समाजिक काजे नइ चलत तँ समाजक पहचान की बनत। आ जँ समाजक पहचाने नइ भेल तखन समाज केहेन अछि आ ओइ समाजक सामान्य जन केहेन अछि, से केना बुझब। सहयोगक धारणा रहितो सामान्य जनक सहयोग कम भेल। ओना एकरा असहयोगक दृष्टिसँ नहि देखल जा सकैए। असहयोग भेल, बुझि कऽ सहयोग नइ करब। मुदा से नहि, साहित्यिक कार्यक्रमक महतकेँ कम बुझनिहार रहने, आर्थिक सहयोग कम भेल तँए ई कहब जे कार्यक्रममे कमी भेल सेहो नहि, किएक तँ गाम-गाममे चरिपहिया वाहन, ठीकेदार आ रंग-रंगक एजेन्ट सबहक बहबारिसँ नीक सहयोग भेटल। सेमी कार्यक्रम रहने सरकारी बेवस्था एते छल जे गामक चौकीदारकेँ सुरक्षाक भार

भेटल आ जनसेवकक माध्यमसँ सहयोग राशि भेटल। चौकीदार आ जनसेवक दुनू गामेक रहने कार्यक्रमक कमिटीक समक्ष अपन-अपन हाजरी पुरा छुट्टी लैत बाजल-

"हमहूँ तँ गौंए छी, तँए जँ जरूरी हुअए तँ खोज कऽ लेब। किए ते सरकारमे ते हमहीं ने कैफियत देबइ। मुदा गौंआँ होइक नाते एते जरूर सभ नजैरमे राखब जे अनगौंआँ पीहकारी दऽ कऽ ने जाए। जखने पीहकारी पड़त तखने हम ओझरीमे पड़ि जाएब, तँए एते हमरो निवेदन अछि।"

कार्यक्रमक प्रचार माध्यम नीक रहल। नीकक कारण भेल जे प्रचार तंत्रक सुविधा बढ़ने बेकतीगत रूपे सेहो सम्पर्क होइते अछि। गौंआँक एकेटा मंसा जे नीक कार्यक्रम हुअए। नीक कार्यक्रमक माने भेल नीक जुटानियोँ करब आ नीक मनोरंजनो करब।

राघव दिल्लीसँ गाम आएल छल, कुमार बिसवासक मंच ओ देखने, तँए मनमे अपनो जिज्ञासा रहबे करइ जे ओहने कार्यक्रमक आयोजन हुअए। प्रचार करैक भार राघव उठा लेलक। मन टोबैक रस्ता बुझले छइ। जे जेहेन मनक लोक हुनका ओहने बात कहि-कहि हड़-टुट्टा, टंग-टुट्टासँ लऽ कऽ कनाह-बहीर धरिक जुटानी नीक करबे केलक। समय सुभ्यस्त भेने आयोजनमे कोनो बाधा उपस्थित नहियेँ भेल। खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ रहै-सहैक सेहो नीक बेवस्था भेल।

कार्यक्रम शुरू होइसँ आधा घन्टा पहिनेसँ मंचपर साहित्यकार, पत्रकार, रेडियो स्टेशनक कलाकार आ गमैया गीतकार-संगीतकारक आगमन हुअ लगल। अधिकांश लोकक संग अपन-अपन दूटा-चारिटा मुँह लगुआ रहिते अछि। ग्रुप बना सभ बैसबो केला आ अपन-अपन मुँह-लगुआक संग फुसराहैट सेहो करैये लगला।

असगरे राधेश्याम काका बीचमे बैसल चारू दिस तकैत रहैथ जे

किनकोसँ हमहूँ गप करी। मुदा गपोक तँ कान्ही होइ छै, स्तर होइ छै से कान्ही मिलबे ने करैन। तहूमे मनमे ईहो रहबे करैन जे गंभीर साहित्यकार सबहक जुटानी छी तँए जँ मंचपर गंभीरता नइ बरतब सेहो केहेन हएत। ओना, चुपा-चुपी नइ छल मुदा गुप-चुपी नइ छल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। से तँ छेलैहे। रेडियो स्टेशनक बदलू भाय सेहो रहैथ। मुदा ओ अपन ड्यूटीमे रहैथ तँए राधेश्याम काकासँ कनी हटल रहैथ। दू गोरेमे ने कनी दुरोसँ गप कएल जा सकैए मुदा जैठाम छत्ताक मधुमाछी जकाँ सौंसे मंचपर भन-भनी चलि रहल अछि, तैठाम कण्ठ फारि बाजलो तँ नहियेँ जा सकैए। ओना, बीचमे ईहो होइते अछि जे जेमहर आँखि-कान रहत ओमहुरका कनी फरिक्कोक बात सुनियोँ सकै छी आ देखियो सकै छी। मुदा लगले ईहो होनि जे गंभीरतोक तँ अपन-अपन विचार होइए। जखन साहित्यिक कार्यक्रममे आएल छी तखन तँ ओइ विचारक निमरजना करए ने पड़त। मुदा तैबीच एकटा प्रश्न तँ उठिये जाइन जे जखन कार्यक्रमक नियम पूर्वक घोषणा हएत तखन ने जे जेहेन छी से तेहेन गंभीरता प्रदर्शित करब। तइ बीच माने कार्यक्रम शुरू होइसँ पहिने, तँ सभ सामान्य जन छी माने मनुख होइक नाते मनुख छी, मनुखक बीच बैसले छी तखन जँ कुशलो-समाचार नइ हुअए सेहो केहेन हएत...।

ओना, बीच-बीचमे राधेश्याम काका ईहो जरूर देखबे करैथ जे खुदरा-खुदरी नव आगन्तुक सभ जखन मंचपर अबै छैथ तँ आँखियेक इशारासँ प्रणाम-पाती, कुशल-छेम सभ काइये लइ छैथ, संगे ईहो नजैरपर एबे करैन जे कियो-कियो अपन दुनू हाथ उठा इशारामे किछु कहिते छेलखिन।

बदलूओ भाय अपन संगी-साथीक बीच गप-सप्प करिते छला, की गप करै छला से तँ ओ जानैथ, मुदा मुँहक रूखिसँ जरूर बुझि पड़ै छल जे खिचड़ी भोज जकाँ अपन खिचड़ी कार्यक्रमक योजना

भरिसक बना रहला अछि तँए करनो-करनो जखन-जखन फोरनबला मिरचाइक झाँस लगै छेलैन तँ मुँह बिदैक जाइ छेलैन आ जखन-जखन घीक टाँस लगै छेलैन तखन-तखन मुँह कलैश जाइ जाइन। राधेश्याम काकाकेँ नइ रहल गेलैन। आँखि उठा बदलू भायपर ई सोचि अँटकौलैन जे बदलू भाय चारू कोण झिझिरकोणा खेलाइबला शिकारी छथिये, जरूर नजैर उठा तकबे करता। जखन नजैर-मे-नजैर मिलत तखने नजरियेसँ कहबैन जे कनी अहूँ आगू घुसकु, अपन संगीकेँ छोड़ि ससरू आ कनी हमहूँ ससैर जाइ छी। जखन दुनू गोरे एक कान्हीक छी तखन जँ दूठाम रहब तँ दुनियाकेँ नीक जकाँ थोड़े देख पएब।

आँखियेक इशारासँ राधेश्याम काका बजला-

"झगड़ा ने दन, चुन तमाकुल किए बन्न।"

खग जानए खगक बोल, बदलू भाय आँखियेक इशारासँ जवाब देलकैन-

"फिफ्फी-फिफ्फी।"

माने ई जे अहूँ कनी एक भाग भऽ जाउ आ हमहूँ भऽ जाइ छी। एकठाम होइते तमाकुलो खाएब आ मंचक–दुनियाँक–खेलो देखब।

राधेश्याम काका सेहो बीचसँ घुसकैत-घुसकैत एक भाग भेला आ बदलू भाय सेहो बढ़ला। एकठाम होइते दुनू गोरे हाथ मिलबए लगला। हाथ मिलबैसँ पहिने बदलू भाय बजला-

"चूने तमाकुलपर तँ ऐ दुनियाँक खेल चलैए, तखन जँ दुनू गोरे चुपे रहब से नीक भेल।"

ओना बदलू भायकेँ राधेश्याम काका भीतरसँ जनिते छैथ जे बदलू भाय अलंकारिक लोक छैथ तँए झटहा फेकैक लूरि हमरासँ बेसी छैन्हे, मुदा किछु छैथ तँ छैथ, छिया तँ संगीए। जँ संगीक विचारे नइ

बुझब तखन संगपना केतेकाल चलत।

ओना, बदलू भायमे ईहो गुण छैन जे कोनो बात बजला पछाइत सुननिहारक मुँह बिदकैत देख बुझि जाइ छैथ जे भरिसक हमर विचारक रस नीक जकाँ नहि पीब सकला। मुदा केते पीलैन आकि नइ पीलैन, अइले तँ तीन लाखक जपानी थर्मामीटरक जरूरत अछि...।

राधेश्याम कक्काक मुँह तेहने सन बिदकैत देख बदलू भाय बजला-

"तम सँ तमाकुल भेल आ चन सँ चुन भेल।"

बदलू भाइक मनक बात जेना राधेश्याम काका बुझि गेला तहिना

बजला-

"अहूँक बुझौवैल बुझनिहारेटा बुझि सकै छैथ। हमरा सन लोक-ले ते गीत आ छन्द फुटा कऽ कहब तखने बुझि सकै छी।"

राधेश्याम कक्काक विचारकेँ, जहिना हर्ड़ी-मकरक मेलामे धिया-पुताक हाथसँ इनहोरमे सानल अरबा चाउरक रोटी आ अल्लू-कोबीक तरकारी लऽ कऽ चिल्होरि उड़ि जाइए आ धिया-पुता अपन अहार छिनाइत बेवहारपर नजैर नहि दऽ खेलौना जकाँ चिल्होरिकेँ देखबो आ हँसबो करैत रहैए तहिना बदलू भाय राधेश्याम कक्काक मुँहक बोल लुझैत बजला-

"गीत तँ संगीत छी जे लयक संग चलैए। लय असीमित अछि। मुदा छन्द मात्राबद्ध होइए जे ध्वनि-अंकनकेँ पकैड़ अपन सिरजन करैए।"

ओना बदलू भायकेँ जेना जीहेपर रहैन तहिना तरतरा कऽ तेना

बजला जे राधेश्याम काका थकमकाए लगला...।

थकमकाइक कारण भेलैन काका अपने छैथ तँ गद्यकार मुदा साहित्यिक कार्यक्रम दुआरे गोटि-पँगरा लयात्मक कविता सेहो लिखि लइ छैथ मुदा ने छन्द रटने छैथ आ ने मात्राक ठेकान ठीकसँ बुझि पबै छथिन...।

राधेश्याम काकाकेँ ठकुआइत मन देख बदलू भाय बुझि गेला जे जहिना सोझमतिया रस्ता चलनिहार राधेश्याम छैथ तहिना सोझमतिया सेहो छथिये। तँए गप-सप्पकेँ आगू नहि ठेल बदलू भाय पाशा पलैट बजला-

"जखन एकठाम बैसल छी तखन पहिने तमाकुल खाउ। बुझिते तँ छी जे जे रामा-कठोला हएत से हेबे करत। तइले अपनाकेँ अनोन-विसनोन बनौने रहब सेहो नीक नहि।"

ओना बजैक क्रममे बदलू भाय बाजि गेला मुदा लगले चारू भाग नजैर खिड़बए लगला जे तमाकुल खाएब किनको अधला तँ ने लगलैन। नजैर खिड़ैबते बुझि पड़लैन जे केते गोरेकेँ इच्छा भऽ रहल छैन। मुदा जखन अपन तमाकुलक डिब्बीपर नजैर गेलैन तखन मन पड़लैन जे तमाकुल तँ डिब्बीमे ऐछे नहि, अछि तँ मात्र चुनेटा! पाछू मनकेँ उनैटते भक खुजलैन जे जखन दुनू संगीक बीच 'फिफ्फी-फिफ्फी'क सम्बन्ध अछि तखन परबाहे की। ओना राधेश्याम कक्काक मन बदलू भाइक जिनगीपर छछैल रहल छेलैन, तँए तमाकुलपर सँ नजैर हटि गेल छेलैन। तैबीच अपन हिस्सा बढ़बैत बदलू भाय बजला-

"तमाकुल अहाँक भेल, चुन आ चुनौनाइ हमर भेल, हौउ आब देरी नइ करू।"

बदलू भाइक मुहसँ तमाकुल निकैलते राधेश्याम काका जेबीसँ तमाकुलक डिब्बी निकालि बदलू भाय दिस बढ़बैत बजला-

"निम्मन तमाकुल अछि। शुद्ध सरैसा, तँए नीक जकाँ चुन पिआएब।"

राधेश्याम कक्काक मुहसँ तमाकुलक बड़ाइ सुनि बदलू भायकेँ जेना मनमे कचोट भेलैन। कचोट ई भेलैन जे भरि दिन तँ सकरी कट तमाकुल खाइबला छी। तखन...। मुदा विचारकेँ मोड़ैत बजला-

"रस्तेमे तमाकुल सठि गेल, केतौ कीनैक गड़े ने लगल। आब सोचै छी जे जखन पान चलत तखन ओही डालीमे सँ एक पुड़िया तमाकुल लऽ लेब।"

जेना-जेना बदलू भाय एक हाथक तरहत्थीपर दोसर हाथक औंठा रगड़ैत रहैथ तेना-तेना मनमे रंग-रंगक विचार सेहो उठए लगलैन। टीपगर तमाकुल रहने मुँहमे दइते दुनू गोरेक मनकेँ रसबए लगलैन। तही बीच पानिक संग चाहक कप मंचपर पहुँच गेल। चाहक कप देख बदलू भाय मने-मन अपन मेड़िया दिस बढ़ैक विचार केलैन। जे राधेश्याम काका बुझि गेला। बुझिते बजला-

"अखन चाहे आएल अछि, पान पछुआएले अछि तखन एना कछ-मछ किए करै छी।"

अपन आँट-पेट बुझैत बदलू भाय गुमे रहला। मुदा मनमे ई कछमछी रहबे करैन जे सीमालंघन भऽ जाएत।

घोषित समैयक हिसाबसँ पनरह मिनट बिलम भऽ रहल अछि, मुदा अखन तक ओतबे लोक पहुँचल छैथ जेते सुनौनिहार छथिन। माने कवि छैथ। सुननिहार गौंआँ-समाज अखन एके-दुइये आबिये रहला अछि। ओना मैकपर बेर-बेर घोषणा होइत छल जे आब कार्यक्रम शुरू भऽ रहल अछि, तँए समाजसँ आग्रह भऽ रहल अछि जे यथाशीघ्र सभा स्थलमे पहुँच अपन आसन ग्रहण कए ली। मुदा बहिरा करेतक बीख जकाँ मंत्रक कोनो सुनवाइ होइते ने छल। ओना किछु

गौंआँक मनमे एहेन विचार रहबे करैन जे बाहरक विद्वतजन आएल छैथ तँए संग पूरब अनिवार्ये नहि उचितो छी। मुदा से कम लोक छला जिनकर एहेन विचार छेलैन। बेसी ओहन छैथ जिनकर सोचब छैन-जाकी रहे भावना जैसी, प्रभु मुरत देखी तिन तैसी..; ओहन लोक अपन-अपन जिनगीक लय अपना-अपना ढंगसँ पुरबैक पाछू बेहाल छैथ। जइसँ कवि आ कवितासँ मेले ने खाइ छेलैन।

आधा घन्टा बिलम होइत-होइत छोट सभा-जोकर दर्शक-श्रोता पहुँच गेला। कार्यक्रम शुरू भेल। मंच सजए लगल। मानल-जानल साहित्यकार लोकनिक मंच सजए लगल। ओना बदलू भाय अपन निर्धारित स्थानपर पहुँच गेल छला मुदा राधेश्याम काका पछुआएल रहैथ। संजोग भेल राधेश्याम काका सेहो पहिलुका जगह बदैल मंचपर पहुँचला। ओना अपनो मन रहैन जे एहेन खिचड़ी मंचसँ अचारे-चटनी बनि अपन मर्यादा बना राखब नीक। सएह भेबो केलैन। पहिल कतारक अन्तिम छोरपर राधेश्याम काका बैसौल गेला। बैसते मनमे खुशी झलैक उठलैन जे भने नीक भेल। तमाकुलक थुको फेकैमे असान हएत आ बैसारक एकटा छोरपर बैसने आन साँप जकाँ तँ नहि मुदा गनगुआरिक दोसर मुँहथैर जकाँ तँ भेबे कएल। भाय, सभ अपन विचारक मालिक छी, एकठाम बैस विचार करू..!

अपना जगहपर बैसल बदलू भाय राधेश्याम काकापर आँखि गड़ौने रहैथ। जखन अपना दिस तकैथ तँ बुझि पड़ैन जे समुचित जगहपर छी, मुदा राधेश्याम काका-ले अनुचित जरूर भेल छैन। हम तँ नोकरिया लोक छी, ड्यूटीमे छी, अपन गुण चाहे जे हुअए मुदा अखन तँ हमरा एकटा उत्तराधिकारीक रूप निमाहैक अछि...।

चारू कोण घुमैबला बदलू भाइक नजैर, तँए समझौता करैत मानि गेलैन जे जखन खिचड़ीए कार्यक्रम छी तखन आड़ि-धूरक

ठेकाने कोन..! जेना गामक पहिल साहित्यिक आयोजन भेल तेना जमल बढ़ियाँ। बढ़ियाँ जमैक आन कारण जे भेल हुअए मुदा एकटा प्रमुख कारण ईहो भेल जे काश्मीरसँ कन्याकुमारी आ मेची धारक कातक नक्सलसँ लऽ कऽ अगरतल्ला धरिमे रहनिहार–माने ओइठाम नोकरी रूपमे काज केनिहारक–समाज गाम बनियेँ गेल अछि। सभकेँ किछु नवका विचार रखैक इच्छा होइते छै तँए एक कविक काव्यक पछाइत पचासो रंगक शायरी आ दोहा, पचासो भाषाक मंचपर श्रोता-वक्ता दिससँ झड़ए लगल। अढ़ाइ घन्टा केना गुजैर गेल से ने कवि-साहित्यकार बुझलैन आ ने श्रोता। अन्तिम पाठ दीनानाथ बाबाक भेलैन। थुल-थुल बुढ़ दीनानाथ बाबा, तँए चारि गोरे मिलि कऽ हुनका अराम कुर्सीपर बैसौलकैन। भोरुका नढ़िया जकाँ सबहक नीन टुटले छल, विचार ग्रहण करैले सभ एकाग्र छेलाहे, तँए सभा एकदम शान्त भेल।

शान्त सभा देख दीनानाथ बाबा अपन पहिल आशीर्वचन जकाँ बजला-

“ई कविता पचास बर्ख पूर्व रचने छेलौं।”

‘पचास बर्ख पूर्व’ सुनि सभामे गुदगुदी शुरू भेल। मंचपर बैसल दीनानाथ बाबा अकानए लगला जे केहेन प्रतिक्रिया भऽ रहल अछि। मुदा समाजोक तँ थाह नहियेँ अछि जे पचास बर्ख पूर्व सुनि कोन हँसी हँसि रहल अछि। पचास बर्ख पूर्वक समाजक ऐना आजुक समाजक लेल केते उपयुक्त अछि। गुदगुदीक संग भनभनी शुरू भेल-

“पचास बर्खक बीच किछु रचबे ने केलैन जे हाल बदलैत समाजक हाल-चाल सुनैबतैथ!”

“पचास बर्ख पूर्व कविता करै छला आ पछाइत छोड़ि देलैन..!”

हर्ष-विस्मयसँ सभा भनभनाइते छल कि तही बीच मंच

संचालक आदेश छोड़लैन-

“आब अहाँ सब अपन-अपन भनभनी बन्न कऽ सुनै जाउ...।”

फेर मंच संचालक महोदय आदेश प्रसारित केलैन-

“वन्धुगण! एकाग्र भऽ बाबाक आशीर्वचन सुनू।”

ओना, बाबाक कविता पाठक नाओं सुनि किछु गोरे साकांछ जरूर भेला, मुदा किछु गोरेक बीच गुदगुदी चलिये रहल छल। गुदगुदीक कारण छल पचास बर्ख पूर्वक कविता। पचास बर्ख पूर्वक कविताक बीच पचास बर्खक समैयक अन्तराल भऽ गेल। दोसर ईहो जे जे बेकती एकबेर-दूबेर सुनने हेता हुनका की भेटतैन। ओना, कोनो कविताक रसास्वादन एको बेरे सुनने होइए आ दसो बेर सुनने नइ होइए। भाय, एकर कारण स्पष्ट अछि। स्पष्ट ई अछि जे कियो जँ रामायणकेँ अपन आचरणक अनुकूल बना पढ़ै छैथ तँ हुनका आगूक पाठक खगता होइ छैन, पैछला तँ जिनगीक पैछला पन्ना भेल जे इतिहास वा भूत भेल। जरूरत तँ वर्तमान आ भविसक अछि। मुदा जे सोझे–माने बिनु आचरण निरमौने–पाठ करै छैथ हुनका दस बेर कि जे दस जुगो पाठ केने रस नइ भेटतैन।

एक भागमे बैसल राधेश्याम काका आ दोसर भागमे बैसल बदलू भाय सभा दिस नजैर दौगा-दौगा देख-देख ऐ निर्णयपर आबि अँटैक जाथि जे जखन खिचड़ीए कार्यक्रम भेल तखन तँ सभ किछु ने खिचड़ीए हएत।

खाएर.., खीर भलेँ नइ हुअए, किए तँ ओ एकचलिया माने एक गुण-सोभावक वस्तुक समावेशी छी, मुदा खिचड़ी तँ से छी नहि। ओ तँ नोनगरो होइए आ मीठगरो होइते अछि। भलेँ जाति-सोभाव भेने नोन अपन नाओं छिपा खिचड़ीए कहबए आ मीठ अपन नाओं खोलैत गुड़ खिचड़ी किए ने कहबए। ओना, घीक प्रवेश नोन खिचड़ीए-मे

पचैए, गुड़ खिचड़ीमे नहि, मुदा ओहो अपन नाओं अरैज घी-खिचड़ी तँ कहबैए।

आँखिकेँ डेढ़िया करैत बदलू भाय राधेश्याम काकाकेँ इशारामे पुछलकैन-

“नीक लगैए की नहि?”

जहिना आँखिक इशारामे बदलू भाय राधेश्याम काकाकेँ पुछलकैन तहिना राधेश्यामो काका इशारेमे जवाब देलखिन-

“जेहने अहाँ तेहने ने हमहूँ।”

ओना दुनू गोरे दीनानाथ बाबाक कविता सुनि मने-मन अपने-आपमे रमए लगला। ओना दुनूक रमैक अपन-अपन कारण छेलैन। रेडियो स्टेशनसँ प्रसारित कविता छेलैहे तँए बदलू भाय मने-मन खौंझाइत रहैथ जे भूतक संग हमहूँ भुतिआ रहल छी। मुदा राधेश्याम कक्काक रमकीक कारण रहैन जे जखन नव समाजमे प्रवेश पेलौं तखन ओइ समाजकेँ केना साहित्य समाजमे प्रवेश कराएब, तेहने ने कवितोक पाठ होइ।

ठहक्काक बीच मंच विसर्जन भेल। मंच विसर्जन होइते राधेश्यामो काका सहैट कऽ बदलू भाय दिस बढ़ला आ बदलूओ भाय राधेश्याम काका दिस सहटैत आगू बढ़ला। आगू बढ़िते बदलू भाय बजला-

“भाय साहैब, जीता जिनगी अहिना होइ छइ।”

ओना, बदलू भाय राधेश्याम काकाकेँ अध्ययन करैत बाजल छला। अध्ययन ई जे शीर्ष पाठ जेहेन हेबा चाही से नइ भेल। मुदा एतेक खुशी तँ मनमे उठले छेलैन जे नव समाजक लेल नव कार्य भेल तँए नम्य भेबे कएल। राधेश्याम काका बजला-

“जाए दियौ जेते जे भेल से भेल, तमाकुल खाउ आ अहूँ विदा होउ।”

जेबीसँ तमाकुलक पुड़िया निकालि बदलू भाय बजला-

“संचालन समिति धरि नीक बनल छल। लिअ, जीवनी खेनिहारक कीनल पुड़िया छी।”

मुस्की दैत राधेश्याम काका बजला-

“एक बेर अहाँक चुन छल आ हमर तमाकुल, मुदा ऐ बेर हमर चुन रहत किए तँ अहाँक तमाकुल चोरुक्का छी।”

बजन्ता लोक बदलू भाय, बजला-

“जेते तमाकुलक पुड़िया छल तइ हिसाबे खेनिहार कम छेला, तँए घरवारीक समान फेका जैतैन ने, तइसँ नीक ने जे ओकर उपयोग भऽ गेल।”

चुनौटी निकालि बदलू भाइक हाथमे दैत राधेश्याम काका बजला-

“नीक लागल किने?”

‘नीक लागब’ सुनिते बदलू भायकेँ जेना बिढ़नी काटि नेने होनि तहिना छटपटाइत बजला-

“पहिलुक कविताक पाठ जे भेल तखने मन ओकिया गेल, से केतबो आसन मारी मुदा ओकियाएब कमे ने भेल। अन्त तक बनले रहल।”

पहिल पाठ नवतुरिया कवि ताराकान्तक भेल छल। ताराकान्त बहुराष्ट्रीय कम्पनीमे जीवकोपार्जन करै छैथ। मुदा कविता गामक उजरल-उपटल जीवकोपार्जन केनिहारक जिनगीसँ सम्बन्धित छल। शब्द विन्यास नीक रहैन। राधेश्याम काका ताराकान्तक जिनगीकेँ

ओइ ढंगसँ नहि देखने, तँए भावक विचारमे भावावेश भऽ गेल छला। खास कऽ गामक उजरल-उपटल जिनगीक चर्च सुनि। ओना, ई बात जरूर राधेश्याम कक्काक मनमे ठहकै छेलैन जे अपरिचित कविक रचना जकाँ कविता अछि, मुदा नवतुरिया रचनाकार रहने मनमे आशा रहबे करैन जे आगू नीक कविता करता। बजला-

“किए शुरूहेमे जी ओकिया गेल?”

‘किए’ सुनि बदलू भाय चारूकात नजैर खिड़ौलैन तँ बुझि पड़लैन जे अखन नीक जकाँ कार्यक्रम विर्सजन नइ भेल अछि, चारूकात सभ छिड़िआएले छैथ। बजला-

“भाय साहैब, हम ते बन्हौटा जिनगीक जालमे पड़ल छी, तखन मुँह केना खुजल रहत! आइ एतबे रहए दियौ।”

ठोरमे तमाकुल लैत राधेश्याम काका बजला-

“भेँट-घाँट होइत रहत।”

बदलू भाय बजला-

“मन रहितो मनमरु बनल छी। जँ जीबैत रहब ते भेँट हेबे करब।”

◌

शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाइ 2017

त्रिकालदर्शी

मौसम बदैलते मौनसुनक मन बगैद गेल। ओना अछैते आमक बगिया रहितो भूखले रहल। मुदा भूखो तँ भूख छी, जखने पेटमे लहैर पैसत कि बकबकी शुरू हएत। भलेँ बकैमे कियो बकैन जाइए आ कियो बक्ता बनि जाइए। बकनाइक माने भेल ऐ साल[7] आम नइ फड़ल। हजारो बीघाक उपज मारल गेल। उत्पादनक संग ओहन वस्तुक ह्रास भेल जेकरा फल कहै छिऐ आ ओ शरीरक मात्र पेटभरा भोजनेटा नहि, पौष्टिक आहार सेहो छी। मुदा तँए कि ओ फल नइ फड़ैक कारण कहत? नहि, ओ कहत जे लोक तेते ने पपीयाह भऽ गेल अछि जे सभटा अमृत फल नर्क दिस जा रहल अछि...। ओना, विचारकेँ रहस्यपूर्ण मानलो जा सकैए मुदा जखन लोक रहस्य गढ़ैक लूरि सीख लेत तखन ने रहस्यक रहस्य बुझत। से तँ अछि नहि, अछि तँ ओहन लोक बेसी जे खेत रहितो पड़ा कऽ नोकरी करए चलि गेल आ खेत रहि गेलै गाममे। जखन खेत छोड़ि पड़ा गेल तखन ओइ खेतक जे भवितव्य छै सहए ने हएत। तँए जिनगी भरिक एक्के बेर खेती करैक खियालसँ आम-कटहरक खेती कऽ लेलक। आम खाइले आ मचानपर बैस बरहमासा गबैले दस दिन गाम अबैए। मुदा गाममे ओहन लोकक कमियोँ तँ नहियेँ अछि जे गामक उन्नैत नइ चाहैए।

[7] एक्के सीजन आम फड़ैए तँए साल

भलेँ ओ ऐ बातकेँ बुझैत हुअए वा नहि बुझैत हुअए जे बेकतीक विकास मात्रसँ देश वा गामक विकास नहियेँ हएत, जाबे कि ओकरा सामुहिक-समाजिक रूपमे नइ आनल जाएत।

बरसाती मौसमक आगमन होइते बरसा तेना झड़झड़ा गेल जे बाढ़िक रूप पकैड़ लेलक। ओना, बुढ़-बुढ़ानुसक कहब छैन जे जँ अदरे नक्षत्रमे भूमि भरि जाए तँ ओ नीक भेल। मुदा ऐठाम प्रश्न उठैए जे भूमि भरैक की रूप। भूमि अनेको किस्मक अछि। केतौ पोखरिक रूपमे अछि तँ केतौ डोह-डाबर आ कोचाढ़िक रूपमे। केतौ चौरक रूपमे तँ केतौ नीचरस जमीनक रूपमे अछि। जँ चौर वा नीचरस जमीन अगते पानिसँ भरि जाएत तखन ओइ खेतकेँ अबादि केना सकै छी। जेकर अनेको कारणमे बीआक अभाव सेहो अछिए। ऊपरका भूमि जे खेतीक लेल अछि ओकरा अबादैले जँ भूमि भरत तँ नीचला खेत डुमि जेबे करत। मुदा जे हुअए आइ हम एकैसम सदीक किसान छी। हमरा बीच साइबेरियासँ लऽ कऽ आस्ट्रेलियाक सहारा तक आ जापानसँ लऽ कऽ चीन तकक खेतीक जानकारी अछि। तैठाम अपन स्थिति देखैत ने अपनो सभ करब।

अधिक बरखा भेने गाममे पानि जबैक गेल। पानिक निकासक समुचित बेवस्था नहि। तैसंग धार-धूर बीचक गाम छीहे। ओना हमरा गाममे नामित धार एकोटा ने अछि, खाली एकटा चरिमसिया सुपेन[8] अछि। मुदा ओहो कनियेँ-मनियेँ सीमाक भीतर घुसल अछि। खाएर जे अछि मुदा एते तँ ऐछे जे चारि कोस पूब कोसी आ दू कोस पच्छिम कमला बीचक गाम छीहे। तँए दुनूक भीतर जे जटा-जूट भेल भुतही बिहूल, गहुमा, बलान इत्यादि धार नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। तँए सोलहन्नी धारक कातक गाम नहियोँ तँ धारक पेटक गाम

[8] सुपर्णा

कहले जा सकैए। ओना गामक बनाबटो आन गामसँ भिन्न अछिए। भिन्न ई अछि जे कोनो गाममे नीचरस जमीन कम अछि आ ऊचरस बेसी अछि। तैसंग उत्तरसँ दच्छिनक ढलान जमीनक अछिये जइसँ उत्तरमे नेपाल तकक पानिक बहाव भाइए जाइए। हमर गाम एक तँ सघन अवादीबला गाम छी जइ अनुपातमे जमीन कम अछि। तैसंग गामक जे बनाबट अछि ओ विचित्र अछि। गामक चारूकात चौर जमीन अछि, जे गामक कुल खेती-जोकर जमीनमे आधासँ बेसी अछि। ऐ बेर अगते बरखा भेने गामे जलोदीप भऽ गेल। संगे बाहरी पानिक आमदनी सेहो भेबे कएल। जइ अनुपातमे पानिक आमदनी गाममे भेल तइ अनुपातमे निकास नइ अछि जइसँ पनरह दिनसँ गामक समुच्चा खेत डुमल अछि।

गामक दशा देख अपन बेथाकेँ सामुहिक बेथा मानि सबुर केनहि छी। ओना गामक खेत-पथार डुमने सबहक बेथा एके रंग नइ अछि। कम-बेसी तँ अछिए। माने ई जे जे परिवारक संग बाहर जा नोकरी करै छैथ हुनकर बेथा, जे गामेमे रहि नोकरी करै छैथ हुनकर बेथा आ जे सोलहन्नी खेतीकेँ जीविका बना जीब रहला अछि हुनकर बेथामे अन्तर अछिए। एहने लोक–माने सोलहन्नी खेतीकेँ जीविका बना जीनिहार–देवी काका सेहो छैथ।

ओना हमर घर दोसर टोलमे अछि आ देवी कक्काक घर दोसर टोलमे छैन, मुदा बातो-विचारमे आ जीविको रूपे गढ़गर सम्बन्ध दुनू गोरेक बीच अछिए। अपने छोट गिरहस्त छी तँए नोकसानो कम भेल मुदा देवी काका कम जमीन रहितो नमहर गिरहस्त छैथ तँए हुनका बेसी नोकसान भेबे केलैन अछि। कम जमीन रहितो नमहर गिरहस्त बनैक कारण देवी कक्काक छैन जे सदिकाल विचारोसँ आ काजोसँ गामक उन्नैतिक पाछू लागल रहै छैथ, तँए अनेको रंगक अन्नक खेतीक संग तीमनो-तरकारी, फलो-फलहरी आ मालो-जाल पोसनहि छैथ।

जइसँ सदिकाल अपन जिनगीमे रमल रहै छैथ।

मनमे भेल जे खुशहालीक समैमे सभ दिन एक-आध घन्टा एकठाम बैस अपनो आ समाजोक विषयमे दुनू गोरे गप-सप्प करिते आबि रहल छी, अखन तँ सहजे कष्टहालीक समए आबि गेल अछि, तँए भेँट करैले जाइ।

एक तँ खेत-पथार पानिमे डुमने काजो पतराएले अछि जइसँ बेसी बैसारीए रहैए, दोसर बेर-बिपैत पड़ने भेँट करब सेहो जरूरी बुझि पड़ल। घर परक काज सम्हारि पत्नीकेँ कहलयैन-

"देवी काकासँ भेँट केने अबै छी।"

पत्नी कहलैन-

"पानि-बुन्नीक समए छी, बेसी देरी नइ लगाएब।"

पत्नीक विचार सुनि देवी काकासँ भेँट करए विदा भेलौं। जूत्ता-चप्पल नइ पहिरलौं। तेकर कारण छल जे एक तँ रस्तामे थाल-खीच बेसी अछि, दोसर तीन ठाम रस्ता टुटल छै जइसँ पानिक रेत सेहो चलैए।

उदास भेल देवी काका दरबज्जापर बैसल मने-मन विचारि रहल छला जे बर्खोक मेहनत नष्ट भऽ गेल। खाली मेहनतेटा रहैत तखन संतोष होइमे बाधा नइ होइत। किएक तँ बुझितिऐ जे समैक संग मेहनत गेल तँ गेल, आगू समैक संग जिनगी चलबे करत। मुदा तेतबे नइ अछि। जखन घुमै-फिरैक उमेर छल तखन आन-आन गाम आ आन-आन जिलासँ लऽ कऽ आन-आन राज्य सभसँ तरकारियो आ फलोक गाछ आनि-आनि संग्रह केने छेलौं, ओ सभटा चल गेल। आब फेरसँ संग्रह करब से संभव नहि अछि। आब घुमै-फिरै-जोकर शरीरमे शक्ति कहाँ रहल..! ऐठाम आबि देवी कक्काक मन चहकए लगलैन। चहकए ई लगलैन जे जेकरा संग-संग जिनगी बीतबै छेलौं

ओ संग छोड़ि चलि गेल जे पुन: आब नइ औत। संगी जकाँ जहिना ओकरा पाछू–माने फलक गाछ–अपने लगल रहै छेलौं, तहिना ओहो ने सदिकाल–अपन-अपन समयानुसार–पौष्टिकक संग स्वादिष्ट फलो दइ छल। जहिना ओकरा (माने गाछ-बिरीछक) संग अपन जिनगी बीतै छल तहिना ने ओकरो जिनगी अपना संग बीतैत रहइ। सहचर जकाँ दुनू छेलौं, मुदा आब ओहन सहचरी बना पएब? नहि बना पएब! जँ कनी संभव अछियो तँ बेसी नहियेँ अछि। माने संभव ई भेल जे जँ कोनो उपायसँ गाछो आ बीओ भाइयो जाएत तैयो तँ गामक खेत-पथारक जे रूप-रेखा बनि गेल अछि ओ तँ प्रतिकूल भाइए गेल अछि। प्रतिकूल ई जे पूर्ववर्त्ती सोचक जहिना सरकारी महकमा तहिना ने ठरो-ठीकेदार आ गामक कर्तो-धर्तो अछिए। जे गाम-समाजकेँ के कहए जे अपनो नीक-बेजाइक ने काज बुझैए आ ने बात-विचार। जइसँ गाममे जे पानिसँ दुर्दशा हएब शुरू भेल अछि ओ लगले थोड़े मेटा जाएत..!

ऐठाम अबैत-अबैत देवी कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमैकतो फुरलैन जे तखन तँ गामक भविस अन्हरा जाएत! गामक भविस अन्हरा जाएत तखन अन्हारमे लोकक जिनगी आ जीवन की हएत? की मनुख विहीन धरती भऽ जाएत आकि धरती विहीन मनुख। जहिना मनुख बिना धरतीक कोनो मोल नहि तहिना ने धरतियोक बिना मनुखक कोनो मोल नहियेँ रहैए। ओना, जिनगीक अनुकूल अपन-अपन धरतियो होइए। मुदा ऐठाम किसानी जिनगीक प्रश्न अछि।

एकाएक देवी कक्काक मन ठहकलैन। ठहैकते विचार ठहकियेलैन। ठहकियेलैन ई जे जेकरा हम पूर्ववर्ती सोच-विचार कहि अपनाकेँ परवर्ती बुझै छी, ऐमे केतौ-ने-केतौ गुण छीपल अछि जेकरा हम या तँ बिसैर रहल छी वा दृष्टिहीन छी..!

दृष्टिहीन मनमे अबिते देवी कक्काक नजैर त्रिकाल दर्शन दिस बढ़लैन। त्रिकाल दर्शन दिस बढ़िते त्रिकाल जिनगीक इजोत भक-दे मनमे एलैन। अबिते विचार उठलैन जे ने आइये एहेन परिस्थितिसँ लोककेँ भेँट भेल अछि आ ने लोक अपन जिनगीक पाछू तकैत रहि गेल बल्कि आगू बढ़ैत गेल। भलेँ जिनगीए किए ने केतौ पछुआ गेल होनि, आकि जिनगी पछुएलासँ विचार-विवेक धकिया गेल होनि मुदा सोलहन्नी मरि गेलैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए आ जँ से रहैत तँ हजारो बर्खक जिनगीक रूप-रंग आइ नइ देखतौं। से तँ देख रहल छी। एकाएक देवी कक्काक मनमे जिज्ञासा जगलैन।

जिज्ञासा जगिते जिज्ञासु जकाँ पूर्ववर्त्ती जिनगीक जिज्ञासा केलैन। पूर्ववर्त्ती जिनगीक जिज्ञासा करिते मनमे उठलैन- जे धरती साइयो-हजारो त्रिकालदर्शी पैदा केने अछि ओही धरतीपर ने आइ हमहूँ ठाढ़ छी! देवी काकाकेँ जेना हूबा जगलैन। हूबा जगिते त्रिकालदर्शीपर नजैर अँटकलैन। मनमे उठलैन- त्रिकालदर्शी की? भूत, वर्तमान आ भविसकेँ जननिहार। भूत तँ भूत भेल जेकर लिखित-अलिखित इतिहास छै, वर्तमान सोझामे अछि मुदा भविस तँ हेराएल अछि ओकरा केना बिसवासक संग ताकि लेब..!

ऐठाम आबि देवी कक्काक विचार महाभारतक साइयम श्लोक जकाँ चौमुड़िया गेलैन। चौमुड़ियाइते विचार पनपलैन। पनैपते मन कलशलैन। कलैशते बदलल विचार–माने परिमार्जित विचार–मनमे जगलैन। जगलैन ई जे जीता जिनगीमे त्रिकाल तँ अबिते अछि। माने ई जे कखनो कष्टकर समए अबैए तँ कखनो समगम आ कखनो नीकमे नीक। अही तीनू समैक बीच जिनगी चलैए। मुदा छी तँ तीनू जिनगीए, तँए तीनू जिनगी जीबैक लूरि चाही। जखने जीबैक लूरि सीखब तँ नीक-बेजा समए अबैत-जाइत रहतै आ जिनगी अपना गतिये कखनो दौड़ कऽ तँ कखनो डेगे-डेगी तँ कखनो ठाढ़े-ठाढ़ चलबे

करत। देवी कक्काक मनमे रसे-रसे उदपन उठए लगलैन...। तैबीच देवी कक्काक लगमे पहुँच पएर छुबि प्रणाम केलिऐन। ओना मने-मन काका पिताएल जकाँ रहबे करैथ मुदा सभ दिन नीक असिरवाद देनिहार आइ केना अपन दुख हमरेपर झाड़ि देता। हम कि कोनो आन गाम रहै छी जे ओ नइ जनै छैथ। पएर छुबि गोड़ लागि चानिपर हाथ लेलौं मुदा बजलौं किछु ने।

ओना प्रणाम करैक तीनू चलैन अछिए। केतौ पएर छुबि गोड़ लागि गोड़ लागब सेहो बाजल जाइए। मुदा क्रियागत जिनगी जननिहार बिनु बजनौं ओते बुझि कऽ मानि लइते छैथ। केतौ दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम कहल जाइत आ केतौ खलिये मुहेँ सेहो प्रणाम कहले जाइए। मुदा जे अछि देवी काका हाथ उठा माथकेँ थपथपबैत बजला-

"भगवान सभकेँ इष्ट करथुन।"

कक्काक असिरवाद सुनि मन झुझुआए लगल जे अपना दिससँ काका किछु नहि कहि भगवानपर फेक देलैन। भगवान की इष्ट करता! ओ तँ अपने इष्ट-अनिष्ट दुनू छैथ। मनमे रंग-रंगक खटुका सभ उठए लगल जे देवी काका बुझि गेला। बजला-

"गौरी, मन किए खट-मधुर भेल छह?"

बजलौं-

"मन किए खट-मधुर हएत। अपनेक असिरवाद नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं।"

देवी काका बजला-

"बौआ, दुनियाँमे बुझहक आकि गाम-समाजमे दू रंगक लोक अछि। ओना सगपतिया लोक सेहो बहुत रंगक अछि। सगपतिया लोकक माने भेल ओहन लोक जे कनी इष्टो केलैन आ कनी अनिष्टो केलैन। तहिना कियो अनिष्ट कम केलैन आ इष्ट बेसी केलैन, आ किछु

एहनो लोक छैथ जे इष्ट कम आ अनिष्टे बेसी करै छैथ।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"केना बुझब जे बेसी इष्ट करैबला छैथ आकि बेसी अनिष्ट करैबला?"

हमर बात सुनिते, जेना चौरीमे केशौरक पन्ना भेटते उखारनिहारकेँ बिसवास जगि जाइए जे आब केशौर भेटबे करत आ उखड़बे करत, तहिना बिसवासक संग देवी काका बजला-

"जेकरा मनमे जेहेन अभिष्ट रहल से तेहेन इष्ट वा अनिष्ट करैए।"

देवी कक्काक कनी-मनी बात बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियोँ बुझलौं। मुदा मनमे खोंचार पड़ए लगल जे पनरह दिनक जिनगीक गप करए एलौं आ अनेरे कथा-पिहानीमे वौआ रहल छी..!

अपन विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

"काका, ऐ बेरक समए तँ अजीब भऽ गेल।"

'अजीब' सुनिते देवी कक्काक मन जेना हुरकलैन तहिना हुरकैत बजला-

"अजीब भेल कि सजीब से एना नइ बुझबहक।"

देवी कक्काक आत्मा जहिना परमात्म स्वरूप छैन तहिना बुधियो प्रवुद्ध छैन आ विचारो परम छैन्हे तँए मन सकपका गेल जे हिनका केना कहबैन जे काका अहाँक आगूक जिनगी गरथाहमे पड़ि गेल। जँ से कहबैन आ जँ ई कहि दैथ जे एके गाममे ने दुनू गोरे छी तखन जहिना तोहर चलतह तहिना ने हमरो चलत। तइसँ हुनकर बेथा-कथा थोड़े बुझि पएब। तखन तँ अपने विषयमे किए ने कहिऐन जे जे समस्या अपनो अछि सएह ने वृहत् रूपमे हुनको छैन। ऐसँ एते तँ

विशेष लाभ हेबे करत जे जखने कोनो समस्याक समाधानक वृहद् रूप दृष्टिगोचर हएत तखने ओ समस्या बिच्चेमे दहलाए लगत। जखने दहलाए लगत तखने ओकरा या तँ हाथेसँ वा कोनो मेही वस्तुसँ छानि कऽ कातमे फेक देब। विचारमे मजगूती आएल।

बजलौं-

"काका, आब जीवन कठिन भऽ गेल, तँए जैठाम सुवन भेटत तैठाम चलि जाएब।"

जहिना देवी काका कान रोपि सुनलैन तहिना आँखि उठा देखबो केलैन। प्रश्नक उत्तर दैत बजला-

"बौआ गौरी, जखन अपन एते गेल तैयो जी-रोपि अपनाकेँ ठाढ़ केने गाममे छी, मुदा तोहर तँ बड़ छोट समस्या छह, तूँ किए गामसँ पड़ेबह। हँ, सुवनक बात कहलह, ओ गामोमे बनि सकैए वशर्ते जँ जी-जान रोपि जीवनकेँ पकैड़ लेबह।"

ओना देवी कक्काक सभ गप सुनलौं मुदा बुझलौं अदहे-छिदहे। अदहा-छिदहा ई जे गामोमे सुवन बनि सकैए, एहेन विचार मनमे आइ धरि उठले ने छल जे एको-आध मिनट ऐ विषयक विषयमे विचारितौं। तँए नइ बुझल छल, जइसँ नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं। ओना, कक्को बुझि गेला जे गौरी नीक जकाँ हमर विचार नइ बुझि पौलक। तैबीच बजलौं-

"काका सुवन..?"

'सुवन' बाजि वाणीकेँ ऐ दुआरे रोकलौं जे जँ एहेन बात बजा जाइए जइसँ प्रश्ने खण्डित भऽ जाइए तखन तँ उत्तरो खण्डित हेबे करत। जखने उत्तर खण्डित हएत तखने किछु-ने-किछु विचारो आबिये सकैए जे उतारक हुअए। मुदा ऐठाम तँ प्रश्नकेँ उतारैक नहि बल्कि चढ़बैक अछि। जे विचार देवी कक्काक मनमे पहिनहि जगि

चुकल छेलैन। बजला-

"बौआ गौरी, जहिना सरयुग नदीक तटपर बसल अयोध्या अछि, जे रामक जन्मभूमि रहल तहिना यमुना नदीक तटपर वृन्दावन सेहो अछि जे कृष्णक लीला-धाम रहलैन। तहिना गामोमे जखन सुविचार जगत तखन सुकर्म सेहो जगबे करत। जखने सुकर्म जगत तखने सुकृत्ति रूपक कर्मभूमि बनत। आ जेना-जेना सुकृत्ति सुवृत्ति बनैत जाएत तेना-तेना जीवन सुवन दिस बढ़ैत जाएत।"

ओना देवी काका तीन जुगक इतिहास सुना देलैन मुदा अपन मन तँ जबदाह भाइए गेल छल। जबदाहो केना ने होइत, जखन पानिमे डुमल गामे जबदाह भऽ गेल अछि तखन कि अपने गामसँ हटल थोड़े छी जे ओइसँ वंचित रहितौं। जबदाह मन रहने नीक जकाँ देवी कक्काक विचार नइ बुझि पेलौं।

मन घुरिया गेल जे अपन जिनगी जे जबदाहसँ जबदी दिस बढ़ि गेल अछि तेकर की उपाय हएत। तँए विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

"काका, बड़ सेहन्तासँ पाँचटा केराक गाछ केरलसँ अनने छेलौं। पाँचो पानिमे डुमि कऽ नष्ट भऽ गेल!"

घावपर मलहम लगबैत देवी काका मुस्कियाइत बजला-

"तोरो अपना इलाकामे केराक गाछ नइ भेटलह जे देशक सीमापर सँ आनए गेलह।"

एक तँ मन केलहा काजपर–माने केरलसँ केरा गाछ आनि रोपैक प्रक्रिया तकमे–नचैत रहए तैपर तेहेन बात देवी काका कहि देलैन जे विचारे उनैट गेल। बजलौं-

"काका, सीमा-सुमीक बात नइ अछि, केरासँ सिनेह अछि। रामेश्वरम गेल रही। ओइठाम सौंसे बजारमे सभसँ ललिचगर केरे बुझि पड़ल।"

बिच्चेमे देवी काका टोकला-

"तखन तँ रामेश्वरम सोल्होअना फलहारे केने हेबह।"

हमरो मनमे रामेश्वरम् स्थान नचिते छल, तहूमे केराक बजारक बात, मन मिठाएल रहबे करए, बजलौं-

"काका सेहन्ते एक हत्था कीनलौं। हत्थो लोकक हाथ जकाँ पाँचे आँगुरक छल, बत्तीस छीमीक हत्था छल। ओ दन्तार छीमी। नीको आ सस्तो बुझि पड़ल। खूब खेलौं।"

बिच्चेमे टोकारा दैत देवी काका बजला-

"खेबे टा केलह आकि ओकर सुआदो पौलह?"

हमरो सुतरल। बजलौं-

"बिनु सुआद पौनहि एतेक दूरसँ बैजनाथ बाबाक कामौर जकाँ गाड़ीमे केराक गाछ टँगने एलौं।"

हमर बात सुनिते देवी काका आगू बढ़ि बजला-

"जखन रामेश्वरम्-सँ केराक गाछ अनलह तखन जँ कनियेँ आरो आगू बढ़ि लंका पहुँच जइतह तखन तँ हनुमानजी जकाँ आरो फल-फलहरी अनबे करितह किने?"

विचारक धारामे विचड़ैत रहबे करी, अनासुरतीए बजा गेल-

"तइमे कोन राहु-केतु बाधा होइत।"

तैबीच दुर्गा काकी चाह नेने पहुँचली। चाह देख मन हलैस गेल मुदा उदासीपन छाड़ने छल, जे दुर्गा काकी आँकि लेलैन। जहिना डाक्टर ऐठाम आकि अस्पतालमे साधारण रोगबला रोगी पैघ रोगसँ रोगाएल रोगीकेँ देख मने-मन खुशी होइत जे जखन एहेन रोगी बँचि सकैए तखन तँ हम बँचले छी, तइले अनेरे मनकेँ खट्टा केने रहब नीक नहि, तहिना आश्वस्त करैत दुर्गा काकी बजली-

"बच्चा गौरी, हमर बड़का काका सदिकाल पोता सभकेँ कहैत रहथिन जे 'नअ दहार तखनो ने किछु उघार', तखन एक दहार की बिगार... ।"

दुर्गा काकीक बातो सुनैत रही आ चाहो पीबैत रही। एक तँ सुअदगर चाह, तैपर दुर्गा काकीक मधुराएल विचार सुनि आरो मन मीठा गेल।

बजलौं-

"काकी, जखन नान्हि–नान्हिटा चुट्टी घोदा-माली भऽ आड़ि-धुरसँ निकैल बाढ़िक वेगमे हेलैत समुद्र तक पहुँच जाइए, तखन अपना सभ तँ कहुना मनुख भेलौं किने... ।"

हमरा विचारमे दुर्गा काकीकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मन हरियरीसँ भरि-पूरि जरूर गेलैन। जेकरा देख देवी काका विचार छिनैत बिच्चेमे बजला-

"बौआ गौरी, यएह विडम्बना अछि!"

देवी कक्काक आगूक विचार सुनैले अपनाकेँ साकांछ केलौं। साकांछ करैक कारण मनमे उठल जे नीक विचार सुनैले जहिना अपन कानकेँ कनखारऽ पड़ैए तहिना ने धियानकेँ धियानी सेहो बनबए पड़ैए। सएह करैत बजलौं-

"की विडम्बना काका?"

हमर बात सुनि देवी कक्काक मनक विचार जेना हुमैर कऽ कुदए चाहलकैन तहिना देवी कक्काक मुखड़ामे लौकलैन। लौकते बजला-

"बौआ, जहिना पवित्र लोकक देवालपर देवालय ठाढ़ अछि तहिना गुँहचोरा-ले सेहो अछिए ने।"

देवी कक्काक विचारकेँ नीक जकाँ नइ बुझि पुछलयैन-

"से केना?"

विहुँसैत देवी काका बजला-

"ओना, बेकतीकेँ भीतर[9] सेहो सुकृत्ति कुकृत्ति अछि, मुदा ओ बेकतीकेँ प्रभावित करैए। मुदा ऐठाम से नहि, ऐठाम समाजिक प्रश्न अछि। समाज सेहो नीक-अधला करैबलाक समूह छी जे किछु अज्ञानतासँ सेहो आ किछु ढीठपनासँ सेहो होइए। जैठाम अज्ञानता होइए ओ क्षम्य अछि ओना क्षम्योक सजाए चेतौनी रूपमे जरूरी अछिए। मुदा जैठाम ढीठपनासँ होइए तैठाम समूहकेँ जगि कऽ जगबए पड़त। आ जँ से नइ हएत तँ समाज जेते उठए चाहत ओते निच्चाँ खसि-खसि पड़त। तँए... ।"

किछु-किछु विचार देवी कक्काक बुझबो केलौं आ किछु-किछु नहियोँ बुझलौं। मुदा बिच्चेमे पत्नीक बात मन पड़ि गेल जे बेसी देरी नइ लगाएब। तँए मन कछमछा लगल। बजलौं-

"काका, हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता अछिए। अखन छुट्टी दिअ।"

मुस्की दैत देवी काका बजला-

"छुट्टीए-छुट्टी छह। मुदा छुट्टीए-मे कहीं अपने ने जिनगीक धारमे छुटि जइहह।"

देवी कक्काक विचारकेँ जँ नीक जकाँ बुझैत जइतौं तब ने, से तँ बुझिये ने पेब रहल छेलौं। तँए सिनेमाक कटल रील जकाँ विचार कटि-कटि जाइ छल। मुदा तैयो बजलौं-

"जीता-जिनगी जँ ई सभ नइ हएत तँ जिनगीक परीक्षा केना हएत।"

[9] जिनगीक क्रियाक बीच

हमर विचार देवी कक्काक संग दुर्गा काकीकेँ सेहो नीक लगलैन। सह दैत दुर्गा काकी बजली-

"दुर्गा दुर्गत हारिणी छथिये किने।"

◌

शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाइ 2017

नमहर फेरा

सौन मासक अनहरिया पखक दुतिया। रबि दिन। भिनसुरका उखड़ाहाक नअ बजैत। पँचहत्थी लाठी हाथमे नेने जीवानन पुबरिया बाधक पछबरिया धड़िपर सँ हिया-हिया अपन खेत ताकए लगल।

पानिमे डुमल बाध, सबहक खेत हेराएल। ओना कतबाहिक खेत अपन आड़ि-धुर बँचौने, कनी-मनी चिन्हो-परिचए रखने मुदा जेना-जेना आगू बढ़ल तेना-तेना बाधक खेत हेरा समुद्र जकाँ बनल। पछबरिया धड़िसँ दस कोला आगू जीवाननक डेढ़ बीघा खेतक कोला। बाधक जमीनक साइजिक हिसाबसँ तीन सीढ़ी निच्चाँ धड़िक कातक खेत, तहूमे चारू धड़िमे–माने बाधक चारू कातमे–पछबरिया धड़ि सभसँ ऊँच आ बाँकी तीनू धड़ियो आ बाधक भागो चपगर अछिए। बीच बाधक बीस बीघा जमीनक सतह एकरंग अछि।

ठेकना कऽ जीवानन धड़िपर सँ उतैर बगलक खेतमे पइस देखलक तँ लाठीक हिसाबे डेढ़ हाथ आ शरीरक हिसाबे भरि जाँघ पानि छेलइ। पानिकेँ देख जीवानन धड़िपर आबि अन्दाजए लगल जे अपन खेत ऐसँ डेढ़-दू हाथ गहींर हएत। नहि दू हाथ तँ डेढ़े हाथ रहह, तैयौ तँ चारि फीटसँ बेसी पानि भेबे कएल। पानिक बहाव रहितो एतेक पानि पेटियाएल रहबे करत। चौबगली गामक जमीनक सतहसँ नीच अछिए। तँए ऐ पानिकेँ निकासीक कोनो आशा नहि। ओना,

आशा दू रंगक होइए। एकटा भेल- जे अछि तेकर आशा आ दोसर भेल- ओकर सुधार भेला पछातिक आशा। से दोसर रंगक आशा तँ अछिए मुदा ओ केला पछाइत हएत। जँ नीचरस खेत कोनो गामक अछि तँ ओकरा दोसर गामक नीचरस खेतसँ बहाव बना जोड़ला पछाइत हएत। दू-तीन गाम जोड़ाइत-जोड़ाइत कोनो-ने-कोनो धार पकड़ाइए जाएत। किएक तँ अपना इलाकामे धारक जाल पसरल अछिए। जे बहता पानिक अछि। एक धारसँ दोसर धार आ दोसरसँ तेसर धारमे मिलैत पानि गंगामे पहुँच जाइए। गंगामे पहुँचला पछाइत समुद्र पकैड़ लइए।

अखन मौसमक शुरूआत भेबे कएल अछि। अवादैक खियालसँ सेहो आ पानिक शुरूआतीक अवस्थाक सेहो। अखन गामक पाँचो प्रतिशत खेत अवाद नहियेँ भेल अछि। तहूमे अवादैक जे साधन–धानक बीहैन–अछि ओहो नीक जकाँ ने बढ़ि पौलक अछि आ ने जागल अछि। सभटा बीहैन पानिमे डुमल अछि। जइसँ नष्ट हेबाक बेसी संभावना अछिए। किछु-किछु बँचियो सकैए मुदा ओ जगलाक बीस दिनक पछाइत रोपाउ हएत। तहूमे ओहन खेतमे रोपाउ हएत जइमे बीहैनक अपेक्षा पानि कम रहतै...।

जेना-जेना जीवाननक विचार आगू बढ़ैत गेल तेना-तेना मन खन्हियाइत गेलइ। खन्हियाइत-खन्हियाइत मन एतेक खन्हिया गेलै जे देहेक तागैत घटए लगलै, नितागैत हुअ लगल। नितागैत होइते जीवाननक मन मानि गेल जे आब ठाढ़ रहब तँ खसि पड़ब। खसैक डरसँ जीवानन धड़ियेपर बैस रहल।

बैसले-बैसल चारूकात नजैर उठा-उठा ताकए लगल जे जँ कियो लग-पासमे हएत तँ शोर पाड़बै। मुदा केकरो ने केम्हरो देखलक। केकरो नहि देख अनायास जीवाननक मनमे उठलै जे

अनकर आशा केते काल, से नहि तँ अपने कोनो तेहेन जुकती लगाबी जे देहमे ओतबो तागैत औत जइसँ कहुना-कहुना घरपर पहुँच जाइ, घरपर पहुँचला पछाइत बुझल जेतइ। गामपर एते आशा तँ अछिए जे नहि आन कियो औत मुदा अपन पत्नी आ माए तँ अछिए। तहूमे माएकेँ एक साए रंगक रोगक प्रतिकार करैक लूरि-बुधि[10] छइ। बैसलासँ जीवाननक होश बेसियाए लगलै। जेना-जेना होश बेसियेलइ तेना-तेना देहोक तागैत आ मनोक हूबा बढ़ए लगलै।

अखन तक जीवाननक मनमे छल जे जँ बाधमे अचेत भऽ जाएब तँ बिनु मुइने नइ रहब। ओना अचेत भेला पछाइत दुनू होइए। कियो-कियो मरियो जाइए आ कियो-कियो सचेत सेहो होइते अछि। ओना सचेत-अचेतक दोसरो प्रक्रिया अछि। ओ अछि जे कोनो दुरदान्त दृश्य देखला आ भेला पछातिक आ दोसर अछि जे आगूक बिपैतपर नजैर पड़ने। मुदा तइ दुनूक बीचमे देहकेँ नितागैत होइत-होइत सेहो अचेत होइए। मुदा अइमे चेतन-क्रिया सक्कत रहै छइ। जेकर चेतन-क्रिया जेतेक सक्कत रहल ओ ओतेक जल्दी अपनाकेँ सम्हारि उठा कऽ ठाढ़ करैए आ जेकर जेतेक कमजोर रहल ओ हवा-पानिक आशापर ओतेक-काले होशमे अबैए। मुदा से जीवाननकेँ नहि भेल। उपजा नइ भेने भविष्यक चोटसँ तेना ने चोटा गेल जे देहक शक्तिमे ह्रास हुअ लगलै जइसँ शक्तिहीन बनए लगल। शक्तिहीन होइत-होइत एतेक भऽ गेल जे चलैयो-फिरै जोग नहि रहल।

जीवाननकेँ देहक शक्तिक भरपाइ तँ नीक जकाँ नइ भेल मुदा मनक शक्ति चलै-फिरै-जोकर भऽ गेल। चलैत मनमे उठलै-कनीकाल आरो अहिना अराममे रहब तँ चलै-फिरै जोग भऽ जाएब।

[10] लूरि भेल प्रतिकार करैक प्रक्रिया, जेकरा सेवा सेहो कहै छिऐ आ बुधि भेल ओइ रोगकेँ भगबैक वस्तु।

जखन चलै-फिरै जोग भऽ जाएब तखन कहुना कऽ उठैत-बैसैत रस्ता कटैत गामपर पहुँच जाएब। अपन देहक शक्तिकेँ जीवाननक सकताइत मन हिला-हिला जगबए लगलै। जेना-जेना देहमे झमार पड़ै तेना-तेना देहक शक्ति सेहो बढ़ए लगलै। संतोखी लाल सेहो बाधे देखैले अबैत रहैथ। दस डेग फरिक्केसँ जीवाननपर नजैर पड़लैन। मुदा पड़ल रहने जीवाननकेँ चीन्हि नइ पेला। अनचिन्ह मनमे संतोखी लालकेँ उठलैन जे भरिसक कियो बाध देखए आएल आ देखल चोटसँ तेना चोटा गेल जे लटुआ कऽ धड़ियेपर पड़ि रहल। थोड़बे कालक पछाइत संतोखी लालक मनमे फेर उठलैन- भरिसक मिरगी-तिरगी ने तँ पकैड़ लेलकै..! मिरगी मनमे उठिते संतोखी लाल डेगो तेज केलैन आ मने-मन विचारो तेज केलैन। विचार तेज होइते मनमे उठलैन जे जँ कहीं मिरगी उठि गेल होइ तखन की करब? देह तँ लटुआ-पटुआ गेल हेतइ! लर-ताँगर जकाँ करबे करत, तखन कान्हपर उठा लऽ केना जाएब? फेर लगले भेलैन जे बगलेमे–धड़िक निच्चाँ–समुद्र भेल पानि पड़ल छै, जखने पानिमे गेल कि जीबैक कोनो संभावना रहबे ने करतै, तखन तँ ऐ मृत्युक दोखी बनबे करब! केकरो मुँह रोकि देबै, ओ तँ बजबे ने करत जे फल्लाँ सोझामे देख अनठा देलकै। जखने एक गोरे एते बाजत तखने दोसरो-तेसरो बजबे करत। जे फल्लाँ दुष्ट अछि, झूसो-फूसो एक ढकिया लड़ती जोड़ि कऽ समाजमे छिड़िया देत। तखन तँ ओकरा बीछि-बीछि जवाबो देब भारी भऽ जाएत। तँए किए ने समाजक पहिल पुरुख बनैक कोशिश करी, अपन कएल कृत्यसँ समाजक बीचमे अपनाकेँ ऊपर चढ़ाबी...।

यएह सोचि संतोखी लाल डेगकेँ दौड़बैत आगू बढ़ला। जीवाननक लगमे जाइते चीन्हि गेलखिन। चिन्हते बजला-

"जीवानन! हमहूँ तँ बाधे दिस अबै छेलौं, जखन तोरा एना भेलह तखन जोरसँ अवाजो दैतहक से नहि।"

जीवानन बाजल-

"दोस काका, अहाँ केतेक पहिने बाघमे प्रवेश केलौं?"

संतोखी लाल-

"केते पहिने कि अबिते छी।"

जीवानन-

"अहाँ अबिते छी तँ बड़-बेसी तँ पाँच मिनट भेल हएत, हम तँ घन्टा भरिसँ खसल छी। चलैयो-फिरैक तागैत देहसँ उड़ि गेल अछि।"

जीवाननक बात सुनि संतोखी लाल मने-मन विचारए लगला जे वेचाराक हृदैमे तेतेक चोट लागि गेल छै जे छोट-क्षीण मरहम-पट्टीसँ काज नहि चलत। चोटक हिसाबे ओहन चोटाएल विचार राखए पड़त जइसँ ओकर दर्द अपनामे खींच सकइ।

संतोखी लाल आ जीवाननक परिवारक बीच तीन पुश्तसँ दोसतियारे चलि आबि रहल अछि। जइ सम्बन्धक मोताबिक जीवाननक पिता आ संतोखी लालक बीच भैयारीक सम्बन्ध छल। जीवाननक पिता–रघुवीर–दुनू भाँइ संतोखी लालकेँ 'दोस' कहैत रहथिन। आ संतोखी लाल सेहो रघुवीर दुनू भाँइकेँ दोसे कहैन। जेकर देखसी करैत जीवानन अपनो सम्बन्ध 'काका' आ पितोक सम्बन्ध 'दोस'केँ एकठाम करैत 'दोसकाका' कहै छैन। ..अजमा कऽ संतोखी लाल बजला-

"बौआ जीव, एना भेल किए?"

कोनो रोगक आगमन होइसँ पहिने किछु ओहन लक्षणोक आगमन हुअ लगैए जे जीवनक लेल प्रथमो भऽ सकैए आ दोसरो-तेसरो, मुदा होइए जरूर। तँए संतोखी लाल ओकरा ठिकिया कऽ पकड़ैले बजला।

जीवानन बाजल-

“दोसकाका, बाधमे झलकैत पानि देख आँखिमे पहिने चौन्ह आएल। चौन्ह अबिते कनी-मनी आँखि चोन्हियाए लगल। जेना-जेना आँखि चोन्हियाएल तेना-तेना मनो चोन्हिया लगल। आ जेना-जेना मन चोन्हियाएल तेना-तेना आँखिमे चकचोन्ही उठए लगल। उठैत-उठैत तेते उठि गेल जे आँखिये बन्न भऽ गेल। एकबाइग दुनियाँ अन्हार भऽ गेल। अन्हारमे की भेल से नीक जकाँ मन नइ अछि।”

जीवाननक विचारकेँ संतोखीलाल नीक जकाँ सुनलैन। विचारला पछाइत मनमे उठलैन जे पहिने जीवाननकेँ चौरस जमीनपर लऽ जाएब जरूरी अछि। जँ खत्ता-खुत्ती, आड़ि-धुरक फेड़मे पड़ब तँ जिनगी वेठेकान भऽ जाएत। जिनगी तँ तखने ने शुरू होइए जखन कियो अधला वृत्तिसँ हटि नीक वृत्ति दिस प्रवृत होइए। से जँ नइ हएत तँ स्वर्ग-नर्क खिस्सा-पीहानी भऽ जाएत किने। तँए समतल भूमिपर डेगे-डेगे चलनिहारक बीच जँ कनी-मनी भूलो-चूक भेल तँ ने पीछिराह ढलान जकाँ जोरसँ खसैए आ ने खत्ता-खुत्तीक टुटल आड़ि-मेड़ जकाँ ढहै-ढनमनाइए...।

तँए संतोखी लाल जीवाननकेँ चौरस जमीनपर ठाढ़ करैत कहलखिन-

“बौआ जीव, तोरा तँ एकटा बेटा दिल्लीमे रहै छह। सुनै छी मारे पाइ होइ छै, तखन तोरा कथीक चिन्ता एतेक भेलह जे जिनगी दिस तकिते मन चोन्हिया गेलह।”

धीरे-धीरे जीवाननकेँ ओते होश आबि गेल छल जे घरपर अपने पएरे जा सकैए। हुबियाइत जीवानन बाजल-

“दोसकाका, मरै बेर जँ कोइ देखलक ते अहाँ देखलौं, नइ तँ हमरा घरपर गेल कहाँ होइत।”

जीवाननकेँ आगू ससारैत संतोखीलाल बजला-

“बौआ जीव, तोरा ते पाँच गोरेक परिवार छह, कोनो कि हाथी-घोड़ा छिअ जे देह छोड़ि खेबह। मनुख छिअ, भेल तँ जे एक किलो अन्नक खर्च आदमीपर, तइले एते सोग करैक कोन काज छह।”

संतोखी लालक विचार सुनि जीवाननक मन राग-विरागक बीच वौआए लगल। मुदा अपनाकेँ चेतौनी दैत बाजल-

“काका, अहाँ हमर एकटा हाथ पकैड़ लिअ जे जखने तिलमिलाए लगब कि दुनू हाथे पकैड़ कऽ बैसा देब।”

“एना किए अपनाकेँ हारल नटुआ जकाँ हिआ हारै छह। जँ घरपर चलैक शक्ति देहमे बुझि पड़ैत हुअ ते चलह। तोरा पाछू-पाछू नजैर गड़ौने हमहूँ चलै छी।”

संतोखी लालक बात सुनि जीवानन उठि कऽ ठाढ़ होइत बाजल-

“दोसकाका, जखन अहाँ संगमे छी तखन घरपर पहुँचबे करब। चलू।”

घर दिस विदा होइते संतोखी लाल अपनो मनकेँ चेतौनी देलैन जे रस्तामे जीवाननक सिरिफ चलब आ चलैक चालिपर नजैर रखैक अछि। गप-सप्प जँ करए लागब आ गपेमे बोहिया जाएब तखन तँ अपन चालि बिसरबे करब किने। जीवाननकेँ चेतैनी दैत बजला-

“बौआ जीव, रस्तामे गप-सप्प बन्न राखह। जँ तोरे मन बजैक क्रममे बकना जाह आकि हमरे सुनैक क्रममे बोहिया गेल तखन तँ तूँ बिच्चेमे खसि पड़बह। ने अपने बुझबहक आ ने हमहीं बुझब।”

संतोखी लालक घर पहिने पड़ैत। घर लग पहुँचते जीवानन बाजल-

“दोस काका, जखन अहाँ ऐठाम पहुँच गेलौं तखन अपनो ऐठाम पहुँचबे करब।”

जीवाननकेँ अगुएने संतोखी लाल दरबज्जापर पहुँचला। दरबज्जापर पहुँचते विचारलैन जे पहिने जीवाननकेँ किछु खुआएब-पीआएब जरूरी अछि। पुछैत बजला-

“जीव, किछु खेबो-पीबोक तृष्णा बुझि पड़ै छह?”

जीवानन बाजल-

“जलखै खा कऽ निकलल छेलौं दोसकाका, तँए खेबाक छुधा नइ अछि, कनी पानि पीब आ चाह पीब।”

जीवाननक ‘पानि-चाह’ सुनि संतोखी लाल पत्नीकेँ हाक दऽ मने-मन विचारलैन जे पत्नी-लग अखन सोझे पानि-चाहक चर्च करब नीक। पहिने जँ घटनाक चर्च करब तँ आदि-अन्त केने बिना ने अपने मन मानत आ ने पत्नियोँ सुनैसँ बाज औती। आ जखने से हएत तखने ओते बिलम हएत। जेते बिलम हएत तेते बिलमैत जीवानन चंगा हएत।

पत्नीकेँ देखते संतोखी लाल बजला-

“पहिने लोटामे पानि नेने आउ। पछाइत चाह बनाएब।”

सुदामो बिनु टोक-टाक केने आँगन गेली। तैबीच जीवाननकेँ हिया कऽ संतोखी लाल देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे जँ सोलहन्नी नहियोँ तँ बरहअन्नी जरूर मन खनहन भऽ गेल अछि। तँए आब गप-सप्प करैमे हर्ज नहि। मुदा लगले भेलैन जे जीवानन दिससँ उठाएब नीक नहि हएत। किएक तँ चोटाएल लोकक मन चोटसँ चोटिया गेल रहैए। जइसँ पुन: चोट उपकैक संभावना रहै छइ। से नहि तँ अपने दिससँ उठाबी।

तैबीच सुदामा लोटामे पानि आ गिलास नेने पहुँच गेली। चौकीपर लोटा-गिलास रखि आँगन दिस विदा होइत बजली-

“जाबे अहाँ सभ पानि पीब ताबे चाहो बनि जाएत।”

गैस चुल्हिक चाह, लगले बनि गेलैन। दूटा कपमे दुनू गोरे-ले चाह नेने दरबज्जापर पहुँच, कप रखि आगूमे सुदामा ठाढ़ भऽ गेली। ओना, सुदामाकेँ कानक सुनल किछु ने रहैन मुदा मनमे एते ठहकिये गेल रहैन जे किछु बात जरूर अछि।

दू घोंट चाह जीवाननकेँ पीला पछाइत संतोखी लाल पुछलखिन-

“आब मन हल्लुक बुझि पड़ै छह किने?”

तेसर घोंट चाह घोंटैत जीवानन बाजल-

“दोसकाका, जखनेसँ अहाँ सोझामे पड़लौं तखनेसँ जेना सोगक रोग भागए लगल आ जिनगीक जोग जागए लागल जे अखनो जगिये रहल अछि।”

जीवाननक बात सुनि संतोखी लालक मनमे उठलैन- जे वेचाराक मनक मटियाएल भूमि आब उर्वर भेल जा रहल अछि तँए एहेन बीजक आवश्यकता अछि जेकरा पड़लासँ पुष्ट आँकुर हएत। जखने पुष्ट आँकुर हएत तखने पुष्ट गाछ सेहो हेबे करत। संतोखी लाल बजला-

“जइ परिवारक चिन्तासँ तूँ चितहीन भऽ गेलह जीव, ओ चिन्ता हम कहाँ देखै छी।”

संतोखी लालक विचार सुनि जीवाननकेँ पैछला बात–बेटा मारे कमाइ छह–मनमे नाचि उठलै। बाजल-

“दोसकाका, अहाँ कहलौं जे बेटा मारे कमाइ छह। सुनै अपनो

छी, मुदा मार कमाइ जखनेसँ खाएब तखनेसँ ने देह भले फुलए लगए मुदा मन तँ कुम्हलेबे करत किने?”

जीवाननक विचार सुनि संतोखी लालक मन ठहकलैन। ठहैकते विचार उठलैन जे जँ अखन जीवाननकेँ ठकुआएल भोजन करेबै तँ ओ बेसी ठहकत। बजला-

“बौआ जीव, जइ गाममे अपना सभ छी ओ आब नाश भऽ जाएत..!”

आगू बात बजैले संतोखी लाल मने-मन लड़ीकेँ झड़िऐबते छला कि बिच्चेमे जीवानन चौंकैत बाजल-

“से की दोसकाका?”

जीवाननक चौंकबसँ संतोखी लालक मन हुमरलैन- अखन जइ स्थितिकेँ देख जीवानन अचेत भेल ओइ स्थितिक चर्च करब बेसी जरूरी अछि, अखन जँ दोसर-तेसर स्थितिक चर्च करब ओ ओते समयोचित नइ हएत। मुदा लगले फेर संतोखी लालक मनमे भेलैन जे कोनो रोगक लक्षण बुझेला पछाइत जँ रोगीकेँ इलाज होइ (माने दवाइ-दारू) तँ ओ कारगर हेबे करत। तँए जँ विस्तारसँ नहियोँ तँ संक्षेपोमे किछु कहि देब नीक हेबे करत। बजला-

“बौआ, जेकरा प्रभावसँ एते पैघ समस्या गाममे उपस्थित भऽ गेल अछि, ओकरा जड़िकेँ जाबे नइ बुझबहक ताबे अधखिज्जू निदान रोगक बुझबहक।”

मुड़ी डोलबैत जीवानन बाजल-

“से केना बुझबै काका?”

जीवाननक जिराइत मन देख संतोखी लालक मनमे सेहो विचारक संतोख जगलैन। बजला-

“बौआ, सम स्थितिकेँ विषम बनैक दू कारण अछि। एक- मानवीय आ दोसर- प्राकृतिक। अपना ऐठाम जे स्थिति उपस्थित भऽ गेल अछि ओ मानवीय छी।”

अपना विचारे संतोखी लाल बाजि रहल छला मुदा जीवानन ओइ रूपे नइ बुझि रहल छल जइ रूपे संतोखी लाल बुझबए चाहैत रहथिन। तँए बिनु बुझैत विचारकेँ जहिना कोनो जिज्ञासु कानक संग मुहोँ बाँबि पीबए चाहैए तहिना जीवाननोक छल जे संतोखी लालक विचारक प्रवाहकेँ रोकि रहल छल। मुदा तैबीच मुँह बौने जीवानन बाजल-

“नीक जकाँ नइ बुझि पेब रहल छी, काका?”

संतोखी लालक मन सेहो कबूल लेलकैन जे भऽ सकैए नीक जकाँ जीवानन नइ बुझि पबैत हुअए। विचारकेँ चीर-फारि संतोखी लाल बजला-

“बौआ, समस्या तँ अनेको गाममे अछियो आ नव-नव आबियो रहल अछि मुदा अखन ओतेमे नइ जाह, अखन मात्र दूटा समस्याक विषयमे बुझह।”

जीवानन बाजल-

“भने कहलौं काका। अपनो बड़ीकाल घरसँ निकलना भऽ गेल। पत्नी तकैत हेती।”

“बड़बढ़ियाँ। लगले अपन विचारकेँ विराम दइ छी।”

बजैक क्रममे संतोखी लाल बाजि गेला जे ‘लगले विराम दइ छी’ मुदा तुरन्ते मनमे उपैक गेलैन जे कोनो विचार वा काजकेँ एकटा सीमा तँ बनबए पड़त। जँ से नइ बना बाजब तँ ओ पोखरिक ओहन केचलीक गाछ जकाँ ने भऽ जाएत जे बिनु धरती छुने ऊपरे-ऊपर पनपबो करैए आ फुलेबो-फड़बो करैए..!

अपन विचारकेँ सीमापर ठाढ़ करैत संतोखी लाल पुछलखिन-

“बौआ जीव, अपन गामक आँट-पेट बुझल छह?”

संतोखी लालक मुँहक ‘आँट-पेट’ जीवानन नीक जकाँ बुझबे ने केलक। मुदा जँ कोनो वक्ताक विचारक बीच भाव वा अभाव खटकए तँ जरूर ओ बुझि ली। नइ तँ एकठाम सँ निकलला पछातियो धार जहिना कोसो दूर हटि जाइए तहिना विचारधारो ने बहैक जाइए।

जीवानन बाजल-

“दोसकाका, ‘आँट-पेट’ नइ बुझलिऐ।”

ओना बजैक क्रममे जे धारा प्रवाहित होइए जँ ओइमे कोनो विघ्नबाधा बुझि पड़ए तँ ओकरा तुरन्त दोहरा कऽ बुझि लेब असान अछि, आ जँ सम्पूर्ण धाराकेँ प्रवाहित भेला पछाइत बुझए चाहब तँ ओ दोसरो मोड़ लऽ सकैए। संतोखी लाल बजला-

“रकबा हिसाबे अपन जेतेटा गाम अछि ओइसँ बेसी लोक बसि रहल अछि। परिवारपर दसो कट्ठा जमीन नइ छइ। जँ सभ परिवारकेँ रकबाक हिसाबे एक रंग जमीन रहैत तखन ओ सम-गम भेल। से तँ नहियेँ अछि। केकरो बेसी अछि केकरो कम अछि।”

संतोखी लालक विचारकेँ जीवानन मने-मन जमीनपर उतारि देखलक तँ बुझि पड़लै जे सोल्होअना सत् बात दोसकाका बजला अछि। मुड़ी डोलबैत जीवानन बाजल-

“हँ से तँ अछिए।”

जीवाननक समर्थन पेब संतोखी लाल बुझि गेला जे अपना मनक विचार जीवाननक मनमे चुभल। चुभल विचारकेँ आरो चुभक्-बैत संतोखी लाल बजला-

“जहिना समगम गामक जमीन आ लोक होइए तहिना खेत आ

ओकर उपजो होइ छइ। तँए लोक बजैए जे ई दर कट्ठा वा बीघा उपज भेल।”

बिच्चेमे जीवानन बाजल-

“हँ से तँ बजिते अछि। हमहूँ-अहाँ बजिते छी।”

विचारक डोरकेँ डोरियबैत संतोखी लाल बजला-

“ऐ हिसाबे तँ गामे नाश भऽ रहल अछि!”

जेना कोनो सुटकल नस जीवाननक अपन रूप पकैड़ नेने होइ आ ओइसँ खूनक प्रवाह अपन गतिये प्रवाहित हुअ लगल होइ तहिना भेल। बाजल-

“कनी-मनी बुझियो रहल छी आ कनी-मनी नहियोँ बुझि रहल छी।”

लगले सुरे जीवाननक मुहसँ ‘कनी-मनी’ सुनि संतोखी लालक मनमे सेहो कनी-मनी बिसवास जगलैन जे आब नीक जकाँ जीवाननकेँ बुझौल जा सकैए।

मनक विचारकेँ प्रवाहित करैत संतोखी लाल धाराप्रवाह बजला-

“अखन बेसी समैयो ने अछि जे बेसी बात कहबह। तँए दुइयेटा बात कहै छिअ। एकटा कहै छिअ जे जेकर मरम देख मर्माहत भेल छह से आ दोसर कहबह जइसँ तोहूँ आ गामो-समाज मर्हाहत भेल।”

कान ठाढ़ करैत जीवानन बाजल-

“बेस बात बजलौं दोसकाका।”

“गामक आधा जमीन जइसँ उपजा होइ छल, ओ उपजेक लोभक लोभसँ नाश भऽ गेल। पचास बर्खक हिसाबसँ कोसी नहर आ धारक फाटकक पुल बनल। ओना पचास बर्ख टपला पछातियो काजक अछिए, ओइसँ नहर सभ बनए लगल। किछु बनबो कएल,

मुदा खेत आ उपजाक हिसाब जखन जोड़बै तखन की भेल? बेसी बात अखन नहि, अखन एतबे।"

संतोखी लालक बात सुनि जीवाननक भकुआएल मनमे तरेगन जकाँ भुरुकबा भुकभुकी देलक।

बाजल-

"दोसर की भेल?"

जीवाननक जिज्ञासा देख संतोखी लाल बजला-

"दुरदर्शीक अभावसँ शासन-प्रशासन भकुआएल अछि। जे पूर्ववर्ती विचारक नकारात्मक रोग छी। जइसँ बान्ह-सड़क जे बनए लगल अछि ओ प्रभावित होइए। अही प्रभावक कारणे जिनगी भरिया गेल बुझि पड़ै छह।"

जीवाननकेँ जेना भक् खुजि गेल होइ तहिना बाजल-

"दोसकाका, गामपर अन्देशा होइत हेतइ। अखन जाइ छी, दोसर दिन आरो विचार बुझब। मुदा अखन चलब केना से कनी कहि दिअ।"

जीवाननक प्रश्न सुनि संतोखी लाल नजैर उठा चारूकात घुमौलैन तँ बुझि पड़लैन जे किसानक बीच नमहर फेरा उपस्थित भऽ गेल अछि। खेतीक शुरूआतीए समैमे भारी संकट उपस्थित भऽ गेल अछि। लोक धानक बीआ खसौनहि छल। केकरो-केकरो रोपाउ भेल छेलइ। एकाएक एते बरखा भेल जे बीआ सेहो नष्ट भेल आ खेत सेहो डुमि गेल। जँ कम किसानकेँ भेल रहैत तखन तँ बाँकी किसानसँ भरपाइ भऽ जाइत मुदा गाम-गामक ई फेरा अछि..!

संतोखी लाल बजला-

"नहरक छहर आ पक्की सड़कक घेरासँ जे जमीन डुमि गेल

अखन ओकरा पछुआ पहिने बाँचल जमीनकेँ अवाद करह, पछाइत जेहेन समए हएत तेहेन बुझल जाएत।"

हिआ हारि जीवानन बाजल-

"दोसकाका, नीक जमीन[11] दुआरे एकेठाम बीआ खसौने छेलौं, से भरि छाती पानिमे डुमि गेल। केना दोसरो-तेसरो बाधक जमीन अवादब..!"

मुस्की दैत संतोखी लाल बजला-

"तोरोसँ नमहर फेरा अपना लगि गेल अछि। मुदा अन्तो-अन्त परियास थोड़े छोड़ि देब।"

◌

शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाइ 2017

[11] बीआक लेल नीक जमीनक जरूरत होइ छइ।

आशापर पानि पड़ल

साँझूए-पहर विचार केलौं जे काल्हि झंझारपुरक हाट छी, हाट करए जाएब। परिवारमे रहै छी, तँए परिवारक काज करए पड़ैए। जाइसँ पहिने पत्नीसँ घरक खगता–वस्तु-जात–बुझि लेब जे की सभ लिअ पड़त। फेर विचार आगू बढ़ल। विचारकेँ आगू बढ़िते मनमे उठल जे तीन माससँ जीबछ भायसँ भेँट नहि भेल, तँए घुमैकाल हुनकोसँ भेँट करैत आएब।

गमैया हाट जकाँ झंझारपुरक हाट नहि लगैए। गमैया हाट खाली बेरू-पहरमे तीन-चारि घन्टा लगैए। ओही बीच लेबाल-बेचबालक लेनो-देन चलै छै आ झगड़-झाँटी सेहो चलबो करै छै आ फरियेबो करै छइ। मुदा झंझारपुर हाट से नहि अछि, भोरेसँ खरीद-बिकरीक संग लेन-देन सभ किछु शुरू भऽ जाइ छइ। हाटो नमहर छइहे। दूर-दूरसँ वेपारी सभ अबैए। हाटसँ एक दिन पहिनहि बेरूए-पहरसँ वेपारियो आ सौदो-वारीक आगमन हुअ लगै छइ। हाटक जगहो बँटल अछि। अन-पानिक एक भाग, तीमन-तरकारीक दोसर भाग, लटखेना समानक तेसर भाग, अहिना हाट बँटल अछि।

सबेरे-सकाल जलखै कए हाटक तैयारीमे जुटि गेलौं। साइकिलसँ जाएब। बारह-एक बजे तक घुमि कऽ आएब, तँए नहेलौं नहि। ओना, नहाइयो-नहाइमे अन्तर अछिए। ओ अन्तर अछि

काजक हिसाबे। काजक हिसाबे अन्तर ई अछि जे किछु काजो आ काजक समैयो नहेला पछाइत उपयुक्त अछि, आ किछु काज आ समय नहेला पूर्वक उपयुक्त अछि। अपना-ले यएह नीक भेल। किए तँ साइकिलसँ चललापर रौदो-वसात लगैए आ देहमे थकान सेहो होइते अछि, जइसँ ने खेनाइ खाइमे रूचिगर लगैए आ ने अराम करैमे। ओना, अरामो अर्थात अपन-अपन काजक हिसाबे होइए। तँए किछु काज एहेन अछि जे दिने भरि चलैए, किछु काज एहेन अछि जे रातियेकेँ चलैए आ किछु काज एहेन अछि जे दिन-राति दुनूमे चलैए। ओना तहूमे अपन-अपन विचारो आ काजोक हाथ रहिते अछि। जोगी काका छैथ जे दुनियाकेँ असार बुझि अनकर विपरीते दिशामे चलै छैथ। माने ई जे जखन दुनियाँक लोक अशान्त रहल तखन अपने शान्त रहै छैथ आ जखन दुनियाँक लोक शान्त रहल तखन अपने अशान्त भऽ जाइ छैथ। तेकर कारण की अछि से तँ असल जोगीए काका बुझै छैथ, हम सभ तँ अन्दाजे किछु बुझि सकै छी। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे ओहनो लोक जरूर छैथ जे जोगीए काका जकाँ नियम-कायदा बना विचारितो छैथ, चलितो छैथ आ जोगी कक्काक प्रशंसको सेहो छैथ। ओना, प्रशंसको-प्रशंसकमे अन्तर अछिए। किछु रक्षकक प्रशंसा करैबला अछि तँ किछु भक्षकक नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सभ दिनसँ अछि आ सभ दिन कि जे त्रेता युगक रावणसँ पहिनहिसँ आबि रहल अछि। मुदा तँए ओकरा वंशकेँ रावणक ढोलबज्जे वंश कहल जाए सेहो उचित नहियेँ हएत। मुदा एते तँ मानले ने जाएत जे जखन रावणक राज भेलै- सोनाक लंका, तखन जे ढोलबज्जा सबहक बहाली भेल, तइमे जँए ओ सभ फिट केण्डीडेट रहए तँए ओकर बहाली भऽ गेल आ दोसर-तेसर छँटा गेल।

दोकान सबहक समानक पुरजो आ रूपैओ मोड़ि कऽ जेबीमे रखलौं। काज तँ पछुआएले अछि मुदा मन शान्त नइ भेल सेहो नहियेँ

कहल जा सकैए। घरसँ साइकिल निकालि तजबीज केलौं जे कोनो पार्ट गड़बड़ तँ ने अछि। मुदा से सभ किछु ने रहए, जहिना पैछला दिन साइकिलकेँ रखने रही तहिना रहए। दुनू चक्कामे हवो ओहिना रहइ। मुदा तैयो ओंठासँ दाबि-दाबि देखलौं जे लोहाक पार्ट-पुरजा ने ता-जिनगी ओहिना रहत मुदा टायर-ट्यूब तँ से नहि छी। हवा-वसातक छी, केमहर देने कखन बहि जाएत तेकर कोनो ठीक छइ। मुदा से सभ कोनो गड़बड़ नइ भेल रहए। साल भरिक कीनल साइकिल जुआनीक चालिमे अछिए तँए सवारीक शंका सेहो मनमे नहियेँ भेल।

ओना, साल भरिक साइकिलकेँ कियो झड़खण्डी पुरान सेहो कहिते छैथ मुदा ओ अपन-अपन चालिये। जे जेते धुमसाहीसँ चढ़ल हेता तिनकर तेहेन तँ भाइये गेल हेतैन। ओना, किसानी जिनगीमे जेते साइकिलक सवारीक खगता अछि ओते तँ चढ़िते छी। साइकिलपर चढ़िते सवारीसँ काज धरिक मन समटा गेल। नीक सवारी सेहो अछिए आ काजक तँ पुरजे जेबीमे अछि। निघटल काज देख मन शान्त भाइए गेल। मन शान्त होइते जीबछ भायसँ भेँट करैक विचार फेर मनमे उपैक गेल। तीन माससँ भेँटो नहियेँ भेला अछि। ओना, जीबछ भायकेँ 'जीबछ भाय' बिआहक पछाइत कहए लगलयैन। तइसँ पहिने जखन केजरीवाल हाइ स्कूल झंझारपुरमे दुनू गोरे संगे पढ़ैत रही तखन हमहूँ जीबछे कहिऐ आ ओहो रमेशबे कहए। कहब जे बिआहमे एहेन कोन बाधा उपस्थित भऽ गेल जे जीबछा 'जीबछ भाय' भऽ गेला। बाधा कोनो ने भेल। भेल एतबे जे घरसँ कोस भरि हटल जीबछ भाइक गाम पच्छिममे छैन आ अपन पूबमे अछि। बिआह जीबछ भाइक गाममे भेल।

जीबछ भाइक परिवार आ अपन ससुरक परिवार सटले-सटल अछि। समाजिक सम्बन्धे दियादी परिवार जकाँ अछि। तइसँ पत्नी

जीबछकेँ भैया-भैया, छोट रहने कहबे करैत छेली। ओही भाँजे जीबछ 'जीबछ भाय' भेला।

हाटक काज कम्मे छल, करीब आधा घन्टाक। गामसँ निकैलते मनमे भेल जे किए ने जीबछ भायसँ भेँट केनहि जाइ। घुमतीकाल गरमा गेल रहब, तहूमे कतिका समए छी।

जीबछ भायपर नजैर अँटैक गेल। मनमे उठि गेल पैछला भेँट होइसँ पहिलुका जिनगी। एकाएक मुहसँ अपने फुटि पड़ल-

"बाह रे जीबछ भाय! जिनगीकेँ तेहेन लगारि कऽ पकैड़ लेला जे अखन तक प्राणपणसँ अडिग भेल छैथ। जहिना बच्चामे बजै छला जे 'अपन जिनगी अपन हाथ, अपन विचार अपन साथ।' से अखन तक निमाहि रहला अछि..!"

अपन सासुर आ जीबछ भाइक गाम लग पहुँच गेलौं। आब घरक टोल दिस रस्ता फुटत। मन ततमत करए लगल जे एक तँ सासुर, तैपर लंगोटिया संगी जीबछ भाय। छुच्छे हाथे जाएब नीक नहि हएत। जहिया बिआह नइ भेल छल तहिया स्कूलसँ घुमैकाल दुनू गोरे रस्ता-कातक पाखरी गाछ लग गुलियो-डण्टा खेलै छेलौं। आब से रहल। सभ परिवारमे धिया-पुता भेल। मन ततमताइते छल, सवारी कटि कऽ (सासुर दिसक) आगू बढ़ि मनकेँ तेना जीबछो भाइक परिवार आ अपन ससुरोक परिवार पकैड़ लेलक जे साइकिलक कोन बात जे हाथक हेंडिल सेहो बिसैर गेलौं। जखन ओइ गामसँ निकैल सीमा कातक पीपरक गाछ लग पहुँचलौं तखन मन्हुआएल मनक भक् खूगल। खुगिते मनमे उठल- जा! जीबछो भाइक गाम अपन सासुरो कटि गेल! जीबछ भायसँ तीन माससँ भेँट नइ भेल छल मुदा अपन सासुरो गेला तँ तीन मास भाइये गेल छल।

सीमा टपिते मनमे भेल भगवान जे करै छैथ ओ नीके करै छैथ।

जँ से नहि करै छैथ तँ एहेन विचार मनमे किए अबैए जे जँ एक संग दू-चारि गामक दू-चारिटा काज रहने पहिने जे अन्तिम गामक काज अछि ओमहरसँ करैक सुझबै छैथ? लगे दिसक गामसँ करैक सुझाव किए ने दइ छैथ? असथिर होइत मनमे उठल- भने हाटक काज पहिने कएल रहत। माने ई जे सारि-सरहोजिक मुँह तँ एते बन्न काइये सकै छी ने जँ कियो बजबो करती जे बतुऐलहा बहुत दिनपर एला अछि। तँ कहबे करबैन जे जे तेते ने काजमे ओझरा गेल छी जे दाढ़ियो-केश बनबैक पलखैत नइ भेटैए। आ ऐ एलहाक कोनो मानि नहि, ने अहाँ सभकेँ बेसी तीमन-तरकारीक जोगार करैक अछि आ ने बेसी काल हमहीं अँटकब। देखै छिऐ हाटसँ अबै छी, चीज-वौस संगेमे अछि।

झंझारपुर पहुँचते जीबछ भायकेँ देखलयैन जे आगू-आगू लफरल दच्छिन मुहेँ चलि जा रहल छैथ। पहिने कनी धकमकाइत धकचुकेलौं। किएक तँ ओ पएरे, कनी बेसी आगू रहैथ आ हम साइकिलसँ ओतबे पाछू रही। मुदा जेना-जेना लग होइत गेलौं तेना-तेना धकचुकी कमैत गेल। मुदा एकटा गड़बड़ तैयो भाइये गेल। गड़बड़ भेल ई जे पहाड़ परहक मन धरती लग पहुँच गेल। जइसँ मुहसँ निकैल गेल-

"की रौ जीबछा, तोहू हाटे जाइ छेँ?"

मने-मन चालीस बर्ख पूर्वक केजरीवाल हाइ स्कूलक विद्यार्थी बनि गेल छेलौं।

पाछूसँ टोकने जीबछ नीक जकाँ चिन्हलैन की नइ चिन्हलैन से तँ ओ जानैथ मुदा ठेकानि कऽ आकि बिनु ठेकानले जीबछ भाय बजला-

"सभ दिन तूँ एके रंग रहि गेलह।"

ओना, तैबीच साइकिल जीबछ भाइक लगमे पहुँच गेल तँए मन

बदलए लगल मुदा तैयो एतेक तँ मनमे उठिये गेल छल जे जँ बच्चासँ बुढ़ धरि एकबटिया बाट धेने जँ जिनगी निमैह जाए तँ अधले की भेल। मुदा एकटा विचारणीय प्रश्न तँ ऐछे जे जिनगी केहेन? मुहसँ खसल-

"मनुख कि कोनो गिरगिट छी जे सात रंग एके दिनमे बदलत।"

साइकिलसँ उतैर जीबछ भाइक मनक चेहरा निहारए लगलौं। तइ बिच्चेमे जीबछ भाय बजला-

"रमेश, तोहर सासुर जेतए हुअ, हमरे गाममे किए ने हुअ मुदा जँ अपन गाम बुझितियह तँ बरात बनि बरियाती पुरितियह?"

जीबछ भाय 'यौ' सँ उतैर 'हौ'पर आबि गेल। हमरो गर भेटल। गर ई भेटल जे 'रौ' लग पहुँचैमे एके डेग पाछू छी। भाय जखन बच्चाक संगी छी तखन जँ बचपना नइ आएल तखन ओ इतिहासक पन्ना भऽ जाएत किने...। ताबे झंझारपुरक थाना लग पहुँच गेलौं। थानाकेँ देखते एकटा घटना मन पड़ि गेल। घटना ई जे एकटा गाममे चुल्हिक आगिसँ आगि लगलै। खूब समान जरलै। यएह थाना जाँचमे पहुँच पुछलकै-

"आगि लगौनिहारकेँ देखलिऐ?"

घरवारी बाजल-

"नइ।"

"केकरोपर शक-सुभा?"

"नहि।"

"केकरोसँ दुश्मनी?"

घरवारी थकथका गेल।

तैबीच जोरसँ पुछि देलकै-

"बोल ने!"

घरवारी बाजल-

"हँ।"

"नाम बोल।"

पाँच गोरेक नाम घरवारी बाजल। ओ पाँचो गोरे अगिलग्गी केसमे फँसि गेल। थाना दिस जीबछो भाय तकलक आ अपनो नजैर गेल। बजलौं-

"जीबछ, अंग्रेजक समए जे खपड़ाबला घर बनल से अखनो ओहिना अछि। दुनियाँ बदैल गेल मुदा थानाक खपड़ा ओहिना-के-ओहिना अछि!"

हमर बात सुनि जीबछ भायकेँ जेना अकच्छ लगलैन तहिना अकछाइत बजला-

"अनकर टेटर केते देखैत रहब। देखब अपन टेटर जे लोक ने ते टेटराहा कहैए..!"

ओना ताबे हाटक अवाजक गनगनी सेहो कानमे आबए लगल आ अपन जिनगीक गपो पछुआएले छल, तँए चारू दिससँ मनकेँ समैट बजलौं-

"जीबछ, बहुत दिनक कुशलो-समाचार पछुआएले अछि आ हाटे तक रहबो अछि। तँए चलह कोनो चाहक दोकानपर चाहो पीब आ कुशलो-छेम भऽ जाएत।"

जीबछक मनेक बात जेना बाजल होइ तहिना मुस्की दैत जीबछ बाजल-

"जइ दोकानपर बेसी भीड़ हएत तइमे नहि, जइमे कम भीड़ हएत तेकरा ठिकिया कऽ चलह।"

सएह भेल। चाह दोकानक एकटा ब्रेंचपर दुनू गोरे बैसलौं। तैबीच दोकानक गहिंकीक बीच ऐ सालक बर्खाक चर्च चलि रहल छल। एकटा सुपौलक वेपारी आ एकटा समस्तीपुरक वेपारी संगे चाहो पीबैत रहैथ आ गपो-सप्प करै छला। दुनू गोरेक बाहरी समाचार बुझि सुनए लगलौं। समस्तीपुरक वेपारी बजला-

"ऐ बेर मरो-मसाला आ तीमनो-तरकारी किछु दिन महग रहत। ओना, तीमन-तरकारी ऐगला खेती तक महग रहत। मुदा मर-मसाला सालो भरि रहत।"

ओना, मने-मन सुपौलक वेपारी बर्खाक उपद्रवपर नजैर दौड़बैत रहैथ, मुदा विचारमे मजगुती आनै दुआरे पुछलखिन-

"से किए?"

समस्तीपुरक वेपारी कहलकैन-

"तेहेन बर्खा अगते धेलक जे आसिन तक धेनहि रहल, जइसँ बरसाती सभ फसिल मारल गेल।"

समस्तीपुरबला वेपारीक दुखनामा सुनि सुपौलबला वेपारी बजला-

"अहाँक इलाकासँ कि कम क्षति हमरा इलाकामे भेल। धान रौपैले जेते बीआ बाउग भेल सभ बीरारेमे सड़ि गेल। जइसँ छोटका गिरहत तँ कनी-मनी करो-कुटुम ऐठामसँ आ आनो-आन इलाकासँ कीनि-कीनि आनि अवादबो केलैन। मुदा बड़का गिरहत सभ मुहेँ तकैत रहि गेला।"

दुनू वेपारीक बातकेँ अपने तँ समाचार जकाँ बुझलौं, मुदा जीबछ भाय जेना अपन दुख ओइमे घोरए लगला तहिना कखनो कड़ुआएल सन तँ कखनो मधुआएल सन चेहराक रंग बदलए लगलैन। ओना, चेहराक रंग बदलैक असल कारण तँ जीबछ भाय

अपने बुझता, मुदा हमरा नीक नै लागल। अन्दाजमे एते जरूर आबि गेल जे जीबछ भाय कोनो-ने-कोनो सूत्रसँ जरूर बन्हा रहला अछि जइसँ मन मलिन भऽ रहल छैन। मुदा से तँ बुझला पछाइत ने बुझब। अखन तँ जहिना हम तहिना जीबछ भाय तेहल्ला छी, तँए जँ किछु बजैक अछि तँ तेहलपन्नी जकाँ विचारि कऽ बाजब आ जँ नइ बजैक रहत तँ तेहल्ला जकाँ सुनब। तइले अनेरे मनकेँ अनोन-बिसनोन किए करब। तैबीच दुनू वेपारी खेती-बाड़ीसँ आगू बढ़ि अपन वेपारक बात वेपारी-भाषामे शुरू केलैन, हमहूँ दुनू गोरे निचेन भेलौं।

निचेन होइते जीबछ भाय कहलैन-

"रमेश, आब अपना सभ एक अवस्थापर पहुँच गेलौं, तँए जेकरा लोक लाजो कहैए आ सियनपन सेहो कहैए, तेकरा तँ निमाहै पड़त किने...।"

खनहन मन चाह पीने भाइये गेल छल, तँए बिच्चेमे बजा गेल-

"हँ, से तँ कहले जाइए। एकरा के काटत।"

हमर सुढ़ियाएल विचार सुनि आकि की, जीबछ भाय अपन मुड़ियाएल मने बजला-

"रमेश, अहाँ गामक जमाए छी, गाम-गामक लोक हाटक काजे आबि रहला अछि, जँ कियो सुनि लथि तँ मने-मन दुइये रंगक बात ने बजता। जे या तँ पढ़ल-लिखल गदहा अछि वा दुनू गोरेक बीच कोनो मतान्तर भेल तँए गारि-गरौबैल करैए।"

मुहसँ तँ किछु बजैक साहस नइ भेल मुदा मुड़ी डोलबैत इशारामे कहलयैन-

"हँ, से तँ कहबे करत।"

ओना हारल नटुआ जकाँ जीबछ भाय बोकियाबए नहि लगला

बल्कि अपन विचारकेँ आगू बढ़बैत बजला-

"ई सत्य बात छी जे हाइ स्कूलमे दुनू गोरे संगी बनि गुलियो-डण्टा खेलै छेलौं आ लत्ती बाबूक हाथे अंग्रेजी विषयमे मारियो खाइ छेलौं। मुदा आब ओ इतिहासक पन्ना पकैड़ लेलक। ओना, गाममे बिआह भेने दोसर-रंगक सम्बन्ध जरूर बनल। मुदा एक अवस्थो तँ भेबे कएल तँए आब तँ अपनाकेँ सचेत करैत चलब नीक।"

जहिना असथिरो पानि धारा पबिते धरिया कऽ धारा बनि दौड़ए लगैए तहिना अपन मन जीबछ भाइक विचारक धारामे धड़िया पहीरि धारा बनि दौड़ए लगल। बजलौं-

"जीबछ भाय, अहाँ अपन सीमा परहक विचार देलौं मुदा छोड़ू दुनियाँ-दारीक विचार, अपन हाल-चाल कहू।"

'अपन हाल-चाल' सुनिते हरलाहा जुआरीक पाशा जहिना जीतलाहा दिस बढ़ैत तहिना अपनो पाशा पलटल। पलटैक कारण भेल जीबछ भाइक ई साल[12] पानिमे डुमि गेल छेलैन। जइसँ जीवनक आशापर पानि फेरा गेलैन। तँए ऐगला जिनगी जोड़ैक समस्या बीचमे उपस्थित भाइये गेल छेलैन जइसँ मनमे मलिनता आबि गेल छेलैन।

जीबछ भाय बजला-

"पैछला साल हवा उठल जे किसानक जिनगीमे क्रान्ति औत, दू-गुणाक वृद्धि हएत। सभ दिन क्रान्तिक पुजारी रहलौं। सरकारक विचारकेँ समर्थन करैत सहयोग करैले आगू बढ़लौं। ओना, मनमे हुअए जे जखन राजनीतिसँ हटल छी तखन अनेरे किए सरकारक पार्टी बनी आकि विरोधी बनी। मुदा हवामे भँसि गेलौं।"

मनमे उठल- जीबछ भाय सन थितगर लोक, जे बच्चेसँ जेहने

[12] किसानी जिनगीक साल

एकचलिया लोक तेहने एक विचरिया सेहो छथिए! मुदा से जखन भँसिया गेला तखन एकर किछु खास कारण जरूर अछि। मुदा ओ तँ सुनला पछातिये ने बुझि सकै छी। पुछलयैन-

“से की भाय साहैब?”

पैछले विचारकेँ जोड़ैत जीबछ भाय आगू बजला-

“किसानक उत्पादन वृद्धि दुगुणा हएत तइ बुझैमे कनी अपनो चूक भेल। तँए सालमे वृद्धि नहि भऽ जिनगीए पानिमे डुमि गेल।”

‘जिनगी डुमब’ सुनिते जेना मनमे मथनक अकाससँ विचारक ठनका खसल तहिना मन चोटा गेल। चोटाएले मने बजलौं-

“से की-केना भाय साहैब?”

जेना केकरो दुख कियो सुनि दुख-हँसी हँसैए तँ कियो सुख-हँसी, तहिना दुख-हँसीक मुस्की दैत जीबछ भाय कहलैन-

“भाय रमेश, अहाँसँ लाथ कोन। जइ दिशामे डेग उठबैक छल तइ दिशामे डेग नहि उठा दोसर दिशामे उठि गेल!”

मनमे पहिलुके ठनका जकाँ जेना फेर दोहरा कऽ खसल। तेकर कारण भेल जे दिशा भूलने तँ लोक दिशियान्तर भाइये जाइए...।

पुछलयैन-

“से की भाय साहैब?”

जीबछ भाय बजला-

“अखन धरि खेतीक काज माने माइटिक काज करैत आबि रहल छी, पाइनिक जानकारी नइ अछि माने माछ पोसैक। धोखा भेल अपन खेतीकेँ उन्नतिक दिशामे नहि बढ़ा, पानिक भाँजमे पड़ि गेलौं।”

अपनो मनमे रहए जे तेते ने लोक माछक भोज करए लगल अछि जे सभ दिन एकर बजार कड़कले रहत तँए जिज्ञासा जगले

रहए। पुछलयैन-

“से की भाय साहैब?”

जीबछ भाय बजला-

“मछवार सभसँ माछ पोसैक विचार केलौं। एक बीघाक एकटा पोखैर गाममे मछुआ सोसाइटिबलासँ बन्दोवस्त लेलौं।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“बुढ़ाड़ियोमे एहेन ताव तँ अहीं सन तौगर आदमीकेँ हुअए! पछाइत की भेल?”

जीबछ भाय नमहर साँस छोड़ैत बजला-

“साल भरिक जे कमेलहा-खटेलहा छल, से लगा पोखरिक वन्दोवस्ती रूपैआ माथपर लादि लेलौं!”

काजमे केतौ गड़बड़ नहि देख बजलौं-

“केहेन बढ़ियाँ ते कहलौं। ऐमे की भेल?”

जीबछ भाय बजला-

“तेहेन ने अगते बर्खा भेल जे बरसाती पोखरिक मुँह-कान बनौनाइ पछुआएले रहल। सभटा माछ भँसि गेल।”

◌

शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017

कथा लेखन क्रम

1. भैंटक लावा- शब्द संख्या : 3100, 2. बिसाँढ़- शब्द संख्या : 2516, 3. पीरारक फड़- शब्द संख्या : 2064, 4. अनेरुआ बेटा- शब्द संख्या : 3369, 5. दूटा पाइ- शब्द संख्या : 3294, 6. बोनिहारिन मरनी- शब्द संख्या : 3412, 7. हारि◌-जीत- शब्द संख्या : 2373, 8. ठेलाबला- शब्द संख्या : 2572, 9. जीविका- शब्द संख्या : 3655, 10. रिक्साबला- शब्द संख्या : 3963, 11. चुनवाली- शब्द संख्या : 2452, 12. डीहक बटबारा- शब्द संख्या : 4789, 13. भैयारी- शब्द संख्या : 4026, 14. बहिन- शब्द संख्या : 2688,15. घरदेखिया- शब्द संख्या : 4021, 16. पछताबा- शब्द संख्या : 2663, 17. डाक्टर हेमन्त- शब्द संख्या : 4407, 18. बाबी- शब्द संख्या : 2167 19. कामिनी- शब्द संख्या : 2289, 20. स्रष्टाक समग्र रचना- शब्द संख्या : 137, 21. प्रतिभा- शब्द संख्या : 154, 22. मर्म- शब्द संख्या : 142, 23. अधखरूआ- शब्द संख्या : 255, 24. समैयक बेरबादी- शब्द संख्या : 213, 25. पहिने तप तखनि ढलिहैं- शब्द संख्या : 084, 26. खलीफा उमरक सिनेह- शब्द संख्या : 165, 27. जखने जागी तखने परात- शब्द संख्या : 103, 28. अस्तित्वक समाप्ति- शब्द संख्या : 218, 29. खजाना- शब्द संख्या : 388, 30. उग्रघारा- शब्द संख्या : 328, 31 बेवहारिक- शब्द संख्या : 218, 32. समर्पण- शब्द संख्या : 149, 33 उत्थान-पतन- शब्द संख्या : 138, 34. देवता- शब्द संख्या : 232, 35. पाप आ पुण्य- शब्द संख्या : 218, 36. परख- शब्द संख्या : 129, 37. आलसी- शब्द संख्या : 136, 38. प्रेम- शब्द संख्या : 293, 39. हैरियट स्टो- शब्द संख्या : 137, 40. बुझैक ढंग- शब्द संख्या : 142, 41. श्रमिकक इज्जत- शब्द संख्या : 093, 42. वंश- शब्द संख्या : 074, 43. तियाग- शब्द संख्या : 145, 44. सद्विचार- शब्द संख्या : 184, 45. साहस- शब्द संख्या : 103, 46. बरदास- शब्द संख्या : 133,

47. भूल- शब्द संख्या : 139, 48. धैर्य- शब्द संख्या : 099, 49. मनुखक मूल्य- शब्द संख्या : 099, 50. मदति नै चाही- शब्द संख्या : 209, 51. मेहनतिक दरद- शब्द संख्या : 281, 52. मैक्सिम गोर्की- शब्द संख्या : 146, 53. मूलधन- शब्द संख्या : 174, 54. कपटी मित- शब्द संख्या : 281, 55. भीख- शब्द संख्या : 118, 56. भगवान- शब्द संख्या : 098, 57. एकाग्रचित- शब्द संख्या : 261, 58. सीखैक जिज्ञासा- शब्द संख्या : 101, 59. अनुभव- शब्द संख्या : 092, 60. आसिरवादक विरोध- शब्द संख्या : 088, 61. धर्मक असल रूप- शब्द संख्या : 197, 62. सौन्दर्य- शब्द संख्या : 138, 63. स्तब्ध- शब्द संख्या : 257, 64. एकता- शब्द संख्या : 236, 65. विधवा बिआह- शब्द संख्या : 176, 66. देश सेवाक व्रत- शब्द संख्या : 134, 67. आत्मबल- 1- शब्द संख्या : 110, 68. स्वाभिमान- शब्द संख्या : 121, 69. कलंक- शब्द संख्या : 429, 70. बुलकी- शब्द संख्या : 211, 71. भद्रपुरुष- शब्द संख्या : 173, 72. झूठ नै बाजब- शब्द संख्या : 103, 73. आर्दश माए- शब्द संख्या : 097, 74. नारी सम्मान- शब्द संख्या : 100, 75. अनुशासन- शब्द संख्या : 190, 76. सादा जिनगी- शब्द संख्या : 127, 77. विचारक उदय- शब्द संख्या : 072, 78. पुष्ट इकाइसँ समर्थराष्ट बनैत- शब्द संख्या : 102, 79. डर नै करी- शब्द संख्या : 119, 80. आसिरवाद उलैट गेल- शब्द संख्या : 223, 81. रत्न गमेवाक दुख- शब्द संख्या : 226, 82. निशाँ- शब्द संख्या : 194, 83. सामना- शब्द संख्या : 124, 84. शिष्टाचार- शब्द संख्या : 171, 85. ठक- शब्द संख्या : 115, 86. पत्नीक अधिकार- शब्द संख्या : 128, 87. शिनीची सिनेह- शब्द संख्या : 211, 88. सिखबैक उपय- शब्द संख्या : 171, 89. कर्तव्यपरायन सुगा- शब्द संख्या : 171 90. तस्वीर- शब्द संख्या : 134, 91. मितक प्रयोजन- शब्द संख्या : 359, 92. स्वार्थपूर्ण विचार- शब्द संख्या : 121, 93. संगीक महत- शब्द संख्या : 130, 94. उपहास- शब्द संख्या : 196, 95. महादान- शब्द संख्या : 176, 96. भाग्यवाद- शब्द संख्या : 171, 97. सद्वृति◌- शब्द संख्या : 150, 98. आश्रम नहि सोभाव बदली- शब्द संख्या : 281, 99. पुरुषार्थ- शब्द संख्या : 255, 100. नैष्ठिक सुधन्वा- शब्द संख्या : 274, 101. सद्गृहस्त- शब्द संख्या : 195, 102. सद्भाव- शब्द संख्या : 134, 103. आलस्य वनाम पिशाच- शब्द संख्या : 302, 104. स्वर्ग आ नर्क- शब्द संख्या : 265, 105. यथार्थक बोध- शब्द संख्या : 115, 106. विद्वताक मद- शब्द संख्या : 165, 107. अनन्त- शब्द संख्या : 128, 108. हँसैत लहास- शब्द संख्या :

184, 109. अनगढ़ चेतना- शब्द संख्या : 162, 110. सत्य विद्या- शब्द संख्या : 108, 111. समता- शब्द संख्या : 165, 112. जेते चोट तेते सक्कत- शब्द संख्या : 116, 113. परिष्कार- शब्द संख्या : 198, 114. कथनी नै करनी- शब्द संख्या : 176, 115. शालीनता- शब्द संख्या : 157, 116. मजूरी- शब्द संख्या : 140, 117. जीवन यात्रा- शब्द संख्या : 145, 118. ज्योति◌- शब्द संख्या : 081, 119. पवनक विवेक- शब्द संख्या : 180, 120. आत्मबल-2- शब्द संख्या : 105, 121. खुदीराम बोस- शब्द संख्या : 172, 122. शिष्यकेँ शिक्षेटा नै परीक्षो- शब्द संख्या : 187, 123. लौह पुरुष- शब्द संख्या : 124, 124. जंग लगल- शब्द संख्या : 150, 125. जीवकक परीछा- शब्द संख्या : 117, 126. तप- शब्द संख्या : 162, 127. उल्टा अर्थ- शब्द संख्या : 203, 128. जाति नहि पानि- शब्द संख्या : 142, 129. ऊँच-नीच- शब्द संख्या : 206, 130. पागलखाना- शब्द संख्या : 223, 131. दोहरी मारि◌- शब्द संख्या : 1357, 132. केना जीब? - शब्द संख्या : 1031, 133. नवान- शब्द संख्या : 2282, 134. तिलासंक्रान्तिक लाइ- शब्द संख्या : 2034, 135. भाइक सिनेह- शब्द संख्या : 1166, 136. प्रेमी- शब्द संख्या : 2520, 137. बपौती सम्पति- शब्द संख्या : 2352, 138. डंका- शब्द संख्या : 2422, 139. संगी- शब्द संख्या : 1858, 140. ठकहरबा- शब्द संख्या : 2351, 141. अतहतह- शब्द संख्या : 2477, 142. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या : 3045, 143. ऑपरेशन- शब्द संख्या : 1605, 144. धर्मनाथ- शब्द संख्या : 1983, 145. सरोजनी- शब्द संख्या : 1816, 146. सुभद्रा- शब्द संख्या : 1910, 147. सोनमाकाका- शब्द संख्या : 1537, 148. दोती बिआह- शब्द संख्या : 1816, 149. पड़ाइन- शब्द संख्या : 1988, 150. केतौ नै- शब्द संख्या : 1211, 151. बिहरन- शब्द संख्या : 3174, 152. मायराम- शब्द संख्या : 2037, 153. गोहिक शिकार- शब्द संख्या : 2113, 154. मातृभूमि- शब्द संख्या : 1036, 155. भबडाह- शब्द संख्या : 2053, 156. परिवारक प्रतिष्ठा- शब्द संख्या : 1888, 157. फागु- शब्द संख्या : 2096, 158. लफ साग- शब्द संख्या : 1192, 159. तिलकोरक तरुआ- शब्द संख्या : 1826, 160. एकोटा ने- शब्द संख्या : 1071, 161. धोतीक मान- शब्द संख्या : 472, 162. साझी- शब्द संख्या : 989, 163. सतभैंया पोखरि- शब्द संख्या : 2990, 164. न्याय चाही- शब्द संख्या : 1308, 165. पनियाहा दूध- शब्द संख्या : 2114, 166. कर्ज- शब्द संख्या : 2860, 167. परदेशी बेटी- शब्द संख्या : 2451, 168. मान- शब्द संख्या : 631, 169. मनोरथ- शब्द

संख्या : 1151, 170. कियो ने- शब्द संख्या : 3699, 171. सूदि भरना- शब्द संख्या : 904, 172. जन्मतिथि- शब्द संख्या : 2356, 173. इमानदार घूसखोर- शब्द संख्या : 2204, 174. पटियाबला- शब्द संख्या : 2356, 175. सनेस- शब्द संख्या : 1248, 176. उलबा चाउर- शब्द संख्या : 2588, 177. बलजोर- शब्द संख्या : 2320, 178. बेटी हम अपराधी छी- शब्द संख्या : 3240, 179. बगबारि◌- शब्द संख्या : 1847, 180. मुइलो बिसेबनि- शब्द संख्या : 4244, 181. सड़ल दारीम- शब्द संख्या : 2442, 182. चुप्पा पाल- शब्द संख्या : 2517, 183. एक धाप जमीन- शब्द संख्या : 2522, 184. ओझरी- शब्द संख्या : 1963, 185. मुसहनि- शब्द संख्या : 2277, 186. केलवाड़ी- शब्द संख्या : 2628, 187. स्वरोजगार- शब्द संख्या : 2338, 188. घूर- शब्द संख्या : 2749, 189. कनियाँ-पुतरा- शब्द संख्या : 2340, 190. वारंट- शब्द संख्या : 1601, 191. गामक मुँह फेर देखब- शब्द संख्या : 2897, 192. कचोट- शब्द संख्या : 313, 193. काँच सूत- शब्द संख्या : 390, 194. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 267, 195. खिलतोड़- शब्द संख्या : 396, 196. मुँह-कान- शब्द संख्या : 234, 197. अनदिना- शब्द संख्या : 312, 198. अपन काज- शब्द संख्या : 366, 199. दूरी- शब्द संख्या : 264, 200. पुरनी भौजी- शब्द संख्या : 116, 201. छूटि गेल- शब्द संख्या : 111, 202. काल्हि दिन- शब्द संख्या : 151, 203. अप्पन हारि- शब्द संख्या : 283, 204. कनफुसकी- शब्द संख्या : 137, 205. मुँहक बात मुहेँमे- शब्द संख्या : 135, 206. कनीटा बात- शब्द संख्या : 098, 207. गति◌-गुद्दा- शब्द संख्या : 250, 208. बिसवास- शब्द संख्या : 316, 209. कचहरिया भाय- शब्द संख्या : 270, 210. गुहारि- शब्द संख्या : 432, 211. शिवजीक डाक-बाक्- शब्द संख्या : 089, 212. सोग- शब्द संख्या : 341, 213. पनचैती- शब्द संख्या : 197, 214. कनमन- शब्द संख्या : 313, 215. अजाति- शब्द संख्या : 085, 216. पटोर- शब्द संख्या : 412, 217. फुसियाह- शब्द संख्या : 308, 218. गति◌-मुक्ति- शब्द संख्या : 241, 219. चौकीदारी- शब्द संख्या : 437, 220. झगड़ाउ-झोटैला- शब्द संख्या : 256, 221. घबाह ट्यूशन- शब्द संख्या : 246, 222. दादी-माँ- शब्द संख्या : 408, 223. पटोटन- शब्द संख्या : 349, 224. मुसाइ पण्डित- शब्द संख्या : 567, 225. भरमे-सरम- शब्द संख्या : 231, 226. देखल दिन- शब्द संख्या : 434, 227. फज्झति- शब्द संख्या : 403, 228. अकास दीप- शब्द संख्या : 233, 229. बुधि◌-बधिया- शब्द संख्या : 268, 230. पहाड़क बेथा- शब्द संख्या

: 216, 231. उमकी- शब्द संख्या : 324, 232. बजन्ता-बुझन्ता- शब्द संख्या : 147, 233. चर्मरोग- शब्द संख्या : 578, 234. शंका- शब्द संख्या : 325, 235. ओसार- शब्द संख्या : 213, 236. छोटका काका- शब्द संख्या : 394, 237. सीमा-सरहद- शब्द संख्या : 195, 238. रमैत जोगी बोहैत पानि- शब्द संख्या : 253, 239. गंजन- शब्द संख्या : 172, 240. सजए- शब्द संख्या : 089, 241. घटक बाबा- शब्द संख्या : 335, 242. आने जकाँ- शब्द संख्या : 048, 243. दान-दछिना- शब्द संख्या : 150, 244. उड़हड़ि- शब्द संख्या : 503, 245. मत्हानि- शब्द संख्या : 260, 246. मेकचो- शब्द संख्या : 221, 247. झुटका विदाइ- शब्द संख्या : 350, 248. मुँहक खतियान- शब्द संख्या : 278, 249. कोसलिया- शब्द संख्या : 234, 250. हूसि गेल- शब्द संख्या : 204, 251. पोखला कटहर- शब्द संख्या : 153, 252. सरही सौबजा- शब्द संख्या : 267, 253. तेरहो करम- शब्द संख्या : 322, 254. डुमैत जिनगी- शब्द संख्या : 295, 255. चोर-सिपाही- शब्द संख्या : 197, 256. दूधबला- शब्द संख्या : 271, 257. टाइपिस्ट- शब्द संख्या : 263, 258. समदाही- शब्द संख्या : 300, 259. बुढ़िया दादी- शब्द संख्या : 331,

260. पाइक मोल- शब्द संख्या : 2412, तिथि : 22 दिसम्बर 2013
261. चोरुक्का झगड़ा- शब्द संख्या : 538, तिथि : 24 दिसम्बर 2013
262. अपसोच- शब्द संख्या : 548, तिथि : 26 दिसम्बर 2013
263. पतझाड़- शब्द संख्या : 2587, तिथि : 31 दिसम्बर 2013
264. झीसीक मजा- शब्द संख्या : 453, तिथि : 1 जनवरी 2014
265. मति-गति- शब्द संख्या : 1807, तिथि : 07 जनवरी 2014
266. अपन सन मुँह- शब्द संख्या : 5696, तिथि : 25 जनवरी 2014
267. रिजल्ट- शब्द संख्या : 2343, तिथि : 16 जनवरी 2014
268. सुमति- शब्द संख्या : 3052, तिथि : 30 जनवरी 2014
269. फेर पुछबनि- शब्द संख्या : 346, तिथि : 31 जनवरी 2014
270. माघक घूर- शब्द संख्या : 1683, तिथि : 06 फरवरी 2014
271. खर्च- शब्द संख्या : 330, तिथि : 07 फरवरी 2014
272. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या : 342, तिथि : 10 फरवरी 2014
273. पेटगनाह- शब्द संख्या : 593, तिथि : 14 फरवरी 2014
274. बड़की माता- शब्द संख्या : 1224, तिथि : 18 फरवरी 2014

275. धरती-अकास- शब्द संख्या : 184 , तिथि : 19 फरवरी 2014
276. बकठाँइ- शब्द संख्या : 883, तिथि : 24 फरवरी 2014
277. चैन-बेचैन- शब्द संख्या : 936, तिथि : 09 मार्च 2014
278. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या : 645 , तिथि : 11 मार्च 2014
279. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या : 287, तिथि : 12 मार्च 2014
280. नीक बोल- शब्द संख्या : 565, तिथि : 13 मार्च 2014
281. सुआद- शब्द संख्या : 624, तिथि : 14 मार्च 2014
282. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या : 690, तिथि : 19 मार्च 2014
283. भौंटक गहमी- शब्द संख्या : 508, तिथि : 24 मार्च 2014
284. भँसैत नाह- शब्द संख्या : 597, तिथि : 26 मार्च 2014
285. पान पराग- शब्द संख्या : 1692, तिथि : 29 मार्च 2014
286. सिरमा- शब्द संख्या : 760, तिथि : 31 मार्च 2014
287. नौमीक हकार- शब्द संख्या : 1119, तिथि : 03 अप्रैल 2014
288. फोंक मकड़- शब्द संख्या : 1744, तिथि : 10 अप्रैल 2014
289. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1252, तिथि : 14 अप्रैल 2014
290. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या : 326, तिथि : 16 अप्रैल 2014
291. खोंटकर्मा- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 19 अप्रैल 2014
292. किछु ने- शब्द संख्या : 503, तिथि : 22 अप्रैल 2014
293. झकास- शब्द संख्या : 1589, तिथि : 26 अप्रैल 2014
294. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या : 2919, तिथि : 01 मई 2014
295. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या : 611, तिथि : 04 मई 2014
296. अर्जुन रोग- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 7 मई 2014
297. गरदनि कट्टा बेटा- शब्द संख्या : 575, तिथि : 10 मई 2014
298. नैहराक धाड़- शब्द संख्या : 885, तिथि : 14 मई 2014
299. अवाक- शब्द संख्या : 1047, तिथि : 17 मई 2014
300. पोखरिक सैरात- शब्द संख्या : 923, तिथि : 20 मई 2014
301. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या : 409, तिथि : 22 मई 2014
302. धरम काँट- शब्द संख्या : 395, तिथि : 23 मई 2014
303. पलभरि- शब्द संख्या : 1116, तिथि : 24 मई 2014

304. किरदानी- शब्द संख्या : 5296, तिथि : 14 जुन 2014
305. सगहा- शब्द संख्या : 2867, तिथि : 22 जुन 2014
306. अकाल- शब्द संख्या : 1238, तिथि : 24 जुन 2014
307. उझट बात- शब्द संख्या : 1152, तिथि : 26 जुन 2014
308. कर्जखौक- शब्द संख्या : 1175, तिथि : 2 जुलाई 2014
309. उनटन- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 6 जुलाई 2014
310. रेहना चाची- शब्द संख्या : 1307, तिथि : 9 जुलाई 2014
311. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 11 जुलाई 2014
312. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या : 1229, तिथि : 14 जुलाई 2014
313. हारि- शब्द संख्या : 1240, तिथि : 16 जुलाई 2014
314. सोनाक सुइत- शब्द संख्या : 1135, तिथि : 17 जुलाई 2014
315. मरूभूमि◌- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 20 जुलाई 2014
316. असगरे- शब्द संख्या : 1557, तिथि : 24 जुलाई 2014
317. पुरनी नानी- शब्द संख्या : 1304, तिथि : 27 जुलाई 2014
318. कटा-कटी- शब्द संख्या : 1140, तिथि : 30 जुलाई 2014
319. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1206, तिथि : 3 अगस्त 2014
320. गलती अपने भेल- शब्द संख्या :3386, तिथि : 06 अगस्त 2014
321. चोरक चोरबती- शब्द संख्या : 884, तिथि : 6 अगस्त 2014
322. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 10 अगस्त 2014
323. सजल स्मृति- शब्द संख्या : 2363, तिथि : 14 अगस्त 2014
324. सनेस- शब्द संख्या : 2654, तिथि : 16 अगस्त 2014
325. सए कच्छे- शब्द संख्या : 488, तिथि : 19 अगस्त 2014
326. एक मुठी घास- शब्द संख्या : 411, तिथि : 21 अगस्त 2014
327. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या : 318, तिथि : 24 अगस्त 2014
328. पुरस्कार- शब्द संख्या : 2414, तिथि : 24 अगस्त 2014
329. गावीस मोइस- शब्द संख्या : 687, तिथि : 29 अगस्त 2014
330. मनकमना- शब्द संख्या : 6118, तिथि : 19 सितम्बर 2014
331. घरवास- शब्द संख्या : 4884, तिथि : 26 सितम्बर 2014
332. समधीन- शब्द संख्या : 6096, तिथि : 04 अक्टुबर 2014

333. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या : 1616, तिथि : 7 अक्टुबर 2014
334. कलम हानि कऽ- शब्द संख्या : 2226, तिथि : 10 अक्टुबर 2014
335. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 14 अक्टुबर 2014
336. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या : 2596, तिथि : 20अक्टुबर 2014
337. जितिया पावनि- शब्द संख्या : 3706, तिथि : 24 अक्टुबर 2014
338. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या : 3690, तिथि : 30 अक्टुबर 2014
339. भैयारी हक- शब्द संख्या : 3131, तिथि : 4 नवम्बर 2014
340. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या : 3356, तिथि : 13 नवम्बर 2014
341. खुदियाएल- शब्द संख्या : 2894, तिथि : 17 नवम्बर 2014
342. खटहा आम- शब्द संख्या : 3528, तिथि : 22 नवम्बर 2014
343. ढकरपेँच- शब्द संख्या : 3740, तिथि : 30 नवम्बर 2014
344. असहाज- शब्द संख्या : 2853, तिथि : 04 दिसम्बर 2014
345. समरथाइक भूत- शब्द संख्या : 3832, तिथि : 07 दिसम्बर 2014
346. विदाइ- शब्द संख्या : 5103, तिथि : 17 दिसम्बर 2014
347. खलओदार- शब्द संख्या : 731, तिथि : 19 दिसम्बर 2014
348. मनुखदेवा- शब्द संख्या : 1016, तिथि : 22 दिसम्बर 2014
349. उमेद- शब्द संख्या : 3643, तिथि : 31 दिसम्बर 2014
350. गलगर भैंस- शब्द संख्या : 3392, तिथि : 4 जनवरी 2015
351. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या : 3328, तिथि : 9 जनवरी 2015
352. सुरता- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 15 जनवरी 2015
353. असुध मन- शब्द संख्या : 2353, तिथि : 19 जनवरी 2015
354. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या : 1410, तिथि : 21 जनवरी 2015
355. ठोररंगू- शब्द संख्या : 1531, तिथि : 23 जनवरी 2015
356. लगबे ने कएल- शब्द संख्या : 1449, तिथि : 25 जनवरी 2015
357. उकड़ू समय- शब्द संख्या : 1467, तिथि : 27 जनवरी 2015
358. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या : 1615, तिथि : 29 जनवरी 2015
359. नहरकन्हा- शब्द संख्या : 1209, तिथि : 11 मार्च 2015
360. बटखौक- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 14 मार्च 2015
361. पसेनाक धरम- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 16 मार्च 2015

362. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या : 1103, तिथि : 18 मार्च 2015
363. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या : 1243, तिथि : 20 मार्च 2015
364. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या : 1234, तिथि : 23 मार्च 2015
365. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या : 1207, तिथि : 26 मार्च 2015
366. नोकरिहारा- शब्द संख्या : 1146, तिथि : 26 मार्च 2015
367. घसवाहि- शब्द संख्या : 1213, तिथि : 28 मार्च 2015
368. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या : 1319, तिथि : 1 अप्रैल 2015
369. छूआ- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 6 अप्रैल 2015
370. दोसराइत- शब्द संख्या : 1270, तिथि : 9 अप्रैल 2015
371. लछनमान- शब्द संख्या : 1173, तिथि : 13 अप्रैल 2015
372. हमर कोन दोख- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 17 अप्रैल 2015
373. मौसी- शब्द संख्या : 1393, तिथि : 21 अप्रैल 2015
374. नटकिया गति- शब्द संख्या : 1313 24 अप्रैल 2015
375. खाए चाहैए- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 27 अप्रैल 2015
376. मधुमाछी- शब्द संख्या : 1892, तिथि : 07 मई 2015
377. दनगर घास- शब्द संख्या : 2775, तिथि : 13 मई 2015
378. सझिया खेती- शब्द संख्या : 3135, तिथि : 23 मई 2015
379. मुफतिया माल- शब्द संख्या : 3231, तिथि : 29 मई 2015
380. मथाहाथ- शब्द संख्या : 2923, तिथि : 02 जून 2015
381. पहपैट- शब्द संख्या : 1369, तिथि : 05 जून 2015
382. इजोरिया राति- शब्द संख्या : 1512, तिथि : 07 जून 2015
383. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 12 जून 2015
384. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या : 605, तिथि : 14 जून 2015
385. डकरा हाल- शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015
386. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015
387. गठूलाक गारि- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015
388. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015
389. गामक बान्ह- शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई 2015
390. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई 2015

391. सीरक गाछ- शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई 2015
392. हरदीक हरदा- शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई 2015
393. जाम- शब्द संख्या : 3355, तिथि : 29 जुलाई 2015
394. गण्डा- शब्द संख्या : 2304, तिथि : 5 अगस्त 2015
395. हाथी आ मूस- शब्द संख्या : 3016, तिथि : 11 अगस्त 2015
396. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या : 3625, तिथि : 17 अगस्त 2015
397. फलहार- शब्द संख्या : 2350, तिथि : 25 अगस्त 2015
398. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 31 अगस्त 2015
399. क्रियाशील- शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015
400. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015
401. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015
402. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टूबर 2015
403. गजपट खेती- शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टूबर 2015
404. समुद्री विद्या- शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टूबर 2015
405. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टूबर 2015
406. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या : 679, तिथि : 13 अक्टूबर 2015
407. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टूबर 2015
408. धोखा- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टूबर 2015
409. खसैत गाछ- शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टूबर 2015
410. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्बर 2015
411. ठूठ गाछ- शब्द संख्या : 23,174, तिथि : 25 अक्टूबरसँ 16 दिसम्बर 2015
412. प्रिगर शत्रु- शब्द संख्या : 1080, तिथि : 26 दिसम्बर 2015
413. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या : 1167, तिथि : 31 दिसम्बर 2015
414. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या : 2623, तिथि : 4 जनवरी 2016
415. एक घोंट पानि- शब्द संख्या : 2522, तिथि : 10 जनवरी 2016
416. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द : 3407, तिथि : 16 जनवरी 2016
417. माइक वचन- शब्द संख्या : 3009, तिथि : 21 जनवरी 2016
418. पान- शब्द संख्या : 3120, तिथि : 26 जनवरी 2016
419. आजुक जिनगीक आइ परीछा- शब्द : 1684, तिथि : 01 फरवरी 2016

420. शुभचिन्तक- शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016
421. करिछौन लाली- शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016
422. मोहरा- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016
423. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016
424. जेना हाथी रही- शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016
425. कठफल- शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016
426. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016
427. झूठे- शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016
428. लाही- शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016
429. परतीहा खढ़- शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016
430. उजगी- शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016
431. हाथक जिनगी- शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016
432. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016
433. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016
434. अपने केलहा- शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016
435. बत्तु- शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016
436. कछमछी- शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016
437. गैत-वीध- शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016
438. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016
439. एक दिन- शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016
440. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016
441. गलफूलू- शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016
442. बिटगरहा- शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016
443. आब नइ आगि लगैए?- शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016
444. कटौज- शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016
445. बाल बोध- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016
446. डभियाएल गाम- शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016
447. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016
448. मरियाएल मन- शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016
449. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016
449. कन्हा भँट्टा- शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016
449. जिगेसा- शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016
449. गुलेती दास- शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016
449. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016
449. दुरकाल- शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016
449. कलंक- शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016
450. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016
451. बगदल गाम- शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016
452. बत्तीसोअना- शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016
453. कचहरिया रोग- शब्द संख्या : 1651, तिथि : 12 सितम्बर 2016
454. दिन घटि गेल- शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टुबर 2016
455. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टुबर 2016
456. गामक सुरता- शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टुबर 2016
457. खतियाएल घर- शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016
458. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016
459. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016
460. देव उठान- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016
461. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016
462. भोरक सपना- शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016
463. बालमण्डली- शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016
464. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016
465. माघक चाह- शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016
466. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016
467. माघक घूर- शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016
468. पाही पट्टी- शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016
469. बीरांगना- शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016
470. स्मृति शेष- शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017
471. मनकें फुसलबै छी- शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017

472. चहकल विचार- शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017
473. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017
474. बीरांगना : 2- शब्द संख्या : 1992, 29 जनवरी 2017
475. पकिया चेला- शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017
476. कान फुटल कप- शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017
477. वर्थ डे- शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017
478. जानक मोल- शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017
479. गामक कटान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017
480. कर्ज- शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017
481. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017
482. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017
483. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017
484. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017
485. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017
486. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017
487. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017
488. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017
489. हरवाहि- शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस (01 मई) 2017
490. क्रान्तियोग- शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017
491. उचितवक्ता- शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017
492. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017
493. विघटन- शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017
495. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017
496. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017
497. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017
498. मर्माहत- शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017
499. गुणहीन- शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाइ 2017
500. समझौता- शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाइ 2017
501. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाइ 2017
502. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाइ 2017
503. नमहर फेरा- शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाइ 2017
504. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017
505. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017
506. बेटपन- शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017
507. छातीक हार- शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017
508. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017
509. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017
510. पुरान साड़ी- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 2453, तिथि : 24 अक्टुबर 2017
511. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टुबर 2017
512. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017

ooo
oo
o

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



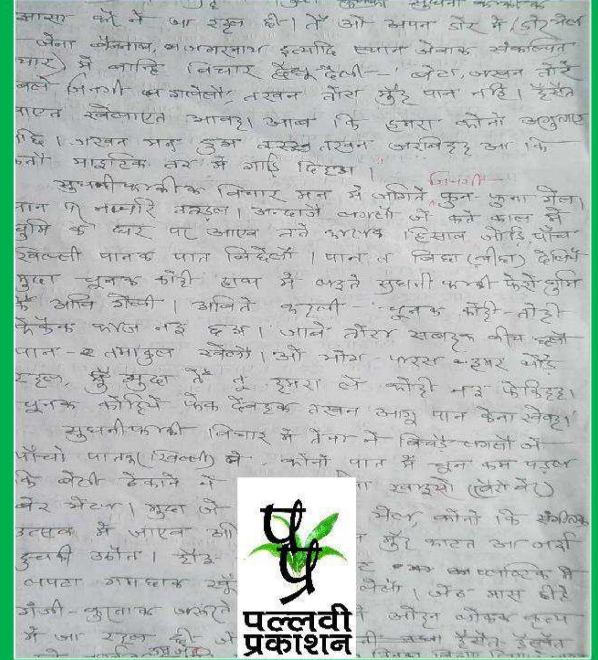
पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-80538-83-9

पैंतीस साल पछुआ गेलौं

जगदीश प्रसाद मण्डल



पैंतीस साल पछुआ गेलौं

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

गत-मत मीत मनुज मन
मन-मन्दिर भव भवन भवै छइ।
तखने मन भवन भव
देव-दनुज मीलि तान तनै छइ।
देव-दनुज...।
भविते भव भवन खिल-खिल
बाइन वाणी बिचैड़ बिचड़ै छइ।
वाणी वणिक करैण पकैड़
करैण-धरैण धड़ि धड़ै छइ।
करणी-धरणी धीर धड़ै छइ।
विवेक विचार विचरण करै छइ।
विचैड़ विचार विवेक बनि
पाप-पुनक पुल बनै छइ।
पाप-पुनक...।

ISBN : 978-81-936422-0-7

दाम : ₹ 251/-

पहिल संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

PAINTIS SAL PACHHUAA GELAUN
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

कोढ़िया सरधुआ

राधेश्याम बाबा घरक बगलेक पोखैरमे स्नान करि एक हाथमे धोती आ दोसर हाथमे अछिंजलसँ भरल लोटा नेने डेढ़ियापर पहुँचबे केला कि पाछूसँ रस्तापर सँ लखन टोकलकैन-

“बाबा, अहींसँ कनी काज अछि।”

जहिना राधेश्याम बाबा लखनक बात सुनलैन तहिना आगूक डेग रोकि ठाढ़ होइत बजला-

“केहेन काज छह हौ लखन?”

अनका जकाँ बिटन्डी राधेश्याम बाबा नहि छैथ जे पाछूसँ टोकने टोकानि लगितैन। अपन विचार छैन जइ अनुकूल अपन जिनगीक धार बहै छैन जे गामे नहि आनो गामक लोक जनैए। लखनकेँ सेहो बुझल छइहे, तँए भरि राधोपुरमे जँ केकरो बिसवास पात्र मानैए तँ ओ मात्र राधेश्याम बाबाकेँ।

बिसवासक संग लखन बाजल-

“बाबा, एकटा नालिस अछि।”

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबा ठकुआएल ठाढ़ रहैथ। ओना लखनकेँ सेहो चिन्हते छैथ जे मिरचाइ, धनियाँ, हरदी, लसुन, आदीक वेपार लखन आइये नहि, तीसो-चालीस बर्खसँ राधोपुर सहित आनो-आन गाममे करैत आबि रहल अछि। गामक उपकारी लोक तँ छीहे तँए जँ

कोनो विघ्न-बाधा रस्तामे एलै तँ ओकर निमरजना हेबेक चाही। मुदा लगले फेर भेलैन जे स्नान केने आबि रहल छी, भीजल धोतियो आ पूजाक अछींजल सेहो हाथेमे अछि, तैबीच लखनक नालिस सेहो अछिए।

थकमकाएल ठाढ़ राधेश्याम बाबाक मनमे उठलैन जे अपनो आगूक काज अछि जे पहिने अँगनाक ओसारपर अछींजलक लोटा रखि घरक चारपर धोती पसारब, पूजा करब, भोजन आ अराम करब तेकर पछाइत ने दुनियाँ-दारीक काजमे जुटब। मुदा लगले भेलैन जे अपने अपन काजमे जखने जुटि जाएब, तखने दरबज्जापर आएल भूखल-दुखल बेकतीक उपकार केना हएत। तहूमे लखन सन लोक, जे तीन बजे भोरे उठि अपन भोरका कर्म-पर-पैखाना, कुर्रा-आचमन–सँ निवृत्त होइत चारिये बजेसँ अपना संग अनको दुख-धन्धाक पाछू लगि जाइए।

राधेश्याम बाबाक मनमे उठलैन जे उपकारो तँ उपकार छी। ओहो तँ एक्के रंगक नहियेँ अछि। एक उपकार भेल जे केकरो कएल जाइए आ दोसर भेल जे उपकारीकेँ उपकार करब। जहिना कोनो गाछ जड़िसँ लऽ कऽ छीप तक एक पुरखियाह होइए आ कोनो जड़ियेसँ सघन बनैत जाइए, जड़ियेसँ अनेको डारि-पात हुअ लगै छै तहिना लखनो सघन लोक अछिए...।

राधेश्याम बाबाक मन मानए लगलैन जे पहिने लखनक जे नालिस अछि तेकरे बुझी। अपन जे काज अछि ओ तँ अपना जुतिमे अछि, कनी देरिये ने हएत। तहूमे लखन दस-दुआरी अछि तेँ दस रंगक काजो हेतइ...।

ऐठाम अबैत-अबैत राधेश्याम बाबाक मन मानि गेलैन जे पहिने लखनेक काज करब पछाइत अपन करब। मुदा लगले फेर मनमे उठि गेलैन जे कोनो वस्तुक लेन-देन तँ छी नहि जे ओ मंगलक आ अपने घरसँ निकालि दए देलिऐ। वा आगूक समए लऽ लेलौं। नालिस छी, नालिसो-नालिसमे अन्तर अछिए। दू गोरेक बीचक जँ कोनो छोट-छीन बात रहल

तँ ओकरा लगले निपटा लेब। मुदा जँ नमहर माने एकसँ अधिकक बीचक रहल तँ ओ लगले थोड़े फरिछौल जा सकैए। ओइमे तँ बेसी समए लगबे करत। तँए जँ आगू बढ़ि लखनकेँ पुछिऐ जे की नालिस छह, तखन तँ जड़िसँ छीप धरि बुझै पड़त। तइमे समए केते लगत तेकर कोनो ठेकान अछि...। तइ बिच्चेमे लखन बाजल-

“बाबा, अहूँकेँ बहुत काज पछुआएल अछि आ हमहूँ चारि बजे भोरेसँ घुमैत-घुमैत थाकि गेल छी। मन गरमा गेल अछि। घरपर जाएब, साइकिल रखि कनी ठंढाएब पछाइत नहाएब-सोनाएब तखन ने खाएब आ अराम करब।”

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबाक मनमे जेना नव विचार जगलैन। नव विचार ई जगलैन जे जे आदमी चारि बजे भोरेसँ काजमे जुटल अछि, अखन एगारह बजि रहल छै, ओइ आदमीक भूख-पियास आ अपने जे छह बजेमे ओछाइनपर सँ उठि पर-पैखाना होइत मुँह-कानमे पानि लइत चाह-पान करैत आठ बजेमे काज दिस बढ़लौं, दुनूक भूख-पियास एके रंग थोड़े भेल। मनमे अबिते दोसर विचार जेना राधेश्याम बाबाक मनकेँ पकैड़ लेलकैन। दोसर विचार ई पकैड़ लेलकैन जे कियो आदमी ओहन अछि जे एक साँझक भूखल अछि आ कियो तीन साँझक भूखल अछि, दुनूक भूख की एक्के रंग भेल। तैठाम पहिने केकरा खाइले भेटौ..? अबैत-अबैत राधेश्याम बाबाक मनमे थोड़ेक चैन एलैन। चैन अबिते बजला-

“लखन, जखन तूँ नालिस डायर केलह तखन ओ ठाढ़े-ठाढ़ थोड़े हएत। हमहूँ अछींजल ओसारपर रखि, धोती चारपर पसारि अँगनासँ अबै छी आ तोहूँ ताबे साइकिल लगा चौकीपर बैसह।”

राधेश्याम बाबाक बात सुनि लखनक मनमे सवुरक मेवा खसल। जहिना कोनो आम वा आने फलक गाछक पीपही-पौध रोपैकाल ओ फल मनमे नचैत अपन सुआद छिटकाबए लगैए तहिना लखनोक मनमे भेल जे पनचैती हेबे करत।

ओना सुधिया दादी सेहो अँगनाक मुँहथैर लग ठाढ़ भऽ दुनू गोरेक गप-सप्प सुनैत रहैथ। मुदा बजैथ किछु ने। किछु नहि बजैक कारण रहैन जे जखन मरदा-मरदी गप भऽ रहल अछि तखन बीचमे अनेरे बाजब नीक नहि। मुदा तँए मनमे खौंझ नहि उठैन सेहो बात नहियेँ अछि। खौंझ तँ उठबे करैन। भेल जअमे पाथर खसब एकरे ने लोक कहै छइ। भरि दिन नीक-अधला वृत्ति लोक अपन खाइये-पीबैक जोगार-ले ने करैए, सेहो जँ तुकपर नइ भेल तँ की भेल। मुदा दुआरपर आएल केकरो अकची-दोकची कहब सेहो नीक नहियेँ छी।

आँगनक पछबरिया ओसारपर अछींजलक लोटा रखि चारपर धोती पसारि राधेश्याम बाबा दरबज्जापर आबि चौकीपर बैसला। लखन पहिनेसँ चौकीपर बैसल छल। राधेश्याम बाबाकेँ किछु पुछैसँ पहिने लखन बाजल-

“बाबा, अहूँ देखै छी आ दादी सेहो देखैत आबि रहल छैथ, जे ई साल 2017 ईस्वी हमर चालिसम बरीस रोजगारक छी।”

बिच्चेमे राधेश्याम बाबा बजला-

“हँ, से तँ भेले हेतह।”

राधेश्याम बाबाक समर्थित बात सुनि लखनक मनमे आरो उत्साह बढ़ल। अपन विचारकेँ पसरैत आगू बाजल-

“बाबा, अहीं कहू जे आइ धरि कोनो शिकबा-शिकाइत लऽ कऽ कहियो किछु कहलौं?”

समर्थन करैत राधेश्याम बाबा बजला-

“हँ, से तँ कहियो ने किछु कहलह।”

राधेश्याम बाबाक बात सुनि लखनक मनमे आरो मजगूती आएल। बाजल-

“बाबा, जहिना अपन गाम आ परिवार अछि तहिना पँचकोसीक गामो आ परिवारोकेँ, आइये नहि सभ दिन अपन बुझैत आबियो रहल छी

आ कारोबार सेहो करिते छी। नगद-उधार सभ चलिते अछि। धरमागती कहै छी जे ने अपने कहियो केकरोसँ एक पाइ झूठ बाजि बेइमानी केलिऐ आ ने आने कियो एको पाइ बेइमानी केलक।”

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबाक मन कनी घुरियेलैन। घुरियाइक कारण भेलैन जे वेपारी छी तखन झूठ बाजि नइ ठकने हेतइ से सम्भव अछि। तँए कनी मिरमिराइत बजला-

“तइले कहियो किछु कहलियह?”

लखन बाजल-

“बाबा, अहूँ देखै छी आ आनो-आन देखते छैथ जे झंझारपुर हाटपर समस्तीपुरबला वेपारीसँ समान कीनै छी आ तीस प्रतिशत लाभ लऽ कऽ बेचै छी।”

‘तीस प्रतिशत’ सुनि राधेश्याम बाबाक मन कनी ठमकलैन। ठमैकते बजला-

“तीस प्रतिशत!”

राधेश्याम बाबाक बातकेँ स्वीकारैत लखन बाजल-

“हँ बाबा, तीस प्रतिशतसँ कमपर काज करब तखन पेट भरत।”

राधेश्याम बाबा लखनक कारोबारक तहियाएल बात नहि बुझै छला। रेडियो-अखबारसँ बड़का वेपारी सबहक बात बुझै छला। जे एक प्रतिशत, दू प्रतिशत वा पाँच-दस प्रतिशत लाभपर कारोबार करै छैथ। तैठाम लखन तीस प्रतिशत लाभपर कारोबार करैए, ई तँ सोझे गरदैनकट्टी करैए किने..!

बजला-

“एक प्रतिशत, दू प्रतिशत लाभपर काज करैबला वेपारीकेँ उना-सँ-दूना होइ छै आ तोरा पेटो ने भरतह?”

राधेश्याम बाबाक बात सुनि लखनक मनमे भेल जे राधेश्याम

बाबा सुधंग लोक छैथ। सभ दिन खेती-गिरहस्तीपर जीबैत आबि रहला अछि तँए बनियाँ-बेकालक वेपारक बात नइ बुझै छैथ। मुदा जाबे धरि नइ बुझता ताबे धरि हिनका नजैरमे ठक-फुसिआह बनले रहब। जेकरा अपन बजार बनौने छी आ ओइ बजारक बीच कारोबार करै छी जइसँ परिवारो चलैए आ समाजिकता सेहो बनले अछि, तँए पहिने ई बुझाएब जरूरी अछि।

लखन बाजल-

“बाबा, पाँच हजार अपन पूजी अछि आ पाँच हजार वेपारीक–माने जेकरासँ समान कीनै छी–उधार छइ। दुनू मिला दस हजारक कारोबार भेल। सभ दिन गाम सभ घुमि बेचै छी, जइसँ कहियो पाँच साए आ कहियो दुइयो साइक लाभ होइए। हराहरी बुझू तँ तीन-साढ़े तीन साइक कमाइ होइए। अहाँकेँ अपनो परिवार अछि, सभ किछु मिला खर्च जोड़बै तँ बुझि पड़त जे लखनक कमाइ केते भेल।”

सोल्होअना राधेश्याम बाबाक मन लखनक विचारपर नइ जमलैन मुदा आधा-छिधा नइ जमलैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

राधेश्याम बाबा बजला-

“तोरा हिसाबे तँ केतौ गड़बड़ नइ बुझि पेब रहल छी मुदा...।”

‘मुदा’ सुनि लखनक मनमे भेल जे बाबा सिमरियामे बहैत गंगा वा झंझारपुरमे बहैत कमला वा सुपौलमे बहैत कोसी वा दरभंगामे बहैत बागमतीक बात तँ बुझि रहला अछि मुदा जैठामसँ धार सभ निकलल अछि वा दोसरमे जा-जा मिलल अछि से नहि बुझि पेब रहला अछि। तँए जाबे ओ नइ बुझता ताबे असल बात नहि बुझता।

लखन बाजल-

“बाबा, हमसब खुदरा वेपारी छी। कम आँट-पेटक कारोबार अछि। मुदा अहाँक नजैरमे थौक वेपारी सभ छैथ, हुनका सबहक कारोबार करोड़ो-अरबोमे छैन, तँए हुनकर एक-दू प्रतिशत करोड़ो-अरबो

आमदनीक भेल आ हमरा सबहक हजार-बजारक कारोबार अछि तँए साए-सैकड़ आमदनीक भेल।”

ओना अपना जनैत लखन नीक जकाँ अपन विचार बुझौलकैन मुदा राधेश्याम बाबाक मन नीक जकाँ नइ बुझि पेलकैन। तँए असमनजस करैत राधेश्याम बाबा बजला-

“हमरा ते होइए जे सभ वेपारीक चालि-ढालि एके रंग अछि, मुदा तोहर विचार तँ...।”

राधेश्याम बाबाक पेटक बात लखन बुझि गेल। बाजल-

“बाबा, केना कोन वौसक दाम बनैए ओ बड़ भारी अछि। ओकरा कहैमे बड़ देरी लागत मुदा एकटा बात नजैरपर-के दइ छी।”

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबा ठमकला। पाछू हटैत बजला-

“खाइ-पीबैक बेर अछि, तँए अनेरे गप-सप्पमे नइ गमाबह। जइ काजे रूकलह तेकरा अगुआबह।”

गप-सप्पक क्रममे लखनक मन जेना भरि गेल होइ तहिना बाजल-

“बाबा, जखन दुनू गोरे बैस विचारिये रहल छी तखन काजो हेबे करत। मुदा एकटा बात पछुआएल अछि से पहिने सुनि लिअ।”

राधेश्याम बाबाक मनमे भेलैन जे भने पहिने वएह सुनि ली। जखने मनक बात मनसँ निकलतै तखने ने मन खाली हेतइ। जइमे कोनो बात आकि नव विचार रखैयोमे बेसी गरगर हएत। बजला-

“पहिने डोरियेलहे विचार सम्पन्न करह। पछाइत नवका काजक गरे करब।”

लखन बाजल-

“बाबा, सड़कक काते-काते पेट्रोल-डीजलक दोकान सभ देखते छिऐ। दस लाख-बीस लाख लीटर पेटरौलो आ डीजलोक स्टॉक ओकरा सबहक अछि। अखन तक वेपारी सभ मुनाफा लैत जइ दरमे बिकरी कऽ

रहल अछि, ओ बारह बजे रातिमे अन्हारे-अन्हारमे दू रूपिया-तीन रूपिया प्रति लीटर बढ़ि जाए, जइसँ हजारक कोन बात जे लाखो-करोड़ो अपने चलि अबैए। से हमरा सभकेँ थोड़े औत। चालीस बर्खसँ धनियाँ-मिरचाइ-हरदी-आदी साइकिलपर लादि गामे-गाम घुमि-घुमि बेचै छी तखन साए-सैकड़ मुँह आँखि देखै छी।”

एकाएक राधेश्याम बाबा जेना निर्णायक दौड़मे पहुँच गेला तहिना बजला-

“परिवार चलै छह किने?”

परिवारक बात सुनिते लखन बाजल-

“से ने किए चलत। धिया-पुताकेँ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ, बिआह-दान जेते भेल से तँ करिते आबि रहल छी। अखनो सात गोरेक परिवार चलैबते छी।”

लखनक बात सुनि बगलमे ठाढ़ सुधनी दादी बजली-

“लखन कि कोनो आइए-सँ भौरी करैए, पाबैन-तिहारमे केते गोरेक ऐठाम खेबो करैए आ अपनो खुऐबते अछि किने।”

सुधनी दादीक समर्थन पेब लखन समरथित होइत (समथारति स्वरुप) बाजल-

“दादी, कमसँ कम एक साए परिवारसँ खाएनो-पीन रखने छी आ बेटा-बिआहमे बरियाती आ बेटी-बिआहमे समाजिक सम्बन्ध सेहो ऐछे। केकरो बेटीक बिआह होइ छै ते मास दिन पहिनहि कहि दइ छिऐ जे मर-मसल्लाक चिन्ता छोड़ि आन चिन्ता करब। तहिना माइयो-बापक श्राद्धमे करिते छी।”

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबाक मन जेना भरि गेल होनि तहिना नरमाइत बजला-

“अखन खाइ-पीबैक बेर अछि लखन। पर-पनचैती तँ निचेनीक काज छी, मुदा तैयो जइ काजे तोहूँ अन-पानि तियागने छह आ हमहूँ

तियागने छी से पहिने करह।”

अपन सभ विचारकेँ मनमे कतियबैत लखन बाजल-

“बाबा, पहिने रसियारीवाली कनियाँकेँ बजा लिअ। सोझा-सोझी गप नीक होइए।”

बगले परिवारक रसियारीवाली, तँए सुधनी दादी दरबज्जेपर सँ शोर पाड़ैत बजली-

“हइ रसियारीवाली, कनी एमहर आबह।”

अखन तक रसियारीवालीकेँ ई नइ बुझल जे पनचैती अपने ऊपर अछि। मनो निरविकार। निरविकार ऐ दुआरे जे कोनो गलती केने नहि छेली। रसियारीवाली आबि सुधनी दादीक पँजरा लगि ठाढ़ भेली।

रसियारीवालीकेँ देखते लखन बाजल-

“बाबा, भोरे-भोर बोहनियेँ-काल रसियारीवाली गारिसँ उकैट देलैन। मुदा हम किछु बजलौं नहि। बोहनी-पहर छल। जँ भोरे जतरा कुजतरा भऽ जइतए ते भरि दिन गारिये-फज्झैत ने सुनैत रहितौं। मुदा जखैनसँ सुनलौं तखैनसँ मनमे काँट जकाँ नइ गड़ल अछि सेहो थोड़े नहि...।”

राधेश्याम बाबा बजला-

“लखन तोहर बात नीक जकाँ नइ बुझलौं किए तँ जहिना सौंसे रामायण एकटा छप्पयमे सेहो कहल गेल अछि, मुदा रामायणिक विचारधाराकेँ जँ जिनगीक नजरिये बुझब तँ ओ सौंसे जिनगीक छी, तहिना तोहूँ एक्के सूरेमे सभ बात बाजि गेलह। जइसँ नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। पहिने रसियारीए-वालीक गप सुनह।”

रसियारीवालीकेँ पँचवेदीमे ठाढ़ होइत देख लखनक मनक अदहा दर्द मेटा गेल। बाजल-

“भने अहाँ कहलिऐ, बाबा।”

तैबीच सुधनी दादी रसियारीवालीकेँ चरियबैत बजली-

“निधोखसँ बाजह। कोनो झूठ-फूस नइ बजिहह। पंचवेदीमे ठाढ़ छह।”

रसियारीवाली बजली-

“लखनकेँ किछु नहि कहलौं से बात नइ अछि। बजलौं जरूर मुदा गारि नहि पढ़लिऐ।”

ओना लखनक मनमे ईहो उठैत रहै जे परिवारोमे जखन कनी-मनी भाइए जाइ छै एना समाज तँ ओइसँ नमहर अछिए। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे अही समाजक बीच ने जीबो करै छी आ सुख-दुखक गपो-सप्प करै छी। ओना, ईहो विचार लखनक मनमे नचिते रहै जे भोरका समए रहै बेसी लोक सुतले छल, तँए कियो सुननौं ने हएत। आ जँ सुननौं हएत तँ मने-मन विचारिये नेने हएत जे भोरका समैमे कियो अनका थोड़े कहने हएत। तँए लखनोक मनक चितपन कनी निच्चाँ भेले जाइत रहइ। मुदा पँचवेदीमे जँ फुसियाह बनि जाइ सेहो केहेन हएत। बाजल-

“कनियाँ, अहीं अपना छातीपर हाथ रखि कऽ बाजू जे ‘कोढ़िया-सरधुआ’ नइ कहने छेलौं?”

रंग-रंगक परिस्थिति राधेश्याम बाबाक आँखिक सोझमे उपस्थित भऽ गेलैन। तैसंग ईहो होनि जे दुइए गोरेक बीचक बात छी, तेसर कियो अछि नहि जे तीनमे दू-एकक अधारपर निर्णय करब...।

मुदा लगले मनमे एलैन जे मुद्दा ने बेकतीगत भेल। मुदा समाजेक लोक ने दुनू छी तँए मुद्दाक संग समाधानोक विचार किए ने दुनू गोरेसँ पहिने लऽ ली...।

राधेश्याम बाबा बजला-

“लखन, तोहूँ कि सोझे भौरीए करैबला वेपारी छह सेहो बात नहियेँ अछि। कहुना ते पचास-पचपनक उमेर भाइए गेल हेतह। तोंही पहिने अपन विचार बाजह।”

लखन बाजल-

“बाबा, माए जखन जीबै छल तखन ओहो कोढ़िया कहै छल आ घरवाली सेहो केता दिन कोढ़िया कहने हएत तेकर ठेकान नहि। तँए कोढ़ियाकेँ छोड़ि दइ छी मुदा सरधुआ जे रसियारीवाली कहली से जँ हमर सराधे भऽ जाएत तखन सात गोरेक परिवारक खरचा वएह देती।”

अधियाएल पनचैती होइत देख राधेश्याम बाबा रसियारीवालीकेँ पुछलैन-

“आब, कनियाँ अहाँ बाजू।”

रसियारीवाली बजली-

“बाबा, खूब भोरे-के लखन आबि दरबज्जापर सँ चिचियाए लगै छैथ जे मिरचाइ, धनियाँ, हरदी लेब अइ ऐ ऐ ऐ...। से यैह कहथु जे भोरका ओहन कड़कड़ाएल नीनकेँ जे दुइर करत तेकरा कोढ़िया-सरधुआ कहिलिऐ ते कोनो बेसी कहलिऐ जे ओ गारि बुझै छैथ।”

रसियारीवालीक विचार सुनि लखनकेँ बुझबैत सुधिया दादी बजली-

“लखन, ‘कोढ़िया-सरधुआ’ गारि नइ छी। ओहुना स्त्रीगण सभ एक-दोसरकेँ कहै छैथ। तँए ऐ बातक जँ कुवाथ भेल हुअए तँ ओकरा मनसँ निकालि लिहह।”

सुधनी दादीक चेहरापर सँ नजैर उठा राधेश्याम बाबाक चेहरा दिस तकैत लखन बाजल-

“जाइ छी बाबा।”

◌

शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017

बेटपन

बेरुका समय। घनश्याम काका असगरे दरबज्जापर बैसल मने-मन ऐगला जिनगीक विषयमे सोचि रहल छला। चारिम दिन पत्नीक श्राद्ध-कर्मसँ निवृत्त भेला। दस दिनसँ परिवारमे तेते लोकक–समाजो आ करो-कुटुमक–आवा-जाही भेल छेलैन जे अपना विषयमे किछु सोचै-विचारैक पलखतियो ने भेलैन। ओना, श्राद्ध-कर्मसँ निवृत्त होइते एकाएकी कुटुम सभ अपन-अपन गाम जाए लगल छला, मुदा अन्तिम खेप जे दुनू बेटा-पुतोहु आ पोता-पोतीक छेलैन ओहो सभ भिनसुरका अठबजिया गाड़ी पकैड़ दिल्ली चलि गेलैन, जइसँ घनश्याम काका असगरे रहि गेला।

दरबज्जापर बैसल घनश्याम काका सोचि रहल छला जे अपन पचासी बर्खक उमेर भऽ गेल, आ पत्नी बेरासी बर्खक उमेरमे देश[1] छोड़ली। तइसँ अपने तीन बर्ख बेसीए छी। लगले भेलैन जे पचासी बर्ख आकि छियासी बर्ख मृत्युक दिन वा बर्ख थोड़े छी जे ओइ दिन आकि ओइ बर्ख मरिये जाएब। मरैक कोनो ठेकान अछि। कियो साए-सबा-साए आ कियो डेढ़-साए बर्ख सेहो जीबै छैथ आ कियो माइयेक पेटमे मरि जाइए। अन्तो-अन्त बर्खक विचार घनश्याम कक्काक मनसँ निकैल ऐठाम आबि अँटैक गेलैन जे जाबे आँखिमे ज्योति अछि ताबे तकक जिनगीक सोच तँ करइ पड़त। मुदा लगले फेर भेलैन जे एते नमहर

[1] मृत्युलोक

परिवार–बेटा, बेटी, नाति-नातीन, पोता-पोती–रहितो असगरे रहि गेल छी। असगरोक तँ परिवारे भेल किने। रहैले घर चाहबे करी, खाइ-पीबैले अन्न चाहबे करी आ ओढ़ै-पहिरैले कपड़ा-लत्ता चाहबे करी। मन ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे जेकर दस गोरेक परिवार अछि ओ दसो जखन भरि दिन घरक पाछू लगल रहै छैथ तखन परिवार चलै छैन, हम तँ असगरे छी, केना चलत? लगले मनमे उठि गेलैन जे दूटा बेटी-जमाए तँ बाहरे–एकटा बंगलोर एकटा दिल्लीमे–रहैए आ तेसर गाममे रहैए। मुदा ओहो तँ दस कोस हटले अछि। माने दस कोसपर सासुर छइ। ओना, जाइकाल तीनू बेटियो आ दुनू बेटो-पुतोहु कहिते छल जे असगरे गाममे केना रहब, तँए हमरे ऐठाम चलू। घनश्याम कक्काक जेठ बेटी जमाए बंगलोरेमे एकटा फ्लैट किनने छैन, दोसर बेटी-जमाए दिल्लीमे पचीस गज जमीन लऽ दू मंजिला घर बना रहै छैन। तहिना दुनू बेटो-पुतोहु दिल्लीए-मे दू ठाम जमीन कीनि घर बनौने छैन।

घनश्याम कक्काक मनमे उठलैन गाम आ बाहर। जहिना बेटा-जमाए घर बना बाहर रहैए तहिना ने अपनो बनौल घर गाममे अछि। एक तँ बाप-पुरुखाक देल घराड़ी तैपर अपन बनौल घर अछि, तैठामसँ जाएब केते उचित हएत। अपन लगौल गाछी-कलम अछि आ अपन खेती-पथारी अछि, अपन जोड़ल समाज अछि तेकरा छोड़ि अनका समाज अनकर घर-घराड़ीमे रहब, अनका जे नीक लगौ मुदा अपन मन कहाँ मानि रहल अछि। जाबे जीबै छी आ घर-घराड़ीक संग समाजो जीबैए। तेकरा जँ बदैल लेब वा हटि कऽ चलि जाएब तखन जिनगीमे रहि की जाएत जे तेकरा देख भरमैत रहब..!

ऐठाम अबैत-अबैत घनश्याम कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमैकते मनमे उठलैन जे कोनो कि हमहींटा ऐ धरतीपर एहेन छी जे एहेन जिनगीसँ भेँट भेल अछि आकि हमरा सन-सन केतेको गोरे समाजमे भाइयो चुकल छैथ आ अखनो छैथ आ आगुओ हेबे करता...।

ऐठाम आबि घनश्याम कक्काक मन फेर घुमलैन। घुमिते मनमे

उठलैन जे जखने असगरक परिवार बना रहब तखने ने दस गोरेक परिवार जकाँ दस रंगक ओरियान सेहो करइ पड़त। हँ, एते जरूर हएत जे दस गोरेमे जेते वस्तुक खगता होइ छै तेते नइ हएत। कम हएत। मुदा नहियेँ हएत से बात तँ नहियेँ अछि, हेबे करत। घनश्याम कक्काक मन कलशलैन। कलैशते विचार जगलैन जखन तारीख-साल मन पाड़लौं तखन ने पचासीम बर्ख मन पड़ल मुदा मनोसँ आ काजोसँ कहाँ बुझि पड़ैए जे मरैमान भऽ गेल छी। अखनो देहमे ओते शक्ति ऐछे जे अपन जिनगी चलबैक सभ ओरियान अपने करि सकै छी। आन जकाँ जखन घचकनाह बनब तखन ने अपनो भार अनकापर पड़तै आ जखन से नइ बनब तखन अपन जिनगीकेँ किए ने हँसबैत कहबै जे जेना-जेना परिवारमे विघटन भेल से तँ जनिते छी, जँ कियो अपन हाथ-पैरक गुण बुझबे ने करत तँ ओकरा बदला अनकर स्वधीनता थोड़े जेतइ...।

मुदा जे स्वधीनता प्राप्त कऽ लेलक ओ केना अपन जीता-जिनगी परधीनता कबूल करत? स्वधीनता आ परधीनताक बीच घनश्याम कक्काक मन ठमैक गेलैन।

स्वधीनता दिस जखन मन बढ़ैन तँ जिनगीक सार्थकता ओहिना झलैक उठैन। मुदा जखन परधीनता दिस बढ़ैन तँ जिनगीक कोन बात जे अपन किरिया-कलापकेँ मनुखक कोटिसँ निच्चाँ बुझए लगैथ। अही दू पाशाक बीच मनुखक जिनगी चलैए। आन जीव-जन्तुकेँ एकर खगते कोन छइ। ने बुधि-विवेक छै आ ने जिनगीए बुझैक अवगैत छइ। घनश्याम कक्काक विचार लगले आगू बढ़ि ओइ सिमानपर पहुँच गेलैन जेतए-सँ दुनू पाशाक दिशाक रस्ता फुटै छइ। मन ठमकलैन। ठमैकते विचार उठलैन जे गप-सप्पक क्रममे आकि शब्द–विन्यासमे दुनू स्वधीनता आ परधीनतामे जे अलंकारिक सम्बन्ध वा शाब्दिक होइ मुदा दुनू जिनगीक दू छोरपर अछिए। ओना, दुनूकेँ दू छोर कहबो ओते उचित नहियेँ हएत। किएक तँ स्वधीनता लेल कठिन तप-तपस्या आ कर्म-कर्मणाक जरूरत अछि तँ परधीनता लेल ढलानपर सँ उतरैत गाड़ी जकाँ

बिनु भीरेक दौड़ैत चलैए...।

समुद्री जहाजपर बैसल यात्री जहिना एक किनारपर एक देश आ दोसर किनारपर दोसर देश देखैए तहिना घनश्याम काका स्वधीनता-परधीनता देखए लगला। मुदा दुनूक रस्ता अलग-अलग अछि तैपर नजरिये ने जा रहल छेलैन। नजरियो केना जइतैन, दुनूक अपन सोचो-विचार आ काजो-बेवहारमे विपरीतक सम्बन्ध अछिए।

..लगले मनमे उठलैन जे अनेरे मनकेँ सघन बोनमे वौआबै छी। दुनियाँमे अन्हार रहौ कि इजोत मुदा दुनूक अपन-अपन गुण-धर्म अछि किने। जँ दुनियाँमे अन्हारे अछि तँ ओ अन्हार हमरा जेते अन्हरौत तेतबे ने हमरा-ले अन्हार भेल। आकि इजोते अछि तँ ओतबे इजोत ने भेल जेते देखै छी।

..अन्हार-इजोतक बीच घनश्याम कक्काक मन तेना ओझरा गेलैन जे की नीक आ की अधला से निर्णये ने कऽ पाबि रहल छला। तही बीच रामखेलावन भाय पहुँचला, पहुँचते बजला-

"काका, गोड़ लगै छी।"

ओना, ऐसँ आगू रामखेलावन भाइक मनमे अनेको विचार उठैत रहैन मुदा विचारसँ विचार टकराइयो लगलैन। टकराइक कारण भेलैन-समान्य परिस्थितिक जगह विषम परिस्थिति। ओना रामखेलावन भाय जिनगीकेँ गहींर तक धँसि अनुभव केने छैथ मुदा एकक जिनगी आ दोसरक जिनगीमे अन्तर सेहो ऐछे जइसँ हू-बहू एक रंग चलब सेहो कठिनाह भाइए जाइए। ओना, जिनगीक किछु मूल तत्त्व ओहन ऐछे जे सबहक संगे समान्ये अछि मुदा किछु असमान्य नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सेहो अछिए।

रामखेलावन भाइक 'गोड़क' जवाब घनश्याम काका मुहसँ असिरवाद नहि दैत आँखि खसा इशारासँ देलखिन-

"अपना की रहल जे तोरा असिरवाद देबह। मुदा आइ धरि जे

सम्बन्ध रहल तेकर निछौर दइ छिअ।"

ओना घनश्याम काका मुहसँ किछु ने बजला मुदा मनक मर्जसँ रामखेलावन भाय सभ बात बुझि गेला। बुझला पछाइत विचार उठलैन जे जाबे तक केराक कोशा जकाँ एक-एक कोष आ ओइ कोषक भीतर एक-एक छीमीक जिनगीकेँ नीक जकाँ नइ बुझता ताबे तक जहिना लोक कोष छुटल केराकेँ एकटा निम्मन बुझितो बाँकीकेँ कोशा बुझैए तहिना बुझैत रहता।

मुदा ओही कोशामे ओहू केराक जिनगी नुकाएल छल, तइ दिस लोकक धियाने ने जाइ छइ। लगले रामखेलावन भाइक मनक विचार बदैल गेलैन। बदैलते घनश्याम कक्काक जिनगीमे प्रवेश करैक विचार जगलैन। विचार जगिते मन कहलकैन- जाबे अपन क्लेशकेँ नहि कलशौता ताबे कलशैक सम्भावना केना बनत। पुछलखिन-

"काका, यज्ञसँ तँ निवृत्ति भऽ गेल हएब किने?"

ओना 'यज्ञ' सुनि घनश्याम कक्काक मनक घनघनी छँटलैन मुदा आगूमे दोसर यज्ञ देख पुन: मन ओहिना सकुचा गेलैन जेना पहिने सकुचाएल छेलैन। मुदा तैयो अपन घरक मान रखैत घनश्याम काका बजला-

"हँ, आठ बजेक ट्रेनसँ अन्तिम विदाइ दुनू बेटा-पुतोहुकेँ करि निचेन भेलौं।"

कि सोचि घनश्याम काका अपनाकेँ निचेन बुझलैन से तँ घनश्यामे काका जानैथ मुदा रामखेलावन भाय बुझलखिन जे भरिसक बेटोक आशा टुटि रहल छैन। घनश्याम कक्काक मनकेँ बहलबैत रामखेलावन भाय बजला-

"काका, आब कि बेटो बेटा रहल! ओकरामे बेटपनक[2] गुण

[2] बेटपनक माने भेल बेटाक साकारात्मक गुण-धर्म।

मिसियो भरि नइ आबि रहल छइ।"

'बेटपन' सुनिते घनश्याम कक्काक मनक बखारक मुँह खुजलैन। जहिना भरल कोठीक मुँह खुजिते अन्न भुभुआ कऽ निकलए लगैए तहिना घनश्याम कक्काक मुहसँ निकललैन-

"बौआ, गाममे तोरा सभसँ नीक विचारक बुझै छिअ। ओना, हमहूँ सभ दिन गुरुआइये केलौं। मुदा..?"

'मुदा' कहैत-कहैत घनश्याम कक्काक ह्रदय जेना दहैल गेलैन। दहलिते आँखि नोरसँ नोराए लगलैन, भादवक मेघ जकाँ बरिसैले टप-टप करए लगलैन।

नोराइत आँखि देख रामखेलावन भाय मने-मन आँकि लेलैन।

ओना, बरखो-बरखामे अन्तर होइते अछि। एकटा होइए जइमे वादल फाटि कऽ बरिसैए आ दोसर होइए जइमे खेबा कालक छिच्चा जकाँ फुहियाइए। तइ बिच्चेमे अनेको रंगक बरखा सेहो अछिए।

रामखेलावन भाय बजला-

"काका, अहाँ कोनो आइयेक छी, अस्सी-नब्बे बर्खक उमेर भाइए गेल आ जहिया अपन पढ़ाइ छोड़लौं तहियेसँ ने पढ़ौनी शुरू केलौं।"

तमुरिया हाइ स्कूलसँ घनश्याम काका मैट्रिक पास केला पछाइत जीवकोपार्जन करैले नेपालक बिराटनगर गेला। अविकसित बिराटनगर अखुनका जकाँ नहि, तोहूमे दोसर देश सेहो छीहे। ओना, उत्तर प्रदेशक किछु भाग, बिहारक चम्पारणसँ पूर्णिया तक आ बंगालक नक्शल वा दार्जिलिंग तक नेपालसँ सटल अछिए। सटल रहने बोली-वाणीसँ लऽ कऽ जिनगीक सभ किरिया-कलापक बीच सेहो लगपन छइहे।

रामखेलावन भाइक विचार सुनि घनश्याम कक्काक तबधल मनमे जेना शीतल समीरक संग सीताएल बरखा सेहो हुअ लगलैन। बजला-

"बौआ रामखेलौन, तोरासँ कोन बात छिपल छह, जेकरा छिपाएब।"

पहाड़पर सँ गिरैत जलधारमे अपन विचारक जलधर मिलबैत रामखेलावन भाय बजला-

"काका, अहाँ मुहेँ आइ धरि कोनो झूठ बात नइ सुनलौं। ई दीगर भेल जे ई पोथी-पुराण अपने प्रपंची अछि आ अहाँ वएह पढ़ि बजैत होइ, ऐमे अहाँक कोन दोख। मुदा जहिया कहियो केकरो किछु विचार देलिऐ ओ ओही अधारपर देलिऐ आ अखनो दइते छिऐ।"

ओना किछु बात रामखेलावनक मुहसँ एहेन जरूर निकलल जइसँ घनश्याम कक्काक मनमे ठेँस लगितैन, मुदा जेना जिनगीक थपेरमे किछु विचार थपथपा गेल होनि तहिना ठेँसोमे भेलैन। महसूस करैत बजला-

"बौआ राम, सुनै छी जे परबाबाकेँ सात साए बीघा जमीन छेलैन, जे दरभंगा राजसँ पुरस्कार स्वरुप भेटल रहैन। मुदा हमरा भैयारी तक अबैत-अबैत ओ सठि गेल। दूधक डाढ़ी जकाँ किछु बँचि गेल। जइसँ परिवारिक जीवन चलब कठिन भऽ गेल। तँए परिवार-ले बाहरसँ कमा कऽ आनब जरूरी भऽ गेल।"

घनश्याम कक्काक विचारकेँ सूहकारैत रामखेलावन भाय बजला-

"काका, धनो-सम्पैत कि केकरो बान्हल रहैए, ओ तँ धारक पानि जकाँ एबो करैए आ जेबो करैए। मुदा तही बीच ने केतौ-केतौ–माने पोखैर, तलाव आकि मोइनमे–अँटकियो जाइए आ केतौ-केतौ–महार नहि रहने–पहिलुको पानि बाढ़ियेक संग बहिये जाइए।"

घनश्याम काका बजला-

"बौआ, जहिया पाँच बर्खक रही तहिये पिताजी गामक स्कूलमे नाओं लिखा देलैन। गामसँ लोअर पास केलौं। गाममे ऐसँ आगूक पढ़ाइ नइ होइत छल। ओइ समैमे अपना इलाकामे दुइए-टा मिडिल स्कूल छल। एकटा तमुरियामे आ दोसर सिमरामे। पछाइत कछुबीमे सेहो भेल आ आब तँ अपना गामोमे भाइए गेल अछि। सिमरासँ मिडिल पास केलौं। मिडिल पास केला पछाइत तमुरिया हाइ स्कूलमे नाओं लिखेलौं।

आ ओत्तैसँ मैट्रिक पास केलौं।"

रामखेलावनक मुहसँ निकललैन-

"बाह-बाह।"

रामखेलावन भाइक बाहबाहीसँ घनश्याम कक्काक मनमे अपन कएल कीर्त्तक यश जगलैन जइसँ मनो आ विचारो फुलाए लगलैन। बजला-

"बौआ राम, मैट्रिक पास केला पछाइत लगले बिआह भऽ गेल। छबे मासक भीतर। एकाएक मनमे भार बुझि पड़ल। जेना तीन बट्टीपर पहुँच गेल होइ। एक दिस माए-बाबू भेला, दोसर दिस अपन पत्नी आ तेसर दिस दूटा छोट भाए आ एकटा बहिन छल। घरक स्थिति ओहन नइ छल जे ओहू भरे परिवार चलि सकैत।"

घनश्याम कक्काक बात सुनि रामखेलावन भाय मुहसँ तँ किछु ने बजला मुदा मुड़ी डोलबैत स्वीकार काइये लेलैन जे स्थिति भयावह जरूर छेलैन।

रामखेलावन भाइक स्वीकारोक्तिसँ घनश्याम कक्काक मन जेना उत्साहित भेलैन। बजला-

"बौआ, ओइ समैमे–माने आइसँ पचास-साठि बर्ख पूर्व–अपनो गामक आ आनो-आनो गामक लोक बिराटनगरमे नोकरियो करए जाइ छल आ सीजन पेब धानो-पटुआ काटए जाइ छल। हमहूँ ओही लाटमे बिराटनगर गेलौं।"

बिच्चेमे रामखेलावन भाय बजला-

"दुनू देशक बीच जे सीमा अछि तैठाम कोनो रोको-राक होइ छल?"

घनश्याम काका बजला-

"नइ, ओना नेपालमे गाँजाक खेती करैक छूट छल, तँए ओमहरसँ

अबैकाल मात्र गाँजाक लेल चेक-चाक होइ छेलै, सेहो सभकेँ नहि। ओना, सीमाक दुनू कात अपन-अपन देशक पुलिस-चौकी छेलैहे।"

"केतेक दिन बिराटनगरमे रहलिऐ?"

घनश्याम काका बजला-

"पैंतीस बर्ख बिराटनगरमे रहलौं। ओना, ने माड़वारी ऐठाम नोकरी केलौं आ ने कोनो सरकारिये स्कूलमे। मिडिल किलास तकक विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़बै छेलौं। अखुनका जकाँ ट्यूशनो फीस नहियेँ छल, समैयो सस्ता छेलै मुदा तैयो सबा साए-डेढ़ साए महिनामे कमा लइ छेलौं।"

रामखेलावन भाय बजला-

"आ खेनाइ-पीनाइ?"

घनश्याम काका-

"अपन गामक बेसी गोरे एकटा सेठक ऐठाम रहै छला। गोटि-पंगरा आनो-आनो ऐठाम रहै छला मुदा जइ सेठक ऐठाम बेसी गोरे रहै छला ओइ सेठक कारोबार पैघ छल। धान, पटुआ, तोरी इत्यादिक खरीद-बिकरी चलै छेलइ। नोकर-चाकर-ले खाइ-पीबैक अपन बेवस्था छेलइ। एकटा नोकर भानसे करै छल, ओहीमे सभ खाइ-पीबै छला। ओही लाटमे सेठजी हमरो खाइक बेवस्था केने छला।"

ओना घनश्याम कक्काक इतिहाससँ रामखेलावन भाय अकछाए सेहो लगला मुदा मनमे ईहो होनि जे जाबे सुख-दुखक पीड़ा कक्काक मनसँ नहि निकैल जेतैन ताबे मन हल्लुक नइ हेतैन आ जाबे मन हल्लुक नइ हेतैन ताबे नव विचार मनमे जगतैन नहि। संगे मनमे ईहो रहबे करैन जे गाम-समाजक परिवारक बात छी, जँ गाम-समाजक लोक ओकरा नइ बुझता तँ गाम समाजक महत्ते की भेल। तोहूमे जखन जिज्ञासा करए आएल छी आ मनक बाते नहि बुझि पएब ताबे आगूक विचारे की दए सकै छिऐन। मुदा तैयो रामखेलावन भाय बजला-

"पुरना इतिहासकेँ कनी संक्षेपमे कहियौ, काका। जइसँ वर्तमान

आ भविष्यक विचार करैक अवसर भेटए।"

रामखेलावन भाइक विचारसँ विचार मिलबैत घनश्याम काका बजला-

"बौआ राम, पाँच भाए आ दू बहिन छी से तँ देखते छह।"

रामखेलावन भाय-

"हँ, से तँ छीहे।"

घनश्याम काका-

"एक बहिन आ दू भाँइ जेठ बाँकी दू भाँइ आ एक बहिन छोट अछि। बहिनो आ दुनू भाँइयोक बिआह-दान पहिने भेल। बहिन सासुर चलि गेल आ दुनू जेठ भाय अपन परिवारक संग भीन भऽ गेला। माए-बाबू आ चारू भाए-बहिनक परिवार एकठाम रहल। ओही परिवारक जुआकेँ घीचए लगलौं। दुनू भाँइयों जवान भेल आ बहिनोक बिआह भेल। ताबे अपनो दूटा सन्तान भेल।"

बिच्चेमे रामखेलावन भाइक मुहसँ निककलैन-

"बाह!"

'बाह' सुनि घनश्याम कक्काक मन आरो उत्साहित भेलैन। उत्साहितो केना ने होइतैन, केहेन परिवारक जुआ कान्हपर लए केते दिन खींचलौं, यएह ने छी जिनगी आ जिनगीक पुरुषार्थ। ओना जिनगीक आगूओ बहुत रास जिनगी अछि आ पाछुओ बहुत रास ऐछे, मुदा ओही बीच ने अपनो केतौ सीमा-सरहद अछि।

घनश्याम काका बजला-

"बिराटनगरक परसादे माइयो-बाबूकेँ पार-घाट लगौलिऐन, दुनू भाँइयोकेँ आँखि-पाँखि बना देलिऐ आ बहिनोकेँ बिआह कऽ ठौर धरा देलिऐ।"

जेना कितावक कोनो पाराग्राफ पढ़ला पछाइत साँस छुटैए तहिना

रामखेलावन भाइक साँस छुटलैन। बजला-

"यएह ने छी जिनगी!"

ओना रामखेलावन भाय सफल जिनगीक दृष्टिसँ बाजल छला मुदा घनश्याम कक्काक मनमे असफल जिनगी नाचए लगलैन। तँए जेहेन खुशी जगबैक दृष्टिसँ रामखेलावन भाय बाजल छला से खुशी घनश्याम काकाकेँ नहि जगलैन। बदरियाएल मेघ जकाँ मेघौन मेघ मनमे नाचए लगलैन तँए बदलैत परिवेशमे घनश्याम काका बजला-

"मुदा..?"

'मुदा' सँ ने पहिने किछु घनश्याम काका बजला आ ने पाछूए किछु बजला जइसँ रामखेलावन भाइक मन चोन्हियेलैन। चोन्हियाइते मनमे उठलैन- चेतना तँ कर्मसँ जगै छै आ कर्म चेतनासँ जगै छइ। भरिसक अहीठाम घनश्याम काकाकेँ रस्ता छुटलैन। मुदा से अपने थोड़े अहिना बुझि सकै छी। ओकर जड़ि तँ घनश्यामे कक्काक जिनगी आ विचारमे छिपल छैन...।

रामखेलावन भाय बजला-

"काका, नइ बुझि पेलौं जे 'मुदा' की कहलिऐ?"

रामखेलावन भाइक प्रश्न सुनि घनश्याम कक्काक मन घनघोर घटाक बीच घनघनाए लगलैन। मुदा अपनाकेँ समटैत बजला-

"बौआ, एक नजैरसँ देखै छी तँ जिनगीमे केतौ गड़बड़ नइ बुझि पड़ैए मुदा लगले ईहो तँ ऐछे जे हमरा सन लोकक जिनगी केहेन हेबा चाही आ केहेन बनि गेल अछि।"

घनश्याम कक्काक टुटैत जिनगीसँ विचारमे घटबी आबि रहल छेलैन मुदा से मुहसँ निकैल नहि रहल छेलैन। जिनगीक रेह तँ सुइयोक रेहसँ मेही होइत अछि किने। ओकरा पकड़ैले तँ मेही नजैरक जरूरत ऐछे, मुदा ओ तँ औत मेही बात बुझने। से तँ आबि नहि रहल अछि..!

महियबैत रामखेलावन भाय पुछलखिन-

"काका, नीक जकाँ बात नजैरपर नहि चढ़ि रहल अछि। तँए कनी अपने मुहेँ कहियौ जे चूक ने ते केतौ भेल।"

रामखेलावन भाइक विचार सुनि घनश्याम काका मनाकाशमे घुमए लगला। जइसँ कखनो बेटापर तामस उठैन तँ मने-मन बड़बड़ाए लगैथ जे बेटा सब गद्दार निकलल, माए-बापकेँ छोड़ि बहुक पाछू बेहाल अछि। लगले पुतोहुपर नजैर जानि तँ मन बड़बड़ाए लगैन जे चूक अपने भेल। दहेजक खातिर कोन-कहाँ परिवारमे पड़ि गेलौं। जइ परिवारक बेटीकेँ माए-बाप एतबो ने सिखौलक जे बौआ, माता-पिताक सेवा पितृऋण चुकाएब छी, तँए ओकरा जरूर चुकबिहह। मुदा लगले अपनापर नजैर पड़ैन तँ बुझि पड़ैन जे आइ जँ सरकारी नोकरी केने रहितौं तँ जरूर पेंशन भेटैत। बेटा-पुतोहु जँ लगमे नहियों रहैत तैयो एकटा नोकर राखि लइतौं, वएह सभ सेवा करैत। मुदा सेहो ने भेल!

..ठेहियाइत-ठमकैत घनश्याम काका बजला-

"बौआ राम, समाजमे अहाँकेँ हम सभसँ ऊपर बुझै छी। किएक तँ हमरो सन निरीहसँ निच्चाँ उतरल अपन पितियाइनकेँ अहाँ पार-घाट लगेलौं।"

रामखेलावन भाय मुस्की दैत बजला-

"काका, हम हुनकर[3] पार-घाट थोड़े लगौलिऐन, अपन कर्तव्य केलौं। समाजक लोक भेने समाजक प्रति किछु दायित्व तँ होइते छै, ओ दायित्व पूर केलौं।"

रामखेलावन भाइक विचार सुनि घनश्याम कक्काक मनक करिया मेघ जेना थोड़ेक छँटलैन। ओना, छँटलैन चान-सुर्जसँ थोड़े हटि कऽ मुदा सोलहन्नी नहि चौअन्नी मन जरूर बिहुसलैन। बिहुसते बजला-

"बौआ, तोरा सन बेटा जँ हमरो समाजमे[4] जन्म नेने रहैत तँ हमरो

[3] पितियाइन

[4] जातीय समाजमे

तोरे पितियाइन जकाँ सद्गति होइत।"

घनश्याम कक्काक विचार सुनि रामखेलावन भाइक मन सहैट कऽ लग पहुँचैत बाजल-

"काका, समाजक बीच समाजकेँ छोट करि कऽ बुझै छी तँए मनमे कनी झलफली अछि। मुदा समाजकेँ जँ नमहर बुझि देखब तँ केतौ संशय नहि बुझि पड़त।"

रामखेलावन भाइक विचार सुनि घनश्याम काका नमहर साँस छोड़लैन। नमहर साँस छुटिते जेना मन खनहन भेलैन। बजला-

"बौआ राम, एकटा बात कनी-कनी मनमे उठि रहल अछि।"

जिज्ञासु बनि जिज्ञासा करैत रामखेलावन भाय बजला-

"जे बात मनमे उठए ओकरा केकरोसँ नुकाबी नहि। खण्डने-मण्डनक ई दुनियाँ छी। जे जेतेक अपन जिनगीकेँ खण्डन-मण्डन करैत चलत ओकर जिनगी ओतेक फरीच होइत जेतइ। नीको आ अधलोमे। दुनूक दू दिशा छै, जे देश-दुनियाँक भ्रमण करबैए।"

ओना, विचारक दौड़मे घनश्याम कक्काक मनमे बेसी चुभलैन, किएक तँ अपनो जिनगी भरि उपदेशे बँटलैन जइसँ शब्दक जाल कनी-कनी मनमे फरीच भऽ गेल छेलैन। तोहूमे रामखेलावन भाइक सह भेटबे केलैन। सहैट कऽ घनश्याम काका रामखेलावनक मनक लग पहुँच बजला-

"बौआ रामखेलावन, किछु विचार मनमे रहि गेल से बजैले उबिया रहल अछि।"

मुस्की दैत रामखेलावन भाय बजला-

"काका, रदक जेतेक अन्न निकैल जाएत ओतेक मन हल्लुके हएत। तँए जे अछि ओकरा उगलिये दियौ।"

रामखेलावन भाइक विचार सुनि घनश्याम काका पहिल उल्टी

केलैन-

“बौआ, जिनगी भरि[5] परिवारक भरण-पोषण करैत एलौं मुदा परिवारजनसँ जेते लग रहैक छल से नइ रहलौं।”

घनश्याम कक्काक विचार सुनि रामखेलावन भाय बजला-

“मूल्यवान विचार अपनेक भेल।”

घनश्याम काका बजला-

“बौआ, पिता बेटा-बेटीक खाली जनमदते नहि, प्रथम गुरु सेहो होइ छैथ, मुदा से नहि निमैह सकल। कमसँ कम बेटो-बेटीकेँ अपना लग किछु दिन राखि पितृ धर्मक पालन करितौं, से नइ भेल!”

चेतौनी दैत रामखेलावन भाय बजला-

“काका, जँ अहाँकेँ अखनो जिनगी भार बुझि पड़ए तइले श्रवण जकाँ कान्ह अड़ौने छी। मुदा...।”

रामखेलावनक ‘मुदा’ सुनि घनश्याम काका चौंकला जे भरिसक ठनकाक इजोत हएत। बजला-

“बौआ राम, अखनो धरती धरमात्मासँ भरल अछिए मुदा नजैरक दोष परिवार समाजकेँ चिन्हैमे वाधक सेहो अछिए।”

घनश्याम कक्काक विचार सुनि रामखेलावन भाय बजला-

“काका, बेटाकेँ बापे ने बेटपन सिखौत, चाहे पिते ने पुतपन सिखौत। ठाढ़े होइत काल ने बच्चाकेँ नानी-माए ‘लड़े-लड़े’ कहैत कोरामे लइए। तखन?”

मुस्की दैत घनश्याम काका कबड्डी खेलक सर्ड़ी दैत बजला-

“ओहन-ओहन जे महापुरुष सभ भेला जे बिआहे ने केलैन ओ कहाँ कहियो परिवार आकि समाजक उपकारक आशा केलैन। मनुख

[5] 35 बर्ख

योनिकेँ कर्मयोनि सेहो कहल जाइ छै, तँए अपन कर्तव्या-कर्तव्यकेँ ठेकनबैत ने चलए पड़ै छइ!”

हँसैत रामखेलावन भाय बजला-

“जनिहे मियाँ धुनै बेरिया।”

◌

शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017

छातीक हार

भादो मासक अन्हरिया पखक आइ अष्टमी छी आ आइये कृष्णाष्टमी सेहो छी। काल्हि पाँच बजे साँझेमे राधाकृष्ण स्थानक अतिरिक्त आठ-दस ठाम गामोमे लॉडस्पीकरक हॉरन ऊपर-निच्चाँ अकासमे टँगा गेल। ओना किछु बर्ख पूर्व तक कृष्णाष्टमी स्थाने[6]टा पर उत्सवक रूपमे होइत छल मुदा से ऐ बेर बहुत आगू बढ़ल। ऐ बेर गामे उत्सवक रूपमे बदलल जकाँ बुझि पड़ैए। रंग-रंगक गीत–कृष्णजीक जन्मसँ लऽ कऽ रास लीला तक–जहिना अकासमे उठि रहल अछि तहिना मैथिली-भोजपुरी गीत सेहो पसरल अछिए। सभ सभकेँ दाबियो रहल अछि आ दबाइयो रहल अछि। जहिना मचानक ऊपर लत्ती-पर-लत्ती–माने एक रंगक वस्तुक लत्तीपर दोसर रंगक वस्तुक लत्ती–चढ़ि नाचए लगैए आ तर पड़ल लत्ती अपन जान अरोपि जीबतो रहैए आ ऊपरका लत्तीक फूल-फड़केँ चाटि बाँझ सेहो बनबैत रहैए तहिना गामक राग-तानक हाल भेल अछि।

एकर माने ई नहि जे गामक लोकमे उत्साहे ने अछि, हर्खसँ हरखितो अछि आ उत्-सँ उत्साहितो अछिए। उत्साहित तँ एतेक अछि जे ढेरबा-जुआन बच्चिया सभ जखने सुनलक जे कृष्णाष्टमी छी तखनेसँ उत्साहित भऽ दिन भरिक उपास करब मनमे रोपि लेलक जइसँ कियो

[6] राधा-कृष्ण स्थान

परसुए सहि गेल, कियो काल्हि सहल आ कियो आइ सहत, माने आइ उपास करत। ओइ निरीह बच्चिया सभकेँ किए बोध रहतै जे उपास करैक विधि-विधान की अछि, तँए कि ओकरो अपन विधि-विधान बनबैक अधिकार नइ छै सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। कहलो किए जाएत, मिथिलाक माए-बापक संस्कार पाबि बेटा-बेटीकेँ अभावमे उपास करैक अभ्यास बनियेँ गेल अछि किने। तँए आठो-दस बर्खक नेना उपास करैक, रोजा रखैक साहस काइये नेने अछि।

आह! केहेन ओ राति, औझुके जकाँ रहल हएत जे बंगालक खाड़ीसँ उठल चक्रवात देशक एक हिस्साकेँ लपेटलक। लोक केतौ बाढ़िमे डुमि मरैए तँ केतौ मेघ फाटि बरखा भेने आ केतौ ठनका खसने मरिते अछि, एहने ओ अन्हरियाक राति छल जइमे वासुदेव अपन कोरामे कृष्णकेँ रखि चलैत रहला। उत्सवक महौल रहने सड़क परहक चापाकलक चलती सेहो आबि गेल। किए ने औत, यमुना नदीमे गोपी सभ जहिना पानि भरै काल कि नहाइ काल एकठाम होइत छेली तहिना ने कलोपर आइ भीड़ लागल अछि...।

भीड़ देख भुखनी काकी सड़केपर बाल्टीन राखि बजली-

“आजुक मेला केहेन सोहनगर बुझि पड़ैए.!”

रतौलवाली भौजी टिपलैन-

“महकारीक फड़ सन।”

‘महकारी’क गुण भुखनी काकीकेँ बुझले ने रहैन। बुझल ऐ दुआरे नहि रहैन जे हुबगर परिवारक पलित-पोसित छैथ, तँए महकारीसँ भेँट नहि छेलैन। ओना गाए-महींसक भाँजमे सेहो कहियो ने रहली तँए महकारीसँ हटल छेलीहे।

दुलारपुरवाली कनियाँ टेढ़ आँखिये बघुआ-बघुआ रतौलवाली भौजीकेँ देखैत रहली मुदा बजैक साहस नहि केलैन। साहस नइ केलैन आकि साहस भेबे ने केलैन ई दीगर भेल। दीगर ई भेल जे भऽ सकैए

जेठ-छोटक विचार मनमे जगि गेल होनि वा अपने मन रोकि देने होनि जे जखन दू गोरेक बीच गप-सप्प चलि रहल अछि तखन बीचमे बीचमाइन नीक नहि। दुनू गोरेक विचार सुनब जँ रूचिगर लागत तँ सुनब नहि तँ हटि कऽ चलि जाएब।

तैबीच भुखनी काकी बजली-

"से की हइ रतौलवाली कनियाँ?"

रतौलवालीकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना बजली-

"गाम-गाम मेला बढ़ि गेल आ मेल घटि गेल।"

रतौलवालीक बोल दुलारपुरवालीकेँ ने मीठे लगलैन आ ने तीते, तँए रीबरिबाइन जकाँ मुँह चिकुरि गेलैन। ओना दुलारपुरवाली कनियाँ अपन संगतुरियामे सरदारी नेने छैथ तँए जखन कखनो पटकाए लगै छैथ तँ गुड़-खिचड़ीकेँ घी-खिचड़ी कहि अपनाकेँ बँचबैक गुण छैन्हे। तँए गर अँटबैक भाँज लगबैत दुलारपुरवाली कनियाँ चुप-चाप दुनू गोरेक गप-सप्प सुनए लगली।

ओना, रतौलवाली भौजी बच्चेमे शिकार पकैड़ैयोक आ खेलैयोक लूरि सीख नेने छेली। तेकर कारण अछि जे कमला कातक गाममे हिनकर जन्मे भेल छेलैन। वीरुदावनक बोन जकाँ बोनाह गाम ऐछे तँए बोनैया जानवरक उपद्रव रोकैक खगता सभ परिवारमे अछिए। ओना पितो शिकारी रहथिन, तँए ई बात ओ बुझैत रहैथ जे 'बेटीकेँ बेटा-बरबैर अधिकार भेटौ' से सोझे भखने तँ हएत नहि, ओ तँ जिनगीक पद्धतिमे छिपल अछि। तँए बेटीकेँ जंगली जानवरक ओगरवाहीक भारे सुमझा देने छेलखिन।

सोझमतिया भुखनी काकी, सोझे मुहेँ रतौलवाली भौजीकेँ पुछलखिन-

"कनियाँ, अहाँक बात नइ बुझलौं?"

ओना, रतौलवाली भौजी बुझै छेली जे भुखनी काकी हमर बात

नीक जकाँ नइ बुझि रहली अछि। मुदा आगूमे ठाढ़ दुलारपुरवाली दुआरे गढ़ि-गढ़ि कऽ अपन सभ बात बजैत रहली।

दुलारपुरवाली सेहो ने कलपर सँ हटली आ ने किछु बजबे केलीह, मुदा गजर-गजर सुनितो नइ छेली सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

तैबीच ठिकिया कऽ रतौलवाली भौजी बजली-

"किसना मुट्ठी पाबैनमे लोक चित्तचोरबेक उपास करैए किने। से जाबे चोरक माएकेँ लोक नइ चीन्हत ताबे चोर केना पकड़ाएत। जइ दुआरे मेला कुमेला आ मेल कुमेल भऽ गेल अछि।"

जेना दुलारपुरवालीक छातीक हार हरण भऽ गेल होनि तहिना बाल्टीन उठबैत बजली-

"मेला कुमेला हुअ आकि मेल कुमेल मुदा झमेल नइ बढ़ल अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तँए झमेल झमेलिया जानह, सुमेलिया अपन बाट धरत.!"

कहैत कलपर सँ आँगन दिस दुलारपुरवाली बढ़ली। दू लग्गा आगू जखन बढ़ली तखन रतौलवाली भौजी, दुइए गोरेक सुनै-जोकर अवाजमे भुखनी काकीकेँ पुछलखिन-

"काकी, ईहो उपास करै छैथ किने?"

सोझमतिया भुखनी काकी, बजली-

"कहिया उपास करै छी आ कहिया नइ करै छी, सएह ने बुझै छी।"

हरिजन परिवारमे जनमल रीतलाल मैट्रिक पास केलक। साधारण परिवारमे जन्म भेने नोकरीक पाछू दौग-धूपमे नइ सकल। तँए नोकरीसँ वंचित रहल। बर-बँटाइ करैबला परिवार रहने बाप-माए एतेक अपन इज्जत बेटाकेँ बुझै लगल जे अनकर खेतमे काज करए नइ जाए दइ छल। अपने जे बँटाइ करै छल, मात्र तेहीटा मे जाइ छेलइ। माने केकरो अनका ऐठाम काज करए नइ जाए देलक। ओना, अपने दुनू परानी

अनको खेत-पथारमे बोनि-बुत्ता करैत छल मुदा तेकरा ओ अधला नइ बुझैत। परिवारक उपार्जनो तँ वएह छेलै जे सभ दिनसँ करैत आबि रहल छल।

समए ससरल। ओना, रीतलाल जखन मैट्रिकेमे पढ़ैत छल तहिये बिआह भऽ गेल छेलइ। नीक परिवारमे बिआह भेलै, माने अपनासँ अगुआएल परिवारमे। रीतलालक ससुर लोअर प्राइमरी स्कूलक शिक्षक। हुनकर अपनो बिआह हाइये स्कूलमे पढ़ै-दिनमे भेल छेलैन आ बिआहक थोड़बे दिनक पछाइत सरकारी स्कूलक शिक्षक बनि गेला। पढ़ै-लिखैक संस्कारो आ बातो-विचार परिवारमे थोड़ेक अगुएलैन। भिनसुरका समयमे कारीब छअ-सात बजे रीतलाल गामक चौहद्दी बान्हि, माने अपन डीलरीक क्षेत्र टहैल-बुलि घरपर पहुँचल।

नोकरी-चाकरी नइ भेने हारि-थाकि कऽ रीतलाल खेती-बाड़ीक काज शुरू केलक। आठ बर्ख धरि जखन बँटाइ खेतमे समय बितौलक तखन हरिजन कोटासँ डीलरी–राशनक सरकारी दोकान–क लाइसेंस बनौलक। डीलरीक लाइसेंससँ नव आशाक किरण रीतलालक जिनगीमे पहुँचल। दस वार्डक पंचायतमे चारिटा डीलर। जइमे तीनटा पहिनेसँ छल आ चारिम रीतलाल भेल। लाइसेंस बनौलाक साल भरिक पछाइत एक वार्डक डीलर रीतलाल बनि गेल। बाँकी तीन-तीन वार्ड पुरना तीनू डीलरक हिस्सामे रहल। डीलरीक आमदनी रीतलालक अपनो मनमे आ परिवारोक मनमे नचिते छल। आशा-आशीपर दिन बीतैत गेल, बीतैल गेल।

छह मासक पछाइत रीतलालक लाइसेंस सीज भऽ गेल। अनाड़ी रीतलाल रहबे करए, केतए की भेल से अखनो तक वेचारा नहि बुझि पेलक। काल्हिये चारि बजे ब्लौकसँ चिट्ठी भेटलै।

ओना, रीतलाल बुझै छल जे पछुआएल लोकक लूट सगतैर होइते छइ। मुदा जखन बेसी आमदनी नजैरपर पड़लै तखन मनमे आशा जागिये गेल छेलइ। जखने घरसँ निकैल आगू बढ़ल तखने चाह-पानक

खर्च, चन्दा-चिट्ठाक खर्च सेहो बढ़बे करत।

हाथमे चिट्ठी अबिते रीतलाल पढ़लक। पढ़ि कऽ ब्लौकसँ निकैल सड़क परहक पीपरक गाछक निच्चाँमे साइकिल लगा जड़िक सिरपर बैस विचारए लगल जे आब की करब..?

चोटसँ रीतलालक मन चोटाएल छेलैहे, चोटाएल मनमे जेहेन विचार उठै छै ओहने विचार सभ उठए लगलै- ओह! अनेरे कोन फेरामे पड़लौं जे डीलरीक लाइसेंस करेलौं। ऐसँ नीक भने दुनू परानी अपन खेती-पथारीक काजमे लागल रहै छेलौं, जेहेन आ जेते करै छेलौं तेहेन आ तेते तँ बिसवासू उपज/आमदनी होइते छल। हरहरो-खटखट तँ नइ होइ छल। जेहेन आमदनी होइ छल तेहने बनि चैनसँ तँ रहै छेलौं। अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ि गेलौं। गाम-घरसँ लऽ कऽ जेतेक दूरक दुनियाँ[7] अछि तइमे सभ कि दुश्मन कोनो आइयेक छी, आइ तँ राशनक बहाना छइ। जँ दुश्मनक मन इष्टक रहितै तखन तँ ओ पहिने विचार दइतए किने। जेतए जे त्रुटि अछि ओकरा पूराए लइतौं। मुदा से नइ भऽ सकल। कोटाक आमदनी हाथसँ निकैल गेल। गामक लोकसँ लऽ कऽ ब्लौक ऑफिस होइत कोट-कचहरीक सबहक मुँह भरब असान थोड़े अछि..!

एकाएक रीतलालक मन उनैट कऽ अपना दिस बढ़लै। बढ़िते समोह लगि गेलइ।

माथपर दुनू हाथ देने पीपरक गाछक सिरपर बैसल रीतलाल दुनियाँक रीत देखए लगल। मनमे उठलै- यएह छी जिनगी आ यएह छी जिनगीक खेल.! जेते लोक एकपेटू भऽ गेल अछि ओकर मुकाबला हमरा बुते थोड़े हएत। जरूर ई सभ जहल कटौत। जखन जहल चलिये जाएब तखन इज्जते की रहत..!

'इज्जते की रहत' लग अबिते रीतलालक मन ठमैक गेलइ। ठमैकते मनमे दोसर विचार जगलै। जगलै ई जे जहल जहिना इज्जत लइ छै

[7] माने ब्लौक आ ब्लौकक गोदाम धरि

तहिना इज्जत दइतो छै किने। मुदा केकरा दइ छै आ केकरा लइ छै ओ भिन्न बात अछि। जहल जखन इज्जत दइतो छै आ लइतो छै तखन किए ने लइक रस्ता पकैड़ आगू बढ़ी। मुदा ब्लौकसँ आगू देखलो तँ नहियेँ अछि।

एकाएक रीतलालक मन आगू बढ़ल। अनेरे पीपरक जड़िमे माथा हाथ देने बैसल छी। सुतनिहारक जिनगी सुतै छै आ जगनिहारक जिनगी जगै छइ।

उठि कऽ साइकिल पकैड़ रीतलाल घरमुहाँ भेल। दस डेग जखन आगू बढ़ल तँ मनमे उठलै- कोनो कि हमहीं एहेन पहिल डीलर छी जे ऐ फेरामे पड़लौं हेन। केतेको डीलर पड़बो कएल आ उनटा कऽ फेर डीलरी लेबो केलक। सभ तँ चिन्हरबे लोक छी। तहूमे अपने जाति-बेरादर बेसी अछि। से नहि तँ काल्हि फुदन डीलरसँ भेँट करब। ओ कोट-कचहरीक रेहल-खेहल लोक छैथ आ अपनो अनुभव छैन्हे जे केना डीलरी घुमलैन। घरपर रीतलाल पहुँचैत-पहुँचैत विचारि नेने छल जे जखन परिवारमे डीलरीक काज अपना सिरे करै छी तखन नीक-बेजाइ चोटो अपने सिर राखब। जखने माइयो-बाबू आ घरोवालीक कानमे पड़त तखने ओहो सभ चोटेबे करत। तहूमे परिवारक धनक हार टुटि गेल अछि। तँए परिवारमे केकरो लग किछु नहि बाजब। जखने बाजब तखने अनका जे हौउ, जहलक नाओं सुनिते कनैत-कनैत माइक औरुदा पाँच बर्ख कमि जाएत।

रीतलालक मनमे लगले ईहो शंका भेलै जे समए-साल बिगैड़ गेल अछि। जँ कहीं जहल गेलौं तँ घरोवाली रहत कि नहि रहत। देखै छिऐ जे तीन-तीन–चरि-चरिटा धिया-पुतावाली सभ घर छोड़ि पड़ा जाइए। खाएर जे हौउ, जखन उक्खैरमे मुड़ी पड़ि गेल अछि तखन मुसराक डर केने थोड़े काज चलत।

एक तँ कृष्णाष्टमीक भोर दोसर भादो मास, रातिमे कृष्ण भगवानक जन्म हेतैन। भरि दिन आ भरि राति धूमधाम रहत।

गामसँ घुमि-फीरि जखन रीतलाल अँगनाक डेढ़ियापर पहुँच रहल छल, तखने रीतलालक पत्नी सेहो आँगनसँ निकैल डेढ़ियापर एली।

जिनगीक टुटल आशसँ रीतलालक मन ओहन फूल जकाँ मन्हुआ गेल छेलै जेकर डारिये टुटि गेल रहैए। मन्हुआएल मन रहने रीतलालक मुँह सेहो मौला सिकुरि कऽ उदास भऽ गेल छल। ओना, रीतलाल अपन मनकेँ सक्कत बनैबते छल। मनमे उठै छेलै जे जखन जिनगीमे ठनका खसिये पड़ल तखन ओकर निमरजना केना हएत से ने सोचब आ सोचि कऽ रस्ता धरब। तखने ने जानो बँचत आ फेर डीलरियो भेट जाएत जइसँ परिवारकेँ आगू-मुहेँ उठाएब।

डेढ़ियापर पहुँचते रीतलालकेँ पत्नी पुछलकैन-

“कोन बोनमे बोनाएल छेलौं जे छातीक हार टुटि गेल?”

ओना, बुधनी ऐ बातकेँ जनै छेली जे सभ दिन भोरे टहैल-बुलि कऽ गामक हवा-पानि लइते छैथ। मुदा कृष्ण जन्मोत्सवक मेला ने आइ छी। बाजा-गाजासँ गाम गनगनाइए। बाल-बोध आ ढेरबा-सियानसँ लऽ कऽ चेतन-सँ-बुढ़ धरि आइ सभ ने उत्साहित छैथ। की पुरुख, की औरत, सबहक मन उत्साहसँ उत्साहित छैन्हे। ओहने उत्साहमे उत्साहित भऽ बुधनी बाजल छेली।

एक तँ भिनसुरका समय तैपर पत्नीक बोल सुनि रीतलालक मन तड़ैप उठल। तड़ैपते मुहसँ फुटल-

“हार तँ हारे छी, चाहे ओ देहक हार हुअए कि मनक हार हुअए आकि धनक हार हुअए जे टुटि गेल ओकरा फेरसँ सेरिया सुधारि कऽ पहीरि लेब। खाली हड्डी बँचल रहक चाही। से तँ बँचल अछिए। तखन हार टुटब केना भेल। हँ, एते भऽ सकैए जे केतौ छहैक कऽ कनी-मनी छिटैक गेल हुअए आकि लूटा गेल हुअए।”

अपना जनैत रीतलाल पत्नीकेँ उत्तर दए देलैन मुदा कृष्ण जन्मोत्सवक मेलाक उत्साह रहने बुधनीक मन नइ भरलैन।

तैबीच अपन रणभूमिक रूप बनबैत रीतलाल फेर बाजल-

“जाबे हम नहाइ-सोनाइ छी ताबे अहाँ जलखै तैयार करू।”

जलखैक नाओं सुनि बुधनी बुझि गेली जे केतौ कोनो काजे जाएब छैन। तँए बिना किछु आगू बजनहि बुधनी अपन काज दिस डेग बढ़ौली। ओना, रीतलाल अबोध-अनाड़ी नव डीलर, डीलरीक कारोबारकेँ नीक जकाँ नहि बुझैत जइसँ मन हको-परास भाइये गेल छेलैन। अन्हार-इजोतक बीच बसल दुनियाँ अछि तइमे रीतलालकेँ सोल्होअना अन्हारे बुझि पड़ै छेलैन। मुदा अन्हारोमे तँ लोक टप्पा-टोइया दइतो जीबऽ तँ चाहिते अछि।

पतिक रूप देख बुधनीक मनमे सेहो सिहरन जागिये गेल छेलैन जइसँ मन कनी-मनी भरियाएब सोभाविके छल। ओना, बुधनीक मनमे ईहो उठैत रहैन जे पतिसँ पुछि लेलापर मनक भार घटत। मुदा फेर अपने मनमे ईहो उठि जानि जे जँ कोनो उदगारक बात रहैत तँ ओ अपने उपकैर कऽ कहितैथ। तहूमे आइ कृष्णाष्टमी छी। भरि वृन्दावन सोहर-सँ-बधैइया तक अनघोल होइते अछि।

जलखै खा रीतलाल मन मारि फुदन ऐठाम विदा भेल।

फुदन बी.ए. पास ग्रेजुएट डीलर छैथ। ओना, घरक आर्थिक दशा ओतेक नीक नहियेँ छैन, मुदा रीतलालसँ बहुत नीक छैन्हे। खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ बच्चा सभकेँ जेनरल शिक्षा[8] धरिमे कोताही नहियेँ छैन। ओना, पिता कोसी प्रोजेक्टमे किरानीक नोकरी करैत सेवा निवृत्त भेल रहथिन। जखन फुदन बी.ए. पास केलक तखन पिताक इच्छा रहैन जे फुदन सेहो नोकरी करए, मुदा से भेलैन नहि। ओना, पिताक विचार फुदन एक शर्त्तपर नोकरी करब मानि नेने छल। शर्त्त ई जे घूसहा नोकरी पौनिहारकेँ घूसखोर बनब अनिवार्य ऐ दुआरे भऽ जाइ छै जे मोट रकमकेँ भरपाइ करए पड़ै छइ। ओना, पिता घूस दइले तैयार भेलखिन मुदा फुदन विरोध

[8] सरकारी संस्था द्वारा देल शिक्षा

करैत कहलकैन जे जेते पाइ घूसमे खर्च करब तेतेसँ अपने कारोबार किए ने ठाढ़ करब।

बच्चेसँ फुदन स्वतंत्र विचारक लोक तँए शुरूए अपन जिनगीकेँ चिन्हैक पाछू लागि गेल जइसँ आत्मबल भेटैत गेलै आ आत्मबली बनैत गेल।

रीतलालकेँ देखते फुदन सासुरक अंगिते बजला-

“साढ़ू, अहाँक लाइसेंस रद्द कऽ देलक.!”

फुदनक बात सुनि रीतलाल चौंकल। चौंकैक कारण भेल जे काल्हि चारि बजेमे तँ चिट्ठीए भेटल तखन फुदन बुझि केना गेला। मुदा सत्य बातकेँ छिपौने नोकसान होइते अछि। मन मसोसि कऽ रीतलाल बाजल-

“हँ।”

अगरजानी[9] जकाँ फुदन बजला-

“चिन्ता-फिकीर करैक बात नहि अछि। तखन तँ किछु दिनक लफरा भाइए गेल।”

तही बीच सुवधी–फुदनक पत्नी–चाह नेन दरबज्जापर पहुँचली। सुवधीक चेहरा फूल सन खिलल। खिलल चेहराक कारण छेलैन जे पतिक संग संगिनी-पतिक बीच छेली तँए कमल फूल जकाँ डगडगी छेलैन्ह। रीतलालपर नजैर गड़ा सुवधी बजली-

“आइ किसना-मुट्ठी पाबैन छी, तँए दरबज्जापर आएल अभ्यागतकेँ बिना भोजन केने जाएब उचित नहि।”

हारैत रीतलालक मन रहबे करइ, बाजल-

“रहैये ले तँ एलौं हेन। अपना तँ गौंआँ-घरूआसँ लऽ कऽ अनगौंआँ तक उजाड़ै पाछू लगले अछि।”

[9] आगूक जननिहार

चाह पीब फुदन उठैत बजला-

“साढ़ू, ताबे अहूँ सढ़ुआइनसँ गप-सप्प करू, हमहूँ एकटा काज सम्हारि लइ छी। पछाइत निचेनसँ गप-सप्प करब। एते मनमे बिसवास बना लिअ जे हएत किछु ने, लाइसेंस भेटबे करत, खाली किछु दिनक लफरा भेल।”

◌

शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017

उमेरक लेहाज

जेठ मासक इजोरियाक अष्टमी दिन। ओना तिथि-मितिक हिसाबसँ मास उतरोन्मुखक दिस उतैर गेल मुदा रूप-गुणक हिसाबसँ चढ़न्ते दिस गनगनाइत बढ़ल जा रहल अछि। माने ई जे जहिना मनुखक जिनगी अनुकूल समाजिक आ परिवारिक वातावरण पेब गनगनाइत चढ़न्त दिस बढ़ैत रहैए आ प्रतिकूल रहने पाछू दिस पछुआइत पाछाँ होइत जाइए तहिना मौसमोक अछिए। मौसमेक अनुकूल मासोक स्थिति स्वत: सएह भऽ जाइए। तिथि-मितिक हिसाबसँ ऐ बेरक जेठ मास तेसरपनमे पहुँच गेल अछि। आइ इजोरिया पखक अष्टमी तिथि छी। मुदा सुर्जक तेजपन ढलान दिस नहि चढ़न्ते दिस चढ़ल अछि। तेकर कारण ई भेल जे पैछला साल चितरा नक्षत्रमे जे दसटा फूही भेल तेकर पछाइत अखन तक एको बून पानि धरतीपर नहि खसल जइसँ धरतीक छाती जरैत-जरैत ओहिना जरि गेल जेना विपैतक मारल केकरो मनमे क्रोधक आगि पजैर जाइ छै आ जँ ओ प्रकृति-निर्मित विपैत रहल तखन तँ ओकरा हलाहल बुझि महादेव जकाँ पीब कऽ पचाइयो लइए मुदा मनुख-निर्मित विपैतकेँ बरदास नहि कऽ पबैए, तहिना ऐ बेरक जेठक रूप बनि गेल अछि। बनबो केना ने करत। तीनटा मौसम–जाड़, गरमी आ बरसात–केँ सभ देखै छी। जाड़क मौसममे जँ खूब ओस-पाला खसल तँ शीतलहरी भेल जइसँ मौसम भरिया कऽ विकराल बनि जाइए। मुदा ओही जाड़क मौसममे जँ ओस-पालाक कमी भेल तँ ओकर रूपे विपरीत

भऽ जाइए। पहिल परिस्थितिमे सुरुजो अपन हारि कबूल कऽ मास-मास दिन मुँह नुकौने रहै छैथ मुदा वएह सुरुज दोसर परिस्थितिमे हँसैत-खेलैत आने मौसम जकाँ माघो मासमे ओहिना मुँह देखबैत रहै छैथ, माने समयपर उगि समयानुसार आगू बढ़ैत अपन लीला धाम पहुँच लीला करिते छैथ। ओना, ई दुनू परिस्थिति दू दिशाक पाशा भेल। जेकर बीचक जे बीचपन अछि ओइमे सइयो-हजारो पाशाक खोल्ही बनले अछि। माने ई जे कोनो दिनक आकि कोनो मासक आइक केहेन मौसम अछि, माने औझुका तारीखमे केतेक ओस वा केतेक पालाक जोग हेबा चाही आ अछि केतेक। जइ जोगमे कमी-बेसी वा समगम नहि भेने सइयो रंगक रोग-व्याधिक लग्न बनियेँ जाइए। अहिना अगहन कहियौ आकि अधियाएल कातिक मौसमक रूप लोक देखए लगैए। ओना, मासे-मास आ दिने-दिनक अपन मौसमक रूप-गुण सेहो अछिए। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे।

ऐ बेरक जेठ आन सालक जेठसँ अनुकूल परिस्थिति पेने अपन अनुकूल जिनगी धारण केनहि अछि। बरखे आ कि जाड़े किए हएत, ओकर तँ मास छी नहि। ओना, हवे-बिहाड़ि भेने जखन बरखा होइए, जेकरा बिहरिया बरखा कहै छिऐ–सेहो नहियेँ हएत ओहो नहियेँ कहल जा सकैए मुदा भाइये जाएत तेकरो कोनो ठर-ठेकान छै सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे अछि, जेते ठेकानल-बेठेकानल अछि से अछि। मुदा ऐ बेरक जेठ सभकेँ मन रहबे करत जे बहुत दिनक पछाइत एहेन जेठ आएल।

गाए-महींस पोसनिहार आठ बजेसँ पहिनहि अपन माल-मवेशीकेँ छाहैरक ठौर धड़ा दइ छैथ। तहिना भानस केनिहारि सेहो नअ बजेसँ पहिनहि अपन चूल्हि-चौका सम्हारि ऐ दुआरे लइ छैथ जे जरौन मास छी, कखन जरा देत तेकर ठेकान नहि। मुदा ई तँ ठेकानै पड़त जे जहिना जाड़सँ वा पानिक ठंढसँ जड़ौन लगैए तहिना आगियो ने जरौन छीहे। गामक-गामकेँ क्षणेमे क्षणाक करैत घर-दुआरकेँ जारक जारैन बना उला-

पका लइए। खाएर जे करैए मुदा दुनूक जड़ौन एक-दोसरक विपरीत पाशापर नइ बैसल अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ऐठाम एतबे जे सोल्हो सिंगार, बत्तीसो आसन आ चौंसैठो कलासँ सुर्ज अपन सुर्जपन देखा रहल छैथ।

जाड़ आ गरमीक अपन-अपन लक्षण-करम छै तँए दुनू बेछप अछिए। मुदा तेसर जे वर्षाक मौसम अछि ओ तँ चाहे मौसमक उभय लिंग छी चाहे किछु ने छी। मनुखमे जहिना हिजरा होइए तहिना अछि। ओना, किन्नरकेँ हिजरा सेहो कहल जाइए मुदा ऐठाम जाति-विशेष नहि, ओकर लक्षण-करमसँ मतलब अछि। किन्नर तँ ओतेक अगुआएल सभ दिनसँ रहला अछि, जे संगीत कलासँ जुड़ल रहला आ अखनो छैथ।

बरखा-मौसमकेँ ऐ दुआरे हिजरा कहि रहल छी जे बेठेकान मौसम अछि। जेना भादवक लिअ, जखने झाँट-हवा आ झमटगर पानि एकठाम भऽ बरिसए लगैए आकि जाड़क जड़ौन आबए लगै छै जइसँ जाड़ होइए। मुदा लगले मेघोकेँ बदलने आ हवोकेँ असथिर भेने, गुम-गुमौआ गरमी सुर्जक रौद पेब देहेटा नहि मनोकेँ तँ जरैबते अछि। ओना, भलेँ बरसातक मौसमकेँ हिजरा कहि टारि दियौ मुदा सालक–किसानी जिनगीक सालक–राजा वएह छी। सेहो नइ कहने पक्षपन भेबे कएल।

सालक राजा बरखा मौसम ऐ दुआरे छी जे जँ खूब बरिसल आ धोइ-पोछि कऽ फसलकेँ लऽ गेल तैयो अपना घरमे जमा कऽ लेलक आ जँ नहि बरिसल रौदी भेल तैयो जरा-पका कऽ अपना घर लऽ गेल। दुनू कला तँ ओकरा छइहे। तँए पूजनीय अछिए। ओना पूज्यनीयेक सेहो दोसरो कारण अछि, ओ अछि ओकर खुशपन। जखन ओकर[10] मन खुशी रहल आ खुशीसँ अपन किरिया-कलाप करैत रहल तखन समय-कुसमयक संग पूरैत उचित-अनुचितक विचार करैत ठेकानि-ठेकानि बरखो वारिस करैए आ रौदो-बसात करैए, एहेन मौसम निरमबैए जइसँ

[10] बरखा-मौसमक

धन-धान्यसँ सालो भरि धरती सजलो रहैत आ गीत-संगीत करैत अपन दिवसो गुदस करबै करैए।

जहिना सालक तीनू मौसममे बरसातक मौसम सालक राजो छी आ हिजरो तेहने उतारक रामपुर गाममे मदनेसर भाय छैथ।

जेठ मासक इजोरिया अष्ठमीक एगारह बजे दिनक समय। ने अपराहणे आ ने भोरराहणे भेल। ओना उचित जँ बुझल जाए तँ ओ भोरराहण भेल। मुदा जहिना कोनो गरीब घरक बच्चा भोजनक अभावमे कुपोषित भऽ रोगा-टटा जाइए वा जुआन-जहान वृद्धपनक रूप पकैड़ लइए तहिना भोरराहणकेँ सेहो भाइए गेल छल। माने पाछूए-सँ एहेन रूप बनि गेल छल जइमे सुर्ज फूह खेलैत धरतीक संग वातावरणोकेँ रूपे बिगाड़ि देने छला।

एगारह बजेक समय जागेसर भाय अपन पहिल उखराहाक सभ काज सम्हारि अराम करए ओछाइनपर पहुँच गेल छला। हहाएल-फुहाएल मदनेसर भाय एकटा झोरा काँखमे लटकौने पहुँचला।

जागेसर भाय आ मदनेसर भाय दुनू बेकती गामक स्कूलसँ हाइ स्कूल तकक संगी। तँए संगपना रहबे करैन। जइसँ तीनू शब्दक प्रयोग दुनूक बीच होइते आबि रहल छेलैन। कखनो दुनू भैयारी संगी बनि एक-दोसरकेँ ‘रौ-रौ’क प्रयोग करैथ, कखनो एक-दोसराक पत्नीसँ गप-सप्प करै दुआरे ‘भैया होउ’क प्रयोग करैत छला तँ कखनो अपनासँ छोटो[11] आ अनठियो लग ‘यौ-यौ’क प्रयोग सेहो करैत निमाहैत अखन तक आबि रहल छला। ओना, अखन दुइये गोरे छला तँए ‘रौ-रौ’मे गप होइतैन मुदा से नहि भेलैन। नइ होइक कारण भेल जे जागेसर भाय शान्तचित्त ओछाइनपर अराम करै छला आ मदनेसर भाइक चित्त अशान्त छेलैन। अशान्तक कारण छेलैन जे नहाइये बेरमे बेटो आ पत्नियोक संग तेहेन कटहा-कटही गप-सप्प शुरू भेलैन जे खिसिया कऽ नहाएबो छोड़ि

[11] उमेरमे छोट

मदनेसर भाय घरसँ पड़ा गेला। ..ओना, जीवनक दूरी दुनू गोरेक बीच बेसी अछि मुदा विद्यार्थीए जीवनसँ मदनेसर भाइक मनमे अगुआ गेलैन जे जागेसर भाइक दरबज्जापर पहुँचैसँ पहिनहि रस्तेपर सँ ‘जागे भाय’ ‘जागे भाय’ करैत पहुँचल छला।

एक तँ गरमीक प्रचण्ड रूप रहने मदनेसर भाइक मुँह-कान मौला कऽ करिया गेले छेलैन, तैपर नहेनौं ने छला आ अन-पानि तँ पछुआएल रहबे करैन।

ओना बाजबेसँ जागेसर भाय बुझि गेल छला जे मदनेसर छी, मुदा जिनगीक जे दूरी दुनूक बीच बनि गेल छेलैन तँए तइसँ बेसी धियानमे किछु नहि एलैन।

दलानक ओसार परहक चौकीपर बैस मदनेसर भाय कान्हक झोरा चौकीपर रखलैन। तैबीच जागेसर भाय सेहो कोठरीसँ निकैल ओसारक चौकीपर आबि बैसला। बसिते जखन जागेसर भाय मदनेसर भायकेँ हियासि कऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे त्रिशूलसँ बेधित मदनेसर छैथ। त्रिशुलसँ बेधित देह, मन आ बुधि तीनू अक्रान्त छैन। मौसमक प्रचण्ड रूप रहितो नहेनौं ने रहैथ तँए देहक शूल, बेटा-पत्नीक कटाह विचार सुनि पड़ाएल छला तँए विचारक शूल आ बिना अन-पानिक इंजन ढक-ढक करैत रहैन तँए मनक शूल रहबे करैन।

ओना मदनेसर भाय जाबीर शिकारी छैथ। दिनमे एक बेर जँ अनकर अन[12] भेट जाइन तँ चौबीस घन्टा माने दिन-राति पानियोँपर काज चला लइ छैथ। से बेवहारिक रूपमे रहैन। जाबीर शिकारी रहने जहिना नाच पार्टीक बिपटा होइए जे पेन्ट पहीरि पुल्लिंगक पार्ट खेला लइए आ पेन्टेपर साड़ी लपेट स्त्रीलिंग बनि स्त्रीक पाट खेल लइए, से गुण चौंसैठोअना मदनेसर भायमे रहबे करैन। आइ रौतुका भाँजमे पड़ल छला तँए किछु जलथम्हन दिनोमे हेबेक चाही से नइ भेल छेलैन। तेकर

[12] माने अभ्यागतीक अन्न

कारण छल जे तीनू गोरेक[13] बत-कटावैल भेने खिसिया कऽ मदनेसर भाय पड़ा गेला। ओना जँ बुझी तँ ओ पड़ेला नहि, किएक तँ घर ओहन धाम छी जैठाम चौंसैठो कला सजल रहैए मुदा से घरकेँ जे घर बुझौनिहार छैथ तिनका लेल। ..मदनेसर भाइक जिनगी कौआक जिनगी बनि गेने नीक मकान रहितो मास दिनक कोन बात जे रातिक अदहोसँ बेसी समय अन्तइ बितबै छैथ। तँए घरसँ पड़ेता की, ओ तँ पड़ेलहे भेल...। मदनेसर भाइक चेहराक रूपक अनुमान करैत जागेसर भाय बजला-

“मदन, केतौसँ अबै छह कि जाइ छह?”

जागेसर भाइक मनमे भलैन जे कड़गर रौदमे केतौसँ एला अछि तँए रौदाएल छैथ जइसँ चेहराक रूप उतरल छैन। ओना, जहिना जागेसर भाइक घर रस्ते-कातमे छैन तहिना मदनेसर भाइक घर दोसर टोलक पुवारि भागमे रस्ते-कातमे छैन। जागेसर भाइक बात सुनि मदनेसर मुहसँ तँ किछु ने बजला मुदा मुँहक बिजकीसँ स्पष्ट निकलै छेलैन जे दुनूमे किछु ने। माने ने घरे आ ने बाहरे। किछु ऐ दुआरे नहि जे बाहरसँ तँ अबै नइ छी, आ ने कोनो निसचित जगहपर निसचित काजे जाइये रहल छी। बेटा-पत्नीक कटाह बात सुनि पड़ा रहल छी मुदा से जागेसरकेँ कहबै केना, की कहत।

मदनेसरक मुँहक बिजकनसँ जागेसर भाय बुझि गेला जे भरिसक नहाइसँ पहिने किछु भऽ गेलैन तँए नहाएबो छुटि गेल छैन आ खाएब सेहो छुटि गेल छैन। अखन खाइ बेर अछि तँए मुँह छोहैन करैत जागेसर भाय बजला-

“अखन खाइ बेर अछि मदन, पहिने किछु खा लएह।”

ओना जइ विचारक लोक जागेसर भाय बनि गेल छैथ ओइ विचारे मदनेसर सन लोककेँ खेबाक कोन गप जे दरबज्जापर बैसैयो देब अनुचित बुझै छैथ, मुदा भूखक आगू आचार-विचार कनी कात पड़िये जाइए।

[13] अपने, बेटा आ पत्नीक

किएक तँ गदहो सन जानवर आ उल्लुओ सन चिड़ैकेँ भोजन भेटते अछि। दोसर ईहो मनमे उठैत रहैन जे एक मुट्ठी खुऔने जरल पेट भरैए, ओइसँ अचार-विचारकेँ कोन मतलब छइ...। तैबीच मदनेसर भाय बजला-

“नइ, नइ खाएब। पहिने, जइ दुआरे एलौं हेन से कनी बुझि लएह।”

ओना जेहेन खाधूर मदनेसर भाय छैथ जँ परिवारजनक खेवासँ पहिने आग्रह भेल रहितैन तँ ‘नहि’ नइ कहितैथ मुदा मने-मन अजमा नेने छला जे सभ जखन खाइये-पीब नेने छैथ तखन खुएबे कथी करता। बड़ बेसी खुएता तँ बेरू पहर जे भुज्जा-ले चूरा रखने हेता ओ नून संगे खुएता, तइसँ नीक ने भेल जे नइ खाएब...। ओना, तैबीच जागेसर भाय दोहरा कऽ सेहो बजला-

“मदनेसर, काज केतौ पड़ाएल जाइए, अखन खाइ बेर अछि।”

बहुरूपिया मदनेसर भाय छथिए। चारू मुलुक दुनियाँ देखल होनि वा नहि मुदा मुहसँ सभ जनिते छैथ। संयासी रूप जकाँ बजला-

“जागे, कहियो घी घना, कहियो मुट्ठी चना आ कहियो ओहो कहाँ! तेहने ने अपन जिनगी अछि। तँए खाएब कोनो माने थोड़े रखैए।”

मदनेसर भाइक बात सुनि जागेसर भाइक मनमे सन्तोख उठबे केलैन जे अपने तँ तिथि-अतिथिकेँ सत्कारे करैक अधिकारी ने छी, तइसँ बेसी काइए की सकै छी। जागेसर भाय पुछलखिन-

“की बात मदनेसर?”

‘की बात’ सुनि मदनेसर भाइक मन थरथरा गेलैन। मुदा क्रोधोक तँ अपन समैक हिसाबे सीमा अछि, तँए विचारमे कनी-मनी फेड़-फाड़ भाइये जाइए।

तैबीच बिच्चेमे चौकीपर सँ उठि मदनेसर भाय बजला-

“कनी पेशाव केने अबै छी तखन निचेनसँ सभ गप करबह।”

किछु विचार करैक बहन्ने मदनेसर भाय उठला आकि पेशाव करए उठला से तँ ओ जानैथ मुदा जागेसर भाइक मनमे भेलैन जे भरिसक कोनो तेहेन उझट बात बेटे वा पत्नियेँ जरूर कहलकैन अछि जइ बेथासँ मदनेसरक हृदय बेथित जरूर छैन। मुदा से तँ बजला पछातिये बुझब। भऽ सकैए जे ओहन चोटाएल बात बजबे ने करए। जँ नइ बाजत तँ अपने अनुमानसँ पुछबै, मुदा तैयो जँ खोलि कऽ नहि बाजत तँ जएह सुनने रहब तेकरे जवाब ने सुनेबै।

मदनेसर भायकेँ चौकीपर बैसते जागेसर भाय पहिने चेहराकेँ नीकसँ हियासलैन। चेहरामे बेसी चढ़ा-उत्तरी नहि देख बजला-

"बाजह।"

जहिना पानिमे सौरखी-करहर वा मखानकेँ पानिक ऊपरक पात पकैड़ नाले-नाल भँजियबैत बिच्ची पकैड़ उखाड़ल जाइए तहिना मदनेसर भाय जड़िये पकैड़ बजला-

"जहिना बेटा कुकुर भऽ गेल तहिना घरोवाली भऽ गेल। दुनूमे के कम से निर्णये ने कऽ पाबि रहल छी।"

मदनेसर भाइक मुहसँ 'निर्णय' सुनि मुस्की दैत जागेसर भाय बजला-

"मदन, तूँ ते अपने पण्डित छह, जखन तोरा अपना बुते निर्णय कएल नइ भेलह तखन हमरा बुते हएत।"

ऐठाम पण्डितक अर्थ जाति विशेष नहि, विचार विशेष अछि, तँए गलत नजरिये नइ देखल जाए। पण्डितक अर्थ गाम-समाजमे पूजा-पाठ विशेषसँ अछि, जे एक जातिक बीच नहि सभ जातिक बीच अपन-अपन पुजौनिहार भऽ गेल छैथ।

जागेसर भाइक बात सुनि जेना आरो बेसी तामस मदनेसर भायकेँ लहैर गेलैन तहिना बजला-

"जेकरा सभ-ले दिनकेँ दिन नइ बुझै छी आ रातिकेँ राति नइ बुझै

छी, दिन-राति रने-बने वौआइत रहै छी, जखन सएह ने मोजर दइए, तखन दुनियाँ मोजर देत!"

मदनेसर भाइक विचारक आँट-पेट देख जागेसर भाय कान कुरियबैत बजला-

"पहिल बात तँ ई कहबह जे अपनो उमेरक लेहाज राखह। दोसर ई जे केकरो मोजर देने केकरो मोजर थोड़े होइए। ओ तँ ओकर अपन विचारानुकूल किरिया-कलाप केने होइए।"

ओना बजैक क्रममे जागेसर भाय बाजि गेला मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे उमेरक माने मदनेसर जन्म तिथिक समयसँ ने बुझि गेल होथि। मुदा जखन गप-सप्प काइये रहल छी तखन आगू ऐ विचारकेँ फरिछा लेब जे उमेरक माने भेल जिनगीक सर्वांगिन विकसित मेड़।

'केकरो कहने केकरो मोजर होइए' सुनि मदनेसर भाय चौंकला। देहमे सिहरन उठए लगलैन। बजला-

"जागे, कोनो बात बजैमे जँ उनटा-पुनटा भऽ जाए तेकरा सुधारि कऽ बुझिहह मुदा सभ बात खोलि कऽ कहै छिअ।"

बिच्चेमे मुस्की दैत जागेसर भाय बजला-

"अपना दुनू गोरे ते लंगोटिया संगी छी, केना कातिक मासमे आमक गाछीमे अखड़ाहा खुनि लड़ै छेलौं, से बिसैर गेलहक।"

जागेसर भाइक मनमे उठि गेल छेलैन जे मदनेसर छड़पनमा लोक अछि, केतए-सँ कि जोड़ि बाजि देत तेकर ठेकान नहि, तँए जाबे बिटिया कऽ नहि पकड़ब ताबे नीक जकाँ बुझि नहि पएब। जहिना सौरखी-करहरक पनिपत ओकर बालपन भेल जेकरा जड़िपन सेहो कहि सकै छिऐ। ओना, रसे-रसे मदनेसर भाइक मन सेहो असथिर हुअ लगलैन। मुदा जिनगीक अनुकूल लोक अपन चालियो-ढालि आ बातो-विचार बनाइये लइए।

मदनेसर भाय बजला-

"की दिन-दुनियाँ छल आ अखन की भऽ गेल।"

जागेसर भाय बुझि गेला जे आब मदनेसरक विचार सुढ़िआइ दिस बढ़ि रहल अछि। तँए पहिने ओकरे मुहसँ उगलबाबी। बजला-

"से की मदनेसर?"

मदनेसर भाय बजला-

"पहिने जँ कियो केकरो उपकार करैत छल ते ओकरा आँखिमे पानि रहै छेलै, मुदा आब ओकरा लोक चलाकी बुझैए जे फल्लाँसँ ठकि अपन काज सुतारि लेलौं।"

अपना जनैत मदनेसर भाय पेटक बात बाजल छला मुदा जागेसर भायकेँ अपन जिनगीक अनुसार दोसर अर्थ लगलैन। बजला-

"मदनेसर, कियो अपन जिनगी-ले सभ किछु कर्म बुझि करैत चलैए, तइमे जँ केकरो उपकार भऽ जाइ छै तँ भऽ जाइ छइ। तेकरा ओ किए उनैट कऽ ताकत जे फल्लाँकेँ उपकार केने छिऐ तँ ओहो ओकर बदला देत। हँ, एहेन जरूर होइए जे जे परोपकारी लोक छैथ हुनकासँ केतौ-ने-केतौ कोनो उपकार भाइये जाइए।"

जागेसर भाइक विचार सुनि मदनेसर भाय बजला-

"केकर मुँह देख उठल छेलौं से नहि जाइन। जँ नीक मुँह देख उठल रहितौं ते एना थोड़े होइत।"

मदनेसर भाइक बात सुनि जागेसर भाय बुझि गेला जे जरूर कोनो तेहेन विचार परिवारमे फँसल छैन जे सबहक सभसँ टकरा रहलैन अछि। परिवार हुअ आकि समाज, विचारक बीच भेद भेने टकराहटक सम्भावना भाइये जाइए। मुदा जखन परिवार-ले आकि समाज-ले हुअ कि समाज, सभ जँ नीके चाहै छी तखन बीचमे टकराव केना..! माने सभ तँ नीके दिस बढ़ए चाहैए तखन टकराहटक सम्भावना केतए छइ! मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे परिवेशो आ जिनगियो लोकक एहेन मोड़पर आबि गेल अछि जे जहिना जिनगी तहिना विचारो छिड़िया रहल अछि। माने ई

जे जे परिवार वा समाज नीकक दिशामे बढ़ि रहल अछि ओहू परिवारमे मशीन ऐने विचार बदैल रहल छै आ जे परिवार वा समाज अधला दिस बढ़ि रहल अछि ओहू परिवार आ समाजमे अधला वृत्ति मोड़ लेलक अछि। जे गुरुसँ गुरुतर कहियौ आकि छिछलाहटसँ गहींर कहियौ, भाइये रहल अछि।

अखन धरि जे जिनगी मदनेसर भाइक रहलैन ओ जागेसर भाय नीक जकाँ नहियोँ तैयो बहुत किछु, गाममे रहने बुझिये रहल छला, मुदा ई सोचि पेटमे रखने छला जे दुनियाँक पाछू जे लोक वौआ रहल अछि– माने दोसरक नीक-अधला बुझै पाछू–से किए ने अपना पाछू वौआएत जे अपन कल्याण हेतै, अपन नीक हेतइ। तही बीच सुमित्रा भौजी लोटामे पानि नेने दरबज्जापर पहुँचली।

सुमित्रा भौजीक हाथमे लोटा देख मदनेसर बजला-

"जागे भाय, भगवान जँ पत्नी देलैन ते अहाँकेँ देलैन। हमरासँ कोन जनमक कनारि छेलैन जे कपारमे हराशंख लिख पठा देलैन।"

ओना मदनेसर भाइक मुहसँ सुमित्रा भौजी अपन बड़ाइ सुनलैन, मुदा मन उधिएलैन नहि, जेना आरो शान्त भेलैन। बजली-

"अपना घरक बात अनेरे अनका लग बाजि अपन घरो आ घरोवालीकेँ किए घिनबै छी। तइसँ नीक थोड़े हएत। परिवारमे कनी-मनी नीक-बेजाए भाइये जाइ छै ओ अपने ने थतमारि कऽ सम्हारब कि गाममे ढोल पीटब!"

सुमित्रा भौजीक बात सुनि जहिना जागेसर भाय गंभीर भऽ विचारए लगलैथ तहिना मदनेसर भाय सेहो विचारए लगला। ओना दुनूक जिनगी दू दिशामे बहैत, मुदा प्रश्न तँ एके दुनूक सामनेमे छेलैन। भलेँ अपन-अपन जिनगीक बहाबक अनुकूल किए ने विचार करैथ। जागेसर भाइक मनमे उठलैन जे परिवारक तीनू सदस्य–पति, पत्नी आ बेटा–क जिनगी टोबए लगला। बालपनक संगी रहितो मदनेसर धनक धन्य अर्थ

नहि बुझि पेलक। भलेँ भरि दिन किए ने भरवैत हुअए जे मनुखक सभसँ पैघ धन ओकर बुधि-ज्ञान छी जे मनकेँ पकैड़ ओकर जिनगीकेँ अचार-विचारक संग संचालित करैए। तैठाम जँ धनक उपार्जनो आ उपभोगो मदनाइत चलत तँ ओइ जिनगीक दुर्गैत हएब सोभाविक छइ। रंग-बिरंगक श्रमहीन उपार्जन केनिहार मदनेसर अछिए। की ओहन परिवारमे श्रमशील मनुख बनि सकैए? आ जँ श्रमशील जिनगी नइ बना पेलौं तँ केतौ-ने-केतौ जिनगी श्रमचोर हेबे करत। जइ बेटामे बच्चासँ बेटपन नइ आएल ओ बेटा कहियो अपनाकेँ बापक बेटा बुझत? तहिना जइ स्त्रीमे स्त्रीपन नइ आएल तँ ओ पतिपन थोड़े बुझि सकैए। श्रम ओहन गुण छी जइ गुणसँ लोक गुणी बनि गुणवान बनैए। गुणवान बनला पछातिये कियो विद्वान, कियो पहलवान तँ कियो शक्तिमान बनैए। जखन 'वान' तखने मान। मुदा मदनेसर भाइक मनमे उठलैन जे चोरी केने भेल कि छिनरपन आकि ठकपन-फुसिपन केने, मुदा एते तँ हमरे कएल ने परिवारमे छी जे तीन पुस्त-जोकर मकान बना देलिऐ, खेत-पथार तेते कीनि देलिऐ जे बेचियो-बेचियो खाएत तैयो दू पुस्तकेँ नहि सठतै, तइ परिवारमे जँ घरवालीक संग बेटो चानिपर खापैड़ फोड़ै ओइ परिवारमे जएह निरलज हएत सएह ने रहत। विचारक दौड़मे अबैत-अबैत मदनेसर भाइक ब्लडपेसर जेना तेज भऽ गेलैन। ओना, पाँचटा बेमारी देहकेँ जकड़नहि छैन मुदा संयमी रहने भरि दिन झोरेमे सभ दवाइ रखने रहै छैथ तँए समय-समयपर खाइत रहै छैथ, जइसँ भरि दिन ठीक-ठाक चलै छैथ। मुदा शान्त वातावरणमे बेमारियो शान्त रहैए आ अशान्तमे तँ अशान्त भाइये जाइए। ..मदनेसर भाय झोंकमे बजला-

"जागे, तूँ हमर बालसखा छिअह। गाममे रहैले कहह आकि चलि जाइ-ले। से अखने कहि दएह।"

बीच-बचाव करैत सुमित्रा भौजी बजली-

"जखन गाममे रहैले कही वा नहि कही, एते विचार मनमे जँ अछि तँ पहिने किछु खा लिअ। हमहूँ समाजे ने छी आ अहूँ गामेक चर्च ने

केलौं।"

सुमित्रा भौजीक बात सुनि मदनेसर भाइक ब्लडपेसर जेना गड़ धेलकैन तहिना शान्त होइत बजला-

"जागे भाय जेठ छैथ, अहूँ भौजीए भेलौं, मातृतुल्य भौजीकेँ अपना ऐठाम मानल गेल अछि, तँए अहाँक बात मानि लइ छी। मुदा एकटा शर्त्त अछि जे परिवारमे आइये छह-नअ भऽ जाए।"

जागेसर भाय बजला-

"जँ हमरा केने हेतह तँ आइये भऽ जेतह। नहि तँ अपन करैत रहिहह।"

○

शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017

पैंतीस साल पछुआ गेलौं

अदहा फागुन बीत गेल। परसू शिवराति छल। पनरहिया फगुआ शुरू भऽ गेल। पनरहिया फगुआ भेल, जे फगुआ, फगुआ पाबैनसँ पनरह दिन पहिनहिसँ गौल-बजौल जाइए।

बेरुका समय, शुभकान्त काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर ठकुआएल बैसल चिन्तामे डुमल छला। चिन्ताक कारण छेलैन जे शिवरातिये-शिवराति जँ साल जौड़ैथ तँ देखैथ जँ परसू शिवराति छल, पैछला साल बीत गेल आ ऐगला साल दू दिन अगुआ गेल।

फेर जखन फगुआकेँ अड्डा बना दोसर तारीखकेँ जोड़ैथ तँ देखैथ जे तेरह दिन अखन पैछला सालक बाँकी अछि आ ऐगलाकेँ चढ़ैमे तेरह दिन देरी अछि। मुदा फेर जखन तेसर तारीखपर नजैर दैथ, जइमे चैतसँ साल शुरू होइए आ फागुनमे विसरजन करैए, तँ लगले मनमे ईहो उठि जाइन जे अनेरे लोक थोड़े गबैए- 'जे जीबए से खेलए फॉगु..!'

मुदा शुभकान्त काकाकेँ तारीखक ओझरी तैयो ने सोझरेलैन। किएक तँ लगले मनमे उठि गेलैन जे फगुआकेँ ने तेरह दिन बाँकी अछि मुदा सकराँतिक हिसाबसँ तँ पचीस दिन बाँकी अछि। किएक तँ बारह दिन पाछू चलैए। जखने पचीस भेल, तखने मासमे पाँचे दिन ने कम भेल, महिना तँ भाइए गेल...।

शुभकान्त कक्काक मन जखन महिना दिस बढ़ैन आकि दोसर

तारीख मनेमे हल्ला करए लगैन जे तखन तँ बैशाखसँ नवका साल आ चैत तक पुरना साल रहल...।

शुभकान्त काकाकेँ भाँजेपर ने चढ़ैन जे ऐ ओझरीकेँ केना सोझराएब। ओझराएल मनमे आरो ओझरी तखन लगि गेलैन जखन रूसक क्रान्ति मन पड़लैन। मन पड़िते मनमे ठहकलैन जे ओ क्रान्ति अक्टुबरमे भेल, जेकरा किताव पढ़निहार नवम्वर मानै छैथ। ओहूठाम पतरेक पेंच लागल अछि। तँए क्रान्तिक समय ओइठाम कोन तारीख चलै छल पहिने से ने बुझए पड़त।

आँगन बहारैत-बहारैत कल्यानी काकी जखन अँगनासँ बहराक मुँह लग पहुँचली आ दरबज्जाक मुँहक मिलानी भेलैन तखन नजैर शुभकान्त काकापर पड़लैन। हाथमे बाढ़ैन रखनहि हिया कऽ देखली तँ बुझि पड़लैन जे घटाएल घटा जकाँ करियाएल घन पसैर रहल छैन। मुदा बजली किछु ने। चुपचाप आँगनक मुँहथैर होइत बहारैत दरबज्जाक मुँहथैर लग पहुँचली तँ अपन काजक हाजिरी पुरबैत आँखि उठा शुभकान्त काकापर देलैन। ओना शुभकान्त कक्काक आँखिमे नोर तेना डबकल रहैन जे कखनो धारक रूप धारण कऽ सकै छल। मुदा तेकरा ई सोचि शुभकान्त काका सम्हारि रखने छला जे संग मिलि दुनू परानी चाहे जेहेन जिनगी हुअए मुदा संगे-संग अखन धरि चलबो केलौं आ चलियो तँ रहले छी। तैठाम जँ अपन बेथेक कथा पत्नीकेँ सुनेबैन सेहो केहेन हएत। ओना, मनुखताक रूपमे देखल जाए तँ ओ नीक हएत। मुदा पत्नियोकेँ तँ अपन संसार छैन किने, जे दुनूक संजोगक परिवार ओइ संसारक संगम छी। तँए वैचारिक रूपमे अनिवार्य ऐछे, भलेँ बेवहारिक रूपमे अपन-अपन दुनियाँक पाछू घुमैत रही...।

ने शुभकान्ते काका कल्याणी काकीकेँ किछु कहलखिन आ ने कल्याणीए काकी किछु बजली। ओना, अपन ठकुआएल जिनगीक बीच शुभकान्त कक्काक मन वौआइत रहैन जे कल्याणी काकीक मन कहलकैन जे भरिसक कोनो तेहेन विचारमे बिचैड़ रहला अछि जेकर

कोनो रस्ते ने सुझि रहल छैन। तँए अन्हारकेँ आरो अन्हार बनबैसँ नीक जे भने ओहो अपन इजोत तकता आ हमहूँ अपन इजोत ताकब..! ई बात तँ कल्याणी काकीक मनमे उपकलैन तँ मुदा लगले दोसर मन धोपैत कहलकैन-

"जखन दुनू गोरे संगी छी, एकबट्टू रस्ता धेने चलि रहल छी तखन नहियोँ बुझब वा जानबकेँ तँ नीक नहियेँ कहल जा सकैए।"

मुदा तैयो सोझा-सोझी कल्याणी काकी किछु नहि बाजि मने-मन विचारली जे अपने नहि किछु बाजि गोपीलालक मुहसँ बजबाएब...।

कल्याणी काकी दरबज्जेपर बाढ़ैन रखि गोपीलालक आँगन एली। गोपीलाल अँगनेमे रहए, नजैर पड़िते कल्याणी काकी बजली-

"बौआ गोपी, बुड़हा ठकुआएल दरबज्जापर बैसल छैथ, से कनी भाँज बुझहक तँ, की बात छिऐ।"

गोपीलाल पकिया चेला शुभकान्त कक्काक। आन मानेमे पकिया कि कचिया से नहि कहै छी, मुदा आन गाम-गमाइत करैमे गोपीलाल संग पुरिते छैन। ओना दसअन्नी, बरहअन्नीसँ लऽ कऽ दुअन्नी-एकन्नी तकक सभ गप शुभकान्त काका आ गोपीलालक बीच चलिते अछि तँए गोपीलाल बजैमे निधोक अछिए।

गोपीलालक आँगनसँ अगुआ कऽ निकैल कल्याणी काकी अपन दरबज्जापर आबि बाढ़ैन पकैड़ बहारए लगली। पाछूसँ गोपियोलाल आबि बिनु प्रणाम केनहि शुभकान्त काका लग बैसल। 'बिनु प्रणाम-पाती'क गलत अर्थ नहि, एकठाम रहलाक पछाइत आ अलग-अलग रहने भेँट भेलापर दुनूक दू परिस्थिति अछि तँए प्रणामक दू रूप अछि। ..शुभकान्त काका लग बैसते गोपीलाल बाजल-

"काका, तमाकू खाइले एलौं हेन। ओना बेरूका चाहो पछुआएले अछि।"

कनखरल कल्याणी काकी रहबे करैथ, 'चाह' सुनि बजली-

"बौआ गोपी, तमाकुल पाछू खइहह, पहिने चाह पीब लएह।"

शुभकान्त काका एक-दोसरपर नजैर दौड़बैत टक-टक देख रहल छला, मुदा अखन तक किछु ने बाजल छला। बकारक हरण मरणसँ भेल छेलैन आकि मरमसँ से तँ ओ जानैथ मुदा छला चुपे। मने-मन अपनो जिनगी आ परिवारक संग समाजोक जिनगीकेँ देख रहल छला, देख रहल छला टुटैत जिनगी, देख रहल छला 'पछुआएल जिनगी', देख रहल छला 'खसैत जिनगी'।

मुदा अज्ञानतो तँ मुँह चुप रखैक पैघ शस्त्र छीहे। की गामक सभ समयकेँ एके रंग आँकि रहल छी? आँकबो तँ असान नहियेँ अछि, जेहेन जइ वेपारीकेँ पूजी रहत, से तेहने ने वेपारो करैए। मुदा आन बुझौ वा नहि बुझौ, आकि बुझि कऽ अनठाबौ वा नहि अनठाबौ, मुदा अपन तँ दायित्व ऐछे जे जे जानि रहल छी ओकरा मानि बना आनोकेँ मनाएब! मुदा कहबै केकरा, एहेन लोकक कानमे ने पड़ि जाए जे समस्याकेँ उनटा कऽ भगवानक दोख लगा अपनाकेँ ओइमे नुका लइए। तँए ओहन लोकक कानमे जरूर जेबा चाही जे समस्याकेँ समस्या बुझि समाधान करए।

ओना गोपीलालक मन चुप रहबकेँ नीक बुझैत मुदा कल्याणी काकीक मन भन-भनाए लगलैन। भन-भनाए ई लगलैन जे मालिक[14] मन्हुआएल छैथ आ अपने ओइ बातकेँ बुझबे ने करिऐ, ईहो तँ नीक नहियेँ भेल। दुनियाँ जनैए जे झुटकोसँ घैल फुटै छइ। तँए जँ कोनो एहेन विचार मुहसँ खसि पड़ए जइसँ पतिक कष्टक हरण भऽ जाइन, तँ किए ने ओहन प्रतिकार करब। मुदा ईहो नीक केना हएत जे जखन गोपीलालकेँ विचार बुझैले बजा अनलौं तखन अपने जा बीचमे टभकए लगी।

मुदा लगले कल्याणी काकीक मनमे दोसर विचार उपैक गेलैन। उपैक ई गेलैन जे भोलो बाबा तँ असगरे धुनी रमा बैसल रहै छला मुदा फेर दरबार केना लगि जाइ छेलैन! दरबार तँ अहिना ने लगै छेलैन जे

[14] पति

पार्वती छिपलीमे जलखै, गणेशजी हाथमे पानिक लोटा आ कार्तिक खलिया बाटी नेने पहुँचै छल आ गौआँ-घरूआ सभ सेहो कियो भाँग, कियो चीलम, कियो गूलक डोरी आ कियो गुलाब-तरुत्तीक संग प्रेमकटारी नेने पहुँचै छल। जखने दस गोरे एकठाम बैसलौं कि दरबार लागल।

चुपे-चुप रहने गोपीलालक मन औनाए लगलै। औनाए ई लगलै जे जखन कल्याणी काकी कक्काक मनक बात बुझैले बजा अनली तखन मुहोँ बन्न राखब, नीक नहियेँ भेल। शुभकान्त कक्काक आँखिपर गोपीलाल आँखि चढ़बैत बाजल-

"काका, एहेन समयसँ कहियो भेँट नहि भेल छल।"

जेना शुभकान्तो कक्काक नजैरमे यएह विचार नचै छेलैन कि की, अपन नजैरकेँ गोपीलालक नजैरसँ मिलबैत बजला-

"गोपी, तूँ तँ कौल्हुका छौड़ा छिअ, मुदा सत्तैर बर्खक जिनगीमे हमरो पहिल बेर एहेन समस्यासँ भेँट भेल अछि।"

शुभकान्त कक्काक विचारक सह गोपीलालकेँ भेटल। सह भेटिते गोपीलाल सहैट कऽ शुभकान्त कक्काक विचार लग पहुँच बाजल-

"से की काका?"

ओना गोपीलालकेँ लगक लोक शुभकान्त काका सेहो बुझै छला आ दूरक सेहो। मुदा जइ समस्याक जालमे शुभकान्त काका ओझराएल छला तही समस्याक जालमे गोपीलाल सेहो फँसल छल तँए लग मानए लगला।

तही बीच कल्याणी काकी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। ओना, शुभकान्त काका आ गोपीलालक बीच जे टोका-टोकी भेल से कल्याणी काकी सेहो सुननहि छली। मुदा अँगनामे, चुल्हि लग, रहने नीक जकाँ नहि बुझि पेली। ओना, मनमे तैयो बिसवास बनले रहैन जे गोपीलाल सभ गप कहबे करत।

चाहक चुस्की लइत शुभकान्त काका बजला-

"बौआ गोपी, अपन आँखिक देखल अछि जे जेकरा तूँ रेडियो-अखबारमे सुनने-पढ़ने हेबह जे हिमाचल प्रदेशमे मेघ फाटि कऽ बरिसल ओहन अपनो ऐठाम गोटे साल भऽ जाइए। ऐ साल से नइ भेल। मुदा जेहेन माइरिक चोट ऐ साल लागल, तेहेन ओहू साल नइ लगै छल जइ साल मेघ फाटि कऽ बरिसै छल।"

मुड़ी डोलबैत गोपीलाल चाहक गिलास रखि बाजल-

"काकी, पानक सभ समचा एतै नेने आउ। गपो-सप्प सुनब आ पानो लगाएब।"

खग जानए खगक भाषा। भाय, भरल केना खगलक भाषा बुझत, ओ तँ सुनबो आकि देखबो करत तँ ओकरा खढ़िया जकाँ खेहारि देत। ओना गोपीलालक भाषा शुभकान्तो काका बुझलैन, मुदा मनमे भेलैन जे मनुखकेँ तँ मनुखता पबैले मनुखाह बनइ पड़तै...।

जँ ओ मरखाह बनि जाएत तखन ओकर भरण-पोषण भारी भाइए जेतइ। तहिना कल्याणी काकीक अपनो मन सजैग गेलैन। किए तँ अझप्पे ने शुभकान्त कक्काक बात सुनने छेली तँए मनमे उपैक गेल छेलैन जे दुखीकेँ सुखीक सेवा आ दलितकेँ फलितक मेवा नइ भेटत तखन दुखताहक दल केना ठाढ़ भऽ सकैए? मुदा ऐठाम तँ पति-पत्नीक बीचक प्रश्न अछि, कोनो धरानी जँ हुनकर मनक पीड़ा नइ उतारबैन तँ ओ पीड़ाइत-पीड़ाइत पीड़ाइये जेता किने। पानक सभ समचा–माने पानक पात, चुनक कोही, खएर, सुपारी, जरदा इत्यादि पनडालीमे–नेने कल्याणी काकी एली। पानक डाली देख शुभकान्त काका बजला-

"लाउ, हम अपने हाथे पान लगाएब।"

'अपने हाथे पान लगाएब' सुनि बिच्चेमे गोपीलाल टभकल-

"काका, हमरो नीक जकाँ पान लगाएल होइए।"

गोपीलालक बात सुनि शुभकान्त काका मुस्किएला। शुभकान्त कक्काक मुस्की देख कल्याणियो काकी आ गोपीलालोक मनमे शंका

भेलैन। शंकाक कारण ई जे सभ दिन जखन कल्याणी काकीक हाथक लगौल पान काका खाइ छला तँ नीक लगै छेलैन, मुदा आइ किए एना बजला? हमहूँ कि पान लगाएब नइ बुझै छी, केते भोजो-काज आ सतनारायण भगवानक पूजोमे पान लगैबते छी।

मुदा पानपर सँ धियान हटा शुभकान्त कक्काक मुस्कीपर धियान अँटकबैत गोपीलाल बाजल-

“काका, मुस्कियेलौं किए?”

ओना, चाह पीबिते आ पानक डाली आगूमे देख शुभकान्त कक्काक मनक पीड़ा पीड़ीपन नेने ठमैक गेल छेलैन तँए पानपर कम धियान रखैत मूल समस्यापर गम्भीर भऽ गेल छला। मुदा तैयो गोपीलालक पश्नकेँ जिज्ञासुक जिज्ञासा बुझि मुँह-छोहैन करैत बजला-

“गोपी, जहिना भोजन केनिहार जँ अपने भोजनक ओरियान करैत भोजन बनबए तँ ओकर मनक इच्छाक तृप्तक बीज-रोपण तखने भऽ जाइए। किएक तँ ओ अपन मनोनुकूल विन्यास बनबैए।”

गोपीलाल शुभकान्त कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलक किएक तँ शुभकान्तो काका अदहा विचार अपना पेटेमे रखि नेने छला। ओना नीक जकाँ नहियोँ बुझला पछाइत ने गोपीलालेक आ ने कल्याणीए काकीक मनमे कनियोँ खोंट भेलैन। किएक तँ दुनूक नजैर शुभकान्त कक्काक ठकुआएल मनपर छेलैन। तैबीच शुभकान्तो काका मुँहमे पान लऽ नेने रहैथ।

आ जरदा खाइते शुभकान्त कक्काक मन फुलाए लगलैन जे जरदाक सुगन्धक संग निकैल रहल छेलैन। तैबीच गोपीलाल बाजल-

“काका, की कहने छेलिऐ जे सत्तैर बर्खक जिनगीमे पहिल बेर देखलौं..?”

गोपीलालक प्रश्न सुनि शुभकान्त काका पाछू उनैट तकला तँ बुझि पड़लैन जे समस्याक ने फड़क कमी अछि आ ने सिरक। मुदा अपने ने

ओकरा बिटिया कऽ बुटियाबए पड़त। जँ से नहि करब तँ अनेरे बजला साफल की हएत?

शुभकान्त काका बजला-

“बौआ गोपी, जइ चिन्ताक चिन्त करै छेलौं से पछाइत कहबह। ओना इशारामे कहि दइ छिअ जे तीस बर्खक किसानी जिनगी पछुआ गेल।”

एक संग अनेको प्रश्न शुभकान्त कक्काक मुहसँ खसैत देख गोपीलालक मन चौंकल। चौंकते चँकियाएल जे कल्याणी काकी बजौने किए छेली आ हम कऽ की रहल छी! मुदा जैठाम बड़क गाछ जकाँ अनेको जड़ि ऊपरे-ऊपर केतौ-सँ-केतौ सिर निकैल बनि गेल अछि तैठाम मूल-जड़िकेँ पकड़ब बाल-बोधक खेलो तँ नइ छी...।

बाजल-

“काका, अपन बातकेँ बुधिया-बुधिया सीटियबैत कहियौ।”

शुभकान्त काका बजला-

“बौआ, जे कहै छिअ तैपर सुरता रखिहह। जेते सुरता रखबह तेते सूरता औतह आ जेते सूरता औतह तेते सूर-वीरता जगतह, मुदा संगे असुरता सेहो माया जकाँ पछुऐबते औतह, तँए चाँकि राखह पड़तह।”

शुभकान्त कक्काक बात सुनि जहिना कल्याणी काकी सहमली, तहिना गोपियोलाल सहमल।

सहैमते बाजल-

“हँ, से तँ ठीके कहै छिऐ काका।”

गोपीलालक बात सुनि शुभकान्त कक्काक मन जेना पाछूक विचार करैत अपन धियान मूल प्रश्नपर एकाग्र भेल। एकाग्र होइते शुभकान्त काका बजला-

“बौआ गोपी, समाजमे दू तरहेँ विचार चलैए, एकटा इष्ट होइत आ

दोसर अनिष्ट होइत। इष्टसँ सुदृष्ट पनपैए आ अनिष्टसँ दुष्ट पनपैए जइसँ दुष्टताक प्रवृत्ति जगैए।”

शुभकान्त कक्काक विचार नीक जकाँ गोपीलाल बुझि नहि पेब रहल छल। तँए मुँह बबा गेल छेलइ। जे शुभकान्त काका बुझि गेला। तइ बिच्चेमे कल्याणी काकी बजली-

“अपन मन किए बेथाएल अछि?”

कल्याणी काकीक प्रश्न सुनि शुभकान्त काका अपना दिस तकैत बजला-

“बड़ बढ़ियाँ बात बजलौं। मुदा पहिने ई बुझि लिअ जे दुनियाँमे जेते दुख वा कष्ट अछि ओइमे दूअना भगवानक देल अछि बाँकी चौदहअना मनुख मनुखकेँ दइए। अपन जे दुख वा कष्ट अछि ओ मनुखक देल अछि।”

कहि शुभकान्त काका चुप भऽ गेला।

उदास होइत शुभकान्त कक्काक चेहरा देख गोपीलाल बाजल-

“उपाय?”

बेथित मने शुभकान्त काका बजला-

“बौआ, पैंतीस बर्खक जिनगी टुटने आइ औतइ पहुँच गेलौं जेतए पैंतीस बर्ख पहिने छेलौं।”

अचम्भित होइत गोपीलाल बाजल-

“पैंतीस बर्ख..?”

शुभकान्त काका बजला-

“हँ। अस्सीक दशक[15] किसानक लेल उठानक समय रहल। जेकरा हरित क्रान्तिक संग आंशिक स्वर्ण काल सेहो कहि सकै छिऐ। ओही उठाइनमे किछु किसान अपनाकेँ उठौलैन। ओही उठाइनिक रस्तासँ

[15] 1980

अपनाकेँ उठबैत एलौं। जइसँ बाड़ी-फुलवाड़ीक रोहैन सुधैर गेल छल। जे आइ बनौआ आफतमे[16] नाश भऽ गेल!”

अखन तक गोपीलाल मनुख निर्मित दुख वा कष्टकेँ नीक जकाँ नइ बुझै छल, तैसंग कृषि क्रान्तिक अर्थ सेहो फरिछा कऽ नइ बुझै छल, तँए दुनू प्रश्नक बीच ओझरा गेल छल। मुदा विषयक खोर-चाल भेने बुझैक जिज्ञासा मनमे जगि गेल छेलै, तँए सामंजस करैत बाजल-

“काका, अहाँ ते तेहेन पण्डितक गिरथानि पितिआइन जकाँ बजलौं जे...।”

गोपीलालक विषयकेँ सम्हारैत शुभकान्त काका बजला-

“गोपी, तूँ ते वृन्दावनक गोपी जकाँ नचनाइयेटा[17] बुझै छह। नाचक तानी-भरनी तँ बुझै नइ छहक तँए तोरा बुझैमे कम एलह।”

चपाड़ा दैत गोपीलाल बाजल-

“काका, हमर मनक बात अहाँ बुझि गेलिऐ आब अहाँ कनी हमरा सन मुहसँ[18] बजियौ।”

हारल बाटमे हेराएल गोपीलालक विचार सुनि शुभकान्त कक्काक मनमे पर्पनक संग अर्पण सेहो जगलैन। बजला-

“बौआ, बीसमी सदीक आठम दशकमे किसानक संग सरकार जुड़ल। जुड़िते किसानक जिनगीमे जीवनी शक्ति भरैक कार्यक्रम बनौलक।”

बिच्चेमे गोपीलाल बाजल-

“की जीवनी शक्ति?”

“बौआ गोपी, रामायणिक कथामे सुनने हेबह जे संजीवनी बुट्टीक

[16] मनुख निर्मित आफतमे

[17] मात्र काजमे लागल रहब

[18] भाषाक स्तरसँ

पहाड़े हनुमानजी उठा लेलैन।”

सुनल कथा गोपीलालकेँ रहबे करइ, बिच्चेमे बाजल-

“हनुमानजी ठीके बज्र रंगमे रंगल महावीर छला, काका।”

गोपीलालक विचार सुनि शुभकान्त कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक दुनू गोरे[19] जीवनी शक्ति बुझि गेल। विचारकेँ आगू बढ़बैत बजला-

“बौआ गोपी, तीस सालक जिनगी टुटि कऽ निच्चाँ झड़ि गेल जइसँ आइ ओतइ पहुँच गेलौं जेतए तीस साल पहिने छेलौं।”

गोपीलाल बाजल-

“से केना काका?”

गोपीलालक प्रश्न सुनि शुभकान्त काका स्मृतिमे विस्मृति भऽ गेला। मन पड़लैन पूसा कृषि अनुसन्धानक आमक गाछ। बजला-

“बौआ, तीस बर्खक भीतर की अनलौं आ केतए-सँ अनलौं तेकर छोड़ह।”

ओझरीक डरे आकि की, गोपीलालोक मन जेना अकछाए लगलै तहिना बाजल-

“हँ काका, ओकरा सभकेँ अखन छोड़िये दियौ। ने अहाँ केतौ भागल जाइ छी आ ने हमहीं। दोसर दिन बुझि लेब।”

तीस साल पूर्व आनल पाँचटा आमक गाछक संग पूसाक कृषि-मेलाक उछाही शुभकान्त कक्काक मनमे आबिये गेल रहैन, बजला-

“बौआ गोपी, पाँचटा आमक गाछ आइसँ चौंतीस बर्ख पूर्व पूसासँ अनने रही। जहिना जानकारी भेटल छल तहिना रोपलौं। ओना ओ गाछ साले भरिक पछाइत मोजैर गेल, मुदा पाँच बर्ख धरि मोजर तोड़ैत रहलिऐ। छठम सालसँ ओ पाँचो गाछ एतेक फड़ए लगल जे भरि

[19] कल्याणी काकी आ गोपीलाल

मौसम[20] नीक जकाँ परिवारमे चलए लगल। मुदा ओ पाँचो गाछ ऐ बेर पानिक जमावसँ सुखि गेल।”

गोपीलालक मन गुलाबखासक सिनुरियाएल आमपर पहुँच गेल। बाजल-

“सुअदगर होइ छल किने?”

शुभकान्तो काका गोपीलालक सुआदमे भँसिया गेला। भँसियाइत बजला-

“ओह! कपूर जकाँ मुँहमे बिला जाइ छल।”

गोपीलाल विचारकेँ मोड़ैत बाजल-

“जाए दियौ! जहिया जे भोग-पारसमे छल से भेल।”

शुभकान्त काका बजला-

“दसम बर्खसँ ओ आमदनीक जड़ि बनि गेल। जे साले-साल बढ़ैत-बढ़ैत किसानी जिनगीक जीवनी शक्ति बनि गेल छल।”

गोपीलाल-

“काका, दुनियाँमे केकरो आशा नइ करी ओ तँ आमक गाछे छल, लोको की ओइसँ कम अछि।”

गोपीलालक बात सुनि शुभकान्त काका किछु ने बजला। मनमे उठलैन- अस्सी बर्खक आन्हर बुढ़ जखन भदवरिया अन्हार टपि जाइए तखन...।

◌

शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017

[20] अगाइत-पछाइत आमक किस्मक हिसाबे पूर्ण मौसम

पुरान साड़ी

जेठ मासक अमरस्साक नीन तँए सुति कऽ उठैमे कनी देरी भाइये गेल। ओना, नीन केतबो मोटाएल आकि भरियाएल किएक ने हुअए मुदा पत्नी उठा कऽ तोड़िये सकै छैथ। मुदा छैथ तँ सोलहन्नी पतिवरते, कखनौं सुखमे बाधा उपस्थित नहि करए चाहै छैथ। सुतबकेँ सुख बुझि अपने केतबो काल धरि सुतल रहब तैयो ओ उठेती नहि, जइसँ नीन सुरक्षित बँचल रहिये जाइए। तहिना खेबाकाल सेहो बिनु पुछनौं पत्नी बजलोरी थाड़ीमे तरूआ-तरकारी आ छलिगर दही आगूए-सँ फेकैत रहै छैथ, भलेँ मनमे एहनो आशा किए ने होनि जे थारीमे जँ बँचल रहत ओ अपने हिस्सा ने भेल जइसँ डेढ़िया-दोबर पबैक आशा पत्नीकेँ बनियेँ जाइ छैन। खाएर जे छैथ, मुदा जिनगी भरि संग तँ वएह रहती तँए दोसराक सिहन्तो केने कोनो लाभ नहियेँ अछि।

ओछाइनपर सँ उठि आँखि मीड़िते दलानसँ निच्चाँ भेलौं कि मिरचाइ-धनियाँ, हरदी-लसुन बेचैबला वेपारी–मखन–क अवाज कानमे आएल-

“धनियाँ..., मिरचाइ..., हरदी..., लसुन... लइ जाएब यै...?”

अवाजेसँ बुझि गेलौं मखन छी। मनमे भेल चनौरागंजसँ, माने चारि किलोमीटरसँ वेपारी ऐठाम पहुँच गेल आ अपने ओछाइनपर सँ उठि दलानक निच्चाँ भेलौं! मन लजा गेल। जइसँ वेपारीपर नजैर नहि अँटका धरती दिस गाड़ि लेलौं। मुदा वेपारी जेतेक रेहल अछि तइसँ बेसी खेहल

सेहो अछिए। केना ओ अपन शिकार छोड़त। नजैर पड़िते टोकलक-

“भाय साहैब, एकटा समाचार भेटल किने?”

मखनक बात सुनि चौंकलौं। केहेन समाचार? गामक आकि अमेरिकाक? किएक तँ देखते छी जे दरभंगा रेडियो स्टेशन जखन सुतले रहैए तइसँ पहिनहि आन-आन देशक अकासवाणी सभ जागि-जागि अपन-अपन समाचारक हल्ला मचा दइए। फेर भेल जे जँ कहीं गाम-घरक समाचार हुअए तखन? मनमे अबिते दोहरौनी लाज जागि गेल। जागि ई गेल जे जँ गामेक समाचार हएत आकि टोले-पड़ोसक हएत तखन केना एहेन लोक लगमे मुँह उठाएब जे चारि किलोमीटरसँ आबि घर लग अपन कारोबार पसारने अछि आ अपने अखन ओछाइने छोड़लौं हेन! मुदा समाचारो तँ समाचार छी। जिनगियोक भऽ सकैए, जिनगी जीबैक लूरियोक भऽ सकैए। माने, जिनगी जीबैक कलो भेट सकैए आ जीवन-मृत्युक संघर्षोक दर्शन भऽ सकैए। तँए समाचारकेँ बुझब जरूरी अछिए। मुदा रच्छ रहल जे मखन बिनु पुछनहि अपने बजैत आगू बढ़ि गेल-

“सुभद्र भाइक माए चारि बजे भोरमे मरि गेलखिन।”

मखनक सुनौल समाचारकेँ दू टुकड़ी कऽ देखिऐ तँ एक टुकड़ी तँ साफ देखाए जे सुभद्र भाइक माए–माने सुधनी–काकी मरि गेली। मुदा दोसर टुकड़ीपर नजैर पड़िते बुझि पड़ए जे अमरस्साक चारि बजे भोर तँ सभसँ सुखद समय होइए, तखन केना काकी मरली? माने ई जे बारहो मास आ चौबीसो घन्टाक दिन-रातिमे जेठ मासक भोर सभसँ सुखद होइए, तइमे केना यमदूत आएल जे काकीक प्राणे लऽ कऽ उड़ि गेलैन! मुदा लगले मनमे उठि गेल जे अखन चाह-पानक समय अछि, मुइल काकीक जिगेसा करए जँ अखने जाएब आ एहेन समयमे चाहो-पान सुभद्रे भायपर लादि दिऐन से उचित नहि। कोनो कि सुभद्र भाय टोलेक छैथ जे कन्नो-खिजी सुनि लगले विदा हएब। आन टोलमे घर छैन, समाचार सुनैत-सुनैत ने सुनब, तइमे किछु समय तँ लगबे करत। तहूमे

गाम-गाममे तेहेन लॉडस्पीकर-बाजा सभ परमानेन्ट लटका देल गेल अछि जे मोबाइलोमे गप-सप्प करब कठिन भऽ गेल अछि। तखन एहेन-एहेन समाचार की प्रभावित नहि हएत? हेबे करत। जहिना प्रदुषणकेँ दूर करैले एक दिस नमहर-नमहर योजनामे खर्च भऽ रहल अछि तहिना प्रदूषणकेँ बढ़बैयो-ले नहि भऽ रहल अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तहूमे आन प्रदूषणसँ बड़ बेसी तँ देहमे हौहैठ-कलकैल हएत, देह चुलचुलाएत। मुदा ध्वनि प्रदूषण तँ लोकक मत्थे चाटि बताह बनाएत..! दरबज्जापर सँ चोटे आँगन जा पत्नीकेँ कहलयैन-

"झब-दे चाह बनाउ। सुभद्र भाइक ऐठाम जाएब जरूरी भऽ गेल।"

ओना पत्नीकेँ सुभद्र भाइक समाचार भेट गेल छेलैन तँए नाकर-नुकर नहि केलीह। जाबे मुँह-कान धोलौं ताबे पत्नियोँ चाह बना लेलैन। कलपर सँ आबि चाह पीलौं। चाह पीला पछाइत पानपर नजैर पहुँचल। मुदा नजैर अँटकल नहि, उड़ि कऽ आगू बढ़ि गेल। आगू ई बढ़ि गेल जे हरण-मरणमे पान नइ खेबा चाही। तहूमे सुभद्र भायसँ दियादीक सम्बन्ध सेहो अछि..!

पानक फसादमे मन तेना फँसि गेल जे सुभद्र भाइक ऐठाम जेबाक विचारे मनसँ उतैर गेल। मुदा चाह पीबैत-पीबैत किछुए काल बीतल कि सुधनी काकी आगूमे झमैक कऽ कुदि पड़ली। काकीक कुदब देख मनमे उठल- नबे बर्खक जिनगीक टपानमे कहियो सुधनी काकी अपन नवपनक तियाग नहि केलैन! समाजो आ परिवारोक संग काकीक सम्बन्ध सभ दिन एकरंगोहे बनल रहलैन। ओना, कहियो काल सम्बन्धमे घटी-बढ़ी सेहो होइत रहलैन मुदा अपना मने काकी जेहने शुरूमे छेली तेहने काल्हियो धरि रहबे केलीह। तहूमे राति नअ बजे तक एकेठाम बैस काकी संगे घर-परिवारक गप-सप्प करबे केलौं अछि, सुभद्रो भाय छला..!

सुधनी काकीपर सँ मन सुभद्र भायपर पहुँच गेल। जखने सुभद्र

भाय मन पड़ला कि जिगेसा करब सेहो मन पड़ल। चाह पीब नेने छेलौं मुदा पान पछुआएल छल। पानपर नजैर पड़िते मनमे मटाउ हुअ लगल जे पान खा कऽ जाइ आकि बिनु पान खेने? अगदिगमे पड़ि गेलौं। मनमे उठल- जखनसँ ककीक मृत्युक समाचार सुनलौं तखनसँ आँखियो कहाँ अपना मने नोर बहौलक आ मुहोँ कहाँ कानल? मुदा मनमे ईहो उठल- कानत किए? सुधनी काकी सन-सन धरमी जँ गाम पीछू पाँचो-सातटा रहत तँ ओ अपन विचार कर्मसँ बिचड़ैत कर्मकार जकाँ कर्मी-धर्मी धार बहैबते रहत। भलेँ इलाहाबादक त्रिवेणी घाटपर वृन्दावनसँ बहैत आएल यमुना धार किए ने पतराइत-पतराइत पतरखेप खेपैत हुअए, मुदा धारक धारा तँ मानल जेबे ने करत किने? ओना, देखनिहारो आ ओइमे डुबकी लगा नहेनिहारो मानए वा नहि मानए...।

मन आगू बढ़ल। आगू बढ़ैत मनमे फुड़फुड़ा कऽ एकटा विचार खसल। विचार ई खसल जे एक तँ पान, तैपर ओकर पातकेँ अशुद्ध केना बुझल जाएत..?

'शुद्ध' 'अशुद्ध'क बीच मन घुरियाए लगल। फेर भेल जे भरिसक मरल लोकक ने तँ बरस-गाँठ मनबै दुआरे अशुद्ध भेल? मुदा अखन से तँ नहि, अखन तँ सुधनी काकीक जिगेसा करए जा रहल छी..! तैबीच काकी अपन डोर[21]मे बान्हि विचार देली-

'बेटा, जखन तोरे सभले जिनगी गलेलौं तखन तोरा मुँह पान नहि! हँसैत खाइत खेलाइत आबह। आब कि हमरा कोनो अगुताइ अछि। जखन मन हुअ तखन जरबिहह आकि केतौ माइटिक तरमे गाड़ि दिहह।'

सुधनी काकीक विचार मनमे जगिते नजैर फुन-फुना उठल। फुनफुनाइत नजैर पानपर उतरल। अन्दाजए लगलौं जे जेतेक कालमे घुमि कऽ घरपर आएब तेतेक कालक हिसाब जोड़ि पान लऽ ली। पाँच खिल्ली पानक पात बिछेलौं। पान तँ बिछा देलिऐ मुदा चुनक कोही

[21] डोर भेल जे जेना बैजनाथ, जगरनाथ इत्यादि स्थान जेबाक संकल्पित विचार।

हाथमे लइते मन पनपनाए लगल। मुदा तैबीच सुधनी काकी फेर घुमि कऽ आबि कहली-

"चुनक कोही-तोही फेकैक काज नइ छह! जाबे तोरा सबहक बीच छेलौं पान-तमाकुल खेलौं। ओ भोग-पारस आब हमर थोड़े रहल, तँए तूँ हमरा-ले कोही नइ फेकिहह। चुनक कोहिये फेक देबहक तखन आगू पान केना खेबह?"

सुधनी काकीक विचारमे तेना ने बिचड़ए लगलौं जे पाँचोटा बिछौल पातमे कोनमे चुन कम पड़ल आ कोनमे बेसी से ठेकाने ने रहल। तहिना खएरो बेरमे सएह भेल। मुदा जे भेल से भेल, कोनो कि संगीतक उत्सवमे जाएब अछि जे चुन मुँह काटत आकि जर्दा हुचकी उठौत तँ...। हाँइ-हाँइ कऽ एक खिल्ली पान खा बाँकी चारू खिल्लीकेँ समेट प्लाष्टिकमे लटपटा गमछाक खूटमे बान्हि विदा भेलौं। जेठ मास छीहे तँए गंजी-कुरताक जरूरते की। तहूमे ओहन लोकक कृत्यमे जा रहल छी जे हँसैत-हँसबैत चारि पीढ़ी धरि नब्बे बर्खक उम्र गुजारलैन..!

दरबज्जापर सँ हेट होइत गामक रस्तापर जखन पएर पड़ल कि अनायास पैरक गति तेज हुअ लगल, मुदा जहिना पैरक गति तेज भेल तहिना मन लजा उठल, लाज हुअ लगल। जइ सुभद्र भायसँ एतेक लगीची सम्बन्ध अछि, तिनकर माए चारि बजे भोरेमे मुइली आ जिगेसा करए आठ बजे भिनसरमे जा रहल छी! सुभद्र भाइक नजरिक सोझ पड़ब तँ की कहता! मुहेँ बाजैथ वा नहि मुदा मने तँ जरूर मनमनेबे करता किने जे 'वाह रे बेर परक खलीफा, बेरेपर दिशा-मैदान सभटा उतरए लगै छैन..!'

मुदा मन जागल, जगिते विचार देलक-

"जहिना स्कूल, कौलेज आकि कोनो कार्यालयमे कर्मचारी एगारह बजेसँ ड्यूटी करए जाइ छैथ, परिवारिक लोक रहने जँ कोनो कारणे पाँच मिनट पहिने नहि पहुँच पेने अपन उपस्थिति ऑफिसमे नहि दर्ज कऽ

सकला आ रस्ते-रस्ते आबि अपन काजमे जुटि गेला, पछाइत जँ ओ अपन उपस्थिति दर्ज करता, ओकरा की मानल जाए?"

विचार जगिते अपनो गर अँटल। गर ई अँटल जे चारि बजे भोरमे काकी मुइली, अखन आठ बजैए, आँगनसँ असमसान तक भरि दिनक काज भेल, तैठाम जँ नित्य-निवृत्तिमे कनी-मनी आगू-पाछू भेल तँ ओकरा काजेसँ ने पुरौल जाएत। सुभद्र भाय ओहेन लोक थोड़े छैथ जे काकी लग बैस सोझे कैनते हेता। हुनको नजैर कहिते हेतैन ने जे के केहेन लोक अछि। तँए अनेरे मनमे शंको करब नीक नहियेँ छी। फेर भेल जखन सुधनी काकीक अन्तिम विदाइ दइले जाइये रहलौं अछि आ जँ हमरो बहन्ने सुधनी काकी दू-चारि आँगनमे बैस किछुकाल गुजारि लेती, ईहो कम थोड़े भेल?

काजक लोक बनिते मनमे भेल जे एक मुट्ठी मूज किए ने कर्त्ताक डोराडोरि-ले नेने चली? सएह केलौं, भाय जेकर डोराडोरि जेतेक सक्कत रहत ओकरेमे ने ओतेक सक्कतपन रहत।

हाथमे मूज नेने जखन सुभद्र भाइक घरपर पहुँचलौं कि समाजक मजमा देख अपने हेरा गेलौं। हेरा ई गेलौं जे असगरूआ सुभद्र भाय एतेक लोककेँ नौत-हकार केना दऽ एलखिन? छोट भाए जे छैन ओ तँ सुधनी काकीक कोड़ैला बेटा भेलखिन, वेचाराक छठिहारक छाती छुटि रहलै हेन, तँए ओकरा कानैसँ मनाहियो तँ सुभद्र भाय नहियेँ कऽ सकै छैथ। तहूमे जेठ रहू कि छोट, माए तँ दुनू भाँइक मुइली हेन, अपन-अपन हिस्सा तँ सभकेँ कानबो तँ हेबे करतैन। सुभद्र भाय अपनो तहूमे बरदाएल हेता। तैसंग माए माइये छथिन। अनका जकाँ सुभद्र भाय थोड़े छैथ जे आँखिक सोझमे माइक शरीरकेँ आगिमे बिसरजन नहि करैथ। भाय! दुनियाँ बड़ीटा छै, अपन-अपन आँट-पेट देख ने अपन आँट-पेट बनाएब? गामसँ अहाँ काज करए बाहर गेलौं। काज केला पछाइत जखन बैसारी भेल, बुढ़ भेलौं तखन बाप-पुरखा मोन पड़ला, गाम मोन पड़ल! खाली मरैले गाम आएब तँ जरौत के सेहो ने विचारि लिअ पड़त जे जँ हम

केकरो माए-बापकेँ नहि जरौने छी तँ अपन माए-बापकेँ जरबए के औत? तँए मरैबेर जँ घीच्चम-तीड़ा लहासक हएत तइसँ नीक नहियेँ ने हएत!

माए मुइने असगरे सुभद्र भायपर बिपैतक बोझ खसिये पड़लैन। असगरे कनता कि बजारसँ कपड़ा आनए जेता आकि कान्हपर उठा माएकेँ असमसान लऽ जेथिन आकि अहरी-अछिया खुनता..?

मुदा, जेना गामक लोक ई बुझैत होथि तहिना एकाएकी सभ आबए लगला। मुदा बुझैक पाछू किछु कारणो तँ जरूर हेबे करत। ओना, समाजेक मनचोभिया नाचबला सभ सेहो अपन नाच दरबज्जापर ठाढ़ केने छल। रंग-रंगक नाच-गानसँ सुभद्र भाइक दरबज्जा गनगनाइत रहैन। मनमे भेल जे सुभद्र भाय तँ काकीकेँ ओगरने आँगनमे हेता तँए काजक पछातिये अपन उपस्थिति दर्ज कराएब। चोटगर नाच रहबे करै, बीचमे जा कऽ बैसलौं। चारूकातक लोक जे नचितो छला आ गबितो छला, ओ अपना मने खूब चोटियेबो केलैन आ चोटो खेलैन। तहिना जे गरियबै छला ओ गारियो तँ सुनिते रहैथ। सुधनी काकीक ने विदाइ समारोह छिऐन तँए समाजक लोक सभ अपन-अपन भागीदारी दर्ज तँ करबे करता किने...।

उठि कऽ कनियेँ आगू बढ़लौं कि दोसर ठाम निर्गुण सम्प्रदायक प्रवचन चलैत देखलौं। दूटा बबाजी अपनामे खट-समाद करैत रहैथ। एकक कहब रहैन-

“अपनामे लागि जाउ।”

आ दोसरक कहब रहैन-

“राम धुइनमे लागि जाउ।”

दुनूक खट-समादसँ परहेज करैत कतवाहि देने निकैल थोड़ेक आगू बढ़लौं तँ ओतए देखलिऐ जे कियो बाँस अनलक, कियो बाँस फाड़ैए, कियो खड़ौआ जौड़ बाँटैए, कियो कुरहैर-टेंगारी लऽ लकड़ीक ओरियानमे लागल अछि आ कियो बाँसक फट्ठाकेँ बिछा मचान बनबैक सुरसार कऽ

रहल अछि जैपर सुधनी काकीकेँ सुता असमसान घाट पहुँचौल जाएत। जेना बिजली चालित कोनो मशीन गनगनाइत चलैत रहैए तहिना समाजक बीचक सौम्यपनसँ सुधनी काकीक मृत्युक पछातिक प्रक्रिया चलि रहल छल..!

सभ काजकेँ नीक जकाँ संचालित होइत देख मनमे भेल जे सुभद्र भायकेँ अपन आँखिक देखल सभ बात सुनाइयो देबैन आ मुइल माए लग बैसल हुनका सन बेटाक रंगो-रूप देख लेब। आँगन गेलौं। ओना, सुधनी काकीक मुँह माछी दुआरे झाँपल रहैन मुदा जिज्ञासुकेँ पहुँचते सुभद्र भाइक बहिन मुँह उघाइर कऽ दर्शन करा दैत आ पुन: ओहिना झाँपि दैन। काकीक दर्शन केला पछाइत जखन सुभद्र भायपर नजैर पहुँचल कि हुनका हँसैत देखलयैन। सुभद्र भायकेँ हँसैत देख अकबका गेलौं। कहाँसँ सुभद्र भाय दुनू परानी एकठाम बैस हबो-ढकार भऽ कनितैथ, तँ देखै छिऐन मकैक लाबा जकाँ मुँहक दाँत देखा-देखा हँसि रहला अछि! फेर मनमे भेल जे जहिना राजाक मंत्री मुँह-मिलानी करैत मिलल मुहेँ वातावरणकेँ अनुकूल बनबैत तहिना सुभद्र भाय बना रहला अछि। हुनकर हँसीकेँ हँसोइथ-हँसोइथ अपनो मुँहमे लिअ लगलौं जे ओहने रूप अपनो बनि गेलापर अन्तिम संस्कारक विचार करब।

जहिना नाटकक मंचपर जाइसँ पहिने नटुआ अपन रूप-रंग बदैल लइए तहिना अपनो रंग-रूप बदलैत सुभद्र भाय लग पहुँच हुनका पजरा दबा कऽ बैसलौं। बैसला पछाइत मनमे उठल जे केतए-सँ गप उठाबी? सुभद्र भाय तँ हँसि रहला अछि, तँए अखन काजक गप उठाएब बुड़िबकी हएत। विपरीत परिस्थिति अछि, मृत माइक आगू बेटा हँसैत अछि..!

मने-मन लाख कछमछेलौं मुदा बजैक कोनो गर नइ लागल। थोड़ेकालक पछाइत एकटा गर लागल। गर ई लागल जे जहिना विद्वतजन दोसरक बात बेसी सुनै छैथ आ ओकरा अपन मनक मथानीमे मक्खन जकाँ मोहि घी बना उत्तर देबकेँ नीक बुझै छैथ, तहिना सोचलौं। तहूमे एकटा आरो गर सुतरल जे अखन काकीक जिज्ञासा ने कऽ रहल

छिऐन, तँए थोड़ेकाल आँखि-मुँह बन्न कऽ सुमिरन नहि करबैन सेहो केहेन हएत। तइ बिच्चेमे सुभद्र भाय बजला-

“गौरी, अपना आँखिये हम कहियो माएकेँ नइ देखलयैन जे नव साड़ीकेँ देहमे लगौने हेती। अभावमे नहि, बेटी-पुतोहुक विचारमे।”

सुभद्र भाइक बात सुनि अकबका गेलौं। किछु फुरबे ने कएल जे की बाजी? मुदा मन कहलक- बाजि नइ सकै छी, मुदा पुछि तँ सकिते छी। पुछलयैन-

“से की भाय साहैब?”

सुभद्र भाय बजला-

“दूटा पुतोहु छैन जे दुनू अखन मुहेँ लग बैसलो छैन्हे, जहिया कहियो माएकेँ नव साड़ी कोनो कुटुम-परिवार देने हेतैन वा अपनो बजारसँ कीनि आनि देने हेबैन, तँ ओ साड़ी माए ओतबे काल नवमे पहिरै छेली जेतेक काल आन गामसँ अपना गाम अबैमे लगैत रहैन। भलेँ पुतोहुक देहक साड़ी पनरहे दिनक किए ने पहिरल हुअए, मुदा तेकरासँ ओ बदैल अपन नव साड़ी पुतोहुकेँ दऽ दइ छेली।”

सुभद्र भाइक विचार पहिने तँ सहरगंजा जकाँ बुझि पड़ल मुदा पछाइत बुझलौं जे सचमुच सुधनी काकी तियागक प्रतिमूर्ति छेली। जे देहक वस्त्र फेक सकैए ओ पेटक अन्न नहि फेक सकैए! अपन मन भकरार भऽ कऽ फुला गेल। बजलौं-

“भाय साहैब! मासेक धक हएत, बाध दिससँ काकी अबैत रहैथ, रस्ता कातक लतामक गाछ लगसँ देखलयैन तँ बुझि पड़ल जे कोनो टोल दिससँ आबि रहली अछि। फरिक्केसँ काकीकेँ कहलयैन-

“काकी, गोड़ लगै छी!”

झटकल अबिते रहैथ, असीरवाद दैत-दैत ओहो लतामक गाछ लग पहुँच पुछलैन-

“अखने सुति कऽ उठलह हेन?”

ओना, काकी असथिरसँ बजली मुदा बुझि पड़ल जे जँ कहीं अपना उकैतिये कहि दैथ जे ‘तोरे सन-सन जुआन-जहान हिमालय पहाड़पर चढ़त!’ मुदा से काकी किछु ने बजली। अपन जान बँचैत देख हमहीं पुछलयैन-

“काकी, अनका पुतोहु जकाँ ने ते अहूँक पुतोहु सभ ताल-मात्रा देखबै छैथ?”

जेना सभ दिन बरी बनौनिहारि बरीवाहिनीकेँ ठोरेपर बरी पकैए तहिना काकी बजली-

“पुतोहु जे ताल-मात्रा देखौती से कि कोनो हम बिनु परिछौने आँगन अनने छी।”

अदहा-छिदहा बात काकीक बुझबो केलौं आ अदहा-छिदहा नहियोँ बुझलौं। पुछलयैन-

“से केना काकी?”

बच्चा जकाँ पढ़बैत काकी कहलैन-

“परिछन भेल, लूरिक नाप-जोख।”

काकीक बात फेर मनमे लटपटाएले रहल। अपन आँखि बिआह-दुरागमन होइकालक परिछन देखने छल। जइमे दसटा स्त्रीगणकेँ गीत गबैत, फोटो खिचबैत देखने छल, तँए परिछनकेँ ओतबे बुझैत रही। बजलौं-

“से केना काकी?”

गम्भीर होइत कहलैन-

“जखने जेठकी कनियाँ डेढ़िया टपल कि आने स्त्रीगण जकाँ फुसफुसा कऽ पुछलिऐ- ‘कनियाँ, भत-उसना बनौल होइए? बिना किछु उत्तर देने पुतोहु चुपेचाप आँखि मिला नजैर निच्चाँ कऽ लेली। अपन परिवार तँ ओहन ऐछे जइमे समए-कुसमए भत-उसना होइते अछि।

बुझि गेलौं। बड़ बेसी तँ एतबे ने कहि सकै छेलिऐन जे बकलेल माए-बाप बकलेले बना पठौलक। मुदा तइसँ की होएत।"

तैबीच जेठकी पुतोहु–माने सुभद्र भाइक पत्नी–कबुल करैत बजली-

"सोलहन्नी सत् कहने छेली!"

जेठकी पुतोहुकेँ कबुल करिते पुछलयैन-

"आ छोटकी पुतोहुकेँ केना परिछन केलिऐन?"

मुस्की दैत बजली-

"डेढ़ियापर ढेर स्त्रीगण सभ कुटिचाल करैत रहए, तैबीच मे जा असथिरसँ पुछलयैन- 'कनियाँ, जइ घर एलौं हेन तइमे अल्लूक संग ओलोक तरकारी चलैए, से ओल उखाड़ल होइए किने?"

ओना बजली गीतक लयमे मुदा ओल उखाड़ब ओतेक असान तँ नहियेँ अछि। कारण, एक तँ माइटिक तरक तरकारी छी ओल, तैपर गाछसँ कन्द धरि कब-कबाह सेहो होइते अछि।

पुछलयैन-

"ओ की कहलैन?"

बजली-

"ओहो मुड़ी गाड़ि लेली..!"

अपना बेटीकेँ पालैक लूरि जइ माएकेँ रहत ओ आनोक बेटीकेँ तँ पालिये सकैए! तखन एते विषमता किए?"

तैबीच दरबज्जापर हल्ला भेल-

"आब ऐठाम देरी नहि करू, असमसानोक रस्ता नमहर अछि।"

◌

शब्द संख्या : 2553, तिथि : 24 अक्टुबर 2017

गाम बिसैर गेल

पैछला रबिकेँ गौरीकान्त गाम आएल। एलाक दसे मिनटक पछाइत भाँज लगि गेल जे बेटाक संग गौरीकान्त अमेरिकासँ दिल्ली आ दिल्लीसँ पटना हवाइ जहाजसँ उतैर रिजर्व गाड़ी पटनासँ केने गाम पहुँचल। गौरीकान्तक घराड़ी तँ बँचल छै मुदा ओ मराड़ी बनि गेल अछि। ने पुरना इनारक पानि चालू आ ने घरे-दुआर एकोटा ठाढ़। इनारक ऊपरका लहरा सभ तेना खसि पड़ल जे पानिसँ निच्चाँ जमीन पकैड़ लेलक। बिनु नौतल जहिना बर, पीपर आ पाखैर चलि अबैए तहिना भाँगो-धथुर नइ औत सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, मुदा से रच्छ रहल जे गौरीकान्तक बेटा पानिक दसटा बोतल संगे नेने आएल छेलइ। बोन-झाड़ भेल घराड़ी गौरीकान्तक। भाय मिथिलाक ने माटि छी, बिनु केनौं-धेनौं किछु-ने-किछु होइते अछि। कोनो कि राजस्थान आकि गुजरातक थोड़े छी जे बलुआएल रहने किछु जनमबे ने करत।

चारि बजे बेरूपहरमे गौरीकान्त गाम पहुँचल छल। बेटाकेँ पहिल भेँट गामक रहइ, ओना जन्म अखुनका झाड़खण्डेमे भेल छेलै, जइसँ दू-तीन खेप बच्चामे गाम आएल छल, मुदा ओ पाँच बर्खक अवस्थासँ पहिनहि। गाम अबिते गौरीकान्त जखन हिया कऽ गाम दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे जहिना गामक भूगोल बदैल गेल अछि, भरिसक तहिना लोकक गणितो तँ बदलिये गेल अछि! ओना, अपन इतिहास की अछि से तँ अपने जानब। मुदा लाख मनक बोझ मनपर पड़िते गौरीकान्तक मन

अखनो ओइ विचारसँ सक्कत ऐछे जे विचारि आएल छल- जिनगीक शेष भाग समाजमे बिता समाजक हाथे संस्कार लेब।

गौरीकान्त हमर लंगोटिया संगी छी, जहिना गाममे एकठाम घर तहिना एक उमेरक सेहो ऐछे आ संगे-संग केजरीवाल हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पासो केने छी। गामक हम दुइये गोरे एक किलासक संगी रही। गौरीकान्त हमरासँ नीक रिजल्टो आनए आ पढ़ैयोमे तेज रहए, तँए ओ साईंस रखने छल आ हम कनी दब–माने भुसकौल–रही तँए आर्ट रखने छेलौं। तहूमे ओहेन विषय सभ, जेकरा चूड़ा-दही-चीनीक भोज बुझि सभ मैथिल बैस-बैस खाइत रहल। ओना, हाइ स्कूलमे एकटा बात ईहो छल जे पढ़ाइक क्रममे–विषयवार–घेरा-घेरी सेहो छल आ से किछु जानियोँ कऽ छल आ किछु अनजानोमे। माने ई जे सम्पन्न हाइ स्कूल रहितो झंझारपुरमे जहिना वायोलॉजीक पढ़ाइ नइ छल तहिना तमुरिया हाइ स्कूलमे कॉमर्सक पढ़ाइ नइ छल। हँ! जे नव-धव विद्यालय छल, अर्थक अभावमे जे शिक्षकक जोग नइ बना सकल छल, ओकर तँ बाते भिन्न भेल। खाएर जे भेल, मुदा झंझारपुर जहिना डॉक्टरकेँ पैदा करैमे नपुंशक रहल तहिना तमुरियो वेपारीकेँ पैदा करैमे नपुंशके रहल।

अमेरिकाक माटि-पानिमे रमल गौरीकान्त अपन रहैक अपना जनैत बेवस्था केनहि आएल छल। एते तँ समय आगू बढ़िये गेल अछि जे एकटा वैगमे पाँच हाथक रहैक घरसँ लऽ कऽ कुर्सी-टेबुल आ कोंच-पलंग तक आनि हवा भरि बनाइये सकै छी।

तीन दिनक रूटिंगमे सुनील आएल अछि जइमे माए-बापकेँ–माने दुनू परानी गौरीकान्तकेँ–रहैक असथाय बेवस्था करैत, चारिम दिन अमेरिका विदा भऽ जाएत। ओना, गाम पहुँचैमे गौरीकान्तकेँ सीमाकातमे पुछए पड़ल छल। किएक तँ गामक मुँह-कान जहिना नहर-सड़क बनौलक तहिना उजाड़बो तँ करबे केलक। तँए गाम देख गौरीकान्त भकचकाएल जरूर, मुदा अपना धराड़ीक कोणपर जे तहियेसँ ताड़क गाछ छल ओ छेलैहे, जेकरा ठेकना गौरीकान्त अपन घराड़ी चीन्हि पएर

रोपलक। गाड़ी-सवारीक झमारल तीनू गोरे–दुनू परानी गौरीकान्त आ सुनील–रहबे करए, तँए सुतै-बैसैक बेवस्था अबिते कऽ लेलक। पर-पैखाना तँ धड़फड़मे नहि बनौल जा सकैए, आ ने तेकर कोनो तेहेन हलतलबीए बुझि पड़लै, किएक तँ सौंसे घराड़ी बोन-झाड़ लगले अछि। खाइ-पीबैक सेहो बेसी तरद्दुत करैक जरूरते नहि। आठ दिनक खेनाइक पैकेटे बनौल अनने अछि।

दोसर दिन भोरमे चाह-ताह पीला पछाति तीनू गोरे सुतै-बैसैक वस्तु छोड़ि, बाँकी सभ किछुकेँ समेट पीठपर लादि गामक अपन खेत-पथार टोहियाबए विदा भेल। दूटा खेत पुरना सड़कक कातमे जे रहै ओ लगले भेट गेलै मुदा तीनटा जे बाधमे छेलै ओइ बाधेमे पानि पसरल देख घुमि कऽ चलि आएल। अबिते नहाइक इच्छा तीनू गोरेकेँ भेल, पियास तँ बोतलक पानिसँ ससाइर लेलक मुदा नहाइक तृष्णाकेँ तँ पोखैर, इनार आकि चापाकलेसँ ससाइर सकैए। ओना, एक्के घन्टामे खेत घुमि कऽ माने खेत देख कऽ तीनू गोरे डेरापर डन्टा नेने आबि चुकल छल। तैबीच एकटा संजोग बनल। संजोग ई बनल जे अही गामक एक गोरे, जेकर उमेर करीब पैंतालीस बर्खक अछि, ओ अमेरिकासँ आएल दोसर संगी पौलक, तँए बिनु बजौले गौरीकान्तक ऐठाम पहुँच गेल। ओकर नाओं छिऐ- ठकनलाल।

जिनगीक सोल्हम बर्खमे ठकनलाल गामसँ बम्बै नोकरी करए गेल, शुरूमे एकटा कारखानामे लेबरक श्रेणीमे काज करए लगल। मुदा ओ बेसी दिन नहि केलक, किछुए दिनक पछाइत लेबरक ठीकेदारी करए लगल। माने गाम-घरसँ आएल छुट्टा श्रमीक सभ जे भोरू-पहरमे चौक-चौराहापर मौजूद रहैए आ उट्ठा काज गछैए, ओकरे ठीकेदारी करए लगल। बम्बै शहरमे रहैत रहैत ठकनलालकेँ कनी-मनी पाँखि जनमए लगल। साल भरिक पछाइत ठकनलाल गाम-घरसँ लोककेँ बझा-बझा कारखानामे लगबए लगल। आमदनी बढ़लै। मुदा जहिना अकासमे उड़ैत गोटे चिड़ै अपन जेरसँ हजारो किस्मक दोसर चिड़ैक जेरमे वौआइत पहुँच

जाइए आ पहुँचला पछाइत ओइ चिड़ैक की गति होइ छै, ओ तँ चिड़ै-चिड़ैपर निर्भर अछि। ओना रेंगिंग सिस्टम नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे अछि आ जेतए अछि से तेतइ रहह...।

पाँखि भेला पछाइत ठकनलाल सेहो एकटा अमेरिकन ठीकेदारक हाथे अमेरिका पहुँच गेल। केतए की भेलै से तँ अखन तक ठकनलाल केकरो लग नहि बाजल तँए हमहूँ नइ बुझै छी। मुदा एकरो तँ झूठ नहियेँ कहल जा सकै छै जे ममियौतो भाय आ पिसियौतो भाय अपन-अपन रूपैया खर्च कऽ कऽ जहलसँ निकालि कऽ नहि अनने छल। ओना, दुनू मसियौत-ममियौत भाय ठकनक दुनू बेटाकेँ अपने लग रखि कमाइक गर धड़ा देने अछि। जेलसँ एला पछाइत ठकनलालकेँ परिवारक सभजन बैस निर्णय कऽ लेलक जे ठकन गाममे रहत। ओकरा हजार रूपैया महिना गाममे देब। ओही कारावासक पड़ल ठकनलाल गौरीकान्तक ऐठाम पहुँचल।

भाषाक मिलानी होइमे गौरीकान्तकेँ मिसियो भरि परेशानी नइ भेल। किएक तँ दुनू गोरेकेँ गामक भाषासँ लऽ कऽ अमेरिकन भाषा तकक मिलानी रहबे करइ। दुनूकेँ अमेरिकासँ लऽ कऽ गाम धरिक एक-कनिहा संगी भेबे कएल। मुदा तइमे कनी फेंट-फाँट भेल। फेंट-फाँट ई भेल जे गौरीकान्त दुनू परानी अमेरिकाक खाएल-पीअल- रमल-बसल, मुदा ठकनलाल से नहि, असगरे खाएल-पीअल-रमल-बसल आ घरवाली सोलहन्नी गामेवाली रहलै ओना, धरतीपर जे जिनगी पौलक ओकरा सभकेँ धरतीक सुख पबैक आ जीबैक इच्छा छइहे, मुदा ओइमे ओझरी लागल अछि। खाएर जे अछि, ओझरीक पोझरीकेँ पछाइत सोझराएब। जखने दू आदमीक बीच काज करैक एक-शैली आबि गेल तखने गामक काजमे धक्का लगबे करत। दुनू गोरेक बीच दसे मिनटमे काजक दौड़ शुरू भेल। गाम-गाममे दस-बीसटा गाड़ी-सवारी भाइये गेल अछि। ठकनलालक संग सुनील रमकल। दुइये किलोमीटरपर बजार, जैठाम चापाकलक समानसँ मिस्त्री धरि भेटैए। चापाकलक मिस्त्रीकेँ बुझल जे

ऐठाम तीस-पैंतीस फुट निच्चाँमे पानि भेट जाइए। केहेन पानि औत आ नइ औत तेकर ठिक्काक भार तँ नइ अछि। सोझे पानिक ठिक्का-पट्टा पटि गेल। ठकनक संग सुनीलो अमेरिकन चालि पकैड़ लगले कलक मिस्त्रीकेँ हुण्डे काज सुमझा आगू बढ़ि ईंटा-सिमटी-लोहा इत्यादि घरक समानक सभ जोगार बैसबऽ चलि गेल। जाबे ठकनक संग सुनील डेरापर पहुँचल ताबे कलक मिस्त्री, बिनु नापक कल जकाँ तीस फुट पाइपक जगह साए फुट पाइपक हिसाब लगा, कलसँ पानि निकालि दरबज्जापर बैस गेल। सभ हिसाबक मुँह-मिलानी करैत पचास रूपैआ बकशीश पबैत मिस्त्री खुशी-खुशी गाम गेल। काजक शैली दू रंगक होइए। पहिल तँ सभकेँ बुझल अछिए जे ऑफिसक टेबुलक फीस बनल छै, दैत चलियौ आ काजकेँ तेज गतिये करैत चलू। मुदा दोसर शैली लिखित-अलिखितक बीच ओझरा गेल अछि, जेकर प्रभाव गाम-गाममे केहेन अछि ई तँ गौंवे ने बुझि सकै छैथ।

तेसर दिन गौरीकान्त बैंक सबहक मुँह-मिलानी करता। तेकर समय बनल। तेसर दिनक काज करैत सुनील अमेरिकाक बाट तीन दिन पहिने जहिना चारि बजेमे पहुँचल तहिना पकैड़ लेलक। गामक लोक आड़ि-मारिबला अछिए, कियो अमेरिकासँ आबैथ आकि लंकासँ, समाजमे जेहने जिनगी रहल छैन तेहने ने भोग भोगता। ओइमे गामक लोक केतौ नहि रहत। मुदा तँए की लोकक आवाजाही घटल सेहो बात नहियेँ अछि।

चारि कोठरीक घरक संग कीचेन, बाथ रूम सबहक बेवस्था संगे बनबैक विचार गौरीकान्तक भेलैन। ओना, दलान बनौत कि नहि, से थोड़ेक लटपटाएल अछि। किएक तँ गौरीकान्तक आगू धर्म संकट फँसि गेल। धर्म संकट ई जे दलान पुरुखकेँ बैसैक छिऐ, गामक लोकक आबा-जाही नहि, तैठाम दुनू परानी सड़कक कातक दरबज्जापर केना बैसब। भाय, गाम जखन गौरीकान्त आबि गेल तखन पुरनो गप-सप्प तँ किछु उखड़बे करत किने? जखने पुरना गप-सप्प उखड़त तखने लंगोटिया

संगीमे अपनो हिसाब हेबे करत। जँ से हएत तँ ओकरा हिसाबक बहीमे नाम दर्ज भऽ जाएत। मुदा अपनो तँ समाज छी जैठाम जीबैक विचार होइए तैठाम जँ एक जुगक समाजक जीवन्त बेकती जँ श्रद्धासँ अन्तिम संस्कार पबैले गाम आएल, तखन जँ से नइ भेटै ओहो तँ समाजक कलंके भेल। तइ कलंकक भागी तँ हमरा छोड़ि कियो दोसर हएत नहि। किएक तँ धरमराजक दरबार जखन अन्तिम बेरिया पहुँचब, तखन जिनगी भरिक ने हिसाब-बारी हएत जे जे समाज अहाँकेँ स्वतंत्र जीबैक अधिकार देने अछि तेकरा अहाँ की देलिऐ?

गौरीकान्तसँ भेँट करैक विचार मनमे रोपि लेलौं। ओना, गौरीकान्तक तीनू दिनक जिनगीक हिसाब बुझिये रहल छी जे महाकाल जकाँ समझ रहलै। तँए जखने महाकालीक पूजा हएत तखने छोट-छीन देव-देवी पछुआ जेबे करत। अपनो तँ एते सोन्हि भेटिये गेल अछि जे काने-कान ने सुनैत सुनब- गौरीकान्त गाम आएल। तैबीच तँ हजारो कान बीचमे अछिए। तहूमे तीन दिन बेसी नइ भेल, पचि सकैए। तँए दोखी बनैक बाट नइ देखलौं। चारि-छह मास जन्मक अन्तर दुनू गोरेक बीच अछि। दुनू गोरे संगे-संग हाइ स्कूल तक पढ़लौं। गौरीकान्त साइंस पढ़ि इंजीनियर भेल। पिता मेहनती लोक, मेहनतक उपारजनमे पढ़ब-लिखब दिस खर्च करबकेँ नीक बुझै छेलखिन, तँए खर्चक कोताही कहियो ने हुअ देलखिन। गौरीकान्तो प्रतिभाशील, असानीसँ इंजीनियर भेल। प्रतियोगितो औझुका जकाँ नहि छल। जे आइ झारखण्ड राज्य छी ओ बिहारे छल। इंजीनियर बनि टाटानगरमे नोकरी शुरू केलक। बिआह नइ भेल छेलइ। इंजीनियर बनिते सुभ्यस्त परिवार सभसँ घटक सभ पहुँचल। अन्तो-अन्त अंग्रेजी ऑनर्सक कन्याँक संग बिआह भेल। इंजीनियर बनिते गौरीकान्तक अपन मन जेते अमेरिका जा नोकरी करैक भेलै तइसँ बेसी पत्नी आ सासुरक भेल। किएक तँ सासुरमे एकटा ओहन बेकती रहैथ जे नोकरी करैले अमेरिका गेला आ दसे बर्खक कमाइसँ गाम आबि अपन इंजीनियरिंग कॉलेज चला रहला अछि। से बुझल-देखल

रहबे करैन, तँए बेसी जोर देलखिन। तैसंग पलियोँकेँ जेठुआ टुकलीकेँ जहिना धिया-पुता नाँगैरमे काठी खोंसि उड़बैए तहिना तेतेक उड़ौलकैन जे दिन-राति जागलो-सुतलमे अमेरिके देखैत। अमेरिकाक नाओं सुनिते कियो कहैन-

"बहिन, स्वर्गक भोग तोरेटा कपारमे विधाता लिखलखुन!"

तँ किम्हरोसँ पत्र अबैत-

"बहिन, आब तों बहिने जकाँ भरि जिनगी बहिने बनल रहि जेबह!"

एक तँ बिनु बोझ पड़ल महिला गौरीकान्तक पत्नी कनछुटू रहबे करइ। खाएर जे रहइ, जेहेन रहइ.., मुदा पाँच सालक पछाइत टाटानगरक नोकरी छोड़ि गौरीकान्त अमेरिका चलि गेल।

तीस साल नोकरी केला पछाइत, इंजनक बीच इंजन बनल गौरीकान्त चारि साल पहिने सेवा मुक्त भेल। व्यस्त जीवन अमेरिकाक ऐछे, पत्नी छोड़ि दोसर लगमे कियो ने बैसनिहार आ ने हबे-गब केनिहार। तइमे मात्र दुइये परानी, कखनो बेटा नजैर पड़ैत तँ पुतोहु नहि, कखनो पुतोहु तँ बेटा नहि। अपने दुनू परानी काजसँ अकाज भाइये गेल अछि। जइसँ जीवन्ता जिनगीसँ हटिये गेल छइ। पहाड़पर सँ ढरकल जिनगी भाइये गेल छइ। मुदा किछु छै, एते तँ जीबठगर गौरीकान्तकेँ मानले ने जाएत जे जिनगी भरिक हेराएल-भोथियाएल जँ अन्तिम संस्कार धरि आबि गेल तँ ओकर उद्धार होइते अछि।

चारि बजे बेरू पहर गौरीकान्तसँ भेँट करए विदा भेलौं। बीघा डेढ़ेक दूरीपर घर। घर मरने घराड़ी कनी बोनाह भाइये गेल छइ। मुर्दघटी जकाँ तँ नहि, मुदा मरण-हरणक नुआँ-बिस्तर आ टुटल-फुटल तौलो-कराहीक कान-खापट तँ फेकल जाइते अछि। इनार भथा गेल। पुरना–माने पैछला जिनगीक देखल–मात्र एकटा ताड़क गाछ ठेकानपर, बाँकी सभ बेठेकना गेल। जे आमक गाछ, पाँच बर्खक छल ओ चालीस बर्खक

भऽ गेल। गामक पाँचटा पोखैरमे तीनटा कमला-बाढ़िमे भथाइये गेल आ बँचल जे दूटा अछि ओकरो मुँह-कान तेना ने झड़ल-झुड़ल अछि जे ओहो अपन पुरना चिन्ह बिसैर गेल।

दुनू परानी गौरीकान्त टेन्टमे बैसल अपन ढहैत जिनगीक गर-गुर लगबैक सोंगर-सबहक विचार करैत छल। आगूमे मकानक काज चलैत रहइ। माने चारि कोठरीक पक्का मकानमे हाथ लागल छेलइ।

टेन्टसँ आगू बढ़िते रही कि आगूए-सँ ठकनलाल दुनू हाथे पकैड़ आगू देखबए लगल। अपनो मनमे भेल जे जाबे काज–कृत्ति–कें आँखिसँ देख नइ लेब, ताबे काजक बात बुझब केना? जँ गपो-सप्प करब तँ ओ काजोक भऽ सकैए आ अकाजकोक। तँए पहिने काजेकें–माने मकानक नींवक खुनाइकें–किए ने अगुआ ली। ठकनो लाल गामसँ अमेरिका तकक खेलाड़ी अछिए। मकानक नींवक कोण लग पहुँचा ठकनलाल खाइ-पीबैक जोगारमे टेन्ट पहुँच गेल। गौरीकान्तसँ कोनो वस्तु पुछैक जरूरत ठकनलालकें रहबे ने करइ, तँए गौरीकान्त किछु बजबे किए करत। सभ जोगार-पाती–माने खाइ-पीबैक वस्तु–टेबुलपर लगा ठकनलाल फेर लग पहुँच गेल। ओना, एतेक जरूर भेल जे ठकनलालकें संग छोड़ने नींवकें हिया कऽ देखैक समय भेट गेल। शहरी स्टाइलक घर। जेहने घर-घराड़ी बनाएब तेहने ने सरो-समाज देखब...।

तैबीच ठकनलाल बाजल-

"काका, दुइये गौरेमे केते घर की करता।"

आन सभसँ कनी हटलो रही आ कनी अपनो बोलीकें दबलौं, तँए फुस-फुसा कऽ नइ बुझू, मध्यम स्वरे बुझू। बजलौं-

"ठकन, जखन मनेजरी लेलह तखन अपनो परिवारक ने जोगार बैसैबतह। एतबो नइ बुझै छहक जे सड़ल-पाकल दुनू परानी गौरीकान्त आबि गेल। माथो दुखैते ते कहतह मुम्बैये हॉसपीटल लऽ चलैले। पाँच दिन आकि दस दिन, जे समय लगतह तैबीच दुनूठाम माने अहूठाम आ

अपनो ऐठाम, ओगरवाही केना करबह?"

ओना, ठकनलालक अपन सोच रहै जे पाँच सालसँ कममे नीक जकाँ घर नहियेँ सजत तैबीच सभतुर लागल रहबे करब, जँ कहीं तइ बिच्चेमे दुनू परानी मरली तँ अपन सजौल-बनौल घर अपने सभ परानी ने भोगब। जहिना अपन परिवार शहरसँ गामक जहलखानामे पठा देलक तहिना ओकरो सभकें देखा देबै जे हमर माए-बाप बड़ बुद्धू नइ छल जे ठकना नाम रखलक..! मुस्की दइते ठकनलाल टेन्टक भीतर हवादार कुरसी-टेबुल लगा अरियातए आएल छल, बाँहि पकड़ने लऽ जा कऽ गौरीकान्त लग बैसौलक।

अपना मनमे नचैत छल जे हाइ स्कूल तकक जिनगीक संगी दुनू गोरे रहि चुकल छी। ओतबे संगपनामे ने अखन धरिक संग पुरल अछि। मुदा ओ तँ अपना समयमे निमहल। आब तँ दुनू परानी गौरीकान्त सड़ि-गलि-पकि आएल अछि। बेटा-पुतोहु अमेरिकामे रहतै। जे दोहरा कऽ गाम औत कि नहि। अमेरिकेमे ओ सभ रहत आ माए-बापक श्राद्धो-कर्म ओतैसँ सुनि मानत। मुदा गाम तँ से नहि छी। गामक धरतीपर पहुँच गेल अछि। श्राद्ध केनिहार खरचा दुआरे कियो भलें नइ तैयार हुअए मुदा मरैक जगह लग, चारि हाथ खाधि खुनि ओइमे नइ मटिया देत, एहनो अबिसवास तँ नहियेँ कएल जा सकैए। मटियेबे करत। ओना, जहिना अपना मनमे होइ छल तहिना गौरीकान्तक मनमे सेहो छेलैहे। तैबीच ठकनलाल चौहद्दी बान्हि चुकल छल, तँए कान्ही मिलानमे देरी किए लगैत। की कहाँ, पान-सातटा पुड़िया आनि ठकनलाल टेबुलपर पहिनहि पसाइर चुकल छल। मनमे हुअए जे एते जे खेला पछाइत गप-सप्प शुरू करब आ टटके खेलहा बिसैर जाएब सेहो केहेन हएत। बजलौं-

"ठकन, जहिना अबै बेरक जलखै होइए तहिना ने जाइ बेरक पनपिआइ सेहो हएत, तँए आपस होइकाल ई सभ खेबह। अखन चाह टा पीबह।"

ईहो तँ अमेरिकन गुण अछिए जे खाइकाल जखने कहत 'नहि' आ

जँ थारीमे दऽ देलिऐ तँ लगले मारि बैसत। ठकनलाल अपन चालि पकैड़ मानि लेलक। दुनू परानी गौरीकान्तक संग गप-सप्प शुरू भेल। सुहरदे मुहेँ गौरीकान्त बाजल-

"गाम बिसैर गेल हएत।"

गौरीकान्तक प्रश्नक भीतर नीक-बेजाए अनेको प्रश्न छिपले अछि, ओ केना लगले बाजल जा सकैए आकि तत्काल टारले जा सकैए..? बजलौं-

"गाम केकरा बिसरल जे तोरा बिसरतह?"

ओना, मनमे ईहो होइत रहए जे जँ पाइ बेसी हेतै तँ एहेन स्कीम धरा समाजक एकटा बास स्थल किए ने बनैक विचार देब। ओना, अपन आँखिक ज्योति जेहेन गौरीकान्तक हेतइ, तेहन देखत। मुदा अपन नजैर गौरीकान्तक पत्नीक निच्चाँ-ऊपर घुमि रहल छेलए जे आब केहेन विचार मनमे उठि रहल छैन। सेवा दुआरे बेटा-पुतोहु गाम अबैक विचारमे मिसियो भरि देरी नइ केलक..!

गौरीकान्त अपन जुगक जिनगीक जखन समीक्षा करैत तँ पबैत जे जइ अवस्थामे अखन पहुँच गेल छी, तेकर निमरजना केना हएत, ई परिवारक मिलल धारक ऐगला छोर छी, जँ बीचमे सुखा जाएत वा भथन भऽ जाएत तखन तँ जिनगीक धारे अवरूद्ध भऽ जाएत..!

खसल मने गौरीकान्त अपनाकें समर्पित करैत बाजल-

"भगवाने दरबार जकाँ समाजोक दरबारकें बुझिये रहल छी, तँए अपनाकें ओइ समर-भूमिमे समर्पित करबे करब।"

आगू बजैक सभ रस्ता बन्द देख, बिना किछु बजने प्रणाम-पाती करैत ओतए-सँ विदा भऽ अपना ऐठाम चलि एलौं।

◌

शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टुबर 2017

ऐँठ साड़ी

आइ छठिक खरना पाबैन छी। साढ़े सात-पौने आठ बजे भिनसुरका बात छी। ओना नीन समैयेपर टुटि गेल छल मुदा पाबैनक उछाही नीन टुटिते आगूमे खसि पड़ल। आगूमे खसल, माने जखने आइक प्रभात दिस तकलौं कि छठिक खरना नजैरपर आएल। जहिना छठिक खरना नजैरपर आएल तहिना सूर्यक अर्घ सेहो आएल, मुदा तैसंग ईहो आएल जे अर्घ देल जाइए सूर्यकें मुदा पाबैनक नाओं छी छठि परमेसरी..!

अखन तक ऐ प्रश्न दिस नजैर कहियो उठले ने छल जे एकेबेर बोझ जकाँ तेना माथमे चढ़ि गेल जे नीन टुटला पछातियो ओछाइन छोड़ैक साहसे ने हुअए। तैबीच किसनी काकीकें पुतोहुक संग कहो-कही आ ललको-ललकी शुरू भेल। सेटले आँगन अछि, ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल सुनए लगलौं। किसनी काकी अपन पुतोहुकें कहलखिन-

"तोरा धिरित नइ छह!"

ओना, किसनी काकी अपना पतोहुपर ललैक कऽ बाजल छेली मुदा 'धिरित नइ छह' सुनिते मन ठमकल। सोचलौं, जँ अखन काकीक आगू जाएब तँ पुतोहुक शब्द हमरेपर छोड़ए लगती। हो-न-हो जँ कहीं यएह पुछि दैथ जे आइ कोन पाबैन छी, पुरुखक आकि स्त्रीक..? तँ की हुनका हम बुझा कऽ शान्त कऽ सकब? पुरना घावपर नून छीटि अनेरे जे देहो आ मनोकें विसविसाएब तइसँ नीक पत्नीए-कें पठा बुझि ली।

पत्नीकेँ कहलयैन-

"किसनी काकी आइ भोरे-भोर किए एते गरमाएल छैथ, से कनी बुझने आउ ते... ।"

कनियोँ देरी हएत तँ बुझले अछि जे ओ केहेन ठोर-पकाहि लोक छैथ, लगले कहए लगती जे 'तूँ हमरा आन बुझै छह जे सभटा उधारीए खाता चलत। जे समांग जीबैतमे आँखिक सोझमे सेवा-बरदास नहि करत ओ मुइला पछाइत केते करत तेतबो की नइ बुझै छी।'

जहिना पत्नीकेँ कहलयैन तहिना ओ विदा भेली। तइ बिच्चेमे किसनी काकी दोहरा कऽ बजली-

"जखैन गामे-लोककेँ धिरित नइ अछि तखैन परिवार सबहक की रहत..!"

कान ठाढ़ करि कऽ रहबे करी, धियान किसनीए काकीपर रहए। कनी नरमाएल अवाज बुझि पड़ल। किए तँ परिवारक संगे गामक बात सेहो बाजि रहली अछि। जरूर कोनो तेहेन बात मनमे हेतैन। अपन जे प्रश्न छल- भगवान भास्करक अर्घ आ छठि परमेसरीक पाबैन, तेकरा मने-मन बन्ठा काकापर सोंपि, मुँह-कानमे पानि लइले तैयार भेलौं। बन्ठा काका, माने हाइ स्कूलक ओहन शिक्षक जे अपन विचारपर ठाढ़ होइक दम रखने छैथ। बच्चेसँ नीक विद्यार्थी रहला। विद्यार्थी जीवनसँ लऽ कऽ जहिया नोकरी शुरू केलैन तहिया तक 'सुलोचन कुमार' नाओंसँ जानल-मानल जाइ छला। मुदा नोकरीक पछाइत गामक लोक हुनका 'बन्ठा काका'क नाओंसँ पुकारए लगलैन। तेकर कारण शरीरक कद भरिसक सेहो छैन। ओना, समाजक देल नाओं 'बन्ठा', 'बन्ठा बौआ', 'बन्ठा भाय' आ 'बन्ठा काका' जे छैन यएह ने ससैर कऽ 'बन्ठा बाबा' तक पहुँचतैन। माए-बाप छठियार दिन बेटा-बेटीक नाओं रखैए। नाओं रखैक माने भेल समाजक दाइ-माइ सभ जे अपनामे विचारि आमक पातपर लिखि नामक प्रस्ताव दइ छथिन, तेकरे ने माए-बाप मानि अपन बच्चाक नाओं घोषित

करै छैथ। तहिना ने समाजक देल नाओं सोल्होअना स्वीकार भेलैन। धनपत राय जहिना 'प्रेमचन्द' भेला, मुनीन्द्र चौधरी 'राजकमल' भेला तहिना सुलोचन कुमारसँ 'बन्ठा' सेहो भेला। ओना ई नाओं शुरूमे सुलोचन कुमार जखन धिया-पुताक जेरमे आमक गाछीक अखड़ाहापर जाइ छला तहियो 'बन्ठा पहलमान'क नाओं धारण केने छला। मुदा अखड़ाहा छोड़ला पछाइत जखन विद्यालय धेलैन, तेकर पछाइत लिखित नाओं एने पुन: ओ दबि गेलैन।

पत्नीकेँ अबिते कहलयैन-

"दोहरा कऽ किसनी काकी लग जाउ आ हमरे नाओं कहबैन जे धाहे-बोखारे फल्लाँ धऽ धऽ जरै छैथ, से कनी चलि कऽ देखथुन।"

ई सोचि बजलौं जे आँगनसँ जखने काकी निकैल औती तँ गप-सप्पक क्रम बदलने मनो बदलतैन, जइसँ विचारमे ढीलपन औतैन। जखने विचारमे ढीलपन देखबैन कि गपक पाशा बदैल कीकीकेँ दोसर दिस मोड़ि देबैन। अनेरे पाबैन-दिन जे भोरेसँ घौचाल शुरू भेल ओहो दबि जाएत।

कहलापर पत्नी आँगनसँ तँ निकैल काकीकेँ बजबए विदा भेली, मुदा जखन अपने चद्देर-तद्देर ओढ़ि बोखरलग्गु बनि सिरमापर मुड़ी देलिऐ कि पत्नी दरबज्जाक कोनचर लगसँ हिया कऽ देखए लगली। हिया कऽ देखैक कारण भरिसक ई रहैन जे जखन काकी लग झूठ बजैले जाइ छी, तखन झूठ बजौनिहार केते अपन झूठक मेकप केलैन...। अपनो मनमे भेल जे सोझमतिया किसनी काकी छथिए, पतिआइमे देरी लगबे ने करतैन। भाय, पाबैन-दिन छी, भोरेसँ जँ किसनी काकी विवाद लधती तँ हो-न-हो दुपहर होइत-होइत कहीं पाबनियेँपर ने अट्ठा-बज्जर खसि पड़ए। जखने एकबेर अट्ठा-बज्जर खसत कि पाबनियेँ खोंर भऽ जाएत। खोंर भेला पछाइत जहिना जितिया पाबैन खोंर भऽ एकसंझू बनि जाइए, तहिना भऽ जाएत। जखने जितिया पाबैन जकाँ छठि एकसंझू हएत तखने...। छठि कि कोनो आन पाबैन छी जे एकसंझूओसँ काज चलि

जाएत। दू-संझू पाबैन छी, अनेरे एकटा टुटि जाएत! तहूमे जँ छीप दिससँ टुटत तँ जड़ि दिस अदहा लगने लगलो रहैत, मुदा जँ कहीं जड़ि दिससँ टुटल, तखन तँ दुनू कूर समाप्त! तँए किसनी काकीक मनकेँ बदलब जरूरी बुझिये पड़ल।

अपन मुँह झाँपि दुखताह की बनब जे अँगनासँ निकैलते पत्नी ड्योढ़वालीकेँ ललकब सुनए लगली-

"एना होइ! किसनी काकी किए बजली जे ललमुँही सभ सभटा पाबैन ढंस केने जाइए..!"

ड्योढ़वाली बगलेमे पड़ोसीक परिवार छथि।

ड्योढ़वालीक बात सुनि पत्नी दरबज्जाक मुँहथैरपर ठमैक कऽ ठाढ़े रहली। एक तँ दरबज्जाक आगूए-मे पड़ोसनी किसनीए काकी-दे बजैत, आ किसनीए काकीकेँ बजबैले जाइत रहैथ। पत्नीक मनमे भेलैन जखने किसनी काकीकेँ बजा कऽ अनबैन आ अपना काने ड्योढ़वालीक बात सुनती, तँ अनेरे अहीठाम कहा-कही शुरू हएत! जखने घर लग कहा-कही हएत तखने सभ छार-भार अपना ऊपर खसत! पत्नीक मने घुमए लगलैन। ने आगू डेग उठबैक साहस होनि आ ने पाछू हटैक। बलुआह माटिक मुरुत जकाँ ने एक बून पानि थम्हैबला आ ने चाननक शीलाक रगरक रगर थम्हैबला..!

दूरक ललक लगमे सुनए लगलौं। मुदा एकटा जरूर भेल जे कनी हटलमे जहिना किसनी काकीक अवाज बुझि पड़ै छल तहिना लगमे ड्योढ़वालीक। मरदा-मरदीक ललक नइ सुनने मनमे उठल जे ऐठाम सोलहन्नी दुखताह बनने काज नइ चलत, दोसर रंगक मेकप करए पड़त। सुतलसँ उठि चौकीए-पर बैस मने-मन विचारए लगलौं जे आब की करी? अपन विचारकेँ सोलहन्नीसँ अठन्नी बनेलौं। बनेलौं ई जे चौकीपर सँ निच्चाँ उतैर चद्देर ओढ़लौं। भाय! महिला जगतमे ने जा रहल छी, तँए ओहने रूप ने बनबए पड़त।

चद्देर ओढ़ि निच्चाँ होइते पत्नीकेँ देख बजलौं-

"पाबैन दिन छी, एना जे पएर-मे जत्ता बान्हि आँटा पीसब तखन तँ छठिक ढोलक 'ठकर-ठकर ठक-ठकुआ' सुनिते रहब..!"

भाय, अपन घर अपने समेटने ने समटाइए। अनकर सभ खिड़की खोलि अपने बन्न कऽ कऽ राखए चाहबै से केना हएत। जँ अनकर खोलबै तँ अपनो खोलियौ। मुदा से पत्नी चेतली। चेतली ई जे चोट्टे आँगन दिस घुमैत बजली-

"अँगना-घरमे काज छिड़ियाएल अछि। अपनेसँ किसनी काकीकेँ देखियौन।"

तैसंग ईहो रच्छ रहल जे ड्योढ़ोवाली चुप भऽ पाबैनक जोगारमे लगि गेली। अपने आगू बढ़ि किसनी काकीक ऐठाम पहुँचलौं। ओतए चारि-पाँच गोरे ठाढ़ भेल गप-सप्प करैत रहैथ। जइमे बन्ठो काका छला। चद्देर ओढ़ल देख अगुआ कऽ बन्ठे काका बजला-

"की बौआ, सभ दिन खइहह पबनियेँ ललैहह!"

बन्ठा कक्काक मुँहपर जवाब दइक हिम्मत नइ भेल। हिम्मत नइ होइक कारण भेल बनौआ दुखताह ने रही, तँए केमहरसँ की बाजब से ओरियेबे ने कएल। बिच्चेमे लसैक गेलौं। केना ने लसैकतौं, जँ निरोग बनि बजितौं तँ भगलपन किए लधने छी? कोनो कि पूस माघक जाड़ मास छिऐ जे चद्देर ओढ़ने छी। अखन ते छठिक व्रतधारी एक-पहर साँझोमे आ एक-पहर भोरोमे छाती भरि जलतरंग करैए, तहूमे अनका सोझामे रहितौं तँ भग्गल भगलपन जोड़ि कहितिऐ जे मच्छरक दुआरे चद्देर ओढ़ने छी, मुदा बन्ठा काका लग एहेन झूठ बिना पकड़ेने रहब। आन भलेँ बन्ठा काकाकेँ अदना बुझैत होनि मुदा अपने तँ जरूर जनै छी जे बन्ठा काका पौराणिक पुरुख छैथ, जे बजता से करता आ जे करता से बजता। बन्ठा चमार जहिया बन्ठ लकड़ीसँ अखड़ाहापर बन्ठा हाथे ढोल बजबै छला, तहिया लोरिक-रूदल सन मनियार छल तेकरे जकाँ ने बन्ठो

काका छैथ। तँए अपनाकेँ निरोग केना कहितिऐन? ओना, अपना मने ओ रोगी बुझि हमरा पाबैनसँ बाड़ि देने छला मुदा पाबैन-दिन अपनो केना पाछू घुसैकतौं। भाय, आसीन-कातिक छिऐहे सरदी-बोखारक मौसम छी, सएह ने हमरो भेल हएत। मुदा केते निरोग कहबैन आ केते रोगाएल, से नपैक थर्मामीटर थोड़े अछि। लगले दोसर प्रश्न आगूमे उठि गेल। उठि ई गेल जे जँ बेसी निरोग कहबैन तँ कहता जे चलह तँ पोखैरक घाट देखिऐ जे घाटक पानि पवित्र अछि की नहि, जलतरंग जोग अछि की नहि। जँ थाल-कादो हएत तँ सौंसे पोखैर भलैं नहि, मुदा जेतबो दूरमे माए-बहिन हाथ उठा सूर्य भगवानकेँ अर्घ देथिन, तेतबो दूर तक फरिच जल रहत तखने ने पवित्रतासँ हाथ उठाएब हेतैन...।

फेर भेल जे एहेन भरिगर काजमे पड़ब नीक नहि। पोखैरक घाटेपर थाल-कादो हेतै तँ हौउ। सभकेँ थाले-कादो नीक लगै छै तँ अपनो नीके लागत। आ जँ अपन मन नइ मानत तँ चबुतरा देल चापाकल दरबज्जापर अछिए, बाल्टीन भरि पानि आगूमे रखि डाली पसारि देब। जखने सूर्य भगवान मेघमे उगता कि धाँइ-दे बाल्टीनक जलमे नचबे करता, बस तखने अर्घ दऽ देबैन। तैबीच बन्ठा काका किसनी काकीकेँ बोधि नेने छला तँए वातावरण थोड़ेक नरमा गेल छल। जइ काजे किसनी काकी बिगड़ल छेली, तेकर निराकरण छठिक प्रात भनेक तिथिपर रहि गेल। पाबैन भरिक अंकुश किसनी काकीकेँ बन्ठा काका लगा चुकल छला। बजलौं-

"काका, पाबैन छिऐ, आइ तँ छुट्टीए-मे हएब। हमरे ऐठाम चलू, चाहो-ताहो पीब आ किसनी काकी भोरेसँ किए ललकारा भरै छेली सेहो कनी बुझि लेब।"

ओना, अखन तक हम अपना मने निरोग छी मुदा बन्ठा काका तँ रोगीए बुझै छैथ तँए ओ अपना ऐठाम चलि कऽ गप-सप्प करैक जगहसँ नीक हमरे ऐठमाकेँ बुझलैन। भऽ सकैए दुखताहक होनि वा बेसी दिनपर गाम एलासँ समाजिकता सेहो होइन। खाएर.., दुनू गोरे विदा भेलौं।

थोड़ेक आगू बढ़िते बन्ठा काका बजला-

"बौआ, की कहबह। तेहेन लंकाबास भऽ गेल अछि जे अखन तक चाहो ने पीलौं हेन।"

पुछलयैन-

"किए! अबेर-कऽ नीन टुटल की?"

'अबेर' सुनि बन्ठा काका सहमला। सहमैक कारण भेलैन जे जँ समैपर उठलौं, तखन चाहे किए पछुआएल? आ जखन पहिलुक काज-'चाह पीब' अपन धुरी छोड़ि देलक तखन ऐगलो सबहक ने धुरी छुटि जेतइ? अपनाकेँ सम्हारैत बन्ठा काका बजला-

"बौआ, की पुछै छह! पाबैन-दिन छी, पबनौटक आशा सभकेँ अछिए, मुदा डुम्मा लोकक मुआबजा सरकारकेँ सभसँ बेसी भरए पड़ै छइ।"

काका बजिते छला, तैबीच दरबज्जापर पहुँचलौं। पहुँचते पत्नीकेँ कहलयैन-

"अखन तक बन्ठा काका तीन बेर चाह पीब नेने रहितैथ, से निराधारे छैथ, तँए तीनू बेरक मोजगरा पुराएब।"

बिच्चेमे बन्ठा काका लोकि लेलैन-

"ऐँह, अहिना लोक बजैए!"

मुहसँ निकैल गेल-

"केतौ अनतए बजलौं हेन।"

मुँह दुसैत बन्ठा काका बजला-

"यएह ने तोरा सन-सन नवतुरियामे बुड़िपन अछि जे पत्नियोँ लग पुरुख बनल नइ होइ छह!"

तैबीच, पत्नी शुरूहेमे जे चाह बनौने छेली ओ दूटा कपमे नेने एली। जहिना भोरुका तुकक चाह छुटने बन्ठा कक्काक मन खौंता गेल छेलैन

तहिना चाह पीबते शान्त भेलैन।

बजलौं-

"काका, गाममे सभ दिन अहाँ नइ रहै छी, केतेको विचार, केतेको प्रश्न मनमे उठैए आ बिसैर जाइ छी। आन कियो गाममे अहाँ सन छैथ नहि, जे मनगर जवाब देता।"

एक तँ चाह पीला पछाइत बन्ठा कक्काक मन शान्त छेलैन्हे, तैपर हमर विचार सुनि आरो शान्त होइत बजला-

"मनमे तँ बहुत अछि, मुदा बहुत तँ बहुत लोककेँ तैयार भेने ने हेतइ।"

बन्ठा कक्काक बातसँ बुझि पड़ल, काका अपनो वौआइ छैथ आ हमरो वौएता। कहलयैन-

"काका, दुनियाँ-दारीक गप-सप्प छोड़ू, अखनो एकटा प्रश्न मनमे घुरियाइए। तँए पहिने ऐठाम तकक वृतान्त सुना दिअ, पछाइत अपन बात फरियाएब।"

पत्नी पान नेने एली। पान खेला पछाइत बन्ठा कक्काक मन जेना पूर्ण तृप्त भऽ गेलैन। ओना, मुँहक सुरखीसँ बन्ठा काका शान्त जकाँ बुझि पड़ैथ, मुदा मनमे अशान्ति छेलैन। अशान्तिक कारण छेलैन जे एक दिस लोककेँ देखै छला आ दोसर दिस पाबैन दिस तकै छला तँ बुझि पड़ै छेलैन जे कमला धारक कटहरबा घाटक कटहरक कोआ सभकेँ भेटबे करत...। गम्भीर होइत बन्ठा काकाकेँ देख मनमे भेल जे छी छठि पाबैन, जइमे लोक पोखैर आकि धारमे स्नान करैत सूर्यकेँ अर्घ चढ़बैए आ दोसर दिस बन्ठा काका समुद्रमे डुमबैक विचार सुनबए लगता। तइसँ नीक जे अपने किए ने किछु चालि मारी। बजलौं-

"काका, चाहक यात्रा किए भङ्गैठ गेल?"

ओना बन्ठा कक्काक मन तुरछए लगलैन, मुदा जखन समाजेक पोखैरमे स्नानक संग सूर्यकेँ अर्घ दैक पाबैन छी तखन अपनो ने ओही

समाजमे छी, तँए मनकेँ दबैत बजला-

"बौआ, आन दिन तोरा पितियाइनकेँ जगा कऽ उठबए पड़ै छल, मुदा आइ पहिनहि उठि सिरखड़ियावालीसँ कहा-कही करै छेली। हुनके दुनू गोरेक अवाज सुनि अपन नीन टुटल।"

पुछलयैन-

"किए पाबैन-दिन, भोरे-भोर दुनू गोरे कहा-कही करै छेली?"

मुस्की दैत बन्ठा काका बजला-

"जहिना कोटाक खराँत-ले लोक डीलर ऐठाम 'पहिने हम लेब' तँ 'पहिने हम लेब' करैत कहा-कही करैए तहिना बुझह।"

बजलौं-

"काका, आइ खरना पाबैन छी, तखन किए डीलरबला गप बजलिऐ?"

बजला-

"डीलरक ऐठाम चाउर-गहुमक बँटवारामे ते कनी लज्जैत रहितो अछि मुदा पाबैनमे की अछि से तँ स्त्रीगणे सभ जानैथ।"

बन्ठा काकाकेँ भँसियाइत देख बजलौं-

"काका, आइ पाबैनक दिन छी, तोहूमे मन कनी गड़बड़ो अछि, तँए चौहद्दी छोड़ि अपन चास-बासक गप करू।"

बन्ठा काका जेना बुझि गेला तहिना बजला-

"बौआ, साड़ीक कहा-कही छल। सिरखड़ियावालीक कहब रहै ऐँठ साड़ीसँ खरना पाबैन नइ हएत।"

बन्ठा कक्काक बात सुनि सहमलौं, किएक तँ 'ऐँठ' की से बुझिये ने पेब रहल छेलौं। पुछलयैन-

"की 'ऐँठ' काका?"

बन्ठा काका बजला-

"ऐँठ भेल जे, जे साड़ी एको दिन पहिरल हुअए।"

बजलौं-

"काकीक कहब की छेलैन?"

बजला-

"हुनकर कहब जे अपने मनक बात छी, पहिल खींच देलिऐ ओ निरेठ भऽ गेल। जखन निरेठ भेल तखने ओ ऐँठ नइ रहल। तइले एते कहा-कही करैक कोन जरूरत। मुदा कहा-कहीक बात करैत जँ चाह बनबए कहितिऐन तखन ओ झगड़ा अपना दिस उनटैत की नहि, तँए चुपे-चाप आगू बढ़ि गेलौं।"

आगू बढ़ब सुनि अपनो नीक लागल। बजलौं-

"नीक केलौं।"

हमर 'नीक' सुनिते बन्ठा काका बजला-

"नीक की हएत कपार! कनियेँ आगू बढ़लौं तँ देखलिऐ, सोनरेवाली आ कैथिनियाँवालीकेँ खूब ललका-ललकी रस्तेपर करै छेली। अपन-अपन बात सुनबैले दुनू गोरे रस्तेकेँ रोकने छेली। मुदा रच्छ रहल जे फरिकेसँ दुनू गोरेक गप सुनि नेने छेलौं। एकक कहब रहै जे खरना पाबैन करैले अलगसँ एकटा साड़ी बनि कऽ ऊपरेसँ आएल अछि, ओ पहीर लोक पाबैन करत।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"दोसरक कहब की छेलैन?"

बन्ठा काका बजला-

"दोसरक कहब रहै जे हम जे दुर्गेपूजाक मेलामे खरना पाबैनले साड़ी कीन नेने छेलौं से की करब। मुदा रच्छ रहल जे दुनू गोरे रस्ता छोड़ि देली। आगू बढ़लौं।"

"नीक केलौं, काका।"-हम कहलयैन।

बन्ठा काका बजला-

"नीक की करब, अपनेटा नीक केने थोड़े नीक होइए। आनो नीक बुझि करत तखन ने। किछु छी तँ लंकाबास छी किने। किछुकेँ छोड़ैत चलू, किछुसँ जुटैत चलू। किसनी भौजीकेँ अठ-अठ हाथ कुदैत पुतोहुपर देखलयैन। ओना, पुतोहु अपन हाथ ससाइर नेने छेली। तँए सासुक बातकेँ खलिया बन्दूकक अवाज बुझि अनठौने छेली आ अपन खरना पाबैनपर सुरता लगौने छेली। मुदा रच्छ रहल जे जखने किसनी भौजी आगूमे अबैत हमरा देखली कि एकाएक चुप भऽ गेली। ललकैकाल आँखिसँ नोर निकलै छेलैन कि नहि, से तँ नहि देख पेलिऐन मुदा चुप होइते देखलयैन जे दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर टघैर रहल छैन। नोर देख मन खटकल जे भोरे-भोर कोन एहेन खटका किसनी भौजीकेँ भेलैन!"

बजलौं-

"ओना, किसनी काकी तँ छोट-छीन खटकाकेँ नइ मानै छैथ। जेना हरहारा साँपकेँ देखते कियो डेरा कऽ पाछू हटि जाइए आ कियो हाथपर राखि खेलाइए, तहिना छोट-छीन खटकासँ किसनी काकी खेलाइ छैथ। मुदा जँ आँखिसँ नोरक टघार निकललैन तँ जरूर कोनो तेहेन काज रहल हेतैन।"

बिच्चेमे विचारकेँ छीनैत बन्ठा काका बजला-

"हँ, गम्भीर बात छेलैन।"

'गम्भीर' सुनि सुनैक जिज्ञासा भेल। बजलौं-

"की गम्भीर बात छेलैन से तँ कहने हेती किने?"

बन्ठा काका-

"पुछलयैन, भौजी दुनू आँखिसँ नोरक दुनू धार बहैए, से की?"

ऐगला बात हमरा पेटेमे रहए तइ बिच्चेमे किसनी भौजी कहली-

"बन्ठा बौआ, नवतुरिया सभकेँ बुझल हेतै कि नहि, मुदा अहाँ तँ

सोझेमे तहियो छेलौं आ अखनो छी।"

कहलयैन-

"हँ, से तँ छीहे।"

हमर बात- 'हँ, से तँ छीहे' सुनिते किसनी भौजीक विचारक धारकेँ जेना धारा भेटल तहिना धड़धड़ाइत बजली-

"सासुर बसना जहिया पाँचे बर्ख भेल छल तहिये स्वामी मरि गेला, से तँ बुझले अछि।"

बजलौं-

"ताबे हमहूँ नवतुरिया रही। तँए, भाय जे मुइला से तँ बुझल अछि मुदा किए मुइला से नइ बुझल अछि।"

किसनी भौजी-

"यएह पाबैन छी, अगते शीतलहरी पकैड़ नेने छेलइ। तहूमे अनाड़ी मास[22], माने उतारक मास छल तँए लगले जाड़क मसीम पकड़ा गेल।"

कहि किसनी भौजी ठमैक गेली। भौजीकेँ ठमैकते कहलयैन-

"हँ, कनी-मनी सालो मन पड़ैए।"

'साल' सुनि किसनी काकीकेँ आरो सह भेटलैन। सहटैत सेरियाम धरतीपर उतैर बजली-

"ओही साल छठिए पाबैन दिन मरि गेला।"

बजलौं-

"आब नीक जकाँ मन पड़ल। ओइ सालक शीतलहरीमे बहुतो लोक गाममे मरल। अखुनका जकाँ कि लोककेँ नुआ-बिस्तरक सुख

[22] तीर्थक घटी-बढ़ीक कारण कोनो साल ऐगला मौसमकेँ पकड़ैमे देरियो होइए आ कोनो साल लगले पकड़ा जाइए।

छल। जाड़क मास अबिते केते लोक कठुआ-कठुआ मरै छल।"

किसनी भौजी बजली-

"सासुक मुँह देख अपन जिनगीकेँ तियागि ऐठाम रहलौं। पतिक संग बेटोक मृत्यु भऽ गेल छेलैन। एक तँ खेत-पथार बेसी नहि, तैपर जेहो छल तेकरो दियाद-वाद सभ हड़पैक कोशिश केलक। एहेन स्थितिमे दू सालक बेटाकेँ पोसलौं।"

मुड़ी डोलैत हमरा मुहसँ निकलल-

"से तँ आँखिक देखल अछि।"

तैपर किसनी भौजी बजली-

"अनका बेटा जेकाँ बेटाकेँ नीक जकाँ नइ पढ़ा सकलिऐ, तेकर कारण छल जे एक दिस वृद्ध सासु अपन जिनगीसँ हारल-थाकल छेली, दोसर दिस भविसक बेटा। मुदा तैयो सम्हारैत-सम्हारैत बीस बर्खक बनाइये देलिऐ। आँखि-पाँखि भेलै, दस हजारक नोकरी दिल्लीमे करैए।"

कहलयैन-

"से तँ अहाँ स्तीगण रहितो परिवारक गाड़ीक धुरीकेँ, केकैयी जहिना रणभूमिमे दशरथक गाड़ीमे अपन बाँहि लगा समर जीतलैन तहिना गामक नमूना तँ छीहे। तँए नमनीय छीहे।"

हमर बात सुनिते किसनी भौजी पसीज गेली। अपन विचारक बहैत तूफानी बेगकेँ रोकैत किसनी भौजी बजली-

"बौआ, पाँचसँ दस प्रतिशत परिवार एहेन अछि जेकरा नुआ-बिस्तरक अभाव छइ। मुदा अधिकतर परिवार आब ओहेन अछि जेकरा जरूरतसँ बहुत बेसी कपड़ा-लत्ता छइ। कहुना-कहुना तँ बीस जोड़सँ बेसी कपड़ा अपनो घरमे अछि। तखन ई कोन बहाना भेल जे छठिक खरना-ले 'ऐँठ साड़ी' उपयोग नइ हएत। दू साए रूपैआसँ सौंसे पाबैन हएत, तैठाम ऐ खर्चक माए-बाप के भेल?"

भौजीक मनक बात बुझि गेलौं तँए असथिरसँ हुनका कान लग अपन मुँह लऽ जा फुसफुसा कऽ कहलयैन-

“जेहेन अहाँक लूरि-बुधि अछि तेहेन अपने ने जीवन-बसर करब आ जेहेन हुनकर–माने अहाँक पुतोहुकेँ–छैन तेहेन ओ अपने ने जीती। तइले अनेरे मगजमारी केने की फैदा।”

जहिना नढ़ियाक बोल नढ़िया, सुग्गाक बोल सुग्गा, हंसक बोल हंस आ कुत्ताक बोल कुत्ता परेख बाजए लगैए तहिना हमर बोल परेख किसनी भौजी कहलैन-

“कखन हमर पनचैती करब?”

कहलयैन-

“ई पनचैती थोड़े छी, छी तँ ठट्ठा। पाबैनक प्रात पनचैती हएत।”

बन्ठा कक्काक बात सुनि कहलयैन-

“तखन तँ ओमहरसँ अहाँक जान छुटिये गेल। आब, एकटा प्रश्न हमरो अछि। सूर्यक अर्घ, छठि परमेसरी पाबैन केना कहबैए?”

बन्ठा काका बजला-

“तोरो प्रश्नक जवाब विस्तारसँ ओही दिन, माने जइ दिन किसनी भौजीक पनचैती हेतैन, देबह। अखन एतबे बुझह जे आसिनक आश आ कातिकक बासक बीचक ई बीचमानि छी।”

◌

शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017

कथा लेखन क्रम : 2014-17

264. झीसीक मजा- शब्द संख्या : 453, तिथि : 1 जनवरी 2014
265. मति-गति- शब्द संख्या : 1807, तिथि : 07 जनवरी 2014
266. अपन सन मुँह- शब्द संख्या : 5696, तिथि : 25 जनवरी 2014
267. रिजल्ट- शब्द संख्या : 2343, तिथि : 16 जनवरी 2014
268. सुमति- शब्द संख्या : 3052, तिथि : 30 जनवरी 2014
269. फेर पुछबनि- शब्द संख्या : 346, तिथि : 31 जनवरी 2014
270. माघक घूर- शब्द संख्या : 1683, तिथि : 06 फरवरी 2014
271. खर्च- शब्द संख्या : 330, तिथि : 07 फरवरी 2014
272. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या : 342, तिथि : 10 फरवरी 2014
273. पेटगनाह- शब्द संख्या : 593, तिथि : 14 फरवरी 2014
274. बड़की माता- शब्द संख्या : 1224, तिथि : 18 फरवरी 2014
275. धरती-अकास- शब्द संख्या : 184 , तिथि : 19 फरवरी 2014
276. बकठाँइ- शब्द संख्या : 883, तिथि : 24 फरवरी 2014
277. चैन-बेचैन- शब्द संख्या : 936, तिथि : 09 मार्च 2014
278. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या : 645 , तिथि : 11 मार्च 2014
279. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या : 287, तिथि : 12 मार्च 2014
280. नीक बोल- शब्द संख्या : 565, तिथि : 13 मार्च 2014
281. सुआद- शब्द संख्या : 624, तिथि : 14 मार्च 2014
282. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या : 690, तिथि : 19 मार्च 2014
283. भौंटक गहमी- शब्द संख्या : 508, तिथि : 24 मार्च 2014
284. भँसैत नाह- शब्द संख्या : 597, तिथि : 26 मार्च 2014
285. पान पराग- शब्द संख्या : 1692, तिथि : 29 मार्च 2014

286. सिरमा- शब्द संख्या : 760, तिथि : 31 मार्च 2014
287. नौमीक हकार- शब्द संख्या : 1119, तिथि : 03 अप्रैल 2014
288. फोंक मकड़- शब्द संख्या : 1744, तिथि : 10 अप्रैल 2014
289. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1252, तिथि : 14 अप्रैल 2014
290. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या : 326, तिथि : 16 अप्रैल 2014
291. खोंटकर्मा- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 19 अप्रैल 2014
292. किछु ने- शब्द संख्या : 503, तिथि : 22 अप्रैल 2014
293. झकास- शब्द संख्या : 1589, तिथि : 26 अप्रैल 2014
294. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या : 2919, तिथि : 01 मई 2014
295. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या : 611, तिथि : 04 मई 2014
296. अर्जुन रोग- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 7 मई 2014
297. गरदनि कट्टा बेटा- शब्द संख्या : 575, तिथि : 10 मई 2014
298. नैहराक धाड़- शब्द संख्या : 885, तिथि : 14 मई 2014
299. अवाक- शब्द संख्या : 1047, तिथि : 17 मई 2014
300. पोखरिक सैरात- शब्द संख्या : 923, तिथि : 20 मई 2014
301. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या : 409, तिथि : 22 मई 2014
302. धरम काँट- शब्द संख्या : 395, तिथि : 23 मई 2014
303. पलभरि- शब्द संख्या : 1116, तिथि : 24 मई 2014
304. किरदानी- शब्द संख्या : 5296, तिथि : 14 जुन 2014
305. सगहा- शब्द संख्या : 2867, तिथि : 22 जुन 2014
306. अकाल- शब्द संख्या : 1238, तिथि : 24 जुन 2014
307. उझट बात- शब्द संख्या : 1152, तिथि : 26 जुन 2014
308. कर्जखौक- शब्द संख्या : 1175, तिथि : 2 जुलाई 2014
309. उनटन- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 6 जुलाई 2014
310. रेहना चाची- शब्द संख्या : 1307, तिथि : 9 जुलाई 2014
311. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 11 जुलाई 2014
312. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या : 1229, तिथि : 14 जुलाई 2014
313. हारि- शब्द संख्या : 1240, तिथि : 16 जुलाई 2014
314. सोनाक सुइत- शब्द संख्या : 1135, तिथि : 17 जुलाई 2014
315. मरूभूमि◌- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 20 जुलाई 2014
316. असगरे- शब्द संख्या : 1557, तिथि : 24 जुलाई 2014

317. पुरनी नानी- शब्द संख्या : 1304, तिथि : 27 जुलाई 2014
318. कटा-कटी- शब्द संख्या : 1140, तिथि : 30 जुलाई 2014
319. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1206, तिथि : 3 अगस्त 2014
320. गलती अपने भेल- शब्द संख्या :3386, तिथि : 06 अगस्त 2014
321. चोरक चोरबती- शब्द संख्या : 884, तिथि : 6 अगस्त 2014
322. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 10 अगस्त 2014
323. सजल स्मृति- शब्द संख्या : 2363, तिथि : 14 अगस्त 2014
324. सनेस- शब्द संख्या : 2654, तिथि : 16 अगस्त 2014
325. सए कच्छे- शब्द संख्या : 488, तिथि : 19 अगस्त 2014
326. एक मुठी घास- शब्द संख्या : 411, तिथि : 21 अगस्त 2014
327. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या : 318, तिथि : 24 अगस्त 2014
328. पुरस्कार- शब्द संख्या : 2414, तिथि : 24 अगस्त 2014
329. गावीस मोइस- शब्द संख्या : 687, तिथि : 29 अगस्त 2014
330. मनकमना- शब्द संख्या : 6118, तिथि : 19 सितम्बर 2014
331. घरवास- शब्द संख्या : 4884, तिथि : 26 सितम्बर 2014
332. समधीन- शब्द संख्या : 6096, तिथि : 04 अक्टुबर 2014
333. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या : 1616, तिथि : 7 अक्टुबर 2014
334. कलम हानि कऽ- शब्द संख्या : 2226, तिथि : 10 अक्टुबर 2014
335. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 14 अक्टुबर 2014
336. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या : 2596, तिथि : 20अक्टुबर 2014
337. जितिया पावनि- शब्द संख्या : 3706, तिथि : 24 अक्टुबर 2014
338. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या : 3690, तिथि : 30 अक्टुबर 2014
339. भैयारी हक- शब्द संख्या : 3131, तिथि : 4 नवम्बर 2014
340. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या : 3356, तिथि : 13 नवम्बर 2014
341. खुदियाएल- शब्द संख्या : 2894, तिथि : 17 नवम्बर 2014
342. खटहा आम- शब्द संख्या : 3528, तिथि : 22 नवम्बर 2014
343. ढकरपेँच- शब्द संख्या : 3740, तिथि : 30 नवम्बर 2014
344. असहाज- शब्द संख्या : 2853, तिथि : 04 दिसम्बर 2014
345. समरथाइक भूत- शब्द संख्या : 3832, तिथि : 07 दिसम्बर 2014
346. विदाइ- शब्द संख्या : 5103, तिथि : 17 दिसम्बर 2014
347. खलओदार- शब्द संख्या : 731, तिथि : 19 दिसम्बर 2014

348. मनुखदेवा- शब्द संख्या : 1016, तिथि : 22 दिसम्बर 2014
349. उमेद- शब्द संख्या : 3643, तिथि : 31 दिसम्बर 2014
350. गलगर भैंस- शब्द संख्या : 3392, तिथि : 4 जनवरी 2015
351. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या : 3328, तिथि : 9 जनवरी 2015
352. सुरता- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 15 जनवरी 2015
353. असुध मन- शब्द संख्या : 2353, तिथि : 19 जनवरी 2015
354. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या : 1410, तिथि : 21 जनवरी 2015
355. ठोररंगू- शब्द संख्या : 1531, तिथि : 23 जनवरी 2015
356. लगबे ने कएल- शब्द संख्या : 1449, तिथि : 25 जनवरी 2015
357. उकडू समय- शब्द संख्या : 1467, तिथि : 27 जनवरी 2015
358. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या : 1615, तिथि : 29 जनवरी 2015
359. नहरकन्हा- शब्द संख्या : 1209, तिथि : 11 मार्च 2015
360. बटखौक- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 14 मार्च 2015
361. पसेनाक धरम- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 16 मार्च 2015
362. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या : 1103, तिथि : 18 मार्च 2015
363. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या : 1243, तिथि : 20 मार्च 2015
364. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या : 1234, तिथि : 23 मार्च 2015
365. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या : 1207, तिथि : 26 मार्च 2015
366. नोकरिहारा- शब्द संख्या : 1146, तिथि : 26 मार्च 2015
367. घसवाहि- शब्द संख्या : 1213, तिथि : 28 मार्च 2015
368. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या : 1319, तिथि : 1 अप्रैल 2015
369. छूआ- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 6 अप्रैल 2015
370. दोसराइत- शब्द संख्या : 1270, तिथि : 9 अप्रैल 2015
371. लछनमान- शब्द संख्या : 1173, तिथि : 13 अप्रैल 2015
372. हमर कोन दोख- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 17 अप्रैल 2015
373. मौसी- शब्द संख्या : 1393, तिथि : 21 अप्रैल 2015
374. नटकिया गति- शब्द संख्या : 1313 24 अप्रैल 2015
375. खाए चाहैए- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 27 अप्रैल 2015
376. मधुमाछी- शब्द संख्या : 1892, तिथि : 07 मई 2015
377. दनगर घास- शब्द संख्या : 2775, तिथि : 13 मई 2015
378. सझिया खेती- शब्द संख्या : 3135, तिथि : 23 मई 2015

379. मुफतिया माल- शब्द संख्या : 3231, तिथि : 29 मई 2015
380. मथाहाथ- शब्द संख्या : 2923, तिथि : 02 जून 2015
381. पहपैट- शब्द संख्या : 1369, तिथि : 05 जून 2015
382. इजोरिया राति- शब्द संख्या : 1512, तिथि : 07 जून 2015
383. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 12 जून 2015
384. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या : 605, तिथि : 14 जून 2015
385. डकरा हाल- शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015
386. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015
387. गठूलाक गारि- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015
388. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015
389. गामक बान्ह- शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई 2015
390. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई 2015
391. सीरक गाछ- शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई 2015
392. हरदीक हरदा- शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई 2015
393. जाम- शब्द संख्या : 3355, तिथि : 29 जुलाई 2015
394. गण्डा- शब्द संख्या : 2304, तिथि : 5 अगस्त 2015
395. हाथी आ मूस- शब्द संख्या : 3016, तिथि : 11 अगस्त 2015
396. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या : 3625, तिथि : 17 अगस्त 2015
397. फलहार- शब्द संख्या : 2350, तिथि : 25 अगस्त 2015
398. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 31 अगस्त 2015
399. क्रियाशील- शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015
400. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015
401. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015
402. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टुबर 2015
403. गजपट खेती- शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टुबर 2015
404. समुद्री विद्या- शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टुबर 2015
405. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टुबर 2015
406. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या : 679, तिथि : 13 अक्टुबर 2015
407. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टुबर 2015
408. धोखा- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टुबर 2015
409. खसैत गाछ- शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टुबर 2015

410. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्बर 2015
411. ठूठ गाछ- शब्द संख्या : 23,174, तिथि : 25 अक्टुबरसँ 16 दिसम्बर 2015
412. प्रिगर शत्रु- शब्द संख्या : 1080, तिथि : 26 दिसम्बर 2015
413. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या : 1167, तिथि : 31 दिसम्बर 2015
414. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या : 2623, तिथि : 4 जनवरी 2016
415. एक घोंट पानि- शब्द संख्या : 2522, तिथि : 10 जनवरी 2016
416. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द : 3407, तिथि : 16 जनवरी 2016
417. माइक वचन- शब्द संख्या : 3009, तिथि : 21 जनवरी 2016
418. पान- शब्द संख्या : 3120, तिथि : 26 जनवरी 2016
419. आजुक जिनगीक आइ परीछा- शब्द : 1684, तिथि : 01 फरवरी 2016
420. शुभचिन्तक- शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016
421. करिछौन लाली- शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016
422. मोहरा- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016
423. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016
424. जेना हाथी रही- शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016
425. कठफल- शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016
426. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016
427. झूठे- शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016
428. लाही- शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016
429. परतीहा खढ़- शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016
430. उजगी- शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016
431. हाथक जिनगी- शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016
432. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016
433. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016
434. अपने केलहा- शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016
435. बत्तु- शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016
436. कछमछी- शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016
437. गैत-वीध- शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016
438. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016
439. एक दिन- शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016
440. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016

441. गलफूलू- शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016
442. बिटगरहा- शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016
443. आब नइ आगि लगैए?- शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016
444. कटौज- शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016
445. बाल बोध- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016
446. डभियाएल गाम- शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016
447. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016
448. मरियाएल मन- शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016
449. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016
449. कन्हा भैंट्टा- शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016
449. जिगेसा- शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016
449. गुलेती दास- शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016
449. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016
449. दुरकाल- शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016
449. कलंक- शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016
450. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016
451. बगदल गाम- शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016
452. बत्तीसोअना- शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016
453. कचहरिया रोग- शब्द संख्या : 1651, तिथि : 12 सितम्बर 2016
454. दिन घटि गेल- शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टुबर 2016
455. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टुबर 2016
456. गामक सुरता- शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टुबर 2016
457. खतियाएल घर- शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016
458. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016
459. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016
460. देव उठान- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016
461. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016
462. भोरक सपना- शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016
463. बालमण्डली- शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016
464. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016
465. माघक चाह- शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016

466. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016
467. माघक घूर- शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016
468. पाही पट्टी- शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016
469. बीरांगना- शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016
470. स्मृति शेष- शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017
471. मनकेँ फुसलबै छी- शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017
472. चहकल विचार- शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017
473. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017
474. बीरांगना : 2- शब्द संख्या : 1992, 29 जनवरी 2017
475. पकिया चेला- शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017
476. कान फुटल कप- शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017
477. वर्थ डे- शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017
478. जानक मोल- शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017
479. गामक कटान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017
480. कर्ज- शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017
481. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017
482. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017
483. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017
484. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017
485. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017
486. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017
487. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017
488. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017
489. हरवाहि- शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस (01 मई) 2017
490. क्रान्तियोग- शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017
491. उचितवक्ता- शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017
492. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017
493. विघटन- शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017
495. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017
496. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017
497. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017
498. मर्माहत- शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017
499. गुणहीन- शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाइ 2017
500. समझौता- शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाइ 2017
501. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाइ 2017
502. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाइ 2017
503. नमहर फेरा- शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाइ 2017
504. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017
505. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017
506. बेटपन- शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017
507. छातीक हार- शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017
508. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017
509. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017
510. पुरान साड़ी- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 2453, तिथि : 24 अक्टुबर 2017
511. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टुबर 2017
512. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017

ооо
оо
о

लेखक परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- **गीत संग्रह**। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- **कविता संग्रह**। 8. पंचवटी- **एकांकी संचयन**। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- **नाटक**। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- **उपन्यास**। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- **एकांकी**। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- **बीहैन कथा संग्रह**। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- **दीर्घ कथा संग्रह**। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 65. दोहरी हाक, 66. स्वाभिमानी जिनगी- **लघु कथा संग्रह**।



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-81-936422-0-7